

॥ सुन्दरी सर्वस्व ॥

श्रीमन्महाराज द्विजराज श्री ५ प्रताप ना-
रायण सिंह बहादुर अवधेसजू के वि-
नोदार्थ काशी बासी द्विजकवि पं०
मन्नालाल ने विरचित के

बनारस अमर यन्त्रालयमे श्रीअम्बिकाच-
रण चट्टोपाध्याय द्वारा मुद्रितकराया
सं० १९४२

Registered
Under act XXV of 1867.

॥ भूमिका ॥

एक दिन श्रीमन्महाराज द्विजराज श्रीप्रतापना रायण सिंह जू अवधेस के दरबार मे प्राचीन कविता की चरचा हो रही थी उस समय कैएक सभासदों ने प्राचीन सवैयायें पढ़ीं किसी ने बनी औ किसी ने प्रबी नबनी किसी ने रघुनाथ औ किसी ने गोकुलनाथ की यह सुन के श्रीमन्महाराज अवधेस ने यह फर्माया कि प्राचीनही पर तथा नहीं है, नवीन में भी तो देखिये द्विजदेव महाराज मानसिंह, सेवकरामजी, हनुमानजी इन लोगों की काव्य कैसी अनूठी है प्राचीन औ नवीनही पर कुछ तथा नहीं है, जो उक्ति अनूठी लावै औ वाच्यार्थ जिसका साफ हो वही कवि उत्तम है, यह कह कर श्रीमन्महाराज अवधेस ने मरी ओर मंदमुसकान सहित हेर के कहा कि पंडित मन्नालालजी आप अब ऐसा एक ग्रन्थ सवैया छन्द में बनाइये कि जिसमें प्राचीन औ नवीनों के चुनिन्दे उदाहरन औ लच्छन लच्छ सहित रहैं कि जिससे सब रसिकों का वह सुखद हो श्रीमन्महाराज की यह आज्ञा पा कर मैं ने प्राचीन औ नवीनों के ग्रंथों कां देस विदेस से मगा कर संग्रह कर अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार रसीली कविता चुन के यह ग्रंथ तैयार किया है ॥ आशा है कि जो कविकोविद रसज्ञ हैं वे इस ग्रन्थ का देख कर अवश्य मनमुदित होंगे औ श्रीमन्महाराज अवधेस की कोविदता औ रसिकता पर अत्यन्त प्रसन्न हो कर धन्यवाद देगे ॥

॥ कवियों की नामावली जिनके उदाहरन इसमें हैं ॥

१ श्रीपति	३५ दिवाकर भट्ट
२ श्रीधर (बाबूमाभा)	३६ धुरंधर
३ आलम	३७ निवाज
४ ईस	३८ नृपसंभु
५ केसव	३९ नूर
६ कबिन्द	४० नाथ
७ कमलापति (काशीनिवासी)	४१ नरैस
८ कविराज	४२ नागर
९ किसोर (प्राचीन)	४३ नवीन
१० गोकुल (काशीनिवासीरघुनाथ	४४ नरेन्द्रसिंह (महाराजपटियाला)
११ गंग [केपुब]	४५ पदमाकर
१२ गोपाल	४६ प्रेम
१३ गुलाब	४७ प्रवीन
१४ गुंधर	४८ पारस
१५ खाल	४९ पंगु
१६ गिरधरदास	५० पलनेस
१७ घनमानद	५१ परमेस
१८ घनस्याम	५२ परसाद
१९ चन्द	५३ पीतम
२० चंदन	५४ बेनी
२१ छितिपाल (राजाचमेठी माधव	५५ प्रतापसिंह जी (महाराजजैपुर)
२२ जगदीस [सिंह]	५६ भगवन्त
२३ जसवन्त (बघेल)	५७ ब्रज
२४ ठाकुर	५८ ब्रह्म
२५ तुलसी (श्रीभाजी जोधपुर के)	५९ विजय (राजासरखारी)
२६ तीघ्र	६० बेनीप्रवीन
२७ देव	६१ बलभद्र
२८ द्विज (मन्नालाल शर्मा)	६२ योधा
२९ द्विजदेव (महाराज मानसिंह)	६३ बलदेव
३० दास	६४ वीर
३१ दत्त	६५ विजयानन्द जी पंडित
३२ दयानिधि	६६ महेसजू (राजाबखरी)
३३ दिनेस	६७ मतिराम
३४ दूबह	६८ मनिकंठ

६९ ममारख	८९ ललिते
७० महाकवि	९० लक्ष्मीराम (प्राचीन)
७१ मीरन	९१ सेख (रंगरेजनि)
७२ मण्डन	९२ सरदार
७३ मण्डेव (काशीनिवासी)	९३ संभु.
७४ मनिलाल	९४ सेवकराम (ठाकुरकविके पौत्र)
७५ मनि	९५ साहवराम
७६ मारकण्डे	९६ सुमेरहरी (बाबासुमेर सिंहजी)
७७ मधुसूदन	९७ सुन्दर [साहवजादे]
७८ रघुनाथ (महाराज काशिराजके	९८ सेखर (महाराजपटियालेके कवि)
७९ रसीले [कवि]	९९ सोभ
८० रसरज	१०० सुखदेव
८१ राम	१०१ समिनाथ
८२ रिषिनाथ (ठाकुरकविके पिता)	१०२ सिंह
८३ रसरूप	१०३ संकर (सेवककविजीके भ्राता)
८४ रसखान	१०४ शिव
८५ रमिया नजीवखां (महासद म-	१०५ सिरामनि
[हाराजानरेन्द्रसिंह पटियालाके]	१०६ हरिश्रीध
८६ रतनेस	१०७ हनुमान (काशीनिवासीमणि
८७ लालसुकुन्द	[देवजीकेपुत्र]
८८ लाल	१०८ हरीचंद (बाबूभारतन्दु)

॥ सुन्दरी सर्वस्व ॥

—000—

श्रीगणेशजी सहाय ॥ दीहा ॥ सुमनकुंजविहरतसदा
 दैगलवाहीमाल । वन्दोचरनसरोजतिन जुगुललाडिलीला-
 ल ॥ १ ॥ जिनप्रजबीधिनसैसदा विहरतस्यामास्याम । सक-
 लसनोरथसंगुमस तेपुजवहुसुखधाम ॥ २ ॥ श्रीराधाबाधाह-
 रनि करनिसुसंगलमूल । भूपप्रतापद्विजेन्द्रपै सदाहरहुअनु-
 कूल ॥ ३ ॥ दाताज्ञातासुधरवर जननाताअवधेश । तापै छप-
 याकोरयुत निरखहुतुमहुं प्रजेस ॥ ४ ॥ चिरजीवीरहिवो-
 करो भूपप्रतापउदार । जबलौरविससिगगनसहं बिचरहिं
 तमहिंविदार ॥ ५ ॥ कविकोविदकोकलपतरु वीरवीरअवनीप्र-
 धर्मकर्मजुतराजही दूजोमनहुं दिलीप ॥ ६ ॥ तासुहेतुसैच-
 हतहीं करनग्रन्थनिरमान । कविकोविदहरीभिहैं जेहैर-
 सिकसहान ॥ ७ ॥ पहिलेसैकीन्होरह्यो तिलकसुन्दरीरुख
 भूपप्रतापबिनोदहित अबसुन्दरिसरवख ॥ ८ ॥ हैप्रधानसव-
 रसनसै रससिङ्गारसुजान । सोउपजततियपुरुप्रतें सवकवि-
 करतबखान ॥ ९ ॥ तातें प्रथमहिंनायिका जायकाकाहवसमो-
 द । जिनतें रससिंंगारको बाढतविविधबिनोद ॥ १० ॥ ति-
 हिंअन्तरपहिलेकारत नखसिखसहजसरूप । पुनिपाछे सव-
 काहहुं गो भेदबिनोदअनूप ॥ ११ ॥ सम्बतभुजश्रुतिनिधिसही
 मधुमासरसितपच्छ । शनिवासरशुभपञ्चमी किन्होग्रन्थप्रत-
 च्छ ॥ १२ ॥

॥ अथ चरण वर्णन ॥ छन्द सवैया ॥

कोजकहैजपाजावकरंगकी कोजकहैअरुनाईसहावकी
कोजकहैगुललालागुलालकी कोजकहैरंगरोरीकेआवकी
प्यारीकेपायनकीउपमा द्विजकोंसवजानपरौजिभिखावकी ॥
पंकजपातकीवातकहा जिनकोमलतालईजीतिगुलावकी ॥ १
एउनकीउनमैअनुहाख्योन हाख्योनमानहियेसरमातहैं । पं
ककेबीचपरेशरमै वड़े वेशरमैएफुलावतगातहैं ॥ भेंटनहीं
कहूंयाछविंसों रविंसोंकरजोरेखरेहहाखातहैं ॥ राधेजुधो
वतपाँवतिहारेहों कौलधोंकाहेकोंअंठेसेजातहैं ॥ २ ॥ को
हरकौलजपादलविद्रुम काइतनीजोवंधूकसैकोतहै । रोच-
नरोरीरचीमेहँदी नृपसंभुकहैंसुकतासमपोतहै ॥ पाँवधरैढ
रैईं गुरसो तिनमैमनिपायलकीधनीजोतहै । हाथहैतीनिलों
चारिहूंओरते चँदनीचूनरीकेरंगहोतहै ॥ ३ ॥ विंजप्रवा
लवंधूकजपा गुललालागुलावकीआभालजावति । संभुजुकंज
खिलेटके किसलैवटकेभटकेगिरागावति ॥ पाँवधरैअलिओ
रजहँतिहैंओरतेरंगकीधारसीधावति । मानौमजीठ-
कीमाठदुरी एकवोरतेचँदनीओरतिआवति ॥ ४ ॥ सीस-
जटाधरिनन्दनसँ सुनिवृन्दनसँबहुकालविताए । वल्कलचौर
लपेटिशरीर महासुरतीरथनीरनहाए ॥ आठहूंजामसही-
हिमधाम पुरंदरधामहूंकामबढ़ाए । योंकलपद्रुमकोटिउपा
य कियेतुवपाँयसेपातनपाए ॥ ५ ॥ जिनसोहैकहाचलीपंक
जकी जोसकैसमहैकहूंखावमेंहै । जबचन्दनखावलीदेखि-
चथौ तवजोतिकितीमहतावमेंहै ॥ कमलापतिप्यारिकेपा

यनकी समताकीं नहीं कछु ज्वाबमें है । तहँ आवगुलाबकी-
कौनक है नरही लखिताबसहाबमें है ॥ ६ ॥

॥ अथ भषनसह पदअंगुरीवर्णन ॥

चम्पकलीदलहूते भली पदअंगुलीबालकीरूपरसे है । सु
भ्रसुवेसलसैनखर्यौं जनुपीतमकेटगदेवबसेहैं । बाँकेअनौटवनी
बिछियान बिभूषितजोतिजरावगसेहैं । केसवसोमसरोजनि
जपर कोपिमनोतनचानकसेहैं ॥ १ ॥ राधेकेपायनकीअंगु-
री मेहँदीसोरंगीसोभएनवरातहैं ॥ कौनृपशंभुजूईदवधू जु-
रिबैठीमिहींजेसरोजकेपातहैं ॥ कैवटकेटटकैवरपानपै आरे
केफारेप्रवालसुहातहैं ॥ कौधौंचकोरनचौंचचप्यौ चिनगारी
केधोखेचुनीनचवातहैं ॥ २ ॥ कौसौसुढारगढीहैसुनारसु
कोरदवायदईचहुँ धाकी प्यारीकेकोमलपायनकीअंगुरीनर
हीठरिरंचकबाँकी ॥ कंजनकीपँखुरीनचढी जुहीफूलिरही
हैमनोसुखमाकी । सानसयानसबैचुटकीन उड़ावतिहैचुट-
कीललनाकी ॥ ३ ॥

॥ अथ पिंडुरीवर्णन ॥

गोरीगुलारीसुढारसीसाँचेकी देखतदेहिनकोमलका-
की । रंभकुसुंभकिधौं है किधौं छबि छीनतकांचनकेकलिकाकी
कामगढगोबड़हीहै किधौं रतिकेरतिकीवेकींपापलिकाकी ॥
तोषबिलोकिबिलोचनमैन बस्योबलिपींडुहीयामलिकाकी १
बरगोलसुडौलबनेहैंअमोल ठरेसनोसाँचेसुभायनमे । अस
कोजगहैजिनकोंलखिकै नहिंहोतसनोजकेचायनमे ॥ काम
लापतिकामचितेरहताँ नसकैलिखिकेहूँउपायनमे । असपे

खतप्यारीकेगुल्फनको लगेकुल्फनकोनकेपायनमे ॥ २ ॥

॥ अथ जंघवर्णन ॥

जानकिधौं हैरतीरतिनाथको सोनकेत्रोनरच्योपचवानु
है । वानहैफावतआनकोमानहै कीकदलीविप्ररीतउठानुहै
ठानहैऐसेनहींकरिकेकर तोप्रचितैजेहिंकान्हविकानुहै ।
कानकरैयहसौतिनके परग्रानसेप्यारीसुजानकीजानुहै ॥ १ ॥
कैविधिकंचनगारसिंगारकै दीन्ह वनायअनूपसरंगके । कै-
कदलीउलटेह्वै विराजत कैकरिसुंडदिखातउसंगके ॥ ऐसी
लसैउपसातिनकी द्विजभापतहैहिसिपायप्रसंगके । ग्रानप्रि-
याकेसुराजतएदोउ जंघकिधौंहैंनिखंगअनंगके ॥ २ ॥

॥ नितखवर्णन ॥

लाड़िलीकेवरनैकोनितंवन हारिरहीरसनाकविजेतके
कैनृपसंभुजूसैरकीभूसिसैं रेतकेकूराभयेनदीसेतके ॥ कैधौं-
तमूरनकेतवला रंगिअंधेधरेकरिरंभाकेजेतके । कंचनकी
चकेप्राथेसभोहर कैभरनाद्वैसनोजकेखेतके ॥ १ ॥ त्रिवली-
तटिनीतटकीपुलिनाई कोजवहिजाइकवौंफविसे । जनु-
चक्रकुंभारजुवाकेथली छिपेघावरीवीचपरेदविसे । गतिसं-
दकैप्रौछोचहैरिसलै हरिसेवकसीड्यौचहैनविसे ॥ सुवराई
सुकासविरंचिकीहै तियतेरेनितंवनिकीछविसे ॥ २ ॥

॥ अथ कटिवर्णन ॥

रंचकदीठकेभारलहे वहुवारविलोकनिईठिअनैसी ।
टटिहैलागिहैलोकअलोकात वैहठछटिहैजटिहैकैसी ॥ पौन
वहैत्रजदेहमैलागति देखिपरैनहींआखिनजैसी । तैसीहै-

सूच्छमकामोदरीकटि केहरि कीहरिलंकनाअैसी ॥ १ ॥
 सिंहभ्रमैवनभावरौदेतऔ साँवरीकृष्णीभईकरिखेदै । संसु-
 भनैचसमाचखदैकै विरंचिरचीबिसराइकैवेदै । राधिकालंक
 कीसंककरौजनि संकरहोनहीं जानतभेदै । जोसनहैपरमा-
 नसमान निगोडौतजतिहिंभेकरैकेदै ॥ २ ॥ हैतनहींमैल-
 खातिनहीं वरबुभियेजायतौहैंसबसाखी । मानिलईसबहै-
 अनुमानकै पेखीनकाहूपसारिकैआँखी । जानतसाँचीकैया-
 तेजहाँन जोआगेतेबेदपुराननिभाखी ॥ ब्रह्मलौंसूच्छम-
 हैकटिराधेक देखीनकाहूसुनौसुनराखी ॥ ३ ॥ जोकहिये
 विधिनाहींरची सिखतेधरक्यौंपगकोसंगलीन्हो । जोकहि-
 येकिविरंचिरचीहै तौदेखीनजातिकितोदृगदीन्हो ॥ कीन्है
 विचारनआवैमनै नृपसंभुभनैतबसोसतिचीन्हो । जोचित-
 चोरकोचित्तचुरावत राधेकेलंकलोकंजनकीन्हो ॥ ४ ॥ ध्या-
 रीकेगातबनाइवेकोविधि सागिलईदुतिदेवनअंगकी । आ-
 ननमैससिराखिदियो हरिबासकियोरचिभौंहनिअंगकी ॥
 आपनेआसननैगरचे नृपसंभुजुबैनसुधासवसंगकी । भागसुरे
 सउरोजमहेस बलाहककेसनिलंकअनंगकी ॥ ५ ॥

॥ प्रीठि वर्णन ॥

दासप्रदीपसिखाउलटीकी पतंगभईअवलोकतिदीठिहै ।
 अंगलसूरतिकंचनपत्रकी सैनरचीमनआवतनीठिहै । काटि
 किधौंकदलीदलगोभकीं दीन्होजमायनिहारिअगीठिहै ।
 कांधतेचाकरीपातरीलंकलौं सोभितमानौसलोनीकिप्रीठि
 है ॥ १ ॥ सोसासुमेरुकीसंधितटी किधौंसैनमवासगढीसकी

घाटी । कैरसराजप्रवाहकोमारग वेनीप्रवाहसौयोंदगठा-
टी । कामकलाधरिओपदईकिधौं पीतमप्यारेमढावनपाटी।
जानकीपीठिलखे धनआनद आननआनकेहोतिउचाटी ॥२॥
मानोसनोजकीपाटीलिखी हितसंचनकीपरिपाटीवसीठिहै।
जातिउनेउनेकातिकेभारनि जातिदुनेदुनेजोपरैदौठिहै ॥
गोकुलवालकेअंगविलोकिहौ औरनकीतवप्रीतिउवीठिहै ।
कंचनकेरुदलीदलजपर सोवतसापिनिवेनीनपौठिहै ॥३॥

॥ अथ नाभीवर्णन ॥

प्यारीकिनाभिहीं सोवरनै जोलड़ायोहैगौरीकेलाडिले
लाड़कै । रूपकोरूपसरोवरसौ उपमाकविलोगपुकारतडा-
ड़कै । रोमलताकोकहैदहला नृपसंभुएहोवरनीनहीं चाड़
कै । धूरिकोकीटसनोभोअनंग रह्यौगडिकंचनरेतमैगाड़-
कै ॥ १ ॥ रूपकोरूपवखानतहैंकवी कोजतलावसुधाहीकेसं-
गको । कोजतुफंगमोहारिकहै दहलाकलपद्रुसभापतअंग
को । बारहीवारविचारकियो नृपसंभुनयामतसोमतिसंग-
को ॥ सीसीउरोजनतेमदधार रूमावलीनाभीनप्यालाअनं-
गको ॥ २ ॥ क्योंसनसूदकवीलीकेअंगनि जायपखोरेससा-
जिमिभीरमै । ठानीअठानअयानजोआपुतौ ताहीकोंआ-
निसकैपुनिनीरमै । जोवनपूरविलासतरंग उटैसनमोदउमंग
सरौरमै । सैलउरोजहै कूदिपखोमन नाभीप्रभानदभौरगं-
भीरमै ॥ ३ ॥

॥ अथ त्रिवलीवर्णन ॥

प्यारीकेअंगवनावतही नृपसंभुजूदेवभयेअनमेखै । कंज-

केकंठकसालजभ्यो भयोचंदमलीनअजौंलगिदेखै । लाजमई-
 सुरबामभई पछितान्योखयभूमहांमनसेखै । दूसरीऔरव-
 नाइवेकों त्रिवलीखँचीतीनतिलाककीरेखै ॥ १ ॥ एकैकहै सु-
 खमालहरै मनकेचढ़िवेकीसिढीएकपेखै ॥ कान्हकोठोनोक
 ह्योकछुकाम कबीखरएकयहैअवरेखै ॥ राधिकाकेत्रिवली
 कोबनाव बिचारिविचारयहैहमलेखै ॥ असीनऔरनऔ-
 रनऔरहै तीनखँचायदईबिधिरेखै ॥ २ ॥ उसरेपटदेखि
 परेत्रिवली गुनैसेवकस्यामहुलासधरे ॥ तियकीसमदूजोन-
 हींसुखसोई त्रिरेखलिख्योबिधिवासधरे ॥ तिरैबीचियैरूप-
 नदीकीसुजो रसवैसत्रईकोबिलासधरे ॥ हरनैनसोभीतस-
 नोजमनो सरतीनिसुगेहकेप्रासधरे ॥ ३ ॥ नैनबिसासिनके
 संगगो सुखमालखिवेतियकेअंगअंगमै । ताहीसमैपटनाभि
 तटीको गयोउडिसेवकपौनप्रसंगमै । हौसरहौसनकीसनमै
 तितजाइपख्योमदकेउतसंगमै । बूडिगयोसनमेरोभटू त्रिव-
 लीवलिरूपनदीकीतरंगमै ॥ ४ ॥

॥ अथ रोमराजी वर्णन ॥

जावनवाहरआयोनहीं तनभीतरहीवढीआभाअपारसी ।
 ज्योंनृपसंभुजूकाँचकेकुंभ धरीकछुचीजलखीपरैवारसी ।
 आमिलमानोउरोजकढाँ चहैसायतकामधरेसुभसारसी ।
 असीरूमावलीदेखीपरै ज्योंधरीपरैअंजनरेतकीधारसी ॥ १ ॥
 मनोहरअंगकीभाठीरची सिसुताईजर्राईअनंगकलार । म-
 नैनृपसंभुजूदीपतिज्वाल अंगारसेराजतलालकेहार । लसै-
 सिरवारज्योंधूमकीधार बन्धोतरेभाजननाभीसुठार । रु-

सावलीकंचनकुंभउरोजन ते मनोचूचलीआसवधार ॥ २ ॥
 कैनिधिछीरकैवीचसैजाय कलिंदीकोनीरनयोभरको । नृप
 संभुजूकैधौसरालकीसालके बीचभुजंगलग्योसरको । वड़े मो
 तीकोहारलसैकूचद्रूपै रसावलीते तरकोलरको । किधौंगं
 गकेसंगसुमेरुसिला वहिपातरोलाग्योजटाहरको ॥ ३ ॥
 कनकाचलकंदरअंदरते निरवातसिंगारलतालटकी । ति-
 यरुसावलीकिधौसंकरइ लखिवालभुजंगिनिहैठठकी । च
 कवातकिकैकविलासुकुंदजू सीरसिकारदर्इफटकी । किधौं
 सैनमलंगचढोयलितुंग जंजीरअरीनपरैभटकी ॥ ४ ॥ पा-
 रसीपाँतिकीपीपरपत्र लिग्योकिधौंसोहिनीसंवसुहावली ।
 तोषकिधौअधरारसकोंचली नामीधलीते पिपीलिकाआव-
 ली । कोउककामकिसानवई सोजमीकिधौंवेलिसिंगारकी-
 सावली । हावलीवांवलीसौतैभई लखिरीलडवावलीतेरीन-
 दावली ॥ ५ ॥ जारतिनायककोहभरो हठिनैनहुतासनजाति
 जरायो । सोतुवनामीसुधासरसै निजअंगअंगारनआचबुक्ता
 यो ॥ तामधितेसृगलोचनीसेचक धूमसमूहउठगौसनभावो ।
 सोईरुसावलीकोछलपाय दुवोकुचकुंभनकेविचआयो ॥ ६ ॥ रू
 पकेरासिकीरूपरुसावली जंत्रकेसंत्रकेतंत्रकेतारसी । प्रेसजू
 प्रानते प्यारीलगी अंधियारीलगीअंखियानकोआरसी । साल
 वनीनवलीअवली पिकवेनीत्रिवेनीकेवेनीकेवारसी ॥ कञ्चनके
 गिरिकंचनभूमिपै धूमरीधूमरीधूमकीधारसी ॥ ७ ॥ जीवनफू
 ल्योवसन्तलसै तेहिअङ्गलतालपटौअलिसेनी । नामीविलोक
 तजातसुधाकों धकीसुखदेखतनागिनिवेनी । राजतरोसन

कौतनराजिव है रसबीजनदीमुखदेनी । आगेभईप्रतिबि-
 श्वितप्राछेविलम्बितजामगनैनीकिवेनी ॥ ८ ॥

॥ अथ कुच वर्णन ॥

सोनेके चूरनसैचमकै किरचैसीउठैछविपुंजभावाके । हा-
 थनलेतबिरीलटकै मखतूलकेफूलनजोरजवाके । गंगबड़ेव
 डे सोतिनकेसंघसोहतथोरेथोरेकुचवाके । अंडनिकेसमोस-
 गडलमध्यते द्वैनिकसेचकुलाचकाके ॥ १ ॥ उरमेउलहेसुलहे
 है उरोज सरोजकरैगुनदासवके । नृपसंभुजूकुंभीकेकुं
 भकहा समकौजैबंधेरहैपासवके । फलश्रीफलकेकहे आव-
 तिलाज काहागिरिखड्डहैंवासवके । सुमनोछविअंगअनङ्ग
 धरे उलटायपियालेद्वैआसवके ॥ २ ॥ जगजीवनकोफलजा
 निप्रख्यौ धनिनैनिकोठहरैयतहै । पदुमाकरछौहुलसैपु-
 लकै तनसिंधुधुआकेअन्हैयतहै । सनपैरतसोरसकेनदमै अ-
 तिआनदमैमिलिजैयतहै । अबजं चउरोजलखे तियके सुर-
 राजकेराजसोपैयतहै ॥ ३ ॥ सोईहुतीपलंगपरबालखुले अंच
 रानहिंजानतकोज । जं चउरोजनकांचुकीजपर लालनके
 चरचेहगदोज । सोछविपीतसदेखिक्के कवितोप्रकहैउप
 मायहहोज । मानोमढे बुलतानीवनातमे साहसनोजकेगुं
 मजदोज ॥ ४ ॥ कोजकहैकुचकंचनकुंभ सुधारससोभरिरा
 खेहैवोज । श्रीफलसंभुसुमेरसमान मनोजकेगे दकहैकवि-
 कोज । सोमनमैउपमाअसआवति भाखतहौंपुनिहोउना
 होज । जीतिसवैजगश्रींधिधरेहैं मनोजसहीपकेडुं डुभीदो
 ज ॥ ५ ॥ कांचुकीमाहकसेउकसेपरै कामिनीउंचेउरो-

जतिहारे । दत्तकहैजनुविश्वविजैकरि सैनधरेउलटेकैनगारे ।
जोवनजोरकढेहियफोरकै औरहीतेँ एकठोरनिहारे ।
गँदकैगुंमजकैगिरिकैगज कुंभकेगर्भगिरावनहारे ॥ ६ ॥
श्रीफलकंजकलीसेविराजत कैविविसौनीवसेढिगंगके ।
कैगिरिहेमकेसंपुटसोनेके राजतसंभुमनोँरसरंगके । कौनु
गकोककैसोकविमोचन कौधोँसिलीसुखमैननिपंगके । कौधोँ
रसालकेतालफलेकुच दोजमहालजगीरअनंगके ॥ ७ ॥
कंजकेसंपुटहैपैखरे हियमैगडिजातज्योँकुंतलकोरहै । मेरु
हैपैहरिहाथनाआवत चक्रवतीपैवडेईकठोरहै । सावती
तेरेउरोजनसै गुनदासलखेसवऔरहीऔरहै । संभुहैपै
उपजावैसनोज सुव्रत्तहैपैपरचित्तकेचोरहै ॥ ८ ॥ वेध-
रेँअंगभुजंगकेभूखन येहूभुजंगरहैहियधारे । वेधरेँचंदसँ
वारिकैभालसै येजनखच्छतचंदसँवारे । संभुजीऔकुचकी
ससता कविकोविदभेदइतोईविचारे । संभुसकोपहैजाछौ
सनोज उरोजनोजजगावनहारे ॥ ९ ॥ ठाढ़ेरहैदृग-
आसनके कुटौकंचुकीकेपटखोलतना । सालसुगंधप्रवाहवहै
तेहिंसेउठिनेझुकलोलतना । कारेभएकारिदृष्यकोध्यानहु
लाएतेँकाहूकेडोलतना । येतपसीद्वैगरूरभरेदुनियाँतेँद-
यानिधिवोलतना ॥ १० ॥ यौवनछत्रपतीकेसनोसर कंचन-
छत्रसोँआनिकूएहै । कासकेत्रासमनोसिवकेसिर कामिनी
सुंदरबुंददएहै । श्रीफलसैसनोकोजविहंगम कौलनकेदल-
तोरिगएहै । लालीअलीकुचअग्रनकी लखिनूरसुलालनचूर
भएहै ॥ ११ ॥ लाडिलीकेकुचदेखतही सिरनायसरोज-

लजायविस्तरत । दाडिमकीहियरोफटिजात जबैकहूँ कंचु
की ओरकोधूरत । संभुसतावत है जगकों है कठोरमहा-
सबकोसदतरत । कूहकैकैकरमारै सही लखिकुंभनवारन
छारनपूरत ॥ १२ ॥ रूपअनूपवनीसखीआज सुताप्र-
भानकीप्रानसौभूपर । पूरनभागमहामनिकंठसो वारौक-
हाइनकोहनीजूपर । रौकिरंग्योअचराकुसुभीं इसिडोलत
वातलगे कूचऊपर । लालधुजामकरअजकी फहरातिसनो
गजराजकेऊपर ॥ १३ ॥

॥ कूचकंचुकी सहितवर्णन ॥

मधुराकाकिरातिसखीजुरिराधिके उज्जलभूषितनूपु-
रलौ । अवलीसवरीचकफोरीफिरै नपरैडिगपाइतसूपर
लौ । अंगियाकूनकारीखरीसितजारीकी सेदकनीकूचदूपर
लौ । मनोसिंधुसथेसुधाफेनबढयो सोचढगौगिरिल्लंगनिऊप
रलौ ॥ १ ॥ जौतिवेकोरतिकेलिहरौलसे आएसनोजसही
प्रतिकेहै । देखतवाढे कठोरमहा जिन्है कातरताईकहूँ
नगईछू । बीचहरामनिकीकिरनै नहथपारनकीसनिजो-
तिरहीचू । जालीकिआंगीकसीयो उरोजनि जानोसिपाही
सिलाहकियैहै ॥ २ ॥ लोचननीरजदेखिनअछवि दन्तनदा
मिनिकोदफनी । वेनीबनीसोमनेमनिकाज पत्यौससिपैफ
नफाटफनी । पीनप्रयोधरउपरहै दरकीअंगियाउपसाउफ
नी । राजसोलूटिकैमैननरेस महेशकोमानोदहूकफनी ॥ ३ ॥
असराफअसीलखुमानीखरे जिनकोपरदेकीसदासरमै । उ
वटेचुपरेरंगकेसरिके जिनकीसमतानचमीकरमै । उरपै

अतिखासीखुली अंगिया कवि साहवरासलगेभरसै । मिर
जादेसनोखुवसूरतसे । सिरटोपीदैवैठिरहेवरसै ॥ ४ ॥ रज
नीसधियारौनेगौनक्रियो निरखौअखियापियरंगभरी । कवि
आलसरंभनकोललक्यो रतिलातचहै हियलायहरी । खरी
खीनहरेरंगकौअंगिया दरकौप्रगटौकुचकोरसिरी । अरु
क्षेजुगजारसिवारनसै चक्रवानकौचौचैसनौनिकरी ॥ ५ ॥
प्रातससैवप्रभानसुता चलिआवतहीजसुनाजलन्हाये । नीर
सोचौरलक्योसवदेहसै दूनीदिपैछविओपवढाये । दरियाइ
किंकचुकौसैकुचकौछवि योछलकैकविदेतवताये । वाज
केद्राससनोचकवा जलजातकेप्रातसैगातछिपाये ॥ ६ ॥

॥ अथ हारवर्णन ॥

आजगुपाललखीवहवाल प्रभाकौससालसीकासगढीहै
अंचलखोलैनकंचुकौअंगसों संसुअहैदुतिदूनीचढीहै । सो
तीकेहारलसैकुचवीच रोसावलीतेसिलिजेतिवढीहै ।
मानोसुमेरहिंसंगकैगंगलै आलुतनूजाकोसंगकढीहै ॥ १ ॥
दानेसनोहरसानधरे बहुदीपतिताकौकहाकहैवारिकी ।
संसुजूसंजुगुहेगुनसों उरडारतऔरैवढीदुतिनारिकी । ला
लकेहारलसैउरयोँ कैरूमावलीवेलिलखीहैउजारिकी ।
मानोसुमेरकैसृंगनते उतरौदरीआवतिपातदवारिकी ॥ २ ॥

॥ श्रीवावर्णन ॥

कंचुविलोकतहीजिहिंकों दुखोजायकैदूरकहकोउतालहै ।
सौतैविलोकिसईहैविहाल कपोतनकेकोकहैजसहालहै ॥ जा
निपरीद्विजकोउपसा तिहिंभाषतहीसनहोतनिहालहै ।

पानकीपौकलसैतियकंठ मनोपोखराजसिसौरंगलालहै ॥ १ ॥
लखिकैवहिपानपियारीकेकंठको कंबुलईसुधितालनकी । ति
हुं लोककीसुन्दरतालैत्रिरेख दईविधिजोतिकेजालनकी ।
कमलापतिकौनवखानिसकै छबिछीनतमानिकमालनकी ।
इमिगोरेगरेलसैपौकमनो दुतिलालगुलबंदलालनकी ॥ २ ॥
किधौंरूपसरोवरमेतेकढो लसैकंबुमख्योसुरसातकोहै ।
किधौसांवरैजुगुनरावरेके याकपोतफँट्योवड़ीजातकोहै ।
सुमरेसजूकीधौसुकोकिलाकोसुरसाधिधख्योविधिहातकोहै
। वरकंठमैगोरीकेकंठालसै सुकतारनतारनकांतिकोहै ॥ ३ ॥

॥ करवर्णन ॥

राधिकारूपनिधानकेपाननि आनिसवैछितिकीछबिछा
ई । दीहअदीहनिस्खमथूल गहैदृगगोरीकीदौरिगोराई ।
मेहँदीलसैबुंदवनेतिनसै मोहनकेमनमोहनीलाई । इन्दवधू
अरविंदकेमंदिर इंदिराकोमनोपूजनआई ॥ १ ॥ बैठीमथै
दधिराधाउतै कहुं डोलतनंदललाचितचायकै । बंकविलो-
कनिभांकतित्यों कोउजानतनावंधरैनावनायकै । काढत-
माखनताखनसै मेहँदीकरवुन्दरहीछबिछायकै । छीरससु
द्रमैडोलैममारख इन्दवधूज्यौंसुधासोंअन्हायकै ॥ २ ॥ क-
रतारकरेइहिँकामिनीकेकर कोमलताकलतालुनिकै ।
लघुदौरवपातरौथूलौतहीं सुसमाधिटरैसुनिकैसुनिकै । ति
नसैमेहँदीनकेवुन्दवने यहतोषकहैउपमागुनिकै । सखिमा-
नोसरोजकेपातमनोज विसातीविछाईचुनीचुनिकै ॥ ३ ॥
लाडिलीकेकरकीमेहँदी छविजातकहीनहींसंभुहूजूपर ।

भूलिहं जाहि विलोकतही गडिगाढेरहे अतिही दृगदूपर ।
इन्दवधूवटकेटकेदल वैठी विछाइ ज्यों कंचनभूपर । बांधीस
नोरंगरेजमनोजसु चूनरीनौरजपातकेजपर ॥ ४ ॥

॥ कलाइवर्णन ॥

चुरियानहूँ मैचपिचूरभयो दविछंदपछेलिनघाईं कहूँ ।
मनुमनकुंभारसुकंचनकी मृत्तिकालैसुअं चिवनाईकहूँ । ह-
रिसेवकैज्यायोचहैतौसुनै जदिसोंघीसुधाजियज्याईकहूँ ।
लखिपाईकलाईतेरीजवते तवते उनको नकलाईकहूँ ॥ १ ॥
दौठिपरौनदलालैकहूँ ब्रह्मानललीकीसुश्रेककलाई । ता-
छिनते तजिखानअपान सुहायरीहाययहैजकिलाई । अ-
सौदसालखिकैउन्हकी समुझायोरसीलेतवोनाकलाई । धू-
मतहैब्रजवीथिनमै रटलायरहेहैंकलाईकलाई ॥ २ ॥
सुन्दरसूधीसुगोलरचीविधि कोमलताअतिहीसरसातहै ।
त्योहरिअधजरावजरेखरे कंकनकंचनकेदरसातहै । चूरी
हरीविलसैजिहिमै तिहिदेखिहियोसवकोहुलसातहै । अ-
सौकलाइलखे विकलाई भईकलआइनहींदिनरातहै ॥ ३ ॥

॥ वाहुवर्णन ॥

गिरिराजउरोजनकीसरहह विराजतकंचनकीभुवभा
सौ । हारहमेलतरंगनसंग सुमेलसुधारसकीसरितासौ ।
गोरीसुभायहीभायउतारो सरूपमहाठगकीजुगफाँसी ।
काममहीपधुजाकीभुजा तुवकोमलवालमनाललतासौ ॥१॥
दूरितेदौपतिदेखतही प्रतिपच्छवधूनकेहोतहजाहै । वार
पयोधिघटानकेवीच जुरीबिजुरीकीमनोतनुजाहै । वाछनि

सोंसरसातमनोहर राधिकाकीअंगिरातिभुजाहै । कान्ह
केज्ञानअलंकितअंकित सैनकीमानोविजेकीधुजाहै ॥ २ ॥

॥ सुखवर्णन ॥

दृगभौँरसेह्वैकैचकोरभए जेहिंठौरपैपायोवडोसुखहै । ल
हरैउठैसौरभकीसुखदा मच्योपून्योप्रकासचहूँरुखहै ।
ठगिसेरहेसेवकस्यामलखे सपभोहैकिधौँयहसौँतुखहै । व
नअंवरमेअरविंदकिधौँ सुचिहूँदुकराधिकाकोसुखहै ॥१॥
दिनरैनिसेभावनकेरचैगोत उदोतमईनितजान्योपरै । हर
केठिगअंगअनंगसठै सुखसंगपैकोकमैसान्योपरै । हरि-
सेवकभाँवतीकोसुखयोँ श्रुतिवंतह्वै चोरपिछान्योपरै । भो-
सुधाछविशिंधुतैँ सोअरविंदसौँ हूँदुसोकैसेबखान्योपरै ॥२॥
सूरसौँमागिप्रभाप्रतिपून्योकि छीरससुद्धमेजाइअन्हात-
है । उज्जलकैकरनीअपनी रघुनाथकियेरंगलालविभातहै
रोजकीहारिचितैसशिप्यारीसौँ जीतिवेकोंकितनोललचात
है । कौनअथाकहियेसुखदेखतन्यायसौँचंदसुपेदह्वैजातहै ३॥
फूलेइफूलनकोँ तुमसोहि पठावतीफूलेजितैसतपातहैं । फू-
लसौँजातिह्वैहौँहँतितै करतोरतफूलनमेरेअघातहै ।
राधेजूताकोकहाहौँकरौँ इनसोचनमेरोतोकाँपतगातहैं ।
फूलेइफूलहौँलावतीहौँ सुखरावरोदेखिकलीभयेजातहैं ॥४॥

॥ बानीवर्णन ॥

सौठीअनूठीकढैँ बतियाँ सुनिचौतिनकीछतियाँदरकी-
परै । कोकिलकूकजिकीकाचली कलहंसनहूँकेहियेधरकी
परै । प्यारीकेअननतेरौकढैँ तिहिँकीउपमाद्विजकीँफरकी

परै । धारसुधारसुधाधरते सु मनोवसुधासुधाढरकीपरै ।
 फूलनसीभरिसूलहरै हरिजीवनमूलहै औनकेईठी । दू-
 रिलीं दौरतदंतनकीदुति ज्योंअधराउधरैअतिनीठी । तो-
 प्रभरीसुसकाहटमोद सुहोतहैसौतिसवैलखिसीठी । जखपि
 यूपमयूपकीभूख सिटैवातियावतियांसुनिमीठी ॥ २ ॥ आ-
 जुलखीललनापढिवेसे कहाकहौंमैहूंअचुरागी । वार
 कतोपहिलेसुनलेतिहै सुन्दरबोलगुरूते सभागी । अजर-
 हैदुं हते सुनिये उचरैफिरिवोलसुधारसपागी । सोहतवोंसु
 पढ़ावनहारकों आपुहीमानोपढ़ावनलागी ॥ ३ ॥

॥ अथ दंतवर्णन ॥

दाडिमदेखितपोवनसेवत दानिकसिंधुसमायगएहैं ।
 मंगलकेकुलकेमनोवालक नूरकहैएअकासछएहै । तूतरु-
 नीरंगदंतनते सु सुनीनहूंकेमनमोललएहैं । लालकहाउप-
 सावरनौ रदलाललखेरदलालभएहैं ॥ १ ॥ पांचंधुवावतही
 नदलालसों अँठिअमेठनरंगभरीसी । चारूमहाकवि-
 कीकवितासी लसैरसमैदुलहीउमहीसी । सीवीकरैसोभ-
 वानकेभांवत देहँदिपैदिननेहज्योंसीसी । दंतनकीदुतिवाहि
 रहैकरजाहिरहोतिजवाहिरकीसी ॥ २ ॥ वारिजसैविल
 सैअलिपॉति किधौंअलिअच्छरसंभवसीके । सैनमहीपसिंगा
 रपुरी निजवांहवसाईहैमध्यससीके । आनदसोंदरसीदस-
 नावलि स्यासमिसीमिलिअसीलसीके । फूलनकीफुलवारिनमै
 मनोखेलतहै लरिकाहवसीके ॥ ३ ॥ घुंघुटभीनेदुल्लकीभूलें
 भूकैदृगवंकितकाननहै ॥ जगभोंहनबीचथक्योमनगोहन

ओठनलालरह्योरंगवै । संदहँसैखनागरिकोसुख चोपन
 कीउपमातबहै । तिमिरावलीसाँवरेदंतनकेहित लैनधरेम
 नोदीपकावै ॥ ४ ॥ कोबरनैउपमाकविगंग सुतोहीमेहैगुन-
 जरवसीके । जादिनतेँ दरसेसुसुकानिसों कान्हमएवसतेरीहँ
 सीके । चंदसेअननमैछबिछाजत अैसेबिराजतहंतमिसीके
 फूलनकीफुलवारिनमै मनोखेलतहैलरिकाहवसीके ॥ ५ ॥

॥ अथ अधरवर्णन ॥

लालनकेमनतेँ जिनको छिनएकननेकुछुटोविसरामहै ।
 विद्रुमसेतिनओठनजो बरनैरसरजसुतोभतिछामहै । मो
 मतिसानिसुधाजलतेँ हरिकोअनुरागसहासचिधामहै । ठा
 रिकैवै जसुधाधरसाँचे रच्योविधिनैअधराअभिरामहै ॥ १ ॥
 बैठिविचारिविरंचिकियो रचिअंगसुठंगसवैउपमानको । हे
 रतहींविरहानलव्यापिहै कोपुनिधापिहैप्रानप्रमानको ।
 हैवसुधामैनऔप्रधिअन सुमेरहरीसुभल्यौसुखदानको । च
 न्दचहेटिसमेटिसुधारस कीन्होतवैतियकेअधरानको ॥ २ ॥
 बरविद्रुममैकहाँलालीइतौ कहाँकोमलताजपाअैसोगहै । क
 हँलालमैलालप्रकासइतो समताकहाँवापुरोविंवलहै । कहाँ
 जपमयूषमैएतीमिठास पियूषहनाहरिऔधकहै । जितीचा
 रुताकोमलतासुकुमारता भाधुरताअधरामैअहै ॥ ३ ॥

॥ ठोढीवर्णन ॥

आरसीअंकुरनोकसिंगारसी वीचरहीपरकारनिसानी
 कैविरहीनकेहायकोदाग अहैवसनीलकनीअनुमानी । वीज
 केदृन्दमेहैतमछंद कलिंदजाबुंदलसैदरसानी । नेहमईतिल

ठोड़ीकिगाड़सै पेरिदईसनुप्रेमकीधानी ॥ १ ॥ ग्यानभयोज
वतेतवतेतिय एकलखीमनिआपअतूलसै । दामिनिज्यौंज
सुनाप्रतिबिंदित यौंभलकैतननीलदुक्कूलसै । देखतहीसुखदे
खेविनादुख जायपरीकिततेउतभूलसै । ठोड़ीपैंस्यामलविंदु
गुपाल मनोअलिवालगुलावकेफूलसै ॥ २ ॥ प्यारीकिठोड़ी
कोविंदुदिनेस किधौंविसरामगुविंदकेजीको । चारुचुधोक-
निकासननीलको कैधौंजसावजस्योरजनीको । कैधौंअनंग
सिंगारकोरंग लिख्योवरदंअवसीकरपीको । फूलसरोजसै-
भौंरीवसीकिधौं फूलससीसैलग्योअरसीको ॥ ३ ॥

॥ नासिकावर्णन ॥

वनवासीकियेसुकुपीठिनिवासी तुनीरजोवीरविलासिका
है । तिलसूनप्रसूनहू खेतगिरे गुहासेवकासिद्धनिवासिकाहै
सुवतेगसुनैनकेवानलिये सतिवेसरिकीसंगपासिकाहै । बहु
भावनिकीपरकासिकाहै तुवनासिकाधीरविनासिकाहै । १।
लदसातीसनोजकेआसदसों अंगजासुसनोरंगकेसरिको । स
हजैनधनाकते खोलिधरी कछौकौनधो फंदयासेसरिको । क
ललापतिहेरिहेरायरहे लख्यौंअरनहींइहिंकीसरिको ॥ क
रिकौनउपायवधौंहेदई लोहिवेधतवेधयावेसरिको ॥ २ ॥ कुं
डलरूपअनूपविराजत ताविचसोतीकीजोतिप्रकासी । सो
जगदीसविलोकतआनि गड़ीहियसेनहींजातिनिकासी । जा
हिलखेते फसेसुनिकौसिक एकवच्योजोरह्योअविनासी । रा
जतिप्यारीकीनासिकामै यहनथयकिधौंमनमध्यकीफांसी ३।

॥ कपोलवर्णन ॥

नहिँ जानिये कौने विरंचि रचे समता कहां साखन गोलन
 की । किमि काल के दर्पन की हीं कहीं सुख भाइन के संग तोलन की
 कमलापति देखि छ के सीरहे सुधिने कुर हीन हिँ वोलन की । तव
 कैसे के भाखिस के उपमा अनमोलये गोल कपोलन की ॥ १ ॥ केस
 रि के सने चंद्र के बीच रचे मनो लाल गुलाल चुनी गन । यों उजरा
 ई पिराई ललाई मलाई हके न सुलाई मी है तन । लोने सलोने से सो
 ने से सो भित हीने न असे विधातहु के धन । वोलत नाहिने डोलत
 लाल सुगोल कपोलन मोल लयो मन ॥ २ ॥ नैन गडैं तो गडैं उन मै
 छ बिमैन के वानन की सरसाति हैं । जो कुच कोर कठोर गडैं तो
 गडोवहतो कठिनै दिन राति हैं । वे अलवेलेतुहु अलवेली जि-
 न्है सुख मोर इतै सुसकाति है । कौन अचंभो कहीं यहता के क-
 पोल की गाडहि ये गडि जाति है ॥ ३ ॥ कोरै हिये दग कोर हीरा
 वरी कासों कहीं को उ होत न आडैं । खेल खरीहु मटे हिये मीं है
 रहै हमसे नित रारि सीमाडैं । काहे को काहू को दीजे उरा हनी
 आवै इहाँ हम अपनी चाडैं । पै पलमै सुसकान समै हमै लेती है
 मोल कपोल की गाडैं ॥ ४ ॥

॥ तिलवर्णन ॥

रूप कोरा सिमै कैर सराज को अंकुर आनि कटो सुध होना
 कैस सिनै तम ग्रास कियो तिहिँ कोर ह्यो से सदिखात सो कोना ।
 प्यारी के गोल कपोलन पै द्विजराजिर ह्यो तिल स्याम सलोना ।
 कैम धुपान पख्यो अलमस्त किधौं अरविंद मलिंद को छोना ॥ १ ॥
 लखी आज अचानक इंदु सुखी चली सामुहे आवति ही कठिके

उधर्यौपटधूँ घुटपौनप्रसंग गेनैनचकोरतहाँमढिकै । कमला
पतियोंतिलसोभितहोतहै गोलकपोलहिपैचढिकै । जनुसु
न्दरकोसुखइँडुलसै तिलएकमयंकहूतेवढिकै ॥ २ ॥

॥ अथ अलकवर्णन ॥

तीयनदीजलसुन्दरता कुचकोकसुवारसिवारलसै । दृगकं-
जतरंगवलौरसरोस करारेलखेँ सुधिसातौनसै । लटकीलट
वेसरिकैवनसी सुकुतामनिकंठसुचारोफँसै । मनमोहनकोमन
मीनविधायकै रीभिकैमानोमनोजहँसै ॥ १ ॥ हैँ कचस्याम
सोईतनयारवि तेजकढीएकसौतिनवीनहै । कैमधुपावलीमं
जुमनोहर वैठिरहीढिगकंजअधीनहै । वंकपरीलटएकदृगं-
तर सोछविदेखतप्यारेप्रवीनहै । रूपप्रवाहनदीतटखेलत
सैनसिकारीवभावतमीनहै ॥ २ ॥ कनअनसुराविँडुलीदिये
भाल सोनेकनसोमनतेँटहलै । मनुइँडुकेबीचसैकीचअमी
अलिवालकआयपत्योचहलै । कविब्रह्मभनैघुघुरीअलकैँ अप
नेवलकाढनकोकहलै । नुरिवैठेमयंककेकूलदुहूँदिसि कोज
नपैठिसकैपहलै । ॥ ३ ॥ रैनितनीदीप्रियापलिकापर सोभा
समूहइँकैठरहीहै । सोछविप्यारेप्रवीनविलोकत आनदसौं
हियपैठिरहीहै । गोलकपोलपरीलटएक सनेहसनीकछूँअँ
ठिरहीहै । हेतुअमीनिसिप्रालके ऊपर व्यालवधूमनोवैठिर-
हीहै ॥ ४ ॥ आनदलालगोपालकेकारन कौन्होसिंगारजुरा
वेवनाई । कुंकुमआडसुकंचनदेह दिपै सुकताहलकीभालका
ई । सीसतेँएकछुटीलटसुन्दर आनिकैयोँकुचपैँलपटाई । गं
गकहैमनोचंदकेबीचहै संभुकोंपूजननागिनिआई ॥ ५ ॥

॥ नेत्रवर्णन ॥

कांजनखंजनगंजनहै अलिअंजनहूँ मदभंजनवारे । एकजरा
 रेढ़रारेपियारे विसारेनजातविसारेविसारे । अंचलओटअ
 खारेमैखेलत तारेनिहारेहै चंचलतारे । सोमसुधासरकेम
 धिडोलत मानहुँ मीनभएमतघारे ॥ १ ॥ लसैवीरै चकासी
 चलै श्रुतिमै भकुटीजुवारूपरहीछविछुँ । अलकावलिडो-
 रीकसीनृपसंभुजू सूतअनंगदर्ईछरीछुँ । तमसावरे रंगहि
 जानतहै हठिपीछूपरेहै चलै जितहै । करछालतआव-
 तनैनकिधौए सुधाकरकेरथकेमृगइ ॥ २ ॥ कांजसकोचेगडेर
 है कीचनि मीननिवीरदियोदहनौरनि । दासकहैमृगहूँको
 उदासके वासदियोहैअरन्यगंभीरनि । आपुसमैउपमाउपमे
 यहै नैनयेनिंदतहै कविधीरनि । खंजनहूँकोउडायदियो
 हलकोकरदीनअनंगकेतीरनि ॥ ३ ॥ आइहौँ देखिसराहेन
 जातहै याविधिषूँघुटमेफरकेहै । मैतोयों जानीमिलेदोउ-
 पौछेहै कानलख्योकिउन्है हरकेहै । रंगनते रचिते रघुना
 थवे चासकरेकरताकरकेहै । अंजनवारेसहीदृगधारीके खं
 जनधारेविनापरकेहै ॥ ४ ॥ चंचलचोखेसेचीकनेसे चटका-
 रेसेचौगनेरूपभिरामके । सानसगेसेविखानलगेसे सयानप
 गेसेरंगेसेललामके । माजिममारखदैविषअंजन सीधेसेदीधे
 हृदैषनस्यामके । वानचितैदृगतेरेपियारी रहेसरकामकेए
 कौनकामके ॥ ५ ॥ प्रानपियारीसिंगारसँवारि लियेकरआ
 रसीरूपनिहारै । चंदसेआननकीदुतिदेखति पूरिरह्योउ
 रआनदभारै । अंजनलैनखसौरमनी दृगअंजितयोउपमा-

नविचारै । चीरकेचोंचचकोरनकीमनो चोपते चंदचुगा
वतचारै ॥ ६ ॥ पंकजकेदलद्वैपरद्वै भंवरौरसलालचहेत
लगीहै । हैनटनीसुरनायककी निरतैकलहावसोंभावप-
गीहै । बालकेनैनकीपतरियाँ निसिवासरलालकेहीसेखगी
है । कंचनकीभाखरूपडवीनमै खोलधरीमनोनीलनगीहै । ७
सुंदरीसाजसिंगारसुधारति सौतिकेगर्वहिगंजनकों । गंगलि
येकरसारसुता मनसोहनकेमनरंजनकों । काञ्जलचासदिये
अंगुरी तिहिमैमेहँदीरंगअंजनकों । अँसौजचीहियसैउपसा
मनोगुंजचुंगावतखंजनकों ॥ ८ ॥ मनसोहनीसूरतिराधि-
काकी लखिमोहनकेमनप्रेमपग्यों । चहुँ औरते फौलीहैचंद्र
कसी सुखकीछविनंदकुमाररग्यों । दुहुँ नैननवीचमेकाजर-
रेख विराजतरूपअनूपजग्यों । रविकोंतजिचंदसोनेहकियो
अरविंदनमानोकलंकलग्यों ॥ ९ ॥

॥ अथ भौंहवर्णन ॥

गोरीकिसोरीसुहोरीसीदेहते दामिनीझीडुतिदेतिवि
दारै । नारिनवैसवनारिनिकी जवधारीकोरूपअनूपनिहा
रै । भौरसीभौं हनसोहिरही सुरकीउरते नटरैपलटारै ।
भीजेमनोसुखअंजुकरस भौरसुखावतपंखपसारै ॥ १ ॥
नासिकाजपरभौंहनकेमधि कुंकुमविंदुसृगंसदकोकलु । पू-
छते पंखपसारिउड्यो सुखओरखगालखिमोतिनकोगलु । दे
वकेनैनतुलानपलाधरि भागसुहागकेतालतटीतलु । नारि-
हिये त्रिपुरारिवँध्योलखि हारिकैमैनउतारिधख्योधनु ॥ २ ॥

॥ अौनवर्णन ॥

कौधौ सुधाधरजूदुहं और सुधारधरे सुसुधाके द्विदोन है
 कौधौ निसान एलोचनवानके भौं हकमानके कामके जोन है ।
 कोन है जोनहिँ सो हही देखि किधौं सर्वज्ञ हैं तौन हीँ मौन हैं ।
 औन हैं ज्ञानके मानके दोन है औन हैं तीयके जीयके रौन हैं ॥ १ ॥
 दासमनोहर आननवालको दीपतिजाकौ दिपै सब दीपै । औन
 सुहायै विराजिरहे सुकताहलसंयुतताहिसमीपै । सारौम-
 हीनसोलौन विलोकि विचारत हैं कविके अवनीपै । सो दरजा
 निससी हीलिली सुतसंगलिये मनोसिंधुमैसीपै ॥ २ ॥ हेम-
 सो अंगहियो हुलसै हरिनाछी सुनेहनयोसनबंधै । ठौरही ठौर
 रजगौसदनहृति ताहिरप्रेमके सायकसंधै । वीरीनहों इवि-
 राजतकानन जाननकोसनलावतबंधै । लैकरभांभावजावन
 कोसु चढयो मनोचंदसुमेरकेकांधै ॥ ३ ॥ वसिबर्षहजारपयो-
 निधिसै बहुभांतिनसीतकौधीतसही । कविदेवजूत्यों चितचा
 हवनी सुचिसंगतिसुक्ताहं कौगही । इहिं भांतिनकीनेासवै
 तपजाल सुरीतकछूकनवाकौरही । आजहँ नइतेपरसीप
 सबैइनकाननकोसमतानलही ॥ ४ ॥

॥ यञ्ज लिलाटवर्णन ॥

कौधौ सिंगारके वारिजकोदल नूतनरूपवतीसरसीको ॥
 कौधौ अनंगको आसनलै दसकैछ विकंचनजोतिलसीको । पा
 रसनेकविलोकतही वसकैसनलेतहैकान्हरसीको । बालको-
 भालवन्यो अतिसुंदर भागभद्यो मनोभागससीको ॥ १ ॥ भा
 गको भौनसुहागको चौंतरो सुंदरताको सिंघासनसोई । साग

रहैरसकोपुलप्रेमको लोचनपंथिनकोसुखहोई । नूरकहैन
सुनैलडवावरी चंदहिदोषकछूनभलोई । होतनहींसरितेरे
लिलाटकी तौससिचौथकोदेखैनकोई ॥ २ ॥ सोहतअंगसु
भायकेभूपन भौरकेभायलसैलटछूटौ । लोचनलोलअमोल
विलोकत तीयतिहंपुरकीछविलूटौ । नाथलटूभयेलालनजू
लखिभामिनौभालकीबंदनवूटौ । चोपसोंचारसुधारसलोभ
विधौविधुसैसनोचंदवधूटौ ॥ ३ ॥ एकेसमैटपभानुसुता पर-
भातहीकामकीकेलिवनाई । नैननकीलखिआरतिकौरति
कौरतिमोतिनलालसुहाई । वेदीजरावलिलाटदिये गहिडो
रौदोऊपटियापहिराई । ब्रह्मभनैरिपुजानिगह्यो रविकीसु-
सकैजनुराहुचढाई ॥ ४ ॥

॥ अथ पाटीवर्णन ॥

चौकनीचारूसनेहसनौ चिलकैदुतिमेचकताईअपारसों
जीतलियेमखदूलकेतार तसौतमतारद्विरेफकुमारसों । पा-
टीदुहँ विचमागकीलाली विराजिरहौचौ प्रभाविसतारसों
सनोसिंगारकीटाटीसनोभव सींचतहैअनुरागकीधारसों । १
संजनकैतियवैठीअवासमै पासखवासिनिहैंसवठाढी । सारौ
सुगंधसचिक्कनकै सुभवेनौवनायगुहौअतिगाढी । पाटिनवी-
चसिंदूरकीरेख पुखीलखियोंउपमाअतिवाढी चंदकेलीलन
कोंभुकिराहु मनोरसनासुखवाहिरकाढी ॥ २ ॥ सोवतवा
लगोपाललखी सुखअंचरटारिकैमोदभरेउर । कोकविज
छविभाषिसकै भमभूरिरहे मनपूरिसुरासुर । मागसैसिंदुर
सोहिरह्यो गिरधारनहैउपमानतिहंपुर । मानोसनोजकी

लागीठपान पखोकटिवीचते राहुवहादुर ॥ ३ ॥ बैठीसिं-
गारसिंगारकैवाल दयोमृगविंदुअनूपमभालपै काकहियैउ
पमातिहिंकी धुंधुवारीलुरै अलकै दोऊगालपै । पाटिनवी-
चसिंदूरकीलीक विराजति हैद्विजऐसेसुहालपै । मैनसहीप
मनोजगजीतिकै खूनभरीवरछीधरीठालपै ॥ ४ ॥

॥ अथ वेनीवर्णन ॥

मृगनैनीकीपीठपैवेनीलसै अतिसोधेसुगंधसमोयरही ।
कचचिक्कनस्यामचुभेचितमै सुसुकेसीसुकेसनजोयरही । उप
साकबिदलकहाकहिये रविकीतनयातनतोयरही । मनोकं
चनकेकदलीदलऊपर सांवरसीसांप्रिनिसोयरही ॥ १ ॥ रा-
ख्योसयंककेपाछेफनीफान रूपवखानतयाकोहितपर ॥ नेह
सनौवनीवेनीगुलाब निसेनीकोऊसुखकीनहींदूपर । पीठिमै
काहकिदीठिधसैन उपायबिलोकियेयाबृजभूपर । अमृतपीव
तपूँछडुलै मनोकंचनकेकदलीदलऊपर ॥ २ ॥ कैमधुपावलीमं
जुलसै अरविंदलगीमकरंदहियोहै । कैरजनीमनिकंठरिसा
यकै पाछे कींगौनकियोअरिसोहै । वेनीकिधौंयाकलंकचुवै
किधौंरूपमसालकोधूमकरोहै ॥ कंचनखंभकेकंधचढी थकि
चंदगहेसुखसांप्रिनीसोहै ॥ ३ ॥ सेजते ठाढीभईउठिबाल ल
ईउलटीअंगिरायजह्यार्इ । रोमकीराजीविराजीबिसालमि
टीतवलीअरुपीठिखिलार्इ । वेनीपरीपगऊपरपाछेते ब्रह्म
यहैउपमाउरआई । लोकत्रिलोककेजीतिवेकारन सोनेकि
कामकमानचढ़ार्इ ॥ ३ ॥

॥ केसवर्णन ॥

हठिमागतवाटकिधौंलछिमौकी सरोजसोंआनिसिवा-
रअरे । किधौंआरसीकेघरतेउतसंभु समूहफनौछविसों
वगरे । इमिराधिकाकेसुखकेचहुँओर विराजतवारमहा
सुधरे । भजिचंदचल्योविचल्योरनते तमवृंदमनोजुरिपा
छेपरे । १ । कैसीछवीलीकीछायरहीछवि छूटिरहेकचकुं-
चितकारे । कौनकुहूधनकौनकितौक करैतिनसोंतमक्योंस
मतारे । सोहतआननजपरयों अलिवारिजवीचमहामतवा
रे । कैविधुजपरहेतुअवै अहिकेमिसकेसवसौससुधारे ॥ २ ॥
जनुइन्दउयोअवनीतलते चहुँओरछटाछविकीछहरौ ।
तहाँदेखतसंभुगोपालखरे तियकेसुखकीसुखमासिगरी । व
दिएडिनलौंउमड़ेबड़ेवार भईतटराधिकान्हायखरौ । जनु
सोतसमेतधरेतनदिव्य मनोजलतेजसुनानिकरौ ॥ ३ ॥
मंजनकैतियवैठीअगार वगारदयेजनुमारकुमारहैं । कोज
कहैतमतोमक्रीधार कोजमखतूलकेतारसिवारहैं । कौनक
हैउपमातिनकी द्विजकेससुकेसीकेडारतछारहैं । सारहैंप्री
तमकेदृगके विधुरेसुधरेअलवेलीकेवारहैं ॥ ४ ॥

इति नखसिख ।

॥ अथ नायिकालच्छन ॥

दोहा ॥ जिहिविलोकिसवसमयमै मनरसवसहैजात ॥

ताहिबखानतनायिका सकलसुमतिअवदात ॥

यथा । ताराकिधौंविधुदारकिधौं धृतधारसीपावकहैप
रिरंभौ । कामकीकामिनीकैमधुजामिनी दीपसिखाकिधौं-

विज्जुसदंभौ । देखीनजातिविसेखीवधू किधींहेमवरे खीरभा
रुचिरंभौ । सांभससीक्रीप्रभातकोभानु किधींवृषभानकेभौ-
नअचंभौ ॥ १ ॥ चंदकलाकीकलाकलधींतकी कैंचपलाधिर
है छविछानै । कैससिसूरजकीकिरनै इकठौरहै रूपअनूप
मसाजै । श्रीपतिजोतिकीज्वालकिधीं अवलोकातहीदुखदौर-
घभाजै । पावकज्वालकैदीपकमालकै लालकीमालकैवालवि
राजै ॥ २ ॥ दासललानवलाछविदेखिकै जोसतिहैउपमान
लतासी । चंपकमालसीहेमलतासीकि होइजवाहिरकीलव
लासी । जोतिसींचित्रकीपूतरौकाठिकि ठाढ़ीमनोजहिकी
अवलासी । दीपसिखासीमसालप्रभासी कहींचपलासीकिचं
दकलासी ॥ ३ ॥ राधेकेअंगगोराहूसीऔरगोराईविरंचिवनाव
नलीन्ही । कैसतबुद्धिविवेकसींएक अनेकविचारनसैसतिदीन्ही
वानिकतैसीवनीनावनावत केसवप्रस्तुतहोगईहीनी । लैतव
केसरिकेतकीकंचन चंपककेदलदामिनीकीन्ही ॥ ४ ॥ रूपअ
नूपलख्योकितनो रघुनाथकहैव्रजकीवनिताको । पै नहिंऐसो
पखोकोजदीठि बन्द्योइहिंभातिनतेसिरपाको ॥ औरकहीं
सोसुनेाचितहै जिहिंभातिनतेनिरख्योगुनवाको । जातदि
गंतनलौंचलिकै मिलिसाथससौरकेसौरभजाको ॥ ५ ॥
विहंसैदुतिदामिनीसीदरसै तनजोतिबुन्हाईउईसीपरै । ल
खिपायनकीअरुनाईअनूप ललाईजपाकीजुईसीपरै ॥ निकरै
सीनिकाईनिहारेनई रतिरूपलुभाईतुईसीपरै । सुकु-
मारतामंजुसनोहरता सुखचारताचारुचुईसीपरै ॥ ६ ॥
कुंदनकोरंगफोकोलगै भलकैइमिश्रंगनचारुगोराई । आखिन

मैअलसानिचितौनिमै मंजुविलासनकीसरसाई । कोविनमो
लविकातनहीं मतिरामलहे सुसकानिमिठाई । ज्योंज्योंनि
हारियेनीरेह्वै नैननि त्यों त्यों खरीनिखरैसौनिकाई ॥ ७ ॥
आईहुतीअन्हवावननाइन सौधैलियेकरसूधेसुभाइन । कंचु
कोछोरधरीउवटैवेकों ईंगुरसेरंगकीसुखदाइन । देवजूरू-
पकीरासिनिहारति, पायते सीसलोंसीसते पाइन । ह्वैरही
ठौरहीठाड़ीठगीसी हंसैकरडोढीदियेठकुराइन ॥ ८ ॥ सुन्द
रजे, वनरूपअनूप महागुनज्ञानकीरासिमचीत् । सीलभरी
कुललोकउजागरि नागरिपूरनप्रोसपचीत् । भागकोभौन
सुहागसौंभूखित भूमिकोभूपनसाँचीसचीत् । आठह्रअंगत
रंगनरंग सवैरुचिसंचिविरंचिरचीत् ॥ ९ ॥ राधिकारू-
पविरंचिदच्यो सबलोलनकीसुखमासुभलैलै । अंगकेरंगन
केठिगजात ह्वैजात हैसंभुसवैरंगमैलै । लालनसोंपरवाल
नसोंवंधी लालनजानिपरैवहगैलै । पाँवधरैजितहीवहवाल
तहींरंगलालगुलालसोफैलै ॥ १० ॥ जाहिरैजागतिसीज-
मुना जववूडैवहैउमहैवहवेनी । त्योंपदमाकरहीरकेहारन
गंगतरंगनकीसुखदेनी । पायनकेरंगसोंरंगिजातिसीभाँ
तिहीभाँतिसरसूतीसेनी । पैरैजहाँईजहाँवहवाल तहाँत
हाँतालमैहोतिचिवेनी ॥ ११ ॥ उसरैपटपौनप्रसंगनसों दुति
दामिनीकेसमदौरतिहै । वतरायसखीजनसोंसुसकाय सुचां
दनीकीछत्रिकेरतिहै । अधिकायसुगंधनिसेवकचार मलिं
दनकोभाकभोरतिहै । धनिवालसुचालसोंफालभरेलों म-
हीरंगलालमैवोरतिहै ॥ १२ ॥ चंदसोआननचाँदनीसोपट

तारेसीमोतीकीमालविभातिसी। आखैकुमोदिनीसीहुलसी
मनिदीपनिदीपकदानकीजातिसी। हेरघुनाथकहाकहिये प्रिय
कीतियपूरनपुन्यविसातिसी। आईजुन्हाइकेदेखिवेकोवनिपू
न्योकिरातिमैपून्योकिरातिसी ॥ १३ ॥ चिनगीचमकैविचअं
बलसोन लताकेमताभटकेरहिगे। दुतिदौरै किदामिनीऔ
रैकोउ गतिचोरै खरेखटकेरहिगे। सबअंगलखेविनकाक
हिये गुनसेवकसौंहटकेरहिगे। जितजाइपरेतितहीकेभये
दृगमेरेटकेअटकेरहिगे ॥ १४ ॥ चमकैदसनावलीकीनिक
रै चपिचादनीहसुरभानौरहै। करपायनकीअरुनाई
लखे कमलावलीहविलखानीरहै। नरनागरीकीहनुमा
नकहा सुरनागरीसोभासकानीरहै। गतिहेरिसरालील
जानीरहै छविपैरतिरानीविकानीरहै ॥ १५ ॥ प्रभाचप
लाकीकहैकोभली लजीजासाँ दबीघनमैवहराति। कृपाक-
रछीनमलीनमहा दुतिताकीनहींसुखपैठहराति। कहीह-
नुमानपरैतियक्यों प्रतिअंगनतेँ उपमालहराति। नहींतनु-
रूपविलोकिपरै तनऊपरह्वै छवियोंछहराति ॥ १६ ॥ मद
मैनसाँ योअलसानीलसै जनुजागोभले भरिजामिनीहै। म-
दुबैनखुनेहनुमानकहै कहाकोकिलमंजुकलामिनीहै। चक-
चौंधसौलागैलखेअखियां तबकैसेकहौरतिकामिनीहै। पर-
जंकपैसोहैसोहागभरी यौंमनौधिरह्वै रहीदामिनीहै ॥ १७ ॥
गतिमंदयोंजाकीमजाकीलखे हँसीहोतिगयंदकेचालकीहै।
सुखहेरिकैचंदलजोईरहै रूचिकोकहैकंजकमालकीहै। ह
नुमाननखावलीपै तियके अवलीपरैफौकीप्रवालकीहै। द-

विदामिनौजातिप्रभानिरखे' कितनौकृविमंजुमसालक्रीहै १८
दासललानवलाकृविदेखिकै मोमतिहैउपमानलतासी। चंपक
मालसीहेमलतासी किहोइजवाहिरकीलवलासी। जोतिसों
चित्रकीपूतरौकाढ़ि किठाड़ीमनोजहिकीअवलासी। दीप
सिखासीमसालप्रभासी कहींचपलासीकिचंदकलासी ॥१६॥
लखिकैदृगमीनदुरेजलमे मनमेअरविंदसकानेरहैं। वढिवेनी
भुवंगमदेखिचपे कटिकेहरिचाहिलजानेरहैं। उकसोहैउ
रोजनदेखिविजै मनदेवनकेललचानेरहैं। मुखचंदकीदेखि
प्रभादिनमै चितमैचकवाचकवानेरहैं ॥ २० ॥

दोहा ॥ तीनिभातिसोनायिका वरनतसुकविविचारि।
स्वकियापरकीयावहुरि सामान्यानिरधारि। तत्रस्वकीया
लच्छन। जानैमनवचकर्मसों पतिहौकहंपरमेस। लाजसी-
लगुनखानितेहिं स्वकियाकहींसुवेस ॥

॥ स्वकीयाजथा ॥

—oOo—

व्याहिकैआइहैजादिनते' रवितादिनते'लखीछाहनजा
की। हैंगुरुवालसुखीरघुनाथ निहालहैंसेवकनीसुखदाकी। से
वाभयोवसभावतोहै हौंकहाकहियैबुधिउज्जलताकी। मेरेतो
जानिसियागुनगौरिसी हैसिरमौरतियास्वकियाकी ॥ १ ॥
रावरेकेवसरावरोभावतो क्योंरहअतिचातुरलीख्यो।
सीलसयानसुधाईकोखाद अहोरघुनाथभले'जिन्हचीख्यो। है
धनमैधनिआजुधरापर मैधनिजोतुमैआइकैदीख्यो। तोसोंउ
माऔरमामैगईवलि चाहैपतिव्रतकोव्रतसीख्यो ॥ २ ॥ सं-

चिविर चिनिकार्द्रमनोहर लाजते मूरतिवंतवनाई । तापर
 तोपरभागबड़ो मतिरामलसैपतिप्रौतिसुहाई । तेरेसुसील
 सुभायअलौ कुलनारिनकोकुलकानिसिखाई । तैहींमनोप-
 तिदेवताकेगुन गौरिसबैगुनगौरिपढ़ाई ॥ ३ ॥ बोलनिबीच
 असौजेहिंके रघुनाथकहै प्रगटैपरैचीन्ही । आननकोदुतिअ
 सीलसै जनुछीनछपाकरकीछबिलीन्ही । औरकहाँलौंक-
 हौंगुनगौरिके गौनेइतीप्रभुताप्रभुकीन्ही । सौतिकेमानहिं
 पीकेगुमानाहँ आवतआपुपराजयदौन्ही ॥ ४ ॥ डोलनिमंद
 मनोहरबोलनि चारूचितौनिमैलाजहै भारी । रोसननेक-
 कछूमनमै कविराजकहै पतिकीहितकारौ । सीलकीराससु-
 धाईप्रकास विरंचिसुधाधररूपसुधारी । धन्यधनीधरनीत
 लमै जेहिंकेधरअसौपतिव्रतनारी ॥ ५ ॥ पटतै नकरैतनवाह
 रयो निमिजाहरसूमकरै नधनै । गुनसीलसुभावसनेहपति
 व्रत वारिधिकोभवमीनमनै । कहितोखकवौनकहै धरते गु
 नैद्वारकीदेहरौनागफनै । निजनैननिते तजिनंदकिसोरहि
 औरहिचौधिकोचंदगनै ॥ ६ ॥ पगवाहिरदेहरौकेधरिवो फ
 निसीससमानहिंमानतीहै । धनसूमकोअसोनऔरलहै स
 खियानसोवैनयोंगानतीहै । निजभौनते औरकेभौनहिये
 मेह दीपगतीयलौंआनतीहै । पतिकोंतजिऔरजुवाजगती-
 तल चौधिकोचंदहिजानतीहै ॥ ७ ॥ निजचालसोंऔरजो
 बालतिन्है कुलकीकुलकानिसिखावतीहै । ननदीऔजेठानी
 हँसावैतऊ हँसीओठनहींलौंवितावतीहै । हनुमानननेकौ-
 निहारैकहँ दगनीचेकियेसुखपावतीहै । बड़भागनीपीके

सोहागभरी कवों अंगनहूँ लों न आवती है ॥ ८ ॥ रूपकौ
 रासिरचीविधिनै रतिरंचकजासमचित्तचढ़ै ना । भागसो-
 हागभरीसुधरी पतिप्रेमप्रनालीकथाअपढ़ै ना । सेखरगेह-
 केकाजसबैकरै साँससवेरेहुवेरवढ़ै ना । भानुउवैकैउवैसि-
 तिभानु दलानतेभावतीभूलिकढ़ै ना ॥ ९ ॥ सासुजेठानिन
 तेदवतीरहै लोन्हैरहैरखल्यौंननदीको । दासिनसोंसत
 रातिनहीं हरिचंदकरैसनमानसखीको ॥ पीयकोंदच्छिन
 जानिनदूसति नूतनचाववढ़ैयाललीको । सौतिनहूँकोअ
 सीसोहाग करैकरआपनेसेँदुरटीको ॥ १० ॥ लखिसासु-
 हीहासछिपाएरहै ननदीलखिज्यौंउपजावतिभीतहि । सौ
 तिनसोंसतरातिचितौति जेठानिनसोंनिजठानतीप्रीतहि ।
 दासिनहूँसोंउदासनदेव वढ़ावतिप्यारेसोंपीतिप्रतीतहि ।
 धायसोंपूछतिवातैविनैकी सखीनसोंसीखैसोहागकीरीतहि
 ॥ ११ ॥ सासुकेसौहैचितैबोकहा ननदीलखिनैनननीचेनिहा
 रति । स्थानीजेठानीनजानीकवौ कवपानीपियैकववानीउ-
 चारति । सोभसकोचसमानौरहै ठकुरानीसखीनसोंसौलै
 सँभारति । सांसनसाधिकैसेजपैसुंदरी वारकवालमहूँसों
 बिहारति ॥ १२ ॥ कोयेननाधिकटाच्छसकै सुसक्यानिनह्वैसकै
 ओठनिवाहिर । संजुमहामृदुवोलनिकीगति प्यारेकेकान-
 नहींलगिजाहिर । अंगविभूषितकैकोसकै भएभूषितअंगन-
 हींतेजवाहिर । सूधीसुधासीसुभायभरी पैखरीरतिकेलि
 कलानमैसाहिर ॥ १३ ॥ नैननकीगतिकोरनलौं अरुकोरन
 कीगतिकानलौंजानौ । काननकीगतिजीभलौंहै गतिजीभ

की कंठतरे लौं बखानो । कंठतरे ते गिरा गति है य सर्वत स-
 दार सना लौं प्रमानो । है रसना गति ओठ न लौं गति ओठ न-
 की सुसकानि लौं मानो ॥ १४ ॥ वैन की सीम सखी श्रुति लौं दृग
 की गति को रन लौं चलि जाँ हीं । हास विलास दुवो अधराल गि
 रू सवे सोर ही रू ससदाँ हीं । जैवे कि औधि है के लिके मंदिर अ-
 वे कि औधि सुमंदिर माँ हीं । और सवै मितला डिली के प्रिय प्या
 रे के प्रेम हीं की मितना हीं ॥ १५ ॥ रूप की रासिते खाले न अंग
 लजातिकु रूप सीमानि सुरूते । दैव कृपा कजरा दृग की पलकें
 न उठै जिहिँ सों निज बूते । वैन सुनेन परै श्रुति लौं सुसकै वो मिलै
 अधरान के कृते । नौ गुने का हेव सी करते वस सौ गुने सेवक सेव
 कहते ॥ १६ ॥ परगाँव की पास परोस हकी अरु गेहकी नंदजे
 ठानी सबै । जुरि आई विलोकन की दुलही उलही उर प्रीति वि
 कानी सबै । तिनके पद सेवक वाम कुण बिन काम वे संकन सानी
 सबै । इतरानी हिये सतरानी कछ वतरानी सिरानी लजानी
 सबै ॥ १७ ॥ तोहित सुंदर देवन की लिखवाई सवीमनि मंदि
 र माँ हीं । कौतुक हेत सहेत सवै सो करी निज प्रीतमतो चित चा
 हीं । जानि परीन कछू हमकी मति पाई भटूतै कहाँ किहिँ पा-
 हीं । देखी अनोखी नई नवला यह काहेते चित्र विलोकति ना
 हीं ॥ १८ ॥ पूजतीं और सवै वनिता तिनके मनमे अति प्रीति
 सुहाति है । कौन की सी खधरी मनमे चलि कै वलिका हेन जीक
 नजाति है । औसर या वरसायतको वरसायत औसीन और दे-
 खाति है । कौन सुभा वरी तेरो पछो वर पूजत काहे हिये सकु
 चाति है ॥ १९ ॥

दोहा ॥ तौनखकीयातीनविधि वरनतमतिकेधाम ।
सुग्धामध्यावहुरियों प्रौढापूरनकाम ॥

॥ तत्रसुग्धालच्छन ॥

अभिनवजोवनजोतिजेहिं अंगनिमेदरसाय । सुग्धाता-
सोंकहतहैं सुकविनकेरुमुदाय ॥

॥ सुग्धायथा ॥

दौन्हीउन्है अरुभायसखीन सुहाहाहहाकैहैंसैभरेसोद
मै । बालनसंगमैखेलतती ललानाहकहीलरेवागविनोदमै ।
राखीहैंवैनीप्रवीनजुपै अवहींइतेभाजिदुरेकहैंकोदमै ।
कोहैंहसारेकहैंक्योंहमैकू जोंसुसकैभरीसासुकौगोदमै । १।
छातीकसीउकसीनअजों सुवढावनचाहतिहैचितचायन ।
झाननलागेवड़ेवड़ेनैन रहेमिलिवैनसुधाकेसुभायन । आगे
घोंह्वैहैकहाअवहींतौ चितौतहियेमेकियेधनेधायन । घेर
कौघांधरीघूटनिलों सिरओढ़नीवैजनीपैजनीपाँयन ॥ २ ॥
देखिएदेखियाग्वालिगंवारिकी नेकूनहींधिरतागहतीहैं ।
आनदसोंरघुनाथपगी प्रगीरंगनसोंफिरतैरहतीहैं । छोर
सोंछोरतल्योनाकोछूँकरि औसीवड़ीछबिकोंलहतीहैं । जो-
वनआइवेकीलहिमा अँखियाँननौकाननसोंकहतीहैं ॥ ३॥
लावतमैनसुगंधलख्यौ सबसौरभकीतनदेतदसीहै । अंजनरं
जनहँविनस्याम वड़ेवड़ेनैननरेखलसीहै । औसीदसार-
घुनाथलखे इहिंआचरजैमतिमेरीफँसीहै । लालीनवेली
केओठनमे विमपानकहाँतेधौंआनिवसीहै ॥ ४ ॥ सैसव

कोतनकोटविजैकरि मैनअनीतकीरौतविचारौ । चंच-
 लतापगकीचखकोंदई लैचखकीथिरतापगधारी । पीनतालं
 कनितंबननेकु नितंबकीखीनतालैकटिपारी । अंतरतेंतस
 ताकोनिकारि सुरीमनकेमिसहैउरधारी ॥ ५ ॥ अरिसै
 सबैजीतिहैवेगिअरौ सिगरीगुनिवातकसूरकीहै । अधरा-
 नमैलालीककुकधरी करीनेसुकुभौंहमरूरकीहै ॥ उभरेकु-
 चत्योंहनुमानलसै तिनकीउपमाभरपूरकीहै । जनुजोवन
 भूपतिकेउरमैपरी आनिकैगांठिगरूरकीहै ॥ ६ ॥ सिधुताप-
 नकोधनलूटिवेकों हियेजोवनजोरजसावैलग्यौ । अपनोजि-
 योचाहतथानतहँ मनसंजुलमोदसढावैलग्यौ । तियकेतनदी
 प्रतियौउसगी हनुमानसोभाववतावैलग्यौ । अतिनेहसोंसं
 जुसनेहमई मनुमैनमसालदेखावैलग्यौ ॥ ७ ॥ अईतियकी
 तनदीपतिअरौ गयोपरिसेंदनुकुंदनसोन । लईगजकीगति
 मंदककुक वनैहनुमानबखानतजोन । ककुकजरापनकीछवि
 छुँ चखचंचलदेखिसराहतकोन । अरौसिधुतापनपंजरते
 जनुखंजनचाहतबाहिरहोन ॥ ८ ॥ नवनागरीकेवरबैनविधि
 च भलेईसुधासोंपगेपैपगे । ससिकेभ्रमतेसुखओरचितै चहुँ
 ओरचकोरखगेपैखगे । तियकेमनसंजुमनोरथआनि कहै
 हनुमानजगेपैजगे । सुखदैनसरोजकलीसेभले उभरैयेउरोज
 लगेपैलगे ॥ ९ ॥ गरवानेनितंबककुकभले कटिकेहरितें छ-
 सपेखियोरौ । अधरानिमैनेसुकलालीचढी वतरानिमैखा-
 दविसेखियोरौ । हनुमानभएदृगओरईसे गजलौंगतिमंद-
 निरेखियोरौ । उकसैकुचकंजकलीलौलगे याललीकीभली

छविदेखियोरौ ॥ १० ॥ लरिकाँईकेखेलछुटेनवनाय अजौन
 मनोजकेवानलगे । तरुनापनआयोनहींसजनी तरुनीनकेवै-
 नसोहानलगे । हरिकोहैंकहाँकेहैंकौनकेहैं येवखानकछू-
 कहितानलगे । अवतौतिरछेचलिजानलगे दृगकानलगे ल
 लवानलगे ॥ ११ ॥ नेकहूमानैनसीखअली भलीभाँतिसिखा
 वतिधायसुजानरौ । खेलतिहैगुड़ियानकोखेल लएँसंगमै
 सजनीमुखदानरौ । पैतुलसीतियकेअंगमै भलकौतरुनाईइ-
 तेकतौआनरौ । नैनलगेकछूपैनेसेहोन गहीअधरानकछू
 मुसकानरौ ॥ १२ ॥ छोटीसीछातीछपाकरसोमुख छाजति
 औरैकछूछविछाई । काननलागिरहेअवतौ कछूसीखननैन
 लगेकुटिलाई । खेलतहंगुड़ियानकोखेल कटीलीहै आव-
 तिदेँहसुहाई । रीभेनिहारिनिहारिनरेस कहँनईवैसक-
 हँतरुनाई ॥ १३ ॥ एअलियावलिकेअधरानमे आनिचढ़ी
 कछुमाधुरईसी । ज्यौंपदमाकरमाधुरीत्यों कुचदोउनपैचढ़
 तीउनईसी । ज्यौंकुचत्योंहीनितंवचढ़े कछूज्यौंहीनितंव
 त्योंचातुरईसी । जानौनऐसीचढ़ाचढ़िमै केहिधौंकटिवीच-
 हींलूटिलईसी ॥ १४ ॥ कौनकेप्रानहरैहमयौं दृगकाननला
 गिसतोचहैबूभन । त्योंकछुआपुसहीमैउरोज कसाकसीके
 कैचहैबढ़िजूभन । असेदुराजदुहँ वयके सबहीकोलग्योयह-
 चौचँदसूभन । लूटनलागीप्रभाकटिके बढ़िकेसछवानसोंला
 गेअरूभन ॥ १५ ॥ भारीपछ्यौतुवभोंहनरूप सुरूपदुहँ ल-
 चिछोरनडोलै । नीकोमुनीकोजरावकोटीको सुखैचिखेला
 रखरौगुनखोलै । बालपनोतरुनापनोबालको देवबराबरकै

वरबोलै । दोऊजवाहिरजौहरौमैन सुनैनपलानितुलाधरि
 तोलै ॥ १६ ॥ जोवनभानुनहींउदयो ससिसैसवहूकोप्रकास
 नाऊन्यो । ज्यांहरदीमऊकीप्रियराई जुह्वाईकोतेजभयोमि
 लिचून्यो । देवरच्योअंगअंगनरंग बढोसोसयानअयाननलू-
 न्यो । बैसवरावरदोऊदेखातहै गोरीकेगातप्रभातज्यो पू-
 न्यो ॥ १७ ॥ धूरीकपूरिसीपूरिरहीअंग दूरितै देखिहैदा
 मिनीज्यांघन । क्रोमलकंजसेहाथऔप्रांयहैं खेलतिखेलके-
 बीचदियेमन । चालचितौनिवहैकविमौरन कालिहीतै कछू
 औरैभयोतन । सैसवमैभलक्योइमिजोवन भालमैजैसेपता-
 लधख्योघन ॥ १८ ॥ नहिंनैननचंचलताप्रगटी पुनिबैननमैन
 सयानधख्यो । कविगंगअजौंपगआतुरीहै चितचातुरीनाहिं
 प्रवेसकख्यो । कबहूंकबहूंतनयो भालके अरीजोवनसैसवमा-
 भिदुख्यो । जिमियाहमहागहिरेजलमै उछलैदुरिजातअलो
 लभख्यो ॥ १९ ॥ अवलोकनिमैपलकोनलगे पलकोअवलोकेवि
 नाललकै । पतिकेपरिपूरनप्रेमपगी मनऔरसुभावलगेनल
 कै । तियकीबिहंसोहीबिलोकनिमै मनआखिनआनदयोछ
 लकै । रसवंतकवित्तनकोरसज्यौं अखरानकेऊपरह्वैभाल-
 कै ॥ २० ॥ जहँनाइनवीरोविधाइनिकी चतुराइनिसेवकसू-
 रिभई । पटहारिनिसूचीप्रकारिनिसाधु सोनारिनिकीग
 तिभूरिभई । लिखतेलखतेजिहिंरूपकोराम चितेरिनिकी
 मतिदूरिभई । धनद्वैजकीचंदकलाअवला सोललाकीसजीव
 नमूरिभई ॥ २१ ॥ सोसुग्धाद्वैभातिकी प्रथमभेदअज्ञात ॥
 दूजोवरनतभेदहै ज्ञातसुकविअवदात ॥

॥ अथ अज्ञातलच्छन ॥

दोहा ॥ तनमहँजोवनआयबो जोनहिंजानतिवाम ।

तेहिंअज्ञातजोवनतिया कहतसकलमतिधाम ॥

॥ अज्ञातजौवनाजथा ॥

—००—

सखितैहँहुतीनिसिदेखतही जिनपैवैभईंहींनिछाय-
रियाँ ॥ जिनपानिगह्योहुतोमेरोतवै सबगायडठींब्रजडाव
रियाँ । असुवाभरिआवतमेरेअनौं सुसिरेँउनकीप्रगपाँव
रियाँ । कहिकोहैहमारेवैकौनलगेँ जिनकेसंगखेलीहिभाँव
रियाँ ॥ १ ॥ कंचनकीकजरौट्रीलिये गुड़ियानकोंकज्जलपा-
रनआई । रोमावलिकीयोप्रभाउलंही लखिसोछविदेखिन
जातिवताई । चौंकिपरीसीपरीजसवंत भरीभ्रमसीसुलसी
भरिआई । पूछतिधायसोंजायगोराईमै दीपसिखाकीलगी
करिआई ॥ २ ॥ धायसोंजायकैधायकह्यो कहँधायकैपूछि
येकातैठईहै । बैठिरहीसुचितीसीकहा सुनिमेरीसवैसुधिभू
लिगईहै । सुंदरदेखिडेरातइन्है उपजीउरमाकउपाधिन-
ईहै । काचीकलीसीहीकाह्लिपरोँ अवछोटैसुपारीसीआज
भईहै ॥ ३ ॥ जातिपरीकटिछीनखरी भरीजंघटरीचपलाग
तियापै । आवतिआखइँचीखींचीमौंह भयोभ्रमआवतहै
मतियापै । मेरीसोंमोहिसुनावसखी रघुनाथसतोखवीतो
वतियापै । कौनदसायहमोहिदईदई देखुकहाभईहै छति-
यापै ॥ ४ ॥ बृभयोमैजायसयानीसखीन भयोजियमैउरखा
यहाहाहै । सूधेनकाह्वतायोकछू मनयाहीतेमेरोभयोरि

सहा है । मोहिलगै छतियाँ गरई दिनद्वैते भयो यह सोच महा
है । काहेते जतरदेति नतूँ अँचरा सुखदै अँठिलातिकहा-
है ॥ ५ ॥ देखिये आनिक कछु दिनते उरते उठे व्याधिके अँकु
रवारे । कौजियो वेगि उपाय नतौ दुखपाय है आगे भए परभा
रे । हो प्रिय सेवक प्रानतु ह्यै सुखदै है अनोखे विरंचिसँवारे ।
वीर अधीर क्यौँ होति खरी अरी पीरस है गे विलोकन हारे ।
जात नमो पै च ल्यो सजनी जननी सो कहै किन जाय सवेरी । कौ
तो उपाय तुही कसवेग नपाय परै कछु आगे क्यौँ एरी । भाँति
भई उरकी अव और लखे कविराज डेराति धनेरी । काहेते है
बढ़ि आनितंब गर्दषटिकाहेते है कटि मेरी ॥ ७ ॥ आजु मि-
ल्यो सोहि साँवरो सो एक पीत पिछौरी की बांधे होगती । मोत
नदी टितिरी छीनिहारि कछु कहँ जाती हौने हकीवाती ।
भारी लगै ये नितंब औजंघ भई कटि छीन कही नहिं जाती । वी
र कौसों जवते उन देख्यो है गाँठिसी एपरि आइ है छाती ॥ ८ ॥
दिनहँ ये चकोर चितै हीर है विकसैन सरोज विसे खियोरी ।
नटरै मनमोहनौ चाहिर है सबसौतै सकानी निरे खियोरी ।
हनुमानया कौन बलायवसी कछु पूछेते जातु मते खियोरी ।
हितमानि हमारो हमारे कहे भलामो सुख कौ छवि देखियो-
री ॥ ९ ॥ खास प्रसेद सोमालती और गुलाबके अँसे सुवासल
ए हैं । केस सचि कनहँ सहजै कटि देखे है आनिकु वानिकु ए-
हैं । सो यह काहेते एरी सखी रघुनाथवतायमै तोहि दए है ।
कानलगै बढु कै विन अँजन खंजनसे दग काहे भए है ॥ १० ॥ को-
किल कूक सुने उमंगै मन और सुभाव भयो अवही को । फूलील-

ताद्रुमकुंजसोहान लगेअलिगुंजनभावनजीको । कारनको
 नभयोसजनौयह ख्याललगेगुड़ियानकोफोको । काहेतेसा
 वरोअंगछबीलो लगेदिनद्वै कते नैनननीको ॥ ११ ॥ नेकोसु-
 हातिनजातिगड़ीउर पीरवड़ीगहिगाढीगसीक्यौं । खैचिख
 एनिखरीखरकैनहिं नौठिखुलैखुभिपीठिधंसौक्यौं । देवक
 हाकहोतोसोंजुमोसोते आअकरीविनकाजहंसौक्यौं । गां-
 ठितैतोरितनौछिनछोरिदै छातीपैकंचुकीअैचिकसौक्यौं ॥ १२ ॥
 खेदकोभेदनकोऊकहै वृंतआखिनहूअंसुवानकोधारो । त्यों
 पदमाकरदेखतीहौ तनकोतनकंपनजातसंभारो । ह्वैधौंक
 हाकोकहायोगयो दिनद्वै कहीते कछूख्यालहमारो । कान
 नमैवसीबांसुरीकीधुनि प्राननमैवखोबांसुरीवारो ॥ १३ ॥
 कालिहीगूं दिववाकिसोमै गजसोतिनकीपहिरौअतिआला ।
 आईकहाते तहापोखरागको संगगईयसुनातटवाला । न्हा
 तउतारीमैवेनीप्रवीन हसैसुनिबैननैनरसाला । जानतिना
 अंगकीवदलीछविशोवदलीवदलीकहैमाला ॥ १४ ॥ रूपर-
 सालविसालवन्यो मनमंथकोजालपखोलखिलैरौ । होनल
 गेलघुते दृगदीरघ कंचनओपउरोजउभैरौ । पंगुकहैनवओ
 वनअंग सुभैरसरंगनद्वससुभैरौ । चीरकीचोरौलगावति
 मोहि सरौरकीतोहिकछूसुधिहैरौ ॥ १५ ॥ जानतिआनिप
 रौसफरौ जवनैननकोप्रतिविंविनिहारै । बातकहैसोंखिजैसव
 सों कछुचंचलताकीसुधैनासंभारै । अैसेसुभायभएहैनए जु
 गजामगएवरकींसिधारै । चीरसोंछानिकैनीरभरैफिरि
 तीरपैआनिकैगागरीठारै ॥ १६ ॥

॥ अथ ज्ञातजौवनालक्षणा ॥

जानैजौवनआगमन अपनेतनजोवाल ।

ज्ञातजौवनाकहतहैं ताकहँसुमतिविसाल ॥

॥ ज्ञातजौवनाजया ॥

—००—

नौलवधूतनतौलतिडोलति बोलतिसौतिनकेमनभाखै ।
 जरूनितंवनकीगरतालहि पाँयगयंदनकोमदनाखै । आग
 मभोतरुनापनको विसरामभईकछुचंचलआखै । खंजनके
 जुगसावकसे उड़िआवतनाफरकावतपाँखै ॥ १ ॥ खेलति
 संगकुमारिनके सुकुमारिकछुसकुचौसनमाहीं । कामकला
 प्रगटीअंगअंग विलोकिविलोकिहँसैपरछाहीं । बह्मभनैवर
 हैउरअंचल लैछिनहींछिनचंपतिवाँहीं । डारतिहैसिवके
 सिरअंबर मानोदिगंबरराखतिनाहीं ॥ २ ॥ जादिनतेप्रखो
 जोवनजानि नवेलीकोंतादिनतेसुखछावति । रीकभरीरवु
 नाथकीसौंह अनेकनरीकिकीबातैबनावति । टाँपतिहाथन
 सौंफिरिखोलति हेरतिफेरउरोजैछपावति । चित्तमैचोपचो
 रायसखीनसौं निन्नईअंगियावेवतावति ॥ ३ ॥ प्रकचसौ
 विकसौदुतिदेहँकी दौरिगोराईगईहैदिसासौ । जागिउ
 ठीचतुराईचिरीसौ भईसतिसौतिकीसौनकिसासौ । गोकु
 लकेचखसेचकचावगो चोरलौंचौकिअयानविसासौ । जोव
 नभोरभयोतियकेतन जातिरहीलरिकाईनिसासौ ॥ ४ ॥
 आरसौमैअवलोकतिआनन भूपनभूखिसंभारतिवाँहै । संगस
 खीनमैसौखतिसुंदरि कामकलाकामनीयकथाहै । जानपरी

तनजोवनजीनत कीनतसीकविसोभसशाहै । फूलसरोजनके
हरवामिस ओछेउरोजनचोजनचाहै ॥ ५ ॥ अबतोतियवै
ठिइकांतसखीजसों कोककथानिविथोरैलगी ॥ सुनिरौतिनके
गुनकीचरचा द्विजजृतिथभौंहमोरैलगी । ननदीऔजेठा-
निनतेदुरिकै रतिभौनमैजातनतोरैलगी । अभिलाखभरे
पियऔननिमै दिनद्वैतैपिधूपजिचोरैलगी ॥ ६ ॥ गोकुल
जोवनजानिपख्यो दिनद्वैकतेहै गईवालरंगीली ॥ भूखनभू
खेजराचिनके पहिरैफरियारंगिसौरभसीली ॥ केसरिसोंमु
खमाजतिआजति लोचनबोलतिवातरसीली ॥ रीकभरीअ
पनीछविकी चलैगैलसैकांहंचितौतिछवीली ॥ ७ ॥ जोवनजा
निपख्यौजवसों तवसोरहै भावअनेकनथाप्रति । लानैनजाय
गोपालकेगेह धरौधरीधायकितेकजडाप्रति । दैअनभोरी
गिरायकैअंचल गोकुलहेरहसोंहींहै आपति ॥ बारहजार
कजायइकांत अलीकुचहाथनसोंललीनाप्रति ॥ ८ ॥ बालप-
नेकेहुतेअंगऔर तेआयअनंगकियेकछुऔरै । ज्ञाननचंद्रस
ज्ञानभयो अहखंजननैनभएवरजोरै । कौलकलीसेकरेकुच
उन्नत औरउपायभएनहींथोरै । दीपतिआपनीदेखिछकी
तिय आरसीआगेतेटारैनभोरै ॥ ९ ॥ छातीनितंबलखेदु-
लहींकेसखीनहूँकीमनसाललचानी औसौनवेलीकेनायकह
जेरि आपुसमैसवयौवतरानी सुन्दरजोवनरूपसराहत सु-
न्दरीआखिनहींमैलजानी । दीठिवचायसखीनहूँकी निजदे
हकोंदेखिउहौसुक्यानी ॥ १० ॥ बारहींवारविलोकतिछा
तीकोंवातेकढ़ैकहुँजीभरसीली । देखतिआरसीमैसुक्या

ति है छाड़िदई बतियाँ अर वीली । आंचर अंचिकै अंगदुरावति
होननपावति त्रेनियौ ढीली । थोरेई द्यौसनसों लखिलाल च-
लैव हदेखत छाँहँ छवौली ॥ ११ ॥ रंगअनूपदै अंगकछू नखते
सिखलौं फिरिसोधसुधारे । सीखिबेकोतसनापनके भएवाल
पनेकेबिलासबिसारे । सूधेही देखतहेइगजे ततकालहितेज
तिरौछे कडारे । औ चकआयोऊहाते धौं जोवन खोइवेको
अबल्यालहदारे ॥ १२ ॥ काहकिपूरनपुन्यलतासुतौ वैलि
अमूरवतू उलही है । सोनेसोजाकोसरूपसवै करपल्लवकांति
कहाउमही है । फूलहंसीफलहैंकुचजाहिके हायलगेसुझ-
तीसोसही है । आलीकरीसुनिकैबतियाँ सुसुकायतिया
सुखनायरही है ॥ १३ ॥ बेसरिवारहीवारउतारति केसरि
अंगलगावनलागी । आइहैबैनचंचलता दृगअंबलवाम
छपावनलागी । दूलहकेअवलोऊनिकोवा अटानिकरोखन
आवनलागी । द्यौसदोतीनकते बतियाँ मनभावनक्रीमनभा
वनलागी ॥ १४ ॥ खेलनकोरसछाड़िदियो दिनवैकते राति
कहांबसतीहौ । मंडनअंगसंवारनकोनित केसरिचंदनलैधंस
तीहौ । छातीनिहारिनिहारिकछू अपनीअंगियाकीतनीक
सतीहौ । तोतनकोअंचराउधस्यो अबसोतनताकिकहाहंस
तीहौ ॥ १५ ॥ चौक्रमैवौक्रीजरायजरी तेहिंजपरवारवगा
रतिसौधे । छोरिधरीहरीकंचुकीहानको अंगनते जगेजो-
तिकेकौधे । छाईउरोजनकीछबियाँ पदुमाकरदेखतही च-
कचौधे । भाजिगईलरिकाईमनो करिकंजनकेदुहुँदुंभी
औधे ॥ १६ ॥ नदसासुजेठानीपरोसिनकोतजि सौतिनकेअ

वसेरोकरै । उरअंचलकोकरसों तनिकै हियरेकेहरालखि
फेरोकरै । रतिसंदिरकेमनिपुंजनिभै प्रतिविंविनिआपनेहे-
रोकरै । कछुद्वैसते कौनवयारिलगी पियसेवकैमूढचिते
रोकरै ॥ १७ ॥

॥ अथ नवोढालक्षण ॥

दोहा ॥ जोसुग्धाभयलाजवस चहैनपतिपरसंग ।

वर वसगहिपियरतिकरै गुनहुनवोढाढंग ॥

॥ नवोढायथा ॥

आजललैदुलहीसोंमिलायहैं नीकोमहूरतविप्रवतावै ।
सोसुनिनारिनवोढहिये नवसंगमकेडरकोषरछावै । पीरीप
रीसुखवीरीनखाति गरेहिलकीशारे बोलवरावै । गोकुलऔ
रकहालौ कहीं दिनबूड़तहीजियबूड़तआवै ॥ १ ॥ कोरिउपा
यनते दुलहीकों सखीछलिल्यार्दअनंगअपारहै । बावरीया
जुभईछविसों सुनिकुंजकीओरकरीसुखसारहै । मंडनजाल
बन्योपरजंक कटाच्छकेवानकुटैरसुमारहै । नंदकिसोरकी
जोरजलूससों रंगक्रीरातिरसीलीसिकारहै ॥ २ ॥ काहे
कोंसोहिसतावतीहौ सिगरीमिलिमैनइहांते हलौंगी । मै
कहौंजोसोसहीकरोही रघुनाथसखीतुह्यैहोनछलौंगी ।
जानिपखोसुखमोहकोंहोयगो आगेअनेकअनंदफलौंगी ।
तेरीसोंतेरेकहेपियधारेपै आजुतौनाहंपैकालिचलौंगी ॥ ३ ॥
खेजतहीसजनौनकेसंग नईदुलहीसुरनारिकीनाई । जैसैक
छूछविलागतिनीकी सुतोंकेहूंभातिकहीनहींजाई । ताही
समैतहूंआयबोलालको ख्यालहीमैकह्यौकाहलुगाई । चों

किउठीयहरानीखरी सुखपीरीपरीअखियांभरिआई ॥४॥
 अबतैहंकहैतिहिंभातिकीवातै कठोरहियेकीभईतौकहा ।
 हरिनीकोंचहैहरिसंगखेलायो अबूभामैबुद्धिगईतौकहा ।
 विधिअसियेजोरचिराखीअली विसवासिनीआडलईतौकहा
 सेवकाईभलीहमैसौतिहीकी दयातोहिदईनदईतौकहा ॥५॥
 सुखआकाएमानैनिसाकरकोन दिवाकरतेअनुरागीरहै ।
 तजिलाजकेआजपरोसिनहंकों जेठानिनतेज्वरजागीरहै
 कविसेवकरूठिसहेलिनसों सुठिसासुकेप्रे मनपागीरहै । चि-
 तआनिकैबानिपरीधोंकहा नितसौतिकेसासनलागीरहै । ६।
 दिसिपूरवपच्छिमदाहिनेबाए अधोरधसंकनमेलीफिरै । स-
 खिसौतिकेपीछे'लगैछिनजैसे' गुरायिनीकेसंगचेलीफिरै । ट
 हरैठहरैनहींसेवकयों खरपौननज्योंबनबेलीफिरै । मन
 मोहनकेडरभैधरमै अलवेलीअकेलीअकेलीफिरै ॥ ७ ॥
 साथसखीकेनईदुलहीकों भयोहरिकोहियोहेरिहिमंचल ।
 आइगयेमतिरासतहँ धरजानिएकंतअनंदसोचंचल । दे-
 खतहीनदलालकोंबालके पूरिरहेअंसुवाँनदृगंचल । बातक-
 हीनगईसुरही गहिहाथदुहँ सोंसहेलीकोअंचल ॥ ८ ॥ बाल
 नवेलीकोंऔंचकलाल गहीगहिआसविलासकलाकी । चंच
 लहोतिअनेकनभाति छुटैवेकोंछूटैनमूठिललाकी । औसीवसी
 छविभूपनसों रघुनाथलसौउपमाअबलाकी । मूरतिवंतबला
 हकहाथ जरौमनिमानोकरौचपलाकी ॥ ९ ॥

॥ अथ नवोटाकीसुरति ॥

कांपतिहैतनभांपवडोडर आवतबोलिनधूटिगरोगो । छटि

वेकोंनउपायचलै छलगोकुलनाथकरोपकरोतो । नारिनवो
 ठकौदेखदसा इहिँद्वौसकेसंकटमेनपरोको । छोरतनीबी-
 किडोरौभरो धनलूटतमेवमनोछकरोसो ॥ १० ॥ महिलार
 तिसंदिमैपियकों पहिलेईमिजायोचहैअवलै । मुखप्यारे-
 कोनामसुनेभिक्षिकै वहमीनविनाजललौकसलै । मुहँमाहीं
 लगीजकनाहींसमारख छांहींछुएछरकैउछलै । भिछलै
 छितिमैसगकौलदलै पगयोंससलैमचलैनचलै ॥ ११ ॥ लैपर
 जंकनिसंकनवेलीको अंकमैलायलगेगहिगूँमन । जरुनसों
 कसिकैकविसंभु भुजाभरिभेंटिलगेमुखचूमन । गोरेकरेरे
 तरेरेउरोजनि देकरलागेललाभुकिभूमन । गूँजनलागोग
 रोअलवेलीको नीरभरीपुतरौलगीधूमन ॥ १२ ॥ आईही
 गौनेनईदुलही उलहीछविसोंपरजंकमैसोई । औंचकनंदकि
 सोरगह्योतिय अंकससंकरहीभयभोई । चौंकिपरौउचकौ-
 नसकौभुकी योंपरजंककेवाहिरजोई । इन्दुमनोअपनेकरते
 बिंदियाअसुवानकेबुन्दसोभोई ॥ १३ ॥ भूखनप्यासकछूसिग-
 रोदिन भावतभूषनभेषवनैवो । लोचनलाजलगीचैरहै रति
 केधरकोमनआवैनअवो । केलिकथानसुनेडरपै नसुहायस
 हेलिनकोससुभैवो । प्यारेलईछेतियामेछपाय पैचाहैतजछ
 लसोंछुटिजैवो ॥ १४ ॥ नवलाकोभुजायमिलार्इसुतो रति
 रूपकेजोरजवालेपरौ । अधराधरखंडनमंडनमोद अनंगत
 रंगनवालेपरौ । सिंसिकैसुसुकरैरसकैरिसकै पियसेवककेअंक
 वालेपरौ । मृगराजछुधारतआरतके हरिनीमनुहायहवा
 लेपरौ ॥ १५ ॥ मृनालकेतारहुतेसुकुमार नईदुलहीरतिकै

सेसहै । कहैरामअचानकअंकभरी परीनेसुकहनिचलीन-
रहै । सरकौडरिकैअरकैवरकै फारकैनरकैभजिबोईचहै ।
तियसौवीगहैनितओठनपीवी गरीबीगहैकरनीबीगहै । १६।

॥ अथनबोढाकोसुरतांत ॥

राकाकिरैनउदौतकोचंद्र नहोयसमानजोकौजियेदूलसो ।
वैसनईअरुनार्देनई लखिसौतिनकेतनबाढतसूलसो । सोर-
तिकेसुखखेदसन्वो करचांपिकेनेरेभयोसुखमूलसो । आनन
सोंतियआननलायो गुलावसों भीज्योगुलावकेफूलसो । १७।
जामिनीजागीजगार्देहैलालन नौदलखौअंखियाँमैरहीभरि
सेजसंवारनपाईनफेरिकै धेरिकैआलसआनिरहीपरि ।
सोवनदेहुजूसोभालखौ रघुनाथखरेपलिकाकेतरेहरि । अ-
सौलसैविधिनैधिरकैमनो राखीहैबारिधिमैविजुरीधरि । १८।
छूटीचिकैंपरीप्यारीतहाँ परजंकते फौलिरहीप्रभाभपर । लै
बरजोरौकरीपजनेस बसीकरसौतसबीरवधूपर । देखुरीपी
नपयोधरपैनख लागेललाललचाततिहंपर । मानोखरादच
देरविकी किरनैगरीआनिसुमेरकेजपर ॥ १९ ॥ विधुरी
अलकैभलकैस्रमवारि सखीकोंगहेकरहालतसी । दृगनी
दभरेसुखजचीउसास सुगंधदसौंदिसिचालतसी । रघु-
नाथसतंगजकीगतिगोपि गहे चियपैरिसपालतसी । तिय-
जागिचलीरतिमंदिरते सबसौतिनकेउरसालतसी ॥ २० ॥
आतुरह्वैपियकेलिकरीसु भरीनिजअंककरीमनभाई । चं
पकमालसीबालमनोज मनोकरमीडतमैकुँभिलाई । गुंघ

रहौं निरखी अवलौं सुखपीरी परी छति यां धक छार्इ । पां वध
रै थहरै कंहरै सु मरूँ करि भौं नते आंगन आर्इ ॥ २१ ॥

॥ अथ विश्वधनवोढालक्षण ॥

वहैनवोढा जो कछू पीतमसो पतियाच ।

तौ विश्वधनवोढा तिय वरनतसवकविराय ॥

॥ अथ विश्वधनवोढायथा ॥

जाहिनचाहगहँ रतिकीसु कछूपतिको पतियानलगी-
है । त्यौपदमाकरआननमेरुचि काननभौं हँकमानलगीहै
देतितियानकछुवै छति यां वतियां नमैतौ सुसक्यानलगीहै । पी
तमैप्रांनखवाचवेको परजंककेपासलौं जानलगीहै ॥ १ ॥
केलिकैरातिअधानेनहौं दिनहींमैललापुनिधातलगाई ।
घासलगीकोजपानीदैजाइयो भीतरवैठिकैवातसुनाई ।
जेठीपठाई गई दुलही हँसिहेरिहंरे मतिरामबुलाई । का
न्हकेवोलमैकाननदीन्हो सुगेहकीदेहरीपै धरिआई ॥ २ ॥
छठिकैकठिरचकछीनभई गतिनैननकीतिरछानलगी । स
सिनाथकहैउरजपरते अचराउधरेते लजानलगी । लरि
काईकेखेलपछे लकछुक सयानीसपीनपत्यानलगी । इनद्वौ
सनते पियनामसुने दुरिकैसुरिकैसुसक्यानलगी ॥ ३ ॥ का-
नसो लागीवतानकछू हँसिलेनलगीमनमीठीजुवानसों । वा
नसोंमारिसनेजअवै कहिआवतनेकउरोजउठानसों । ठाः
नसों लागीचढ़ीदुतिदूनी बढीसुखकीसुखमासरसानसों ।
सानसोंदीठिचलैलगीजोर दोउदगकोरगई मिलिकानसों ॥ ४ ॥

साँझहीसेजलीं ल्याईसखी नखतें सिखभूखनसाजचुनीको ।
 यौंहुलखोलखिप्रानपिया जिलिजोतमिले मनहोतसुनीको ।
 लाजगड़ीमुखखोलैनबोले कियोरघुनायउपायदुनीको । को
 टिरंगैनहिंएकलगेजिअि सूखकेआगेसयानगुनीको ॥ ५ ॥
 सोयकैमेरीप्रतीतिलैदेखा हौंभाजिनजाउं गीवौंहीउरोज
 नि । नेकुदयाकारोकाहेखिआवत रातिकीभातिसौंअंकभ-
 रोजनि । साथतिहारेहौंप्रौढिरहौं परछातीकेउपरहाथ
 धरोजनि । जोकछुकीवेसोकालिपरौं प्रियप्रांयपरौं कछूआ
 जकरोजनि ॥ ६ ॥ हौं तोकछ्यौकछुबातै करोगे प्रवीनवडे
 बलदेवकेभैया । येगुनजानतीतौयहसैनहौं भूलिनसोवती
 बीरदुहैया । दासइतेपरफेरिबुलावत यौं अबआवतमेरीब
 लैया । आज तोमैजोकहौकरिसोहैजू आजकारोगेनकालि
 कीनैया ॥ ७ ॥ हैमधुभागनते बिधना हमरेहितक्योंनवसं-
 तवनावै । जैहैसिंगारनहीमैकछू कछुसेवकाआदरहीमैगंदा
 वै । एअलिचातुरीकीजैसोई हंसिबोखतखेलतरैनबितावै ।
 तेरेईसंगपियाढिगजाय जलीफिरितेरेईसंगमैआवै ॥ ८ ॥
 सेजलीं आईअलीकींलिये पकरीतवसेवकहूसुदमातिहै ।
 आतुरीदेखतभागीसखी सुगहीपठबाहिरसोसुसकातिहै ।
 लाजहको नडेरातिअबूका विसासिनिकेकलकींपछिताति-
 है । केलिमैप्रीकेपरोलिसकै रिसकैगछ्यौअंचलअंचतिजा-
 तिहै ॥ ९ ॥ आईहैगौनेनईदुलही उलहीहियलाजकछूअ
 बुरागै । खोलनदेतिनचंचुकीकेबंद हाथसोहाथगहैनिशि-
 जागै । नाहींकहैसुखसोसुखलावति गूँ धरकोमनमेसोपानै ।

हेरति है दृगधू घुटमै तिय हाहा करै पै हिये नहिं लागै ॥ १० ॥
 करसों कर प्रेरै प्रेरै सिकुरै सुसुरै दुरै अंग बचावति है । भजि
 जै हों तो फेरिन अहौं कबों कहि सेवक यों ललचावति है । बिच
 घू घुट अटन ही मै भुके तुह्यै दूसरी बात न आवति है । न नदी
 लखि चोरी हंसोरी करी बर जोरी नतीज की भावति है ॥ ११ ॥
 पौठि दै पौठी दुराय कपोल न मानै न कोटि पिया जजपोटत ।
 वाहन बीच दिये कुच दोऊ गहेर सनाम नही मन सोरत । सोव
 त जानने वाज पिया करसों कर दै निज ओर करोटत । नीवी
 विमोचत चौंकि परी मृगछोन सीवाल विछौं नाप लोटत ॥ १२ ॥
 जंघनि जोरि कठोर ज्यों पाहन वाहन बीच उरोजनि गोवति ।
 नीवी किगाँठि दई गहि गाढि कै नाहक यों सिगरी निसिखोव-
 ति । लालन के मन मेइ हिं भाति घरी घरी कामसँताप समोवति
 लाजको औ डरको पटतानि यों प्यारी पियापियके संग सोव-
 ति ॥ १३ ॥ पगसों पगपीँ डुरीपीँ डुरीसों कवि सुंदर जंघनि जो
 रिरही । कुच दोऊ गहे कर एकईसों कर एकसों नीवी हगाढे
 गही । इहिं भाति लिये डरपीतमके संग सोवत हीन वला दुल-
 ही । अलिहों तो गर्दछ कि सीछ वि देखियौ रातिकी रीभिन
 जातिकही ॥ १४ ॥ वैरिन मेरी कितै गर्दवे कर छाड़ि बिसासि
 न देखन हूँ दै । यों कहि कै उचकी परजं कते पूरि रही दृगवारि
 की बूँदै । जोर नदेति नही सुखसों सुख छोरे नदेति न नीवी की फूँ
 दै । देवसकोचन सोचनते मृगलोचनी लोचन लालके मूँ दै १५
 नैन नमो लकछू अनमो लति नै सुकनीदको भाव सुभोयो । दावि
 रही पिँडुरी पिँडुरीसंग नेवरको भनकार विगोयो । छैलछ-

बौलीछपावतिछातीकों छै लछबौलेनेरंगसमोयो । यों सुझ-
तीपरजंकपियारी मयंकसुखीभरिअंकमैसोयो ॥ १६ ॥ लाल
कीदौठिबचायकैवालं कियोचहैदूरिप्रदीपकीवाती । पीके
हियेसुखपुंजबढ्यौ सुतोपूछतिहीकछुवातसोहाती । लाम
तहौतलमैप्रतिकोकर चंदसुखीचितचौं किसकाती । सोईहै
आयकैपीतससाध पै सुन्दरिहायछपायकैछाती ॥ १७ ॥

॥ अथ मध्यालच्छन ॥

लाजकामजिहिंबाममै राजतिहोइसमान ।

तासोमध्याकहतहै कविकोविदमतिमान ॥

॥ मध्यायथा ॥

—००—

सजिभूखनवाससखीनकेपासते सासुकेपासविराजिगई ।
सुखचंदमरौचिनते ससिनाथ सबैघरमैछबिछाजिगई । इन
केप्रियअैहैसवारसखी कछ्योसोसुनिकैहियलाजिगई । सुख
पायकैनारिनवायतिया सुसुकायकैभौनमेभाजिगई ॥ १ ॥
जेठीबड़ीनमैबैठीबधू उतपीठिदिये प्रियडौठिसकोचन । द-
र्पनकीसुदरौदगद्रे प्रियकोप्रतिविंबलखैदुखमोचन । सोपर
छांहिनिहारतनाह चढौचितचाहगड़ीगुहसोचन । देवसु-
भो हनिमैउपजाइ भजाइलैजाइलजाइकैलोचन ॥ २ ॥ आ
ईजुचालिगोपालघरे वृजबालबिसालमृनालसीवांहीं । त्यो
पदमाकरसूरतिमै रतिमैरतिछूँनसकैपरछांहीं । सोभित
संभुमनोउरजपर मौजमनोभवकीमनमाहीं ॥ लाजविरा-
जिरहीअखियांनमै कान्हमेप्रानजुवानमैनाहीं ॥ ३ ॥ डौली

भुजाधरे पीकेगरे तिरछे ललनालपटातिलजोहे । त्योंमुख
 मोरिकाहैसुसकाय वचायतियावतियातरोहे । सोहैनिहा
 रिवेकोंपरसेस अनेकनहींप्रियह्यावतिसोहे । सोंहैनकेहंस
 वैहैसकोचन लोचनलाडिलीकेललचोहे ॥ ४ ॥ चौसभरी
 सिगरीसजनीसजि लीकीसुनावतीकामकहानी । वेनीवसैवृ-
 जराजमेप्रान रहैगृहकाजनमेनितसानी । दौरिचलैरतिगे
 हकोनेहते देहसकोचसेयो अकुलानी । एकोमतोठहरात
 नज्यौं घहरातपुरैनिकेप्रातकोपानी ॥ ५ ॥ पेख्योचहैप्रिय
 कौंविनओट वनैकछूविनघूंषटखोलै । भावैनसंगकुटोपति
 को सकुचैनकरैकछुकामकलोलै । चाहतिवातकह्योनकह्योप
 रै जातरह्योनरहेअनबोलै । भूलतहैमनप्रानपियारीको ला-
 जमनोजदुबोचहिंडोलै ॥ ६ ॥ लौलगीलोयनभैलखिवेकी उतै
 गुरुलोगनकोभयभारी । प्रेमरह्योभरपूरकिसोरीके लोक
 कौलीकनजातिनिवारी । चाहतहीचितचोरकोंसोभ चवाइ
 नकीउमगैचरचारी । लाजमनोजकेवैठहिंडोरेभै भूलतिहै
 वृषभानदुलारी ॥ ७ ॥ लाजविलोकनदेतनहीं रतिराज-
 विलोकनहींकौदईमति । लाजहैमिलियेनकहूँ रतिराज
 कहैहितसोंमिलियेपति । लाजहुकौरतिराजहुकी कहैतो-
 खकछूकहिजातिनहीं गति । लालतिहारियेसोंहकरों वह
 बालभईहैदुराजकौरैयति ॥ ८ ॥ कंचनकेपिंजराचिसों
 निजहायनसोंकसनीयसंवारे । डारिदएपरदातिनपै प्रति
 जासिनिराखिदएरखवारे । सुन्दरलैपकवानघने पयसानख
 वावतजायनिनारे । काहेकोंकेलिकेसंदिरमे सुकसारिका

राखतपीतमप्यार ॥ ६ ॥ अंगनिअंगउमंगनिसों पहिरेगह
नेसबसूत्रसुभाइन । केसरिकोअंगरागकियो रविचंदनखौ-
रिरचौचितचाइन । घेरकरैंगीसवैषरकी दृगदेखीअनो-
खीतुहीठकुराइन । हौंहरिहारीहहाकरिकै एकनूपुरक्यों
पहिरैनहींपाइन ॥ १० ॥ सिगरीगुरुवालनिखायगई तिय
आवतेपैहियमोदभरे । धुनिपायलकीपसरैनकहूँ यहजी-
अधरेधरिपाँयहरे । रघुनाथचितैहंसिठाढीभई पलपूँघुट
सैहगनीचेकरे । सकीसेजपैबैठिनलाजनते फिरिबैठिगईप
लिकाकेतरे ॥ ११ ॥ दिनचारिते वाते बरोबरिकीसुनि जो
वनअपगधारतीहै । सिसकीनकेखादकेआसलगी निसिवास
रखाससुठारतीहै । कृबिभूमतीहैकृकिभूमकीमै नखराम
नमोरिनिहारतीहै । रतिरंगकीचोटैँ सहारिवेकों अ बना
कसरोटेँसँवारतीहै ॥ १२ ॥

॥ मध्याकीरतियथा ॥

अहैप्रवीनमहासिगरी परिहासकेलच्छनलच्छिगुनैगी ।
मोसोंसँवारहीबोलनको चतुराईकेबैनविचारिचुनैगी । नेकु
रहौमतिबोलोअबै सनिपाँयनपैजनियांभक्तनैगी । जागती
हैंसिगरीसखियां बलिनेवरकोभनकारसुनैगी ॥ १३ ॥ कां-
भारियांभनकैंगीखरी खनकैंगीचुरीतनकोतनतोरे । दासजू
जागतीपासअलीं परिहासकरैंगी सबैउठिभोरे । सोँहँति-
हारीहोँ भागिनजाहुँगी आईहौंलालनिहारेहीधोरे । के
लिकोँ रैनपरीहैधरीक गईकरजाहुदईकेनिहोरे ॥ १४ ॥
मुखचुवनमैमुखलैजोभजै पियकेसुखमैसुखनायोचहै । मल-

बांहीगोपालकेमेलतही सुखनाहींकहैमनतेनकहै । नहिँ
 देतिनिवाजछुवैछतियाँ छतियाँमेलगायेतेलागीरहै । कर
 खँचतसेजकीपाटीगहै रतिमैरतिकीपरिपाटीगहै ॥ १५ ॥
 कटिकिंकिनीनेकुनसौनगह चुपह्वैवोचुरीनसोंमागतीहैं ।
 सबदेखतदेवअनोखेनए विछियानकीजैभैनलागतीहैं । सुक
 सारिकात्तकीपोतीपिकी अधरातकलौँ अनुरागतीहैं ।
 छनएकछमाकरिदेखाइतै घरहांइहहाअवैजागतीहैं ॥ १६ ॥
 मायकेमैमनभावनकीरति कीरतिसंभुगिराह्नगावति । हे
 रिहरे हरे हाहाकरै करचौपिचुरीनकेवोलछिपावति । पैज
 नीसूद्वैजबिछिया बिछियागहेपैजनीसोरमचावति । किंकि
 नीकेडरपीतमकी कटिसोंलपटानलगीकटिआवति ॥ १७ ॥
 धुनिकिंकिनीहोतजगैगीसवै सुकसारिकाचौँकिचितैपरिहैं ।
 कनखैपुनिलागिरहीहैंपरोसिन सोसिसकासुनिकैडरिहैं ।
 जनिदेहुउरोजनमैनखलाल प्रभातसखीसुखिसीकरिहैं । न
 दलालहहाअधरानडसो ननदीमुखदेखिवदीकरिहैं ॥ १८ ॥
 जागतसोहिजगार्दनिसाभरि मानतहौनहीं फायंपरेमै । वै
 ठिवेकोंगुरुलोगनके ठिगमेयहबानिकहाहैधरेमै । गोकुल
 नीदभरेभूपकैचख पावतहौकहाअसैकरेमै । हायलजायवे
 कोंहमकोँ चलिआवतभोरहीभौँ नभरेमै ॥ १९ ॥ पठईसमु
 भायसहेलिनियों कोऊमायकेमेमिलतीनकहा । पलिकापर
 लैजरलायलला लपटातमैसंगलजातिमहा । घुघुरूनकोसो
 रसुनेसकुचै पियहोतज्यौँज्यौँ अतिलालचहा । तियव्यौँत्यौँ
 तिरौछीकरैअखियाँ अनखातिमहाअरखातिहहा ॥ २० ॥

धरमायकेमेतहाँआधीनिसागएसेजगईपियचायलकी।कवि
नाथलईउरलायपिया रतिरंगतरंगरिभायलकी।भानके
चहुँओरनकेखनकेरसनासुखदावतिकायलकी।सिसकीसु
खलैअंगुरीगहिकैधनधीरीकरैधुनिपायलकी॥२१॥पिय
माइकेमैमनभावतीकोपरजंकनिसंकह्वैअंकभरै।दृगमू-
दिसकोचनिखातिहहा मतिरामजूबालकलोलकरै।रति
रंगसमैगुरुलोगनकेजिनकाननमेभानकारपरै।इनलाज-
नितेकरकंजनिचंचलपैजनीपाँयनकीपकरै॥२२॥आन
दसोँभरेदंपतिसेजपैलूटतहेनिधिलोचनदूकी।पीयकहौर
तिकीबतियांतियनाहीगहौलहीलाजकछूकी।बाढ़िपरेह
ठहेरघुनाथकहाकहियेबुधिनौलवधूकी।दीठिवचायकैलो-
लदईछलिपाँयतेखालिघुडौघुँघुँरूकी॥२३॥बातनिसोँ
छलकैबलकैकछुपीतियसोरतिधूममचाईचूरतनीकरिदूर
करीअंगियाहिउरोजनतेछबिछाई।चूमिकपोलहिपीअ-
धरारसहेरघुनाथकरीजोसुहाई।एकरहीगहिहाथकेजो
रननीवीकीडोरनछोरनपाई॥२४॥

॥ विपरीतयथा ॥

राजतिहीविपरीतरचौहियमेपियसोँतियबाँधिकैवानो।
हेरघुनाथकहाकहियेदृगलाजसोँनीचेकियेसुखसानो।लोल
कपोलहिछूँलटकीलटलोटैपरौकुचपैसोहौँजानो।कोक
संजोगीबिलोकससीसोसिवारसोँमारिजुदेकरैमानो॥२५॥
तियमानोमरूँकरिकैविपरीतमनाईललाबिनतीबहुकै।
कविवेनीखुलोरसकीबतियाँसुकुलीअखियाँछकिआनदछूँ।

छतियाँ पर लोल लुरै अलकै सिर फूल अरु भिसो यों दुति दै ।
 चपि मेरु के शृंगनि मै चपटै उचकै मनोराहु दिवा कर लै ॥ २५ ॥
 विपरीत समै पिय रौ जरियाँ अँगिया सुपयो वरियाँ फवियाँ ।
 मदन तुरतीति न ऊपर स्याम हुमे लन कौ भ्रम नै भावियाँ । क-
 विलाल मकुंड अनंग सुमार गढ़ा अपने गुन कौ सवियाँ । मनु
 आरत चाख वरौ छिनते निकासौ कल कंचन कौ डिवियाँ ॥ २७ ॥
 अलकै छिटकौ कहितो खनिकौ सिसिकौ अधहेरत हीय हरै ।
 उससे दवित्यौ त्यों वजै करते कलकिं किनियाँ कटिकौ पकरै ।
 वतियाँ कहे नाहीं पै नाहीं तिया जकिसी थकिसी छतियाँ परै
 सुकना सासिकोरि उमासै भरै विपरीत मै प्यारौ तमासे करै २८

॥ मध्याको सुरतान्त ॥

रेख कछू कछू अंजन कौ कछू कंजन कौ अरु नाई रहै भवै । आलस
 लाजि पगेर धुनाथ कछू कछू चंचलता कौरहे छै । ऐसे लखे हग
 प्यारी के प्रातहि भौंह समेटि रहै उपमा द्वै । वेलि सिंगार कौ
 द्वैदल के तर खेलत खंजन के चिंगु लाइ ॥ २६ ॥ बाल उठीरति
 केलिकिये कवि सुन्दर सोहत अंगर सोहैं । आरसीसै मुख देखि
 सकोचन सोचन लोचन होत लजोहैं । लालहँसेइ हिंवी च
 रहै ललनापिय कौ तकि के तिरछोहैं । पौंछिक पोल अंगो छ
 तिओठ अमेठति अखिन अंठति भौहैं ॥ ३० ॥ प्रात उठीर-
 तिमान भटू धुनिलाल सिखी कौ हिये खटकी है । चाह भरी अ-
 लसाति नितं विनी वातन मोहन सो अटकी है । उन्नत कौ कर जो
 रिकै बांह वढी छ बियों मुख के तटकी है । कंज सनाल के कुंडल सै
 मनो सीखत चंदकलानटकी है ॥ ३१ ॥ केलिक लोल के रंग नै

सुन्दरी पीतमसंगरसौरजनी है । नेहसनीदरसातिभटू अर
सातिप्रभासरसातिवनी है । औरहीसोभाभईदृगअजु अ
नंतन कीसिरसौरगनी है । नाहकेनेहकीसोहैमनी पटला-
जमैचारूकनीसीवनी है ॥ ३२ ॥ प्रियकेसंगरातिजगीसुखसों
कृबिअंगअनंगकीछायरही । रघुनाथनवानकाजायकही व-
नीजैसोकछूसुखदायरही । तक्रियापरवोअदयेमुजभूलको
बैठीयौंभोरहीभायरही । करलैकैबिरीसुखलायरही अर
सायरहीऔलजायरही ॥ ३३ ॥ सोवनदेहुजगाओइन्हैसत
जोपैललाजियबातलोभानो । जागेतेयाछविसोंनहींसेट
खरेरघुनाथलखौलखिजानो । कैसीबिराजतिहैप्रलिका दृग
नीरभरेअतिआलससानो । खासोसनोजमहीपतिकी यह
बासीधरीनवलासीहैमानो ॥ ३४ ॥ भोरजगीवृषभानलली
अलसेबिलसेनिसिकुंजबिहारी । केसवपीछतअंजनओरन
पीककीलीकगईमिटिकारी । नेकलग्योकुचबीचनखच्छत दे-
खिभईदृगदूनीलजारी । मानोबियोगवराहहन्यौ जुगसैल
केसंधिमैइंगवैडारी ॥ ३५ ॥

॥ अथ प्रौढालच्छन ॥

दीहा ॥ मनभावनकेप्रेममै पगीरहैसुखधाम ।
कामकलापरवीनतेहिं जानोप्रौढावाम ॥ १ ॥
सोप्रौढाहैभांतिकी रतिप्रीताएकहोय ।
आनंदितसंमोहयौं दूजीकहियेसोय ॥ २ ॥

॥ तत्र प्रौढाजया ॥

आंखिनिसूदिवेकोमिसिआनि चचानकप्रीठिउरोजल-
गावै । केहूँ कहूँ सुसकायचितै अगिरायअनूपसत्रंगदिखावै
नाहकुईछलसो छतियाँ हंसिसोहचढायअनंदवढावै । जो-
वनकेसदसत्तिया हितसोपतिकोनितचित्तचुरावै ॥ १ ॥
कोटिविलासकटाच्छकलोल वढावैहुलासनप्रीतमहीतर ।
योँ मनियामैअनूपसरूप जोमैनकामैनवधूकहीईतर । डोरि
यासारीसुपेदमैसोहति योँ छविउँ चेजरोजनकीतर । जो-
वनमत्तगयंदकेकुंभ लसैजनुगंगतरंगनिशीतर ॥ २ ॥ राज-
तिराजरजोकुलमै अतिभागसुहागिनिराजदुलारी । आन
नकीछविचंदसीराजति जोवनजोतिउदोतउचारी । केलि
समैअलवेलीनेकंचुकी खोलिधरीपलिकापरन्यारी । सौतैस
वैहरनीसीभगीँ सनोकासकेचोतेकीआंखिउवारी ॥ ३ ॥
आठहं जाभविराजतियों भरीकासगहँ सतवारेकेहालहि ।
चोपभरीरघुनायनएनिति भूषतिभूषनभूरिरसालहि । को-
कसेजेतीकहीरतिरीतिसो तेतीसवैलियेनीतिविसालहि ।
वालाहिवानिपरीसिगरीनिसि सौखतिआपुसिखावतिला-
लहि ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रौढाक्षीरति ॥

वाजेचुरीबिछुवाघुँ घुँ रूसुख ख्वासवढै ज्योँसुगंधभाकोरसो ।
जुँ चेजरोजलगेथहरै खुलिकेसनिवाजरहेचहुँ ओरसो ।
मोलहिलेतिसुहागभरी चितवैजवलाजभरीदृगकोरसो ।
सौगुनोखादवढावतिसुन्दरी वारसमेसिसकीनकेसोरसो । ५ ।

अखियाँ अखियाँ सुसक्यायमिलाय हिलाय रिक्काय हियो हरि
 वो । बतियाँ चित चोरनचेटकसी रसचारु चरित्रनिज चरिवो
 रसखानकेमानसुधाभरिवो अधरानपैल्यौं अधराधरिवो । इ-
 तनेसबमैनकेमोहनीजंघ पैसं चवसी करसी करिवो ॥ ६ ॥ अ-
 रविंदकेप्रमसुचंदहकेन मिलिंदनकीउपमासेकरै । दुति-
 दंतनकीदुतिदामिनिकी दुतिदाडिमहकीदमासेकरै । छकि
 छै लकेसंगकरै रतिरंग छबीलीतियानछमासेकरै । मसकी
 नकेनोरजमासेकरै सिसकीनकेसोरतमासेकरै ॥ ७ ॥ अ-
 तिप्रमकीरासिबढीजरमै सुखनाहीकढीगुनअगुनोसो । फि-
 रहै गर्दहीठिलजोहीहसोंही सवादबढ्योचितचौगुनोसो ।
 सुखचुंबनकेनिजचुंबनदै परिरंभनमैभयोनौगुनोसो । वहरु
 प्रकीरासिकीकेलिसमै सिसकीनमैहै गयोसौगुनोसो ॥ ८ ॥
 श्रीधरभावतेप्यारीप्रवीनके रंगभरेरतिसाजनलागे । अंग-
 नअंगअनंगनते अपनेअपनेसबकाजनलागे । किंकिनीपाय-
 लपैजनियाँ बिछियाघुंघुरूमिलिगाजनलागे । मानोमनो-
 जमहीपतिके दरवारभरातबवाजनलागे ॥ ९ ॥ प्रेमभ-
 रेजुटिकेपरजंकपै रंगरच्योसबछोड़िखसूरे । जंघउठायदो
 जतियकी निजकंठलौं कंतकरैरतिपूरे । ज्योंमसकैगहि
 कैकरसों कटिसोरकरैप्रगभूपणभूरे । मानहुँ केलिललान
 केरागनि गावतमैनवजायतभूरे ॥ १० ॥

॥ अथ प्रौढाकीविपरीत ॥

विपरीतरचौरतिदंपतियो जहाँछायरहेबंगलाखसके । क-

विचंद्रदुहँ नकेसोदवदुगो कहिसोकविप्रन्दकथानसके । चूम
तिभावतीभावतेकोसुख देतिउरोजनकेससके । रसकेउपजाव
तपुंजखरे प्रियलेतप्ररेरसकेचसके ॥ ११ ॥ सेजसमीपसधोरु
विदंपति कुंजकुटीव्रजभूपररौ । कविआलमकेलिरचीविपरौ
त मनोजलसैदगदूपररौ । सरसीरुहअननतेअमवुन्द परै
तेजसोमतिस्हूपररौ । वरसैवरसानेकिगोरौघटा नदगांवके
सावरेजपररौ ॥ १२ ॥ रैनियंधेरीघनेवनसै तहाँवालगरईलि
येसीखसखीकी । संभुधस्योपटछोरतहाँ विपरौतरचीहरि
भावतेजीकी ॥ केलिकेगेहसनेहभरी प्रगटीदुतिअंगअनंगल-
लीकी । कुंजतेचोंछविपुंजकढी मनोघोरघटामैछटाविजुरी
की ॥ १३ ॥ विपरौतिरचीरतिराजिवनैन सुराधिकाराज-
तितापलसै । अपकैपलकैविधुरीअलकै अरुहारलुरैसुकता
गलसै । कविसुन्दरकाँईदोजकुचकी भालकौइमिस्यामउरख
लसै । छतियातरतुंवनदैसकरध्वज मानोतिरैजमुनाजल-
सै ॥ १४ ॥ राजतिहैविपरौतरचे सदसैनभरौतरनापनता-
सै । गोकुललोललयेरतिकौगति कौसीलसैलखिभाँकिलैया
सै । भावतीकेसुखकीछविछाँह सुयोंउपटीहरिकेहियरामै ।
मानोसुधाधरकोप्रतिविंव पखोलहरातअरौजमुनासै ॥ १५ ॥
दसकैदुतिलोलतस्योननकी मुसकातसैगोलकपोलनिपै । छ
विकेसरिकीछहरैतनतै कढिवाहिरसैतनिचोलनिपै । विप
रौतसैवेनीरसैललना लटयोंदँ लुरैदँगलोलनिपै । मनोफं
दसैदँसखलकेडारे अहेरीमनोजसमोलनिपै ॥ १६ ॥ क-
हिकैरसकीवतियाँलहिकै रतिकेसुखकोंमनरंजनसों । विप

रीतमचायरहीबहुचाय भरीगहिग्रीवसुपंजनसों । मणिदे
 वकहैइमिवेनीकोछोर लुरैलगिनैनसुअंजनसों । लखुआय
 अलीअनुरागरई मनुखेलतिनागिनिखंजनसों ॥ १७ ॥ विप
 रीतरचीरतिराधिकास्यामंनचैरतिकामकिधौंनटवै । उर
 प्यारेकेप्यारीकेताछिनसै छुइजातउरोजविनापटवै । छुटीवे
 नीतेवेनीप्रवीनकहै तिनऊपरआनिप्ररीलटवै । जानुचंददै
 रेसमफंदभरै जमुनाजलकंचनकेषटवै ॥ १८ ॥ श्रीमनमोह
 नैराधेमिली विप्ररीतरचीरतिकीपरनाली । हाररहेनविहा
 रसमै कविराजपगेरसमैवनमाली । सौं धेसनीसुधरीविधुरी
 भालकैअलकैहरिकेउरआली । मानोकुटुंबसमेतसहेत फिरै
 जमुनाजलपैरतकाली ॥ १९ ॥ कोककलानकैवेनीप्रवीन व-
 हौअबलानिमैएकपढीहै । आजुललैविप्ररीतमैआंगी सुभां
 गीनयोंमुखअसैकढीहै । तौलौंनटीगहिकेहूँफटी निपटीउप
 मादुतिदूनीबढीहै । मानोमहाकरिवैरसौंखोजसु लूटीमनो
 जमहेसमढीहै ॥ २० ॥ रीतिअनंतरहीविप्ररीत करीवहि-
 रंतरकेसुखछाए । नूपुरमौनवजैकटिकिंकिनी आनदकौन-
 पैजातगनाए । कूटिपरेभुमकाजसवंत सुकाननतेकुचऊप
 रआए । पूरववैरकुमापनकोमनोंमैनमहेसपैछत्रचढाए ॥ २१ ॥
 कामकलानललावसकै विप्ररीतकोबालकोंव्यौंतबतायो ।
 मोदभरीसिसकैससकै उचकैरचिकैरतिरंगबढायो । कान
 तेदूटितख्यौनापख्यौ छबिकोजुमढ्योकुचऊपरआयो । काम
 नापूरीभईपियकी तियमानोमहेसकौंछत्रचढायो ॥ २२ ॥
 केलिकरैविप्ररीतसमैहरि मंदभएधुधुरूसुरभूपर । वेंदोज

रायकीछूटीललाटतें टूटिपरीहरयेँ हरिजूपर । बह्मभनेक
 वरौकरछोर विराजतयौंहगचंचलदूपर । पूंछूपसारिमनो
 फनिराज सुयोलनिक्काजस्यंकक्रेजपर ॥ २३ ॥ जगदीसमि
 लेरजनीसमुखी रजनीसजनीकिनरीभूपचै । परिपूरनकरस
 रीतसवै रतिरीतिलमैविपरीतरचै । छुटिभालसेंवेंदीलैवे
 नीसुवारक गोलकपोलनमोदसचै । लखिवाधिमनोअरविंद
 कीपांखुरी इंदुकेआगेफनिन्दनचै ॥ २४ ॥ विपरीतमैरा-
 धिकारींनरमैउपमादिसकैकहुकोतिनकी । विधुरीअलकैभ
 पकीपलकै छलकैछटासीसुखजोतिनकी । कविवेनीलचैकरि
 हाँउमचै कुचअसेलरै लुरै सोतिनकी । बढिमेरुकेसुंगनिपै
 लहरै छहरै सनौगंगजेसोतिनकी ॥ २५ ॥ विपरीतिरची
 टप्रभानसुता विरहानलमेटिकैलालनकी । कविनाथनईरचि
 कोकाकला रतिजीतिलईटजवालनकी । हरिकोजरभाँईसी
 योभालकै तियकेतनसोतिनमालनकी । इततेँउततेँजमुना
 जलपैँजनुपैरतिपाँतिमरालनकी ॥ २६ ॥

॥ अथ रतिप्रीतायथा ॥

दीपकजोतिसलीनभई सनिभूपनजोतिकीआतुरियाहै ।
 दासनकौलकलीविकसी निजमेरीगईलगिआंगुरियाहै ।
 सीरीलगेसुकताहलतेज कपूरकीधूरनिसोंपुरियाहै । पौ-
 ढेरहौपटताबेलला नहिँबोलीअवैचिरियाचुरियाहै ॥ २७ ॥
 दासजूरसकैग्वालिगईं सब राधिकासोयरहीरंगभूमै । गा-
 ढेउरोजनदैउरबीच सुजानकोँअँचिभुजानदुहूमै । भोरभ
 यें प्रियसैनकोसोनो नगेहकोगौनोसकैकरिदूमै । भीरबड़ी

पैपरेजिमिसोनो बनैनभजावतराखतसूसै ॥ २८ ॥ एरज
नीसजनीबिनती रहिचारिषरीलौ भईअनुकूलै । हारहिये
सुक्तावलीचार बिचारिकैसीतलतानततूलै । हेदिननायक
हौसवलायक सोभसहायकभावनभूलै । भांपैदुखूलतियान्यु
तिमूल सरोजकेफूलप्रभातनाफूलै ॥ २९ ॥ कान्हअलिंगन
आसनचुंबन कीन्ह अनेकसोकौनगनावै । यौ रतिमानैतिया
कौतज पतिकीछतियाछिनछोडीनभावै । भोरभयोपियजा
नैनजसै इतेपरएचतुराईचलावै । आचरसौ ढकिमोतीकी
मालकी सुन्दरिसीतलताईदुरावै ॥ ३० ॥ लैपटपीतमकेप-
हिरे पहिरायपियैचुनिचूनरीखासी । त्योंपदमाकरसांभा
हीते सिगरीनिसिकेलिकलापरगासी । फूलतफूलगुलामवन
के चटकाहटचौंकिचकीचपलासी । कान्हकेकाननआंगुरी
नाइ रहीलपटाइलवंगलतासी ॥ ३१ ॥

॥ आनंदात्ममोहायथा ॥

रौतिरचौविपरौतिरचौ रतिपीतमसंगअनंगभरौसै ।
त्योंपदमाकरटूटेहराते सरासरसेजपरेसिगरीसै । यौंकारि
केलिविमोहितह्वैरही आनदकीसुधरीउधरीसै । नीवीनबा
रसंभारिवेकी सुभईसुधिनारिको चारिषरीसै ॥ ३२ ॥ केलि
केअंतमैकंतकीसेजपै टूटिपरीसुकतावलिसैरी । लागिरहेअ
धरानमैदंत दुरायेदुरैनहिंरौतिधनेरी । छूटिगएअंगराग
सबै दरकीअंगियारंगीकेसरिकेरी । मोहिनजानिपरौरज
नी बजनीरसनासजनीसिखतेरी ॥ ३३ ॥ हंसिवैसेहींदूदेवि
लोचनलोचति बैसेहींभौहचढीरिसिकी । छुटिवैसेहीवेनी

प्रवीनपरी गजमोतिनहँ कीलरीखिसिकी । रतिअंतरहीन
 कछूसुधिहै बुधिवैसौरहीपरहै चिसिकी । लगिअंकमनोपर
 जंकमैलालके वैसहीवालभरैसिसिकी ॥३४॥ नरहीसुधिभूष
 नधारनकी नसुधारनफुंदीफुन्दनकी । कहिवेनीप्रवीनअनं
 दितलीन भईछवित्योअसबुन्दनकी । करिकैलिसकेलिरहीभुज
 मेलि मनोपियकेतनगुन्दनकी । तरुमेपरिरंभितचंपलता दु
 तिकैमनिखंभमैकुन्दनकी ॥ ३५ ॥

॥ अथ प्रौढकोसुरतान्त ॥

बाँहदुहँ कीदुहँ केउसीसे दुहँ हियसोहियगाढेगहेहैं । दू-
 सरीबाँहदुहँ दुहँ ऊपर दोजनेवाजजुनेहनहेहैं । सोहैदुहँ
 केमिलेसुखचंद दुहँ नकेखेदकेबुन्दवहेहैं खोयकेदोजमनोज
 व्यथा स्वमअंकसमोयकेसोयरहेहैं ॥३६॥ छतियाँछतियाँसों
 लगाएदोज दोउजीमेदुहँ केसमानेरहैं । गर्दवीतिनिशापैनि
 सानभई नएनेहमैदोजविकानेरहैं । पटखोलैनेवाजनभोरभ
 ए लखिद्यौसकोंदोजसकानेरहैं । उठिजैवेकोंदोजडेरानेर-
 है लपटानेरहैंपटतानेरहैं ॥ ३७॥ छूटीलटै लटकै सिरहा
 नेहै फैलिरह्योसुखखेदकोपानी । सोहै नयेनखदागउरोज
 न ओठनकीछविहैसुरभानी । पौढीपियाकेगरे भुजमेलिकै
 केलिकैप्यारीनिवाजअधानी । नाहकेवाँहदियेतकिया सुख
 सोवैतियाछतियाँलपटानी ॥३८॥ सामते भोरलौंघारेजगा
 ई जगैवेकेव्योंतकछूपिरनाधे । सोवतहीमिसुखेलनके करदो
 जलैफूलकीमालसों बाँधे । सेजहीमैअगिरातिज ह्याति अनेक
 तमासेवतावतिराधे । आधेखुलेदृगआधेसुदे अखरामुहते

कढ़े आधेहिआधे ॥ ३६ ॥ कामकलाकरिकैवनिता पलगां
 परपौढिरहीअलसायकै । त्योंपदमाकरखेदकेबुन्द रहेसुक
 ताहलसेतनछायकै । बिंदुबनेमेहँदीकेलसैकर ताकरपैर-
 ह्योआननआयकै । सोयोहैचंदमनोअरविंदपै इद्रवधूनकेहं
 दबिछायकै ॥ ४० ॥ भोरभयेतकियासौलगीतिय कुन्तलपुंज
 रहेवगरायकै । कंजनसेकरकेतलजपर गोलकपोलधरेअल
 सायकै । आननपैबिलसैरदकीछवि श्रीपतिरूपरह्योअति
 छायकै । मानहुँराहुसोंधायलह्वैबिधु पौढोहैपंकजकेदल
 आयकै ॥ ४१ ॥ रतिरंगछकीचखसूदतिज्योंज्यों त्योंत्योंमन
 मोहनचोपतसे । कविबेनीहहाकरिहँसीकेहौस जगावत
 जागैनकोपतसे । करमंडितसोतिनकेगजरा हुगलीडतआ
 ननअपतसे । अरिऔजनकोंपकरेसगोतारे कलानिधिभू
 पतिसोंपतसे ॥ ४२ ॥ राधिकास्यामलसैपलिकापर कापर
 जातदसाकहिहालकी । आपनेहायसोंरीक्षिकैभावती श्री
 तिसोंअंजुलीजेरीगुपालकी । ठाकुरतामैधख्योसुखबालनै
 कोबरनैउपमाहृहँख्यालकी । प्राननिमैतियआननयोँलसै
 चंदचढोमनोकंजकीनालकी ॥ ४३ ॥ सोवततैजगौसुन्दरी
 प्रात उठीअलसातिउतंगउरोजसों । देवहुहँकरकंचुकीदा
 वि कसीरसनाउकसीचितचोजसों । सारीसँवारिसँवारति
 वार जँधानहरैवहठोढीकेओजसों । इंदुसुधाभरिकैदर-
 क्योमनो मूह्योसुनारिसनालसरोजसों ॥ ४४ ॥ परलंकपरी
 पतिसौरतिकै रतिमैसरसीमतिमैसरसै । सबछूटिकैवा-
 रसिगारगये तजकोटिसिगारसबीदरसै । अमकेकनसिंह

चहं सुखपैं ठरकै छवियो उपमा दरसै । अनुराहुके फंदते कू
 टिसुखिन्है मानहु चंदसुधावरसै ॥ ४५ ॥ कैसिवारके मध्य
 प्रस्यौ उपस्यौ विकस्यौ विलस्यौ अरविन्दनयो । किधौं कोरके
 पन्नकी परभा विचसुन्दर आरसीरूप छयो । विधुरे कचवी
 चविराजत आनन संभुनयो उपमानदयो । डर डारि किधौं अ
 तिसाहसकै तमटन्दमै चंदसमाइ गयो ॥ ४६ ॥ सखिभोर उठी
 विनकंचुकी कामिनि कांधरसो करिके लिखनी । कविब्रह्मभने
 छवि देखत हीं बलिजातन हीं सुखते वरनी । कुचअग्रनखच्छ-
 तनाहदियो सिरनायनिहारतियो सजनी । ससिसेखरके
 सिरते सुमनो निहुरे ससिलेत कलाअपनी ॥ ४७ ॥ अलसो
 है सेअंगलजो है सेनैन कछू कखुलेसे सुदेवर है । परिपीककी
 लीकै कपोलर हीं रिषिनाथ अनूपमतावर है । नखरेखै उरो
 जनपै भलकै छलकै छवित्यो सुकतालर है । धरेसीसकलास
 सिकीनुतगंग मनोहरदोजमनोहर है ॥ ४८ ॥ रसरंगभरे
 अंगअंगपिया पियसोइ गये सुखदै सुखलै । इहिं वीचजगे हरि
 नूउधरी अगियां परडौठिगईपरिकै । कुचउपर देख्यो नखच्छ
 तसुन्दर आठको आकसो ऐसोलसै । मनहं अनमध्यके हाथीच
 ढगोसुमहावतजोवनअंकुसलै ॥ ४९ ॥ सोवति हीरतिके-
 लिकिये पतिसंगतिया अतिहीसचुपाये । देखिसरूपसखीस
 वसुन्दर रीभिर हीं ठगिसीटकुलाये । कंचुकी स्यामसजे कुचज
 पर छूटीलटै लपटी छविछाये । बैठयो है ओढिमनोगजखाल
 महेसभुजंगनिअंगलगाये ॥ ५० ॥ द्वै कुचसंभुसुमेरुके वीच लसै
 सुकताहलगंगसीपावन । स्यामरमावलीराजिरही सुवहैज

सुनासीलगीमनभावन । तामधिरेखनखच्छतकेमिसि आयोहै
 आपनीसोभवढावन । दोउकोंतीरथसंजमजानिकै न्हातम-
 यंककलंकनसावन ॥ ५१ ॥ केलिकैप्यारीप्रभातउठी अलसा
 तिजह्यातिउमेठतिगातहिं । लैलैदुकूलसँभारैदुहँकर बो-
 लतिहैतुतुरायकैवातहिं । आंगीहरीदरियाईमेयो उधरे
 कुचरंचकदेखोललातहिं । कंजकलीजलभीतरते निकरीस
 नोफोरिपुरैनिकेपातहिं ॥ ५२ ॥ तियप्रातसमैअलसातउठी
 मनमोहनअंचलवीरगह्यो । प्रगटगोलखिभानबिहानभयो
 मुखमोरिकैयोसृगनैनीकह्यो । इमिवेनीदुहँकुचबीचविरा-
 जति सोउपमाकविब्रह्मलह्यो । ज्यौंजनमयजयजग्यसमय
 दूरितच्छकंसेरकीसंधिरह्यो ॥ ५३ ॥ करिकैविपरीतियकी
 ललना प्रियकेडिगयोअतिभायरही । भूपकीपलत्रौं हनुमान
 कहै रतिकेमनहँकोलुभायरही । लटएकलुरीमुखते कुच
 पै सुभयोअमखेदगिरायरही । मनुव्यालिनचंदतैलैकै
 प्रियूष गिरीसकेसीसचढायरही ॥ ५४ ॥ प्रातउठीरतिभौ
 नते बाल बिलोकतनैननकोंलजैजावक । खेदकेबुन्ददुरैमुख
 ते कुचमानोअनंगकेजंगकेधावक । कूटीकपोलनपैअलकै
 भालकैछविपुंजभरौजनुनावक । बिंदुसुधाकेलियेसुखमै जुग
 इंदुकेबीचफनिन्दकेसावक ॥ ५५ ॥ कामकलाधिकआधिक
 रातलौं राधिकाकामकीकेलिजगाई । कामसेकान्हरहँकु-
 चदेकर सोइरहैअतिसैसुखपाई । ब्रह्मजरावकीमुद्रिकादे
 सुलखीलखिलाखकेभाववनाई । देखनकोंपियकोंतियकी हि
 यकीअंखियाँमनौबाहिरआई ॥ ५६ ॥ दूरितैदीपतिदेखत

हौ प्रतिपच्छवधूनके होतरुजाहै । वारिपयोद्धटानके वीच
 जुरीविजुरीकी मनोतनुजाहै । याछविसोंसरसातिमनोहर
 राधिकाकी अंगिरातिभुजाहै । कान्हके कानअलंकितअंकि
 त सैनकीमानोविजैकी ध्रजाहै ॥ ५७ ॥ भोरउठीअंगिरा-
 तिजह्याति सखीजलते भरिभाजनआनो । धोवनलागीति
 यासुखमंडल हेरिहियोरघुनाथलोभानो । मौजतिअंखिल-
 लीअंगुरी संगआरसीकेउपमायहजानो । कंजनकेदलसोंनि
 सिरंजन खंजनकेपरपो छतमानो ॥ ५८ ॥ धोइवेकींदुखकी
 कीकेजपर आयलसीसिगरीनिसिजागी । सारीसलौउपरी
 विधुरेकच आननपै पियरीरुचिरागी । हेरघुनाथकहाकहि
 येछवि आरसीसैपलद्वैसुखपागी । लोचनलोलाहिलायरही
 लखि दांतकीपांतिकपोलनिलागी ॥ ५९ ॥ कछुभोरहीआजु
 सुजानकेसंग छकीवनिताछविछावतिहै । अंगिरातिउठीअ
 लसातिप्रभा सुसुआतिजंभातिरिक्तावतिहै । चखजोरिकैदे
 वलरोरिखएँ जुगजोरिभुजानिउठावतिहै । रसरंगअनं
 लअथाहवढोसु मनोसुखसिंधुघहावतिहै ॥ ६० ॥ अंगिरा
 तिउठीरंगरातप्रभात उठैअंगआलसकीलहरै । तियपैपि
 यपासतज्योनपरै विछुरेहियदोउनकेहहरै । विधुरेइकवा
 रहौवारबडे छुटिहारनतैसुकताथहरै । भलकौ छतियांपर
 है छलकौ सुविछौंननपैछितिपै छहरै ॥ ६१ ॥

॥ अथ धीरादिभेद ॥

दोहा ॥ त्रिविधिहोतिहैमानकरि मध्याप्रौढअनूप ।

धीराञ्चौरअधीरपुनि धीराधीरारूप ॥ १ ॥

॥ तहामध्याधीराकोलच्छन ॥

व्यंग्यवचनते कोपजो पियपरप्रगटतिनारि ।

मध्याधीराकहतहैं ताहिसुकविनिरधारि ॥ २ ॥

॥ मध्याधीरायथा ॥

ओरहीभूरिभलाईभरे हरभाँतिनभाँतिनकेमनभाये ।
 भागवडोवहिंभाँवतीको जिहिंभाँवतेलैरंगभौनबसाये । भे
 खभलोईभलीविधिसोंकरि भूलिपरेक्रिधौंकाहूमुलाये । ला-
 लभलेहौभलेसुखदान भलीभईआजुभलेबनिआये ॥ १ ॥ आ-
 वतहीउठिआगेलयो पहिलोईसोनाहसोनेहजनायो । कंजसु
 खीकरिआदरकंतको कंजकोआसनआनिबिछायो । नीरप
 टौरसमीरकोबीजन आनिघल्योघनसारघिसायो । चाह्योक
 ह्योकहिबेकोंभई कहिआयोकछूनगरोभरिआयो ॥ २ ॥
 सेजकेभाजनसैधरिकै अरुजरुडरुखलतोखनहीसो । तैसी
 रईकरिनैनबकीअरु प्रीतिकीदामभुजानगहीसो । तक्रभले
 करिछोडोभट्ट रसरूपसबैनवनीतलहीसो । हाहाहमारी
 कहीवहकौनती जोनेतुह्यैमघलीनोदहीसो ॥ ३ ॥ आवत
 हीब्रभानसुता कछुओरहीरूपलख्योजवपीको । जानिकै
 मानतोठान्योहिये परआनिकैबोलीयोवैठिनजीको । सुन्दर
 बालप्रवीनमहा चतुराईसोंकोपजनावतजीको । आरसीआ
 जुलईहैनई पियदेखोतोदीखतहैसुखनीको ॥ ४ ॥ आयोक

हंरतिमानिकैभावतो हैरदसोरदकेछददूखे । पीककीली-
ककपोललसै रघुनाथलगीरंगहैरहेरूखे । लागेप्रसेदकेभी
गेजेवागे सोजैसेकेतैसेलखेनहींसूखे । लैतेहिंकालअभूपनअं
गमे हीराविसालकेभूपनभूखे ॥ ५ ॥ आछेहियेमनआदर
कै पतिकोंपुनिलेतिप्रजंकसवारक । आखिनपैपलपैपुतरौन
पै आयेहौलालइहापगधारक । लालनकेउरलागौहुती
नखरेखसुइष्टिपरीएकवारक । चातुरनारिउठायदोजकर
बोलिउठीपियचंदसुवारक ॥ ६ ॥ चंपकवेलिचमेलिनमै मधु
काकक्योअक्योअनुकूलै । मालतीमंजुगुलावसमीर धस्यो
नहींधीरमनोजक्रीरूखै । केतकीकेतिकजोहीजुही मनभाइ
छुहीअवगाहिअतूलै । भूल्योरह्योअलिसेवतीआव भयोग-
रगापगुलावकेफूलै ॥ ७ ॥ छैलछवीलेछवीलीइतीछवि पा
ईहैआजकहाँबिनजोखे । वानिकहेपगदेतइगैसु छकायेहौ
जोवनकेसदचोखे । नैननिमैअरुनाईछई सुभईकछूपंकजदे-
खिसरोखे । जानतिहौअधरापरलाल रह्योवसिभौरगुला
वकधोखे ॥ ८ ॥ रातिजगेपगेकारजमे सुतोजानिपरै-
अमखेदलहेहौ । आयेहौभौनमेभागनभोर कहाकहियेक
छूजातकहेहौ । गोकुलनाथसनाथभई तुममेरेईआनदको
उमहेहौ । बैठेकहाअगिरातजंभातहौ सोइरहोअरसायगये
हौ ॥ ९ ॥ भालपैलालगुलालगुलालसो गेरिगरेगजराअ
लबेलो । यौबनिवानकसौंपदमाकर आयेजुखेलनफागुतो-
खेलो । पैएकयाछविदेखिवेकेलिये सोबिनतीकैनभोरिनभे
लो । रावरेरंगरंगीअखियाँनमै एबलबीरअबीरनामेलो । १० ।

क्योंधनस्यामअबैदुचितैभये मोतनदीठिकियेसुखदाई । कंज
 गुलाबहुकीअरुनाई नलालगुलालनकीसरसाई । एतेहुपैइ
 तनोगहिरोरंग हैरंगरेजिनकीचतुराई । साँचीकहौइनने
 ननरंगकी दौन्हीकहातुमलालरंगाई ॥ ११ ॥ भोरहीन्योति
 गईतीतुमै वहगोकुलगुावकीग्वालिनीगोरी । आधिकरात
 लौवेनीप्रवीन कहाठिगराखिकरौबरजोरी । आवैहँसीहमै
 देखतलालन भालमैदौन्हीमहावरघोरी । अतेबड़ेब्रजमंडल
 मै नमिलीकहँ मागेहुरंचकरोरी ॥ १२ ॥ आयेहमारेमया
 करिमोहन मोकोतोमानोमहानिधिटूठी । आजुकोवानक
 देखतसुन्दर सोजमिलैतियहोइजोरूठी । कैसीविराजति
 नीकीनई करकीअंगुरीमैअनूपअंगुठी । प्यारेकह्योहँसि
 प्यारीसोयोतब तेरीसोतै ससुभौसबभूठी ॥ १३ ॥

॥ मध्याअधीरालक्षण ॥

पखबचनकहिजोतिया पियहिजनावैकीप ।
 मध्यअधीरानायिका बरनतकविकरिचोप ॥

॥ मध्याधीरायथा ॥

तनमेरहिआलसजैहैकहँ अखियानतेनीदनहीटरिहै ।
 बनिहैनकछूतबप्यारीमिले जबवातचलेरसकीअरिहै । र
 घुनाथकहाअंगिरातजह्यातहौ नावनकोजतुह्यैधरिहै । प-
 लसोयरहौसुखगोयपिछौरीसों फेरितुह्यैजगिवेपरिहै । १४।
 कोजनहीबरजैमतिराम रहौतितही जितहीमनभायो ।

काहेकोँ सौ हैं हजार करौ तुमतौ कवहूँ अपराधन ठायो । सो
वनदौ जैनदौ जैहमै दुख यों हीँ कहार सबाद बढायो । मानर-
ह्योई नहीँ मनमोहन मानिनी होयसो मानै मनायो ॥ १५ ॥
साँची कहौ जाकी मानत सौ हैं जू कौनकेने हरहे सरसेहौ । रैन
जगीँ अखियाँ तरजी विरभी अंगअंगनसों परसेहौ । जैहौ ज-
हँ मिलि आएत हँ हमकोँ इनवातनसों परसेहौ । चंद्रहूँ कै
कितहूँ सरसे हमकोँ रविहूँ करिकै दरसेहौ ॥ १६ ॥ लेखनी
कीमसिभापेचहैँ औचहैं सोकहैं जू परेखोन जानो । कोकहैँ
अंजनओठनसै हरि वनी प्रवीनकहैँ कछु आनो । जानतीहौँ
निहचै करिकै उनको जगमै यहजाहिरवानो । जोपरनारि
की प्रीतकरै तिनके सुखकी सखिमंडनमानो ॥ १७ ॥

॥ अथ मध्याधीराधीरालक्षण ॥

धीरवचन कहिरै यकछु प्रगटतिरिसजो वाम ।
मध्याधीराधीरकवि तासु कहत हैं नाम ॥

॥ अथ मध्याधीराधीरायथा ॥

आजुकहातजिवैठीहौ भूपन असही अंगकछूँ अरसीले । वो-
लतिवोलखार्दिलियेँ सतिरामसनेहसुनेतेँ सुसीले । क्यौंन
कहौ दुखप्रानप्रिया अँसुवानिरहे भरिनेनलजीले । कौनति-
न्है दुखहै जिनके तुमसेमनभावनकै लखवीले ॥ १८ ॥ भोर
हौ आएकहूँ तैसखीँ रतिकीसिगरीलगी अंगनिसानी । घा-
रौके अँसूचलेदुखतेँ लखिवूभीयों धारेकहाउरआनी । ला-

जते जतर आयोन और कहीत वयौं रघुनाथ सयानी । कौन्हो
 खटो मन सो सो सु देखि चलो अखियान की जीभते पानी ॥ १६ ॥
 देवजू जौ चित चाहिये नाहतौ नेहनि बाहिये देह ह्यो परे ११
 जौ समभाय सुभाइये राह अमार गमै पगधो खेध खौ परै । नौ-
 केमे फीके ह्वै आसू भरो कृत जं चेउ सास गरो क्यौं भख्यो परै ।
 रावरो रू प्रपियो अखियान भख्यो सो भख्यो उबख्यो सो ठख्यो प-
 रै ॥ २० ॥ आ एक ह्वै रतिमानिलख्यौ तियके असुवानि की धा-
 रिचली ह्वै । देखि कहार रघुनाथ कछ्यौ तौ कही सकुचै इमि
 चातुरता क्वै । रावरे को सुख चंद चितै ये कुमोदिनी आखै अ-
 नंदमहाध्वै । हीभे नवंदसकी करि फूलते जपर ह्वै मकरन्द च-
 ल्यो चै ॥ २१ ॥ रातिर हेमनिलाल कहै रति ह्या दुख बाल वि-
 योग लहे है । आणधरै अरु नोदय होत सरोसतिया गमवै नक-
 हे है । लाल भए हग कोरनि आनि कै यो असुवान वबुन्दर हे है ।
 चोचन चापिस नौ सिधिलै विविखं जनदा डिमबी जग हे है ॥ २२ ॥

॥ अथ प्रौढाधीरालक्षण ॥

प्रगट करै नहिं रोसपै रतिते र है उदास ।

प्रौढाधीरा कहत कवि ता कहै सहित हुलास ॥

॥ अथ प्रौढाधीरायथा ॥

सोवैनसेजमजेजस सुन्दरि रोसकरे जे कथारस सानी । ने
 हभरे ननिहारिबो नैननि बैनविनोदकी बातविहानी । सूधी
 नरीतिसखीजनसों मनकी गति काहुवै जातिनजानी । केलि
 मैकातरताई करै हरिसों करै चातुरता ठकुरानी ॥ १ ॥ तु-
 मक्यौं पलिकाते धरेपुहुसीपर साथे हमारै नपांयधरौ । क-

हाबोलोसखीनसोंसंभ्रमसों हंसिबोलिहमारेंतांपहरौ ।
 कितजातिहौपाननआननको मनिआनिभुजाभरिअंकभरौ
 दुखदेतसमैविनुवादरज्यों यहआदरआपनोदूरिकरौ । २।
 बोलतिकाहेनबोलसुने मधुरीवतियाँमनमोहनभाखै । बोलै
 कहाकछुचित्तमेहैदुख पित्तवढेकटुलागतींदाखै । ठाड़े
 हैंलालविलोकैनवालक्यों तेरीविलोकनिकोंअभिलाखै ।
 लालभईविनकाजहीआजुये देखोंकहामेरीदूखतीआँखै । ३।
 बहुनायकहौसबलायकहौ सबप्यारिनकरसकोलहिये । रघु-
 नाथमनेनहींकीजैतुह्यै जियमैजुहैवातसहीकहिये । यहमा
 गतिहौंपियप्यारेसदाँ सुखदेखिवेहीकोहमैचहिये । इतनेके
 लियेइतआइयेप्रात रुचैजहाराततहाँरहिये ॥ ४ ॥ आवत
 हौउठिआदरकौन्हो कछुगुनअगुनहनगनायो । जान्योकि
 जोकछुजानिहैतो अबहींफिरिचाहिहैमोहिमनायो । ठा
 ढीसहेलीजितैमिसुधालि तितैतकितेहकोत्यौरसमायो । अ
 सौकछूपरवीनतिया पियकोरसहीरसरोसजनायो ॥ ५ ॥
 मोहनरातिरमेअनतै इतबालसोंनेहवढावनआए । बेनीभ
 रौअंकवारिलला अवलानतजद्रगरूखेलखाए । कंचुकीकेव
 दछोरिहरे तनतोरिगरे लगिरंगबढाए । पाएसरोससु-
 हागिनतेरे करेरेउरोजजुपैलचकाए ॥ ६ ॥ आएइतैहौक
 पाकरिकै सबभातिनते हमकोंसुखदाई । गोकुलनाथनिहा
 लभई अगुरीनमैदेखतहींअरुनाई । बैठेबिलंबकहाकरिये
 करिनेहनिवाहिवेहीमैनिकाई । जाउजहाँवहनेहदीहैजेहिं
 केपरिप्रायनमेहँदीलाई ॥ ७ ॥ आवतहौमनभावनकेलखि

अंगनबीचनईपरकीतिहै । बाँहछुएउभक्तैबिभुक्तै नधरै प
लिकांप्रगज्यौरतिभीतिहै । नीविहलौंकरज्ञाननदेति करै
बहुसेवकजपरप्रीतिहै । देखिवेफेरिनबोढ़पनी हरिऔरसों
ठानीसनोरसरीतिहै ॥ ८ ॥ भौरकहाभसिभूलिरह्यौ मत
वारकहामकरन्दनपीवै । भोरहीतेमडरातफिरै नहिंजा
नतप्रेसपयोधिकीसीवै ॥ चंचलकारेरच्योहितबंचक तोहि
बसायजूकौनकोजीवै । औरलतानकेधोखेअहो जिनमाधुरी
मंजुलतानकोछीवै ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रौढ़ाअधीरालक्षण ॥

तरजनताड़नकरिप्रियहि कोपजनावैजौन ।

प्रौढ़अधीराकहतहैं ताहिसुमतिकेभौन ॥

॥ अथप्रौढ़ाअधीरायथा ॥

मारदर्ईअरविन्दनकी तजमानतनाहिंनअैगुनगरे । गा
रीदर्ईपछितानिभरी अबलाजगहोकछूनंददुलारे । प्रेमकी
रासिहमारोहियो सजनीनहूँमैगुनगूढ़उधारे । देहतेप्रा
नपियारेलगै तुमतौमनमोहनपानते धारे ॥ १० ॥ जावक
रंजितभालकिये मनभावनभावतीभौंनसिधारे । दूरितैभौं
हकमानचढ़ाइके सुन्दरिनैनकटाच्छतेडारे ॥ आइकैवालम
बाँहगही ढिगचंदमुखीकुकिकैभिभिकारो । चंपकमालसी
कोमलवाल सुलालचमेलीकीमालसोंमारो ॥ ११ ॥ भौंहचढ़ाइ
बढ़ाइकैरोस नचाइकैनैनलचाइकैपारो । बोलीनरूखीसिसू
खीसीवाल करोयसवंतदियोउँजियारो ॥ अपनीआभाअ
चानकही अवलोकिकैसौतिकोभावविचारो । स्वामकेसीस-

सिमंतसराहि सनालसरोजफिराइकैमारो ॥ १२ ॥ पीकभ-
 रीपलकैँ भलकैँ अलकैँ जुगडीसुलसैँ भुजखोजकी । छायर-
 हीछबिछैलकीछातीसैँ छापलगीकहँ ओछेउरोजकी । ता
 हिचितौतबडीअँखियानितेँ तीखीचितौनिचलीअतिओज-
 की । वालमओरविलोकिकैँवाल दर्इखनौखँ चिसनालसरोज
 की ॥ १३ ॥ विंवसेओठनतेँ सजनी उमगीछविहैनवनीलदुक्क
 लसों । तेरेसुओठकीलालीललाके लिलारमैसोहतिऔरही
 लसों । काहेकोंभौँहैँ चढावतितेह रहेनिजगेहहीमैहरिभू
 लसों । वृक्षियेतोहिनयोचहिये डरपावतिमारगुलावकेफू-
 लसों ॥ १४ ॥ गोपअथार्इजगेदृगसे अलसाईललाईसवैदर-
 सायगी । वातैँ चवाइनकीसुनिकैँ रिसिसैवकपैनभलीठहरा
 यगी । कोमलगातनिसाँवरेके उपटेलखिहीमैमहापछिता-
 यगी । मारैनदूरसवादभरी कहँ पाँखुरीफूलनकीगडिजा
 यगी ॥ १५ ॥ खेलनखेलियेअँसोभटू सुपरोसिनकोजकहँ ल-
 खिलैहै । मानहुनावरजोहमरो अबकाहेकोंकोजसिखापन
 हैहै । नन्दकुमारमहासुकुमार विचारिकैफेरिहियेपछितै
 है । बालियेनाइनफूलनकी पँखुरीकहँ अंगनिमैगडिजैहै ॥ १६ ॥

॥ अथ प्रौढाधीराधीरालक्षण ॥

रतिमैरहैउदासअरु तरजनादिव्यापार ।

करैसुधीराधीरतिय प्रौढासुमतिअगार ॥

॥ अथ प्रौढाधीराधीरायथा ॥

आवतदेखिकैप्रानपियाकों चलीउतधायमहारसछाकी ।
 भेटिवैकीकरउन्नतकै चितचायरहीछबिदेखिप्रभाकी । ला-

लहियेबलभद्रक है मनिमैप्रतिबिंबकीमूरतिताकी । तानि-
 कैभौहंकमानकुमारि दईहरिकेउरतोरिहराकी ॥ १७ ॥
 भोरभएमनभावनआए बनीविनडोरनहींउरसालहैं । प्रा-
 नप्रियारौरहीहैनिहारि नरूखेईबैनकहेनरसालहैं । नेकुल
 लाढिगबैठनदीनो तियाइतनेहींमैकीनोनिहालहैं । बाँहंग
 हीजबहीतबहीभई भौहैंतिरौछीभएदृगलालहैं ॥ १८ ॥
 रूपकेभारनहोतिहैसौंही लजोहिंयैदीठिसुजानपैभूली ।
 लागियेजातिनलागीकहीं निसिजागलहीपलकौगतिभूली ।
 बैठियैजहियपैठतआज कहाकहियेउपमासमदूली । आए
 हौभोरभएधनआनद आखिनमाभतौसांभसीफूली ॥ १९ ॥
 प्रीतमआएप्रभातप्रियागृह रातिरमेरतिचिन्हलिएहीं । बै-
 ठिरहीपलिकापरसुन्दरि नैननवाइकैधीरधरेहीं । बाँहंगहे
 मतिरामकहैनरही रिसिमानिनीकेहठकेहीं । बोलीनबोल
 कछूसतरायपै भौहैंचढ़ायतकीतिरछेहीं ॥ २० ॥ आवत
 हीनबिलोकीनबोली रह्येपरजंकहीमैतियबैठी । बेनीप्रबीन
 गयोढिगभोरही सौहनखाततजनहीपैठी । ज्यौंपरसेकुच
 कामिनके अपमानिनमाननिकोपतैअैठी । टेढ़ीचितौनिध
 रेअधरारद लोचनलालकैभौंहअमेठी ॥ २१ ॥ काहेकोंमो-
 हिसतावतहौ विनकाजकियेकहाहोतपरखो । गोकुलनाथ
 भलेहौभले भलेकारजकेबनेआरजदेखो । बैटेरहौउतहीक-
 हिये करिकैनकृपाकोंकृपानिधितेखो । आवतभेखविचित्र
 बनाय कहौहमसोंरह्योकौनसोलेखो ॥ २२ ॥ रावरप्राय
 निओटलसै पगगूजरीवारमहावस्टारे । सारीअसारीहि

येहलकै छलकैछबिछोरनधूमधुमारै । आवोजूआवोदुराव
नमोहसों देवजचंददुरैअध्यारै । देखोंहैकौनसीकैलछि
पाय तिरौकैहंसवहपीछेतिहारै ॥ २३ ॥

॥ अथ ज्येठाकनिठालक्षण ॥

एकनायकहींदोयतिय व्याहीहोयअनूप ।

ज्येठाऔरकनिठका इहि विधिवरनतरूप ॥ १ ॥

सरसधारपियजौनपै करैसुज्येठावाम ।

तातेघटिजापैकरै तासुकनिठानाम ॥ २ ॥

॥ अथ ज्येठाकनिठायथा ॥

खेलतफागुखेलारखरे अनुरागभरेवड़भागकन्हाई ।

एकहीभौनमैदोजनदेखिकै देवकरीइकचातुरताई । लाल

गुलालसौलीनीसुठीभरि बालकेगालकौओरचलाई । बाह-

गमूदित्तैचितई इनभेटीइतैप्रभानकीजाई ॥ १ ॥ अनुरा

गसोंखेलिकैफागुयक्यौ रह्यौकंतएकंतकहूँटरिकै । पछु-

चीदोजसौतैसमीपतहाँ दुओअंजनआंगुरीमैकरिकै । यह

पेचक्रियोतहाँकैलछवीले कछूकूलरौतिहियेधरिकै । सुहँ

एककैदीनीगुलालसुठी लई एककौंतौलौंभुजाभरिकै ॥ २ ॥

अतिसुन्दरमंदिरमैरचिसों परजंकविछायदयोहैअली ।

लखिकामतेखामसहाअभिराम बनायकैवानिकभातिभली ।

मनभाईनिहारिचिचारिहिये चतुराई करौतहाँकैलछली ।

करएकसोंआरसीकैसुखओर गहीकरएकसोंकंजकली । ३ ।

बैठीहीभावतीदोजजहाँ तहाँमोहनआनिकरीचतुराई ।

वेनीजुतेरेविलोचनचाहि कोजकहैकौलनियोछविपाई ।

हों हँ लख्यौ करि नीरे दुहँ वह कियो भावते दौठि बराई ।
 कैबस एकतिया बतियानसों एकतिया छतियासों लगाई ॥ ४ ॥
 संगनौ लवधूलिए दोऊ अटापर बैठे बिलोकत जोन्ह अरौ । रघु-
 नाथ गुलाबको धोखो बनाय मगायकै वारुनी पास धरौ । प्रियो
 आप औकै हठ धायो उन्है सरसायकै एकहीनी दभरौ । तियए
 कसों काम कलारचिकै सबरातिललारसलूट करौ ॥ ५ ॥ तीज
 के आजसिंगारके काज बरोबरिसाजधख्यौ दुहुँ आगे । साजै
 लगी अपने कर एक प्रवीनतासेवकसों सुनिरागे । एकपैरोस
 वेहो सबखानत बे दीविरौ कजराबहुवागे । भूखन अंगन अंगन
 सेवक आपने हाथ सँवारनलागे ॥ ६ ॥ मध्यदुहँ नके बैठे ल-
 ला कियो हासबिलासमहासुखपाई । दोउ नते पुनि औधर
 जू रसकी बतियाँ कहिलीन्ह मुराई । एकते बाँएबतायकह्यौ
 लखुनागिनीनेरे अचानक आई । ताकनलागी तियाजबलौं
 तबलौं लियो दाहिनी कों उरलाई ॥ ७ ॥ राजैनवीननिकाई
 भरौ रतिहँ ते खरीवेदुहँ परजंकमै । आइकै बैठे तहाँ मनमो
 हन ज्यों धनबीचलसै दुमयंकमै । सीसाउसीसाके सीसते लैक
 र अककेसों थो ज्यारेससंकमै । लागीनिहारन आरसीजौल
 गि तौल गिटूजी भरौ प्रिय अंकमै ॥ ८ ॥

॥ अथ परिकीया लक्षण ॥

गुप्तप्रेमपरपुरुषसों करै जोर सबसवास ।
 परिकीयातासों कहत सकलसुमतिके धाम ॥
 सोहै दीयप्रकारकी चतुराईकी खानि ।
 प्रथम अनूहामानिये दूजी जढ़ाजानि ॥

॥ अनूढालक्षण ॥

अनव्याहीकहुँ पुरुषसों करै जोरसवसप्रेम ।

ताहि अनूढा कहत हैं कविको विदकारिनेम ॥

अनूढायथा ।

गोपसुताकहै गौरिगुसाइन पाँचपरौं विनती सुनिलीजै ।
 दौनदयानिधिदासीके उपर नेसुकचित्तदयारसभौजै । देहि
 जौ व्याहि उच्छाहसों मोहनै मातुपिताहुके सोमनकीजै । सु-
 न्दरसाँवरोनंदकुमार वसै उरजोवरुसोवरुदीजै ॥ १ ॥ प्रीतही
 कीरँगभूमिवनाइके मंत्रमनोरथके छविधारौ । लाखभिलाषन
 साधलिये यसवन्ततहाँ पधरे गिरधारौ । हाथगहेरतिबंदीम
 नोज बखानखयंवरको करै भारौ । नैनमृनालकीमालचितौ
 निमै बालहियेनदलालके डारौ ॥ २ ॥ जायनहीं कुलगोकुल
 सै अरुदूनीदुहँ दिसि दीपतिजागै । त्योंपदमाकरजोईसुनैज-
 हाँ सोतहाँ आनदमै अनुरागै । एदईअसोकछूकरव्यौं त जो
 देखेअदेखिनके दृगदागै । जामै निसंकह्वै मोहनकों भरिये
 निजअंककलंकनलागै ॥ ३ ॥ असीसुनीहैनरीतिकहँ विन-
 हीं पहिचानिवढावतहेतहै । होतनहीं गृहकाजकछू अकु-
 लातहियेनसुहातनिकेतहै । कोटिउपायकरे विसरै नरहै
 सुधिआएअरौचितचेतहै । वृभतिहों सजनीकवहँ मनको
 अभिलाषदर्दकरिदेतहै ॥ ४ ॥ देख्योचहँ निसिवासरहँ पै
 नदेखिवेकीकछूजानतिघातै । मैधौंकहातेगईवहिओर ग-
 ईपरिमेरीधौं दीठिकहाते । व्याह्रिदियोचहँ तातकहूँ मो-
 हि मैसखितोहि सिखावतियाते । त्रगुरुलोगनसों नकरैकिन

कान्हसोँ मेरेईव्याहकीबातेँ ॥ ५ ॥ मातपितासोँ विसाति
 कछू नपै चाहनतेँ सबसूखतगातहै । सेखरघैरकरैँ सिगरे
 पुरबासीविसासीभएदुखदातहैं । कोजसिखावनहारनहीं
 इनसोँससुभायकहैयहवातहै । छाड़िअमीरसरासिपरोस-
 हीँ कोसनओसपियेकतजातहैं ॥ ६ ॥ जानतिहोँविधिमौन
 लिखी हरिवाकीतिहारेबिछोहकेबानन । जोमिलिदेहुदि-
 लासोँमिलापको तौकछुवाकेपरैकालप्रानन । दासजूजाहीव
 रीतेसुनी निजव्याहउछाहकीचाहकोँकानन । बाहीवरीतेँ
 नधीरोधरैसन पीरोहैआयोपियारीकोअनन ॥ ७ ॥

॥ अथजढ़ालक्षण ॥

व्याहीतियपरपुरुषसोँ करैनुक्तामबिलास ।
 जढ़ातासोँकहतहै सकलसुकविसहुलास ॥

जढ़ायथा ।

अतिखीनमृनालकेतारहुतेँ तिहिँउपरपाँवदैआवनो
 है । सुईवेहकोबेधसकीनतहँ परतीतकोटाँडालदावनोहै ।
 कविबोधाअनीषनीनेनहुकी चढ़ितापैनचित्तडगावनोहै ।
 यहप्रेमकोपंथकरारहैरी तरवारकीधारकोधावनोहै ॥ १ ॥

रैनदिनाघुटिवोकरैँ प्रान करैँअँखयाँदुखियाँकरना-
 सी । पीतसकीसुधिअंतरनै कसकैसखिज्योँपँसुरीनमैगाँ-
 सी । चौचंदचारचबाइनके बहुँ ओरसचैविरचैकरिहाँ-
 सी । योँसरियेभरियेकहिक्योँ सुपरोजिनकाहूकेप्रेसकीकाँसी
 ॥ २ ॥ भलिहू सोगलीआवैजोसोहन पूरवपुस्यनकोप्रतजू-
 नै । हायदर्शनवसायकछू दुरिदेखिवोदूवरकाँहकोँछूजै ।

मागोंयहै विधिनापैव डेखिन जो कवहूँ प्रिय आसही पूजे । चौ-
 थिको चंदलखे वृजचंदसों लागे कलंकपै जू जरे हूँ जै ॥ ३ ॥ स-
 वरे दिन सासरिसातरहै वनदी नित बोलकु बोल कहै । सकि-
 जं चैन भौं किस कौं कवहूँ गुरुलोगनि को उपहासदहै । मिली-
 भागन आनि अचानकतूं यह औ सरपाइ हियो उमहै । वस्तूं-
 ही उपायवतावसखी जिहिं लालमिलै अरु लाजरहै ॥ ४ ॥ अ-
 जूनंदके नंदनसों कहिये कहौ नैन निरावरोहौ सरहै । संगछां-
 हं च्यों सासफिरै अनखानी जेठानी दुकादुकी सौ सरहै । कवि-
 नाथ जू जानति हौं जियसै वयवौति गये कहां सौ सरहै । परकौ-
 जै कहाइ हिं गांवको लोग गुहै चरचानको चौ सरहै ॥ ५ ॥ य-
 ह डों डी सनेहको औं डीवजै जगभों डी भलीवकहीतौ कहा ।
 कुलकानिते कौ लोंकनौ डीरहौं पुरकानिरही नरहीतौ क-
 हा । चिततौ गड़ि गोवाचितौ निहीसै कहौ नाथ चही नचहीतौ
 कहा । जवलाजने वारि भई हरिकी अवलाजरही नरहीतौ-
 कहा ॥ ६ ॥ देखिहसै सव आपुससै जो कछूमन आवतसो कह-
 तीहैं । एघरहांई लो गार्इ सबै निसिद्यौ सनेवाज हमै दहती-
 हैं । वातें चवावभरो सुनिकै रिसलागतपै चुपवहै रहतीहैं ।
 प्रानप्रियारेतिहारे लिए सिगरे व्रजको हंसिदोसहतीहैं ॥ ७ ॥
 या डरही धरहौ सैरही कहि देवदुखोनहीं दूतनको दुख । का-
 हूँ कौ वात कहौ न सुनी मनमारि विसारदियो सिगरो सुख ।
 भौरसै भूले भए सखिसै जवते व्रजराजकी ओर कियो सुख । सो-
 हि भट्टू तवते निसिद्यौ स चितौ तही जात चवाइनको सुख ॥ ८ ॥
 लै मनफेरि वीसी खेनहीं वलिनेहनिवाह कियो नहीं आवत ।

हेरि कौ फेरि मुखै हरि चंदजू देखन हूँ कों हमै तरसावत । प्रीत-
म प्रीत पपीहन कों धनपानि परूप कवौ न प्रियावत । जानौ नने
कुब्यथा परकी वलिहारी तजु हौ सुजान कहावत ॥ ८ ॥ हम
जानती हैं सुनी हूँ कौ गुनी कुलकानि सो ज्ञानसुरो सो सुरो । रं-
गसावरो अँसो न कूटत सेवक लालिमाला हपुरो सो पुरो । अब
कासमुभावति कोसमुकै जिय जो ककु आइ पुरो सो पुरो । प-
टगाँठि को जोरि सु और हीसों सनस्याससों जाइ जुरो सो जुरो
१०० हौं कितवहै इत अनिकढ़ौंगी कहाँ ते इतैवहका हूर अँ-
है। वहै है कहाँ ते अचानक भेट कहाँ ते लिलाटलिख्यो फलपै है ।
औरसों और भद्र गति मेरी दर्दवे किसोर कहा करदहै । हौं कहा
जानो हमारे इ भागकी लागलगी अँखियाँ लगिजै है ॥ ११ ॥ साँ
करी गैलवा खोरि हमै किन खोरिल गायखि नैवो करो कोउ ।
धीरज देवधरो सो धरो अधराधर दंतपिसैवो करो कोउ । हाय
नहीं करि है कवहूँ जियघायपै लोनघसैवो करो कोउ । रूपहमै
दरसैवो करो अरसैवो करो कीरिसैवो करो कोउ ॥ १२ ॥ जादि
नतै निरख्यौ नदनंदन कानितजी धरबंधन छूट्यो । चारुविलो
कनि कीनी सुमार सह्यारगई मनसारनै लूट्यो । सागरकोंस
रिताजिनि धावै नरो कीर है कुलको पुलटूट्यो । सत्तभयो मन
संगफिरै रसखानसरूपअमीरस झूट्यो ॥ १३ ॥ जवरो भि
सवादभरी अँखियाँ तवरूपभलो अरूपोचकहा । अपनेअंग
व्याधिअसाधउठी तबवैदनहीं सोसकोचकहा । रसरासि-
मिलापसुधाअचयो तवजातिअपौतिको सोचकहा । छकि-
लौड़ी भई हितडौं डीवजाय कनौड़ी भए अवलोचकहा ॥ १४ ॥

नलिनौविधुसध्यकोंओटकरै जु गफोरिजुराफाउडावहिको ।
 धिविचुंवकवौचकोलोहोसयो तहँ दूखरोरूपदिखावहिको ।
 कविसंभुसनेहकौरीतियहै विछुरेजलमौनजियावहिको ।
 गुनवारेगोपालकौआंखिनते अरुभौअंखियांसरुभावहिको
 ॥ १५ ॥ कहिवेसुनिवेकौकछू नइहा नलटीभलीकोदुखपा-
 वनेहै । इनकौसवकौसरजीकरिकै अपनेमनकोससुभाव-
 नेहै । कहिठाकुरलालकेदेखिवेकेलिये मंचवहौठहराव-
 नेहै । इनचौचंदहाइनमैवसिकै समयोयहवीरवरावनेहै-
 ॥ १६ ॥ यहप्रेमकथाकहियेकिहिंसों जोकहै तोकहाकोउ
 मानतहै । परजपरीधीरधरायोचहै तनरोगनहींपहिचा-
 नतहै । कहिठाकुरजाहिलगीकसकै सुतोकोकसकैउरआ
 नतहै । बिनआपनेपावविवाइगयेकोजप्रीरपरईकाजानतहै
 ॥ १७ ॥ जाइनजंत्रते मंचते लूरिते जातकहीनहींहोतजथाहै
 सूख्योकरै तनभूल्योफिरैमन लोगकहैंजिमिवौरीजथाहै ।
 हायदर्दजनिकाहूकेहोइ । कहै रघुनाथभयेहीमथाहै । वूभै
 कहाअनबूभौभली यहप्रेमव्यथाकौकथाअकथाह ॥ १८ ॥
 कहतेनवनैकछू अकहूषाँ सबकौसबहतेवनैसहते । घर-
 वाहिरघैरउठगोरीभटू मनमोहनलालनकेचहते । कहि
 ठाकुरहाथचलैगहिये अरुजीभचलेनवनैगहते । सखिया
 नदगांवकोकौतुकरौ लखतेहीवनैनवनैकहते ॥ १९ ॥ पिय-
 मोहनकोवहमोहिनीरूप निहारेबिनानहिंजीजतुहै । ति-
 हिंतेजुलटीभलीयाजगमै सिखमानिसवैसुनिलीजतुहै ।
 कहिठाकुरलालकेदेखिवेकेलिये ज्वावनकाहुवैदीजतुहै ।

अबका कहिये अपने अरुके सवहीकी खुसामदकी जतु है ॥ २० ॥
 चौचंदहाईं जरै व्रजकी जेपरायोवन्योहरभातिविगारै ।
 काहूकीवेटीवह नकेवैर कितेघरजायकसंधसेपारै । ठाकुर
 याविसवासकीहौसन आठहूंगांठरहीहैहमारै । बेकरेपैये-
 करै करनी करि आवैकहूंतोकहाकरिपारै ॥ २१ ॥ हमएककु-
 राहचलीतौचली हटकोइन्है येनाकुराहचलै । यहतोवलि
 आपनोवूकनो है प्रनपालियेजोईसोपालेपलै । कहिठाकुर
 प्रीतिकरीजोगुपालसों टेरिकहैसुनोजचेगलै । हमैनीकी
 लगीसोकरैहमनै तुमेनीकीलगैनलगेतोभलै ॥ २२ ॥ काहु-
 केहोयतोकैसीकरीकिन तैसेमनैलगेतैसेसिखाये । ज्योंज्यों
 अरीहटक्योइनलोगन त्योंत्योंखरेविगरेयेसवाये । ठाकुरका
 हूरुचैनतोकाकरोँ मोहितोअसेलटेभलेभाये । नैनहमारे
 हमारेमनैलगे चाहेजहाँईतहाँइँलगाये ॥ २३ ॥ अजोकहै
 तोभलेकहिवोकरो मानसहासोसवैसहिलीजै । तेवकिआपु
 हितेचुपहोइँगी काहेकोंकाहुवैऊतरदीजै । ठाकुरमेरेमते
 कोयहै धनिमानकैजोवनरूपपतीजै । याजगमैजनमेकोजिये
 कोयहैफलहैहरिसोंहितकीजै ॥ २४ ॥ अबकाससुभावती
 कोससुभैवदनामीकेवीजनवोचुकीरी । तवतौइतनोनविचार
 कख्यौ इहिंजालपरेकहुकोचुकीरी । कहिठाकुरयारसरी-
 तिरंगे करिप्रीतिपतिव्रतखोचुकीरी । सखीनेकीवदीजोवदी
 हुतीभालमै होनीहुतीसुतोहोचुकीरी ॥ २५ ॥ वावरीद
 तौवकैवहुतेरो लग्योनहिँ तोहिकहूँयहधावरी । धावरीधा-
 यलजानतहै जिनकेनिसवासरप्रेमसुभावरी । आवरीभोज

नभौनननीद हियेअरुभीवहमूरतिसावरौ । सावरेरंगमै
 होंतोरंगी नचढ़े अवदूसरोरंगसोवावरौ ॥ २६ ॥ अवतौजो
 भईसोभईसोभई हमवाहीमेअनदलीवोकरै । इनकाननकी
 यहवानिअरौ वतरानिसुधामधुपीवोकरै । कविरामकहै
 अभिरामसरूप चितैचितवाहीमेदौवोकरै । सखिहोंवारं
 गीलेकेरंगरंगी येचवाइनेचौचंदकीवोकरै ॥ २७ ॥ लहि-
 चीवनमूरिकोलाहअली वैभले जुगचारिलींजीवोकरै ।
 द्विजदेवजूत्योंहरखायहियेवरवैनसुधारसपीवोकरै । कछू-
 धंघटखोलिचितैहरिओरन चौधससीदुतिलीवोकरै । हम-
 तोत्रजकोवसिवोईतज्यो अबचावचवाइनेकीवोकरै ॥ २८ ॥
 काननदूसरोनामसुनैनहीं एकहीरंगरंग्योयहडोरो । धो-
 खेहुदूसरोनामकहै रसनासुखकाढ़िहलाहलवोरो । ठाकुर
 चित्तकीवृत्तियही । हमकैसेहूँटेकतजैनहींभोरो । बावरौवे
 अखियांजरनाहिं जोसावरोछोड़िनिहारतींगोरो ॥ २९ ॥
 पूरवते पुनिपच्छिमओर कियोसुरआपगाधारनचाहै । तूल
 नतोपिकैहै मतिमंद हुतासनदंडप्रहारनचाहै । दासजूदे-
 खिकलानिधिकालिमा छूरिनते छिलिडारनचाहै । नीति-
 सुनायकैमोसनते नदलालकोनेहनिवारनचाहै ॥ ३० ॥ घर
 पासपरोसिनिघैरकरो अरुनावधरौवज्जगावरीरी । जबढोल
 दईवदनामभई तबकौनकीलाजलजावरीरी । कविठाकुर
 प्रेमकेफ्रदपरौ वृजखोरिफिरौंभईबावरीरी । अबहोनदेवी
 रिहँसोसोहँसो हिरदैवसौमूरतिसावरीरी ॥ ३१ ॥ जबते
 दरसेमनमोहनजू तवते अखियायेलगीसोलगी । कुलकानिग

ईसखीवाहीधरी जबप्रेमकीचासपगीसोपगी । कहिठाकुर
 नेहकेनेजनकी उरमैअनीआनिखगीसोखगी । तुमगावरे
 नावरेकोजधरौ हंससावरेरंगरंगीसोरंगी ॥ ३२ ॥ इननै-
 ननिमैबहसावरीमूरति देखतिआनिअरीसोअरी । अबतो
 हैनिवाहवोयाकोअरी हरिचंदतेप्रौतिकरीसोकरी । उन-
 खंजनकेमदगंजनसौ अखियायेहमारीलरीसोलरी । वर-
 लोचवावकरोतोकरौ हसप्रेमकेफंदपरीसोपरी ॥ ३३ ॥
 तुमचाहोसोकोजकहौहमको नंदवारेकेसंगठईसोठई ।
 तुमहीकुलवीनैप्रवीनैसबे हसहीकुलछाडिगईसोगई । रस-
 खानयाप्रौतिकीरीतिनई सुकलंककीमोटै लईसोलई । इहिं
 गांवकेबासीहंसोसोहंसो हसस्यामकीदासीभईसोभई ॥ ३४ ॥
 देवनदेखतिहौं दुतिदूसरी देखेहैजादिनतेप्रजभूपमै । पूरि-
 रहीरीवहैपुरकानन आननध्याननओपअनूपमै । येअखियांस
 खियाहैहमारी सोजाइमिलीजलबूंदज्योंकूपमै । कोरकरोन
 हिंप्राइयेकेहूसमाइगईप्रजराजकेरूपमै ॥ ३५ ॥ नामकुनाव
 धरैपलमै बलिलोगलवारबुरेबजमारै । नेककिसोरकीओर
 निहारत वातअनेकरचैवदकारै । कौनसेनैनबिगूवेहमै
 अबजीतेसबेसबतेहमहारै । आनहमारैनहैहमआनकेहै
 हमकान्हकेकान्हहमारै ॥ ३६ ॥ ननदीऔजेठानीनहींहं-
 सतीतो हितूतिनहूँ कोंबखानतीमै । घरहाँईचवावनजोक
 रतीतो भलोऔबुरोपहिचानतीमै । हनुमानपरोसिनहूँ
 हितकी कहतीतोअठाननठानतीमै । यहसीखतिहारीसुनो
 सजनी रहतीकुलकानितोमानतीमै ॥ ३७ ॥ नामधरोजो

चहोसोकहौंकिनकछूबूभोहमैसुतोकेचुकीहैं।लखिलाजत-
मैनजिहैतिन्हसोंबलदेवसनेहतोवैचुकीहै।अवकामन-
हैंसमुझाइवेकोमनभावनकोंमनदेचुकीहैं।अपनेमगआप-
चलैहमतोंनिजजीवनकोफललैचुकीहैं॥३८॥चहुँऔर-
सोंचौंचंदकीबोकरैनचवाइनकोडरमानतीहै।अपनेअरु
औरनकेउरकीभलीभाँतिनसोंपहिचानतीहै।गतिभालकी
सेवकजोध्रुवतोसबप्रोतिकीरीतिपिछानतीहै।तुमजानती
हौतोवचायेचलोहमजानतीहैकीअजानतीहै॥३९॥अ-
प्रवादकोउकिनकीबोकरोहमनेकुनहींसकमानतीहै।व-
हिकैलछवीलेकिचाहनोंद्विजप्रेसकीवारुनीछानतीहै।
वेइफूँकिकैपावधरैसिगरीअपनेकोंसदाजेवखानतीहै।न-
हिकैकाजभलीऔरुतेकछूहमजानतीहैकीअजानतीहै
॥४०॥नामधरोसिगरोव्रजतोअवकौनसीवातकोसोचरहा
है।त्योंहरिचंदजूऔरहलोगनमान्योवुरोहमसोजसहाहै
होनीहुतीसुतोहोयचुकीइनवातनतेअवलाभकहाहै।ला
गेकलंकहअंकलगैंनहींतौसखिभूलहमारीमहाहै॥४१॥
हमहंसबजानतीलोककीचालहिंक्योंइतनोवतरावतीहै।
हितजामैहमारोवनैसोकरोसखियांतुममेरीकहावतीहै।
हरिचंदजूयामेनलाभकछूहमेवातनक्योंवहरावतीहै।
सजनीमनपासनहींहमरेतुमकौनकोंकासमुझावतीहै॥४२॥
अवतोवदनामभईव्रजमैघरहंइचवावकरौतोकरो।अप-
कीरतिहोउभलेहरिचंदजूसासुजेठानीलरोतोलरो।नित
देखनोहैवहरूपमनोहरलाजपैगाजपरोतोपरो।मुहिआ
पनेकामसोंकामअलीकुलकेकुलनामधरोतोवरो॥४३॥

॥ अथपरकौया भेदान्तरकथन ॥

परकौयाकेभेदकवि औरोकहतवखानि ।

तिनमेगुप्ताजानिये पहिलेसवसुखदानि ॥

फेरविदग्धालच्छिता कुलटासुदितानाम ।

अनुशयनासोतीनविधि कहीकविनअभिराम ॥

॥ तत्रगुप्तालक्षणा ॥

कविनकहीगुप्तात्रिविधि लखिग्रंथनकीरीति ।

भूतसुरतसंगोपना पहिलीगुनहुसप्रीति ॥

अरुभविष्यरतिगोपना होतिपरमकमनौय ।

वर्तमानरतिगोपना तीजो जानहुँतौय ॥

॥ तहँभूतसुरतगुप्ताजथा ॥

जानिभक्ताभुकीभेषकूपायकै गागरीलैधरते निकरीती ।

जानोकहाते कवैकेहिंवेरते आइजुरेजितैहोरीधरीती ।

ठाकुरदौरिपरमे मोहिदेखत भागवचीजुककू सुधरीती । वी-
रजोद्वारनदेहुँकिवार तोमै होरिहारनहाथपरीती ॥ १ ॥

लोगलोगाइनहोरीलगाई मिलामिलीचारनमेटतहीवन्यो ।

देवजूचंदनचूरकपूर लिलारनलैलैलपेटतहीवन्यो । वेतेहिं

औसरआइगये समुहायहियोनसमेटतहीवन्यो । कीन्हीअ-

नाकनीमैमुखमोर पैजोरिभुजाभटूभेटतहीवन्यो ॥ २ ॥ हौ

अलिआजुगईतरके वहामहेसजूकालिंदीनीरकेकारन । ज्यो-

पगएकवढायोचहौँ रपटोपगदूसरोलागीपुकारन । आय

गयोधौँकहाते अचानक नंदकोवारोरिमोहिउवारन । जो-

गहिलेतोनमोहिकहूँ मिलतोनसदेँसहूँदीन्हे हजारन ॥ ३ ॥

वहरासखिएकभज्योखरिकाते मह तेहिदौरिपछेरोकि-
 यो । धनकाननजायपरीकपित्यो लपटाइदईभटभेरोकियो ।
 कुचकंचुकीकेसकपोलनित्यो अधराननदेकैनिवेरोकियो ।
 अमसीकरकंपउसासनिसेवक संचितयौतनमेरोकियो ॥ ४ ॥
 जानीनमैललिताअलिताहि जुसोवनमाहिं गईकरिहांसी ।
 लायेहियेनखनाहरकेसम मेरीनहींतजनीदविनासी । लैग-
 ईअंबरवेनीप्रवीन उढायलट्टीदुपट्टीठगमासी । तोरितनीतन
 छोरिअभूपन देनकोंभूलिगईगलफांसी ॥ ५ ॥ बारवहारन
 भोरहीहीं पठईमतिहीनमतोकैलोगाइन । बेरीकिवारउ-
 वारतही अलिमोरचकोरकठोरकुदाइन । देवकहाकहौः
 देहदसा यहहौंसकुचौंकुललोगलोगाइन । सासुरेकीउ-
 पहासकरै विसवासकरोतुमसासगोसांइन ॥ ६ ॥ कौन
 सीचालचलीष्टजमै गुरुलोगनसोकहिवैरवढावै । औरकी
 वातनकानसुनै अपनीकहिकैउलट्टीसमुभावै । कौनवोलाव-
 नजातइन्है निसिवासरचौचंद्रआनसचावै । चोरिचवाइ-
 निचातुरये हियरेकोहराअमतैधरिआवै ॥ ७ ॥ आज
 भट्टूएकगोपकुमारने रासरच्योएकगोपकेहारै । सुंदरवान
 कसोरसखान वन्योवहछोहराभागहमारै । एविधनाजो
 हमैहसती अवनेककहींउतकोपगधारै । ताहिवदौंफि-
 रिआवैवरे विनहीतनऔधनजोवनहारै ॥ ८ ॥

॥ भविष्यगुप्तायथा ॥

हैप्रजवालनमैप्रसिवो विनकारनवैरकरैकुलवामै । हौं
 गुरुलोगनमाभगनी कुलकानिप्रनीवरतौंप्रातंजामै । हौं

तुमप्रानहित्सिगरी कविसेखरदेहुसिखावनयामै । गैलमै
गोपदनीरभख्योसखि चौथकोचंदपखोलखितामै ॥ १ ॥ भू-
लेहुनंदकेभौननजैहौमै तू किनकेतिकोसौंहदिवावै । पाले
पखेरूअनेकतहा मनिमानिकदेखिसुवाडरपावै । ओठमै
दागकहूँपरजायतो मोपैनकेहूँककूकहिआवै । कैसीकारौं
कहुसोमुखचंदकी ओरचकोरजोचोचचलावै ॥ २ ॥ जाति
हौं गोरसवेचनको ब्रजवीधिनधूमसचीचहुँधाते । बाल
गोपालसवैअमनैकहै फागुनमैअचिहौंवरुहाते । छींटीह
जोपरीवेनीप्रवीन कहूँपटमैरंगकीवरुखाते । नेहकैज्योंही
पठावतीहै करिहैंफिरितेहभरौविप्रवाते ॥ ३ ॥ दैहोसको
सिरतो कहुँभाभी पैजखकेखेतनदेखनजैहौं । जैहौंतोजीउडे
रावनदेखिहौं बीचहीखेतकेजायकूपैहौं । पैहौंकरोरजोपा
तनको फटिहैपटकेहूँतोहौंनडेरैहौं । रैहौंनसौनजोगेहके
रोस करेगेतोदोसमैतेरोईदैंहौं ॥ ४ ॥ संगगांवकोगोधन
लैसिगरो रघुनाथभरेसनचाइनमै । नहिँजानियेजातरहै
कितको वनभीतरकुंजसुहाइनमै । दुखजानतीहैनककूउत
को कृतलागतजोअंगपाइनमै । कहैघायमिलायकैआवउता
ल तूगायगोपालकीगाइनमै ॥ ५ ॥

॥ वर्तमानगुप्तायथा ॥

ज्योज्योंचवावचलैचहुँओर धरैचितवावएत्योहीत्यों
चोखे । कोजसिखावनहारनही विनलाजभयेविगरैलअ-
नोखे । गोकुलगँवको एतीअनीति कहुँते दईधौं दईअन
चोखे । देखतीहौमोहिमाभगलीमै गहीइनआईधौं कौनके

धोखे ॥ १ ॥ जानिनहीं पहिचानिनहीं दुखहोतयहैयहसाँ
 वरोकोरी । हौं तो चलीजमुनाजलको कविदूलहसुइसुभाव
 साँभोरी । गाजपरोव्रजकोवसिवो तुमहँ सखिदेखतीहौव-
 रजोरी । मेरोगरोगहिऐसेँ कहै तुमकाहँ नआवतीखेलन
 होरी ॥ २ ॥ चोरसोमोहिपछ्योपहिचानि लग्योकछुदूरते
 सेवकसोहै । अनिअचानकवाँहगही मोहिजानिअकेली
 महावनमोहै । आवतीतोहिइतैलखिकै तवढौठहियेभैक-
 छूसकुचोहै । गँदहमारेहरेकहिकै अचरागहिभाज्योन
 जानियेकोहै ॥ ३ ॥ वेनीजुयाव्रजभैप्रसिकै हँसिकेनचलीन
 भैसीसउठायो । कालिकलिंदीकेतौरगयोगिरि टीकोलि-
 लारकोनीकोनपायो । हेरिलियोहरिटेरिकछ्यो यहकौनको
 हैअजूमैपछ्योपायो । मोहिजँजालपछ्योरीमहा नदलालसो
 बोलतहौबनिआयो । ४ । गैयनघेरनवैचलेगेह सुमैचलीरैन
 भयेअकुलानी । स्यामसरौरमहाइनको भलकैमेरीदेहसुगन्ध
 साँसानौ । देखतीतैनजोवेनीप्रवीननमानतीकेहँअचंभित
 बानी । बेलिकेधोखेगछ्योइनमोहि तमालकेधोखेइन्हैलपटा-
 नी । ५ । कामरीडारेकंधापरदेव अहीरककैसबहीठहरायो ।
 जोईहैसोईहैमेरोतोप्राणहै वाहिरौपायमैप्राणसोपायो ।
 कामरीलीन्हीउढायतुरन्तही कामरीमेरोकियोमनभायो ।
 कामरीमोजियमाख्योहुतो इहिँकामरीवारेबिचारेबचा-
 यो । ६ । कुंजहोआईत्योआयोरीमेहकहाँतेकढोयहआ
 निबटोही होउरपीतरपीबिजुरी उरपेतेउढाईयाकामरी-
 खाही । देतधनोसुखयो कविदूलहअसीदयानहिँआनभैजो-

ही । देखतियाकृतियां तरराखत भी जतआप्रवचावतसो-
 ही । ७ । अलिहौं तोगईजमुनाजलको सुकहाकहौ वीरबि-
 पत्तिपरी । घहराइकैकारौषटाउनई हूतनेही मैगागरिसीस
 धरी । रपटोपगघाटचढाँगयो कविमडनहूँ कैविहालगि-
 री । चिरजीवहिनन्दकोबारोअरी गहिबांहगरीवनेठाढी
 करी । ८ । आजुअकेलीउतावलीहौं पहुँचीतटलो तुमआई
 करारमै । वालसखीनकेहाहाकिये मनकेहूँ दियोजलकेलि
 बिहारमै । सौतलगातभयेसिगरे उकरीतोमरूँ कैकितेकहूँ
 बारमै । कान्हजोधायधरैनाअली तोवहीतीभलीजमुनाजल
 धारमै । ९ । जोरजगीजमुनाजलधारमै धाइधसीजलकेलि
 कीमती । ल्योपदमाकरपैगचले उकलैजलतुंगतरंगविधा-
 ती । टूटेहराकराकूटेसबै सरबोरभईअगियारंगराती । को
 कहतोयहमेरीदसा गहतोनगुविन्दतोमैवहिजाती । १० ।
 अबहीकीहैवातहो न्हातहुती औ चकागहिरेपगजातभयो ।
 गहिग्राहअथाहकोलैहीचल्यो मनमोहनदूरहीते चितयो ।
 द्रुतदौरिकैपौरिकैदासवरोरिकै कोरिकैमोहिवचायलयो ।
 इन्हैभेटतीभेटिहौं तोहिअली भयोआजतौमोअवतारनयो
 । ११ । तूसुसकातकहाकनखैयन भैयनसो इनकोससभाँज ।
 हारहरोहरिमोजमुनातट लैगुरुलोगननावकढाँज । सासु
 सुनैननदीदुखदासन तौवरभीतरपैठनपाँज । पानिधरैनप-
 योधरपैसखी ईसकेसीसकीसोहखवाँज । १२ । उधमअसो
 मच्योत्रजमै सबअंगतरंगउमंगनसींचै । ल्योपदमाकरकृज्जन
 छातिनकूँ छितिकाजतकेसरकीचै । दैपिचकीभजींभीजीत-

हैं परेपौछेगोपालगुलालउलीचै । एकहीसंगइहँारपटे स-
खियेभयेजपरहौं भईनीचै । १३ । आईसँदेससुनावनकीं सु
भईकविदूलहभेलहसारी । वारियेकुम्भकरनकीनीद किहै
सुचकुन्दकीनीदकहारी । जपरहौंलंचकीसचको लचकैप-
लिकासखिदेखिहहारी । तैक्यो नआयजगावैइन्है हौंजगाय
जगायजगायकैहारी । १४ । आयोसुहायोसोमोमनभायो क
होसुखसासननंदतेँ आरो । सोतेँ जुदोकवहनरह्यो कविदूलह
सोमनप्रानअधारो । कोककलानकेसीखतहँ रवहोतहैपा-
यलकोभनकारो । सोजासखीभरमैसतिरौ यहखोजाहसारे
होमाइकेबारो । १५ । जाकेचरित्रऔचातुरई चितचेतचितै
चतुराननहारो । त्योंपदमाकरखाँगसवै दसहँ अवतारको
ल्यावनहारो । देखतीहौनखतेसिखलो वनिवैठगौवहै मनो नं
दकोबारो । सोहिखकेलिकैकेलिकरै सखियावहरूपियाकंत
हमारो । १६ ।

। विदग्धालच्छन ।

कहीविदग्धादोयविधि सुकविनसहितविवेक ।

वचनविदग्धाएकहै क्रियाविदग्धाएक ॥

। वचनविदग्धाको लच्छन ।

वचनचातुरीतेजुतियवांछितसावैकाम ।

वचनविदग्धानात्रिका तासुकहतकविनाम ॥

। वचनविदग्धाजथा ।

कातिकोन्हैवेकोंलोगचले अपनोअपनोसवहीसंगजोख्यो ।

राखिगईवररुनेबिसासिनि सासुअँजालतेँ मोहिवाछ्योसो ।

है तो भली बर ही जोर हो तुम यों कहिके न नदी हूनि होखो ।
 प्यारी परोसिन सो कछो टेरि परोसी के कान सुधा सो निचो-
 खो । १ । धारि सायगई बर आपने तीर थन्हा नगर पि-
 तु भैया । स्या भैं सुनाइ कहै को दु है गो लगै नि सि आधिक मै यह
 गया । दासियौ रूसि गई कित हँ सजनी यह कौन सुनै दु ख द
 या । है पट पौटि रहौंगी भटू पलगा पर मेरि ज जानै बलैया
 । २ । सासुरे जाय कछू दिन तै रछो छाड़ि दियो निज मंदिर
 भैया । दाउ ददा जद है ज्वर सो पर सो लई कातिकी की संग मै-
 या । याही मसूस मरो का करो रिखि नाथ परोसिन मै परोसै य
 को ज कहँ न मिलै मग मै है सँवार ही जात दु हावन गैया । ३ ।
 भादव की नि सि भूरि उठवन घोर नते तन जोर बितै है । सासु बि
 सासिन अननदी प्रनपालि परोसिन के घर जै है । चौ चंद घोर न को
 चहुँ वाँ सरदार कहां के हिते दु ख कै है । सो च हमै सवरी दिसि
 को नि सि पाछिले जा म प्रिया घर ऐ है । ४ । प्रिय प्रागे परोसिन के
 रस मै बस मेन कहँ बसि मेरे र है । पद मा कर पाहुनी सी न नदी
 न नदी त जये अब से रे र है ॥ दु ख औ रज का सो कहीं को सुनै व्रज
 की बनिता हग फे रे र है । न सखी बर सांभ सवे रे र है वन खाम ब-
 री वरी वे रे र है । ५ । अलि गोधन पूजन को उम छी व्रज सां हि
 चढ़ी त प्रसो गनते । सब प्रै है म मोर थ को फल बेनी । रही बर मे
 महा भोग नते । सजनी रजनी वरी द्वै कर है सव पूजि है पू र्व जो-
 गनते । यो ह का न्है सुनावती आली के ओखे जियो गी मै क्यो
 कूटे ली गनते । ६ । खेलत ही सजनी न मिली संग चौ पर छार
 महार सलै वो । नंदन गोकुल चंदनू को कहँ दीठि पस्य ललचाय

चित्तैवो । नागरिनारिकछोपरगोटसों कीजतुहैकतआपुन
 औवो । जोकरैईसतोवीसविसे कछूँदावपरैअवकैमिलिजैवो ।

७ । यहलातचलावनीहायदैया हरएकपैनाहींकुलावनी
 है । सुनीतेरौतरीप्रमिलायवेकी हिततेरेसोंमालपुवावनी
 है । कविग्वालचराओलैआवोवरे फ़िरवांधनीपौरिसुहाव-
 नीहै । मनभावनीदैहौंदुहावनीपै यहगायतुहीपै दुहावनीहै

८ । जबलोंधरकोधनीआवैधरे तवलोंतोक्कहँचितदीवोक-
 रो । पदमाकरएवछराअपने बछरानकेसंगचरैवोकरो । अस
 औरनकेधरतैहमते तुमदूनीदुहावनीलैवोकरो । नितखाँक
 सकारैहमारौहहा हरिगायेथलादुहिजैवोकरो । ६ ।

। क्रियाविदग्धाको लच्छन ।

जोचतुराईतेकछू करैक्रियाअभिराम ।

क्रियाविदग्धानायिका ताहिकहैरसधास ॥

॥ यथा ॥

जातहुतीगुरुलोगनिमैकहँ आयगएहरिकुंजगलीसों । लाम
 सोंसोंहैचित्तैजसको फ़िरठाढीभईलगिआलीअलीसों ॥ आ-
 रसीजचौकरौकरकी कहितोषलख्योछविभाँतिभलीसों ।

चारताचातुरतापरलाल गयोविक्रिअष्टप्रधानललीसों । १ ।

बैठीतियागुरुलोगनिमै रतिते अतिसुन्दररूपविसेखी । आ-
 योतहांसतिराससोजामैं मनोभवते बढिकांतिउदेखी । लो-
 चनरूपप्रियोईचहै असलाजनिजातनहींकविपेखी । नैनन-

वाइरहौहियमालमैं लालकीमूरतिलालमैंदेखी । २ ।

बैठीतियागुरुलोगनिमै रतितरसनौयसीरूपसोहाई आयो

तहाँ मनमोहनलों सबकी अखियाँ नव है छवि छाई । कैसे लखे
 प्रियवेनी प्रवीन नवीन सनेह सकोच समाई । पीठि है भाँवते कों
 सजनी सजनी नकी दीठि सों दीठि लगाई ॥३॥ जात ही बाल अ
 लीन के साथ मै पीछे ते बोल सुन्यो अरु रागी । क्यों लखिये लखि
 आय सखी लखि वे ही कों लाल चकर सपागी । छाड़ दई सब साथ
 की सुन्दरी यों डगरी डगई करि आगी । फेरि कै नारि कछो
 चल नारिसो टेहन के मिस हेर नलागी ॥४॥ कैसे हु देव बधून से
 कोज जु होय तो ताकी बरा बरी वाछे । सो हति है नखते सिख
 लीं अनि अंग अलूप सिंगार निकाछे । सील बड़ाई न नाथ विने
 पले सासु औ नंद निठानी के पाछे । नैन के सैन जिलोहन कों सु
 रि कै सु सु काहू विलोकति आछे ॥ ५ ॥ खेलै अलीजन के गन से
 उत प्रीत मयारे सों नेहन बीनो । बैन न बोध करै हूत कों उत सै-
 न न सोहन को मन लीनो । नैन न की चलवी कछु जानि सखी रस
 खानि चितै वे कों कौनो । जी लखि पायज ह्याय गई चुटकी चुट
 काय विदा करि दीनों ॥६॥ कसि वे लिसिनी विहि के छिनतौ अंग
 अंगन दास दिखाय रही । अपने हीं सुजानि उरोजनि कों ग-
 हि जासु सो जानु मिलाय रही । ललचो है लजो है हंसो है चि
 तै हित सो चित चाय बढाय रही । कनखी करि कै पग सों परि-
 कै फिरि सूने निकेत मे जाय रही ॥ ७ ॥ वंसुरी सुनि देखन दौ
 रि चली जसुना जल के मिसि वे गित वै । कवि देव सखी के सकोच
 न सो करि जध मयो रस कों वित वै । ब्रख भान कुमारि सुरारि
 की ओर कटाच्छन कोरन सो चित वै । चलि वे कों धरै न करै म
 ननेक धरै फिरि फेर भरै रित वै ॥ ८ ॥ गोर सवे चि फिरी ब-

निता अरुगाइनलाललिये अनुरागी । गे देवनाइके फूलन-
की चलीखेलत आयुससाक्षसभागी । आवतकान्हवजावतवाँ
सुरी देखितियाअनौसोवतजागी । वीरसखीमिसलैकरबा-
ल चलाईसुगे दगुपालकैलागी ॥ ६ ॥ पूजिवेकोंवरसाइतके
दिन सुन्दरिआईसरूपसनोरति । फेरीफिरै सुकहाकहियै
लखिलालको अनदसंधुहिलोरति । जोरैसखीजवलों इत
सूतहि तौलोंतियाउतआखिनजोरति । आवतिसासुहेँ साँ
वरेके जवहेरिहरेँ फिरितारहितोरति ॥ १० ॥

॥ चय लच्छितालच्छन ॥

परपतिप्रेमसखीनको जाकोजाहिरहोय ।

ताहिलच्छिताकहतहै कविकोविदसवकोय ॥

॥ लच्छिता यथा ॥

अतिरातेसुहातेदिगंतनमै कछुआरसकौरचिराखिचली ।
इहिंभायसुधामधुपाइकितै अभिलाषपयोनिधिनाखिचली ।
द्विजदेवजूआजप्रभातसमै वनकौनकेनामहिंभाषिचली । सु-
खसो सुखलायअधायकितै रसकौनेरसालकोचाखिचली ॥ १ ॥
आईहौभोरभलीवनीदेव वसंतनिसावसिवीचवगीचै । सूहे
कीसारीसलौटलसै सुखचंदहंसैसुसुक्यानिमरीचै । पाईसुहाग
कीलूटतहं छिनआखिनप्रेमसुधारससीचै । रोरीसीरेखीजु
देखीपरै सुद्धिपावतीक्योंकुचकंचुकीबीच ॥ २ ॥ असीनचा-
हियेवाते अरी मनहींमजमैधुरिकैगढ़तीहौ । ईससनेहरी
कुंजकीदेहरी भोरीसिद्धैचुरिकैचढ़तीहौ । बूभतिताकोन
ऊतरदेति कछूकोकछूसुरिकैपढ़तीहौ । कौनसयानपतेरो

अरौ सखियानहं सोंदुरिकैकढ़तीहौ ॥ ३ ॥ प्रातविकासल-
है सवपंकज कोरिक्कीगतिदीहदहेहै । आनदकेमकरंद
भरे रचिरूपपरागनफूरिरेहैहै । काहेदुरावतिहैसजनी
रतिनायकसायकएहीकहेहै । नंदकुमारकेलोचनबानरीजान
तिहौ उरतेरेवहेहै ॥ ४ ॥ नीलऔपीतभलेपलटे पटदेखिये
बीररचावप्रचंडल । छूटेतिलींछे सुगंधितवार नबांध्योअली
नअलौकिकमंडल । वासुखकेलखिवेते सखी चखसेखवताव-
तभेदअखंडल । ह्वैरह्योभोरकेचंदसोयासुख नैरह्योकान्ह
केकानकोकुंडल ॥ ५ ॥ तुमकान्हकोनेहछपावतीहौ हितसों
करिराखतीअंदरमै । चुपरोसीकहौकोउजपरीसौ यहचूप
रोवातपुरंदरमै । उरअंतरकोअनुरागसुतो कलकैदगकोर
केकंदरमै । जिमिवारिधसैकहूँ बूड़ेजहाज कढ़ैहुगलीबर
बंदरमै ॥ ६ ॥ आईहौपाँयदिवायसहावर कुंननते करिकै
सुखसेनी । साँवरेआजसंवाह्योहैअंजन नैननकोलखिलाज
तएनी । मातकेबूझतहीमतिराम कहाकरतीअवभौ हतने
नी । मूदीनराखतिप्रीतिअली यहगुँदीगोपालकेहायकीवे-
नी ॥ ७ ॥ यहभीगिगईधौंकितैअंगिया छतियाधौंकितैय-
हिरंगरंगी । उबटेहनछूटतदागअजू कवकीहौ छुड़ावती
ठाढ़ीठगी । सुनिवातइतीसुखनाइनिके अतिसूधीसयानपते
सोपगी । मुखमोरिउतैसुसुकानीतिया इतनाइनिहं सुसुका
नलगी ॥ ८ ॥ वीतिवेहीसुतोवीतिचुकी अवआंनतीहौकोहिं
काजलुकंजन । त्यो पदमाकरहालकहे सतलालकरोदगव्या
लकेखंजन । रेखितरंचुकीकंचुकीकेबिच होतछिप्रायेकहा

कुचकंजन । तोहिकलंका लगाइवेकों लग्यो कान्हहीके अधरा
नसै अंजन ॥ ९ ॥ ओरही आवती होकितते कुलकानिका हातु
सदौ नही विसारसी । मोहनरूपसहासदपानके ये अखियाँ वि
लसै सरसारसी । कंचुकी हृदरकी कुचपै हबुमानरही यह
प्रीतपसारसी । तू हीलखै किनएरी अली अवहायके कंकनकों
कहा आरसी ॥ १० ॥ तिनसों कछियै यहवातवलायस्यो गोप
नकी नहि जानतजो । हलसों इतनो कलहेत कहा हससाधनी
हैं इहं वाहिरीको । रघुनाथजो है दसासो सुनिये कछु है नछ-
पी जगजानतसो । जबसों मिलीसा दरतुं उनसों तवसों घटि
व्याही जो आदरगो ॥ ११ ॥ लख्यो अपनी अखियाँ नसों ले जसु
नातउ अजु अन्हातसै ओर । लगेदगरावरेसों उनके लगेरा
वरेके उनके सुखओर । दुरावतिहो सहवासिनिसों रघुनाथ
दृथावतियानके जोर । सुनोजगमै उपखानप्रसिद्ध है चोरन-
की गतिजानतचोर ॥ १२ ॥ अंजनदैदगखंजनसे करि केसरि
आननसों ससतीहो । पानको आनिअहाररह्यो अरुहारके
भारचले कंसतीहो । देखतीहो रघुनाथकछु दिनते इहिछे
सतामेलसतीहो । साँचीकहोतुसै मेरियेसो तुमकौनकी आ
खिनसै वसतीहो ॥ १३ ॥ नैनवड़े वड़े बाँकीचितौनि चलाकी
घड़ीमनोभप्रखीहै । जाके विलोकतवेनी प्रवीन कहैदुतिनै
नकाहकौनखीहै । आईकहाते हैराधेकहो अवलौं प्रजमंड
लसैनलखीहै । साँवरीसो मगदेतफिरै संगसाँवरीसो यहकौ
नसखीहै ॥ १४ ॥ तोहिविलोकत आवैदूतै मनभावनी साँवरी
सूरतिसोहै । तू हं निहारे लजोहीं ह्वे जातपै नेकहवाह-

तिनाहिंविछोहै । जानतिहैतोवतावअली यहकोहनुमान
 भरोअतिमोहै । भौंहैसरोरिसिकोरिकैनाक कहीअनखा
 यकोजानियेकोहै ॥ १५ ॥ मोरसोमंजुलमौलिवनो दुतिकान
 नकुंउलकीमकारारी । गुंजहराकेछराउरमै पटपीतपितंब
 रकीछविन्यारी । वैजुवजावतसेवस्याम सुकामकेसंजनकीग
 तिहारी । रावरीनोखीनचालभटू ब्रजबालसवैनदलालपै
 वारी ॥ १६ ॥ धनिहौब्रजवालनसैतुमहीं सबभातिहमैभल
 भावतीहौ । करतीहौदुरावकीवातैकहा हमहंसौनप्रीत
 लगावतीहौ । हनुमानचवावचलैतोचलो हकनाहकहीतन
 तावतीहौ । हितमानतीहौतुमराधिकाको नदलालैसनेह
 सिखावतीहौ ॥ १७ ॥ रूपवतीअप्रवीनलखी तुमसौनहिंपू
 रितमैपरमासि । हौंसहवासिनीयातेकहौं नउरींतुमरेरि
 सिकेकलमासि । हेरतीहौकादुरेहींदुरे हनुमानरहौकछु
 होसछमासि । जानतीहौंतुमसौंउनसो दिनचारिमैहैहै
 तमामतमासि ॥ १८ ॥ बुरोमानतींजोसिखदेतिभटू दुखपा-
 वतींजोससुभाइवेसै । कहीजायगीदेखिकुरीतिकछू समुभौ
 गीनजोससुभाइवेसै । कहालेहुगीहाप्रपरायेविके कहिठा-
 कुरलोगहसाइवेसै । हसैयोगनैकासोंपरोजनहै बुनिवेसैन
 वीनबजाइवेसै ॥ १९ ॥ कहिआईइहांकीकुरीतलखे सोक-
 हासुखवातचलाइवेसै । तुमपांचकीसातमिलायकहो इतलै
 हौकहाखिसिआइवेसै । कहिठाकुरकौनसोकाकहिये दुख
 पावतीहौससुभाइवेसै । परोकौनपरोजनहैजूहमै बुनिवेसैन
 वीनबजाइवेसै ॥ २० ॥ ब्रजसंडलीदेखिसवैपदमाकर ह्वैरही

यो चुपचापरी है । मनसोहनकीवहियाँमैछूटी उलटीयहवे
नीदेखापरी है । मकराकतकुंडलकीभलकै इतह भुजमू-
लमैछापरी है । इनकीउनतै जोलगीअखियाँ कहियेकछूतो
हमैकापरी है ॥ २१ ॥ उतैआहटपायकैसाँवरेको इतैदेखि
वेमैमनयारोपगो । सिंसिकैसखियाँनतै ह्वैकैजुदी कुकिफा-
कीफारोखेअनंदखगो । यहमैहँ निहारतिहीतुलसी समुझाह
वेमैकतसोसोजगो । परोकौनपरोजनहैतुमसो कहियेकछू
तोकोहमारीलगो ॥ २२ ॥

॥ कुलटालच्छन ॥

सुरतिअनेकनपुरपते चहतिकामवसजौन ।

कुलटातासोकहतहैं कविकोविदमतिभौन ॥

॥ यथा ॥

भाईभुजाअरगोलकजाईसु कंचुकीछोटीलसैकुचछोटै । टे-
दियेभौहैंवड़ीवड़ीअखिन तेंजुतिरीछेलगावतिछोटै । ला
गतलोठहींपोटसुहोत वचैनहींकोटिकवोटनकोटै । नईकस-
नैतनईयैकमान नयेनयेवाननईनईचोटै ॥१॥ एकनसोंसिलि
बेकोसहेट बद्योएकसोंहितहेतनिहोरति । एकनसोंचितवै
चितहै तियएकनिसोंभुरिभौहमरोरति । ओरते सासलोंका
मयहैं रघुनाथअनेकनकेसनचोरति । छोरतिअनेकनकेचित
कों हितएकसोंतेरतिअनेकसोंजोरति ॥ २ ॥ योअलवेली
अकेलीकहँ सुकुमारसिंगारनकैचलैकैचलै । त्योपदमाक
रएकनके उरमेरसवौजनिवैचलैवैचलै । एकनिसोंवतराति
कछू छिनअनेकनिकोमनलैचलैलैचलै । एकनिकोतकिषूघुट

मैं सुखसोरिकनैखिनैदैचलैदैचलै ॥ ३ ॥ अंजनदैनिकसैनित
 नैननि संजनकैअतिअंगसंवारै । रूपगुमानभरौसगसैपग
 हीकेअंगूठाअनौटसुधारै । जोवनकेमहसोसतिराम भईस
 तवारिनलोगनिहारै । जातिचलीएहिभातिगली विद्युरौ
 अलकैअचरानसंभारै ॥ ४ ॥ काहसोनैननहींसुसुकातहै का
 हुसो कौनौलगावतिघातै । काहुसो भावसो भौंहचदायकै
 बैनसुनावतिसीठेसुधातै । जानिनजातिहैजातिकहाँ छिन
 मैफिरिआवतिहैधौ कहांतै । तोहिपरीयहवानिकहासिग
 रेदिनयेहीसुहातिहैवातै ॥ ५ ॥ बारकेलागिद्वारनसोर
 हैवारनगौनीखैसगपीको । भौंहनिमैहंसिसैननिबोलति
 आरसीदेखिवनावतिटौको । होहिंसवैरसियाकलिसै कवि
 राजयहैअभिलाषहैजौको । वामको औरनकामकछू अक
 कामहैकामकौवातनहीको ॥ ६ ॥ धंघुटखींचेरहैअलवेलोड
 गंचलचंचलहैचपलातै । सुन्दरनैनकौसैननिहीमै अनेकन
 भातिकौआनतिघातै । बैठिभरोखनमैअंगरै भभकौदुतिके
 सुरिकैसुसकातै । तौहीलौ जौको परैकलजौलौ चलैकछु
 कामकलोलकौवातै ॥ ७ ॥ जसुनातटकुंजकदंबकेपुंज तरे
 तिनकेनवनौरभिरै । लपटीलतिक्रातरुजालनिसो कुसुमा
 वलीते मकरन्दगिरै । वनवागनवेसवहारनई कबहू तिन
 को नहियेसुमिरै । चहुं औरनते गनभौरनके एकमालतीपै
 मेडरातफिरै ॥ ८ ॥

मुदितालक्षण ।

सुगतभावतीवातजेहि वादृतअतिमनमोद ।
 मुदितातासो कहतहै कविकुलसहितविनोद ॥

॥ यथा ॥

लोगवरातगयेसिगरे तुमरातजगेकोंचलीसवकोज । सुन्द
रसंदिहसूनोइहंअव कोरखवारहैताहिनजोज । सासुका
हीतवहीलखियो लहुरीदुलहीधरहीरहुसोज । फूलिगयेसु
निवातयोगात समातनकांचुकौमैकुचदोज ॥ १ ॥ सूनेभयो
खेरिकाभईसांभ संखीसंगसोसवजानसेवाके । अहृगयेइतये
मेतहां हरिकासकलानिधिचेरोहैजाके । चाहीभईअनचा-
हेअचानक योमनसोइभयोउरताके । सोतीहराकेउठेसव
हालि भयेअंगियाकीतनीकेतराके ॥ २ ॥ सासुभुकोननदील
रिवोकरै बाकोतोख्यालयहैदिनरातिहै । सूनेनिकेतहै
नेकुजोपावै खरीतवरीभूधरीललचातिहै । नीरेअटापरपी
तनेपेखि तियाअतिहैअंगिरातिजह्हातिहै । यो कछुअन-
दहोतहिये अंगियाफटिकोटिकटूकह्वैजातिहै ॥ ३ ॥ सासु
रेअईसरोजसुखी धिरखीखंखमाइकेकोअंगधाके । प्रासपरो
सकेवागकेकोन लखीखिरकीनिजभौनकोनाके । व्योंतवन्यो
हितकोचितचाय चढ़गोमनअनदष्टन्दकेचाके । फूलिउठेकुच
कांचुकौमैजुग गेवदूटितराकतराके ॥ ४ ॥ आरससो रस
सोअंगिराति दसोअंगुरीकरिअंजुलीकाढी । त्यो रनित्यो
रीमरोरतिभौहनि मोरतिनाकव्यधामनोवाढी । नीवीको
नावनराखतिसूधे कसेउकसेईकरैफिरिगाढी । धूंधुटारिउ
धारिभुजंचल कांचुकौकेवदवाधतिठाढी ॥ ५ ॥ मोहनसो
कछुदोसनिते सतिरामवढोअनुरागसुहायो । वैठीहुती

तियसाइकेमै ससुएारकोकाहसनेससुनायो । नाहकेव्याह
 कीचाहसुनी हियमाहँउकाहकवीलीकेछायो । पौढ़िरहीप
 टअोढ़िअटा दुखकोमिसकैसुखबालकियायो ॥ ६ ॥ गाँवके
 ठाकुरकोहैबजाव सुनावधख्योसबहीकोजुआयो । नंदगये
 आँगयोसिगरोब्रज क्योंपरसादजूजातगनायो । जाइवेकोंतु
 महँकोंउतै योंपरोसीसोटेरिकैकान्हसुनायो । सूखधख्योसो
 परोसीपख्योपै परोसोकछूकूपरोसिनिपायो ॥ ७ ॥ सासुग
 ईचलिपीहरकों पतिलादकैमालकहँकोंसिधायो । संगर
 हीं सजनीसोसहेटकी साधिनिजौनकर मनभायो । गोकुल
 भागभरौतियकेहिय कामकलोलकोचौचंदछायो । फूलिप
 सीजिउठीसुनतै धरनीतपरोसकोपीतसआयो ॥ ८ ॥ द्वैदिन
 केपथतीरधन्धानकों लोगचळेमिलिकैसिगरोई । सासुबहूसों
 कछ्योकिरहोनुम औररहैनहिराखतजोई । सुन्दरिआनद
 सोंउमगीहिय चाहतहीसोभयोअबसोई । प्रेमसोंपूरन
 दोजजनेवर आपरहीकीरह्योननदोई ॥ ९ ॥ न्योतेगयेघरके
 सिगरे सुवेरामीकोव्याजकैआजुरहीमै । ठाकुरहैबहिरीए
 कदासी सोराखीवरौठेबिचारकैजीमै । आयेभलेखिरकीम-
 गह्वै यहआइवोचाहतहीहुतीजीमै । आजुनिसाभरिप्यारे
 निसाभरि कौजियेकान्हरकेलिखुसीमै ॥ १० ॥

॥ अनुसयनालक्षण ॥

तीनिभौतिसबकविकहैं अनुसयनाकोभेद ।

तिनमेपहिलेकेलिथल नसेजुपावैखेद ॥

॥ यथा ॥

लै अनुसासनवा सवको सु उठेन भमं डलमेध अपारन । छे
 छितिछोरनकोंधुरवा करिवारिसईवरनी जलधारन । पी-
 तमसंगप्ररो अकुलाति हियेहहरातिसु हातअगारन । वो-
 रिसवैवनकोवनयो उमगीसरिता छितिछोरकरारन ॥ १ ॥
 जायजहारतिरंगमचाय करैमनभावनकोचितचोरी । हा-
 वनभावनसोसिगरौ भिसि वेततहीजहाँ आनदवोरी । गो-
 कुलहै गईव्याकुलसौ तियकेतनमेतलवेलीसँ शौरी । वृडिग
 योजलसोसिगरौ सुनिकालिंदीकूलकोकुंजकिसोरी ॥ २ ॥
 रितुअईसुहार्दनईवरषा बढ़योसो समयूरनकेहियको । हार
 आईवह दिसिफैलरही अलुरागजगावतहैजयको । चाढ़
 जं चेअटावविलोकैवटा करकंजसोंहाथगहेपियको । लखि
 कंजकलीनतडागनसै सुखमंजुललीनभयोतियको ॥ ३ ॥ का
 हसोंकाहहहौलखियो यहजोरघुनाथसहीपतिआयो । पा
 टिकेनारेनदौतउके वनकाटिकैचाहतवाटवनायो । कानसै
 कामिनोकैयहआनिकै बोलपह्योसनोवज्रसोनायो । सूखिग
 योअंगपौरोभयोरंग ख दऊपोलनकेसंगछायो ॥ ४ ॥ नीचि
 येनारिकियेरहैनारि सुरारिकेप्रेसपगीकछुऐसे । काहकि
 बातसुनैसलभैनहीं बोलतबोलवछायहरेसे । खेतकटयोसु
 निकैविलखी अवचिचलिखीलखियेभईजैसे । उखमैजोरस
 पावतही अवसोरसकोतियपायहैकैसे ॥ ५ ॥ वोयोसुबीजसु
 खेतसँवारिकै वेससुधारकैसा जकियारी । जामभईहरिया
 रीरहैनित लौसहमैनिसिकैअधियारी । अंगकोतापहरै
 तहाँजात सुकाटतहैजहाँलोगअनारी । तूरतदेखतदूखत
 गातहै ज्वारकेसूखतसूखतप्यारी ॥ ६ ॥

॥ अथ दूजी अनुसयनायालक्षण ॥
 होनहारसंकेतको सोचति है जो बास ।
 दूजी अनुसयनायल्यो कविकुलताको नाम ॥

॥ यथा ॥

पै होन होन उदास बलाय ल्यो है हम हीं सी परोसिनि पीके ।
 सासुरे जात मै सोचक छून करो जिय मै ससुझाइयेनीके । मैर
 पुनायकी सौं हकिये कहीं अँसई वागवने सब हीके । साइके मै म
 नभावतो जै सोई है वनतै सोई कूलनदीके ॥ १ ॥ वैलिन सों लपटा
 यरही है तमालनकी अवली अतिकारी । कोकिलके कीकपो-
 तनके कुल कलिकरै अति आनदवारो । सोचकरै जनि होहु सु
 खी मतिराम प्रवीन सबै नरनारी । मंजुलवंजुलकुंजके धनपुं
 जसखी ससुरारितिहारी ॥ २ ॥ क्वायरही वहु फूलनकी रज
 मानो मनीज वतानतने है । सीरे समोर सुधाहुते सौगुने डो-
 लतमं सुगंधसने है । गुंजतपुंज है भौरनकेत है होतकपोतके
 घोसवने है । सोचकहा जो नज्वारजमीये तमालके कुंजतो देई
 वने है ॥ ३ ॥ आछो अटारी चौवारेको बैठका मंदिरसूने अने
 कनजीके । खेवनको तुमको बने ठौर है जाउउतै सुखप्राचहो
 नीके । है मनिमन्दिर लोगउजागर नागर प्रीतिपंगे परती-
 के । ज्यौ इहा ल्यो ससुरारितिहारेहु वागवड़े ढिग है खिर-
 कीके ॥ ४ ॥

॥ अथ तीजी अनुसयनालक्षण ॥
 क्वाहकारनते गुनै गयोसीत संकेत ।
 जायसकैनहिं तीसरी अनुसैना कहि देत ॥

॥ यथा ॥

दूतीसकेतगईवनकोंवदि प्यारीपगौहरिकेगुनगाथसै ।
 गायदुहावनकों कहिसंभु खरौ खरिकानसखीनकेसाथसै । के
 लिकेकुंजवजीसुरली बुधिगोपवधूकीबँधौब्रजनाथसै । दोह-
 नीहाथकौ हाथैरही नरह्योसनमोहनीकोमनहाथसै ॥ १ ॥
 भूषनहारसिंगारसवै अंगपूजनहेतचलीसखीसाँवरी । काम
 कलासीलसौवलसै हुलसैमनमोहनकोसुनेनावरी । केलिके
 कुंजवजीसुरली कविदत्तगईठगिसीवहिँठाँवरी । साँवरीसू-
 रतिसोंअटकौ भटकौसीवत्रुवटकौभरैभाँवरी ॥ २ ॥ लालनको
 पिंजराकरलाल लियेप्रतिशुंजनकुंजनज्वैरहे । सेवतीसोन
 जुहौकेप्रसून खरेखुरसेतिहिंजपरह्वैरहे । देखतहीनवला
 तिहिंकों जसवंतलगेअलगेपलद्वैरहे । चैरहेचंचलवालबिसा
 लके दीरघजोदृगकाननछ्वैरहे ॥ ३ ॥ चारिहंओरतेपौन
 भक्तोर भक्तोरनघोरघटाघहरानी । त्रैसौसमैपदमाकरकान्ह
 के आवतपौतपट्टीफहरानी । गुंजकौमालगोपालगरे व्रज
 बालबिलोकियकौथहरानी । नीरजतेकहिनीरनदीछवि छी
 जतछौरधिपैछहरानी ॥ ४ ॥ यहअसोअदावभयोयाघरो
 घरहँइनकेपरीपुंजनसै । मिसकोउनआभिचटैचितपै इन
 कौवतियानकौगुंजनसै । कविरामकहैभईअसौदसा गिर
 लंधनकौजमिलुंजनसै । किसिहौंअवजायसकौंहेदई वजी
 वैरनिवाँसुरीकुंजनसै ॥ ५ ॥ धुनिपूरिरहैनितकाननसै
 अजकौउपराजवोईसौकरै । मनमोहनगोहनजोहनके अ-
 भिलाप्रसमाजवोईसौकरै । धनआनदतीखियेताननसों सर

सेसुरसाजिवोईसीकरै । कितते'वहबैरनिवाँसुरिया बिन
वाजेईवाजिवोईसीकरै ॥ ६ ॥ सुनतैधुनिधीरकुटैछिनमै फिर
नेकहराखैसचेतीनहीं । गुरुलोगनकेपरीफांदजज कुलका
नितजरहेदेतीनहीं । बलिकासोंकहौंमैदसाअपनी हनुमा
नकहैकोजहेतीनहीं । यहबैरपरीकसवाँसुरिया बजिकैफि
रहासुधिलेतीनहीं ॥ ७ ॥ काननतीखियेतानसुनै निसिद्यौ
ससुहातननेकुनिवासुरी । खेदकरैअतिहौतनमै छिनहीं छि
नछेदतभेदतपाँसुरी । कामसोंमोहनौमंत्रपढ़ो अलिकैसेव
नैइहिंठौरसुपासुरी । मोहनकेअधरानधरी हठिबैरिपरी
यहबैरनिवाँसुरी ॥ ८ ॥

॥ अथसामान्यालक्षण ॥

प्रीतप्रीतसोंकरतनहिंकरतिसुधनसोंप्रीत ।
सामान्यातासोंकहैजासुअहैयहरौत ॥

॥ यथा ॥

कछूनेननचायनचावतीभौंह नचैकरदोजऔआपनचै ।
बरछाँहँछवीलीसोंछूकहूँजाय तहींसिसकीनकेसोरमचै ।
कुषऔकषभारनहींअलवेलीको बारहजारकलंकलचै । ल-
खिलालकेलालकीमालगरे'वहलीवेकोंबालयेख्यालरचै ॥ १ ॥
हेरतहीहरिलेतिहियो बसबिरूकियोरसकीवतियामै । जी
वनरूपकीऔधअनूप सुन्योगुनएतोकहूँनतियामै । कंतहिं
योधनवंतनिहारिकै चूकतिनाअपनीप्रतियामै । हाथदर्ईहँ
सिहौसधरे सुदरौकरदेखिधरीछतियामै ॥ २ ॥

दोहा । अन्यसुरतदुखिताकही औराविताप्रवीन ।

मानवतीयेहोतहै औरभेदरहतीन ॥

॥ अन्यसंभोगदुःखितालक्षण ॥

जानैतियसोपौयसों कियो औरतियकेलि ।

तापैप्रगटैरोसकछु वचनव्यंग्यसोंमेलि ॥

॥ यथा ॥

देहधरीपरकाजहीकों जगमाभहैते सीतुहीसबलायक ।
 दौरे थकोअंगखेदभयो ससुभीसखीछाँनमिल्योसुखदायक ।
 मोहीसोंप्यारजनायोभलीविधि जानीजुजानीहितूनकोना
 यक । साँवकोसूरतिसौजहीसूरते मंदकियेजिनकामकेसा
 यक ॥ १ ॥ सोउपकारवडोईविचार गईतूबोलावनछलैछ
 मासे । अतीअवारलौंछाँतरही दुखकेतोसह्योअहिषेसर
 मासे । क्योंअनखातिकहातोभयो हनुमाननभेटभईवजमासे ।
 असेहीआवतजातभटू दिनचारिमेह्वैहैंतमासतमासे ॥ २ ॥
 निसिआजकीजाइयोफेरिसखी तुमरेपटभूपनजोवदले । इ-
 हिंमैहनुमानहैदोसकहा कतबोलतोहौइमिरूअंगले । हम
 सोतुमसोंकछुभेदनहीं यहजानिअरीततहातेचले । अति
 छोहनतेतुमहींतेमिजे मनमोहनमीतहसारेभले ॥ ३ ॥ उ-
 त्तमप्रीतप्रतीतभल्यो रसरासिमहासिठबोलोकन्हाई । जो-
 कोइवाहिवुलावनजात खवावतवाहिविरीवरिआई । प्रसनि
 साकोजडोहीवयारि विचारिकैआपनीसालउढाई । तौसों
 कहायहमोहीसोंप्यार जनायोहैजानिहमारीपठाई ॥ ४ ॥
 गुनअकअपूरवतोमैलख्यो तिहिंसोखिवेकीअभिलाषकरों ।
 कमलापतितोसोहितुहैतुही लखिकैसबभातिअनंदभरों ।
 इहिंहेतुकह्यौयहवातवलायल्यो दूजेउपायनचित्तधरों । चि

त और को हाथ मै लीवो बतायदै पाहुनी पायन तेरे परों ॥ ५ ॥ दे-
 खि परो सिनि कों पहिर अपने प्रिय को तिय मान अनै सो । हेर धु
 नाथ क ह्यो है सि कैं मि कै अति आदर चाहिये जै सो । मोती को
 हार विहार करै कुच ऊपर रावरे के यह जै सो । खो योगयो अ
 वही दिन है भये रावरे देवर को र ह्यो है सो ॥ ६ ॥ मोहि मना
 बन जो पठई कहि सो तुम सो र घुनाथ हँसै है । व्याह को दो सह
 मै औ उह वैते रावरे के अनुराग गसै है । काहे कों आप कहो
 इतनी रितु सुखे भवे न ही सो चससै है । प्राव समाहिँ सता वै गो
 सैन क्यो नाहतो वाहति हारी वसे है ॥ ७ ॥ आवत मोहि विलो
 किव लाय ल्यो छोड़ि सखी न सी बात सो हाती । ओठ मेठिन
 चाइ कै लोचन भौं हचढ़ाइ क्यो होति हौताती । जानि परी र घु
 नाथ हि सों सब जो वह आजु गई कहि धाती । लीजिये धाती है
 सोहन की उनके कर कंज लखी यह पाती ॥ ८ ॥ तू तो गई ही
 बुलावन लालहि मो सों कहै कत बात बिगार सी । कंचु कीठी
 ली परी कुच पै यह मोहिय मै उपजावति भार सी । तेहि कहा
 उरु है हनुमान भये मन मोहन तेर सिपार सी । तू ही विचार ल
 खैन अरी अब हाथ के कंकन कों कहा आर सी ॥ ९ ॥ छाइ रहे
 छद छाती कपोलनि आनन ऊपर ओप चढ़ाई । छूटे वधे कच
 कासिनिके कबिराज सुजात छपैन छपाई । नाहिँ क ह्यो परै व
 ननि मोद सुनै ननि मै कलकै छबि छाई । कासों कहौ यह कौतु
 क दूती गई ही अधीर पै धीर ह्व आई ॥ १० ॥ देह कटी ली कपै
 अजह लगी सौ खन दूत पने के सुभाइनि । न्हाय सो आई हौ
 जाय कहते बनाय कहौ कछु मेरौ गुसाइनि । मै तो पठायो च

हौं तुमहीं तुमपै नही चूकति आपने दाइनि । भेदक है सवह्वा
कोति हारे लग्यो यहके सरिकोरंग पाइनि ॥ ११ ॥ चंदनकी
चरचानरही नरही हुतौ आड़ जु लालदई ही । मोतिनकी
लरकी लर है दरकी अंगिया पहिरो जु नई ही । आयोन आयो
बलाय ल्यो तेरी तू काहे लरी लरिवे को गई ही । कत हापठ
ई जूहती सुतो ते न सुनी सुनि मै ही लई ही ॥ १२ ॥ देवपुरै नि
के पातनि जानते हैं जु गचक्रसचान गहेरी । चौतेके चंगुल मै प
रिके करसाय लघाय लह्वै निवहेरी । मीजि कै मंजुदली कदली
लरिके हरिकुंजर लुंजर हेरी । हेरी सिकार रहेरी कह्लं ब्रज
नाथ अहेरी ह्वै आजर हेरी ॥ १३ ॥ कौरसु विं व विचारि कै ओ
ठ दण्डत सो सहिरो धनिया मै । नारंगी नीबू उरो जनि जानि
दये नखवानर चौतनिया मै । खदसुकंपसं चवढ्यो तनसेवक
खामडरै जनिया मै । तोहि पठाई सुभूति गई भई वावरौ वाय
रौके पनिया मै ॥ १४ ॥ अंगना मै बुलाय घनी अंगना कडनाप
हिराय दै जो सिनीको । दखिना दिलखोलि कै दै जै अली सुव-
धाई सुनावसतो खिनीको । कविसेवक पायँ परो सबके विधि
दाहिनी आजु अदो सिनीको । तजि औ प्रथमै तो अराम भई प
ति आइ गोमेरी परो सिनीको ॥ १५ ॥

॥ अथ गर्विता लक्षण ॥

रूपप्रेमगुनआदिको गर्वकरै जोवास ।

ताहि गर्विता कहत हैं कविको विदमति धाम ॥

॥ रूपगर्विता यथा ॥

जीवहि जीवसमानगनै कलको किलबोलवखानअसीके ।

केहरिसोंकरिसोंकरिप्रोति कुरंगनकोकुलकाढ़तटीके ।
 अनुवअंगनकेउपमान लखेहरखैंहरिसेखरनीके । बालक
 हीवतियांसुनिकै दृगलालभयेदृषभानललीके ॥ १ ॥ संजुल
 मौलसिरीमोगरा मधुमालतीकेगजरागुहिराखैं । चंदनपं-
 कालगाइलैअंक मयंकसुखीकरिकैअभिलाखैं । जेवजवाहि
 रकेगहने तनमेपहिनेइनतेछबिलाखैं । तोअंगलायकअते
 सबै सुनिवालकीलालभईलखिआखैं ॥ २ ॥ सोयरहीरति
 अंतरसीली अनंदवढायअनंगतरंगिनि । केसरिखौरकरी
 तियकेतन प्रीतमकैयोसुवासकेसंगनि । जागिपरीमतिराम
 सरूप गुमानजनावतिभौहकेअंगनि । लालसोंबोलतिना-
 हिनेवाल सुपोछतिआखिअंगोछतिअंगनि ॥ ३ ॥ हैनहिं
 माथिकोमेरीभट्टू यहसासुरोहैसबकोसहिवोकरो । त्योपद
 माकरपायसुहाग सदासखियानहूँकोचहिवोकरो । नेहभ
 रोवतियांकहिकै नितसौतनकीछतियादहिवोकरो । चंदसु
 खीकहैं होतिदुखीतो नकोजकहैगोसुखीरहिवोकरो ॥ ४ ॥
 कछुदेखिकैलछनछोटोवडो समवातचलेकहिआवतुहै । इ
 तनेकेलियेकरियेइतनीरिस कोसुनिकैसुखपावतुहै । कहती
 हौकिचादनीदेखिरहैं जोकहीरघुनाथबुलावतुहैं । तुमहीं
 करोन्यावलखेविनतोहि ललाकोंकलानिधिभावतुहै ॥ ५ ॥
 सागरजातसराहतहैश्रुति सूरहितहितकैसरसावै । श्री-
 कोसहोदरसीरोसुभाव सदांरघुनाथकहैकविगावै । साथस
 भासुरकीलहिये अरुअंसुनिअनिअकासहिछावै । ऐसोज
 जससिष्यारोतज तुवअननआगेनआदरपावै ॥ ६ ॥ कीजि

येदूरसैसागतिहौं अपनेसनमेंते उदासकोहोनो । रावरेरूप
 पसोरूपविरंचि वनाइसक्योनरह्योगहिकोनो । जोरतिकी
 सप्ततारघुनाथ दईतुसकोसतिकोअतिलोनो । तोले तुलाध
 रिहोतकहावलि गुंजसोगुंजअसोनोसोसोनो ॥ ७ ॥ वैप
 तिसोहिपतिव्रतहै रघुनाथसदाप्रगटैलहतीहौ । वैप्रभुहै
 अपनेसनके उनकोसतहै तुसक्योंवहतीहौ । नासकरोपरलो
 कहकी तुमतोतियसेसतिसैसहतीहौ । सोमुखकीअनुहार
 कलानिधि वोजफहै तुसहै कहतीहौ ॥ ८ ॥ मनरंजनखंजन
 कीअवली नितआंगनआयनडोलतीहै । चक्रवादिचकोरी
 प्रसीपिंजरा दिनरातिननेककखोलतीहै । ननदीअरुसासु
 हिवृभियेजो उरअंतरकीनहींखोलतीहै । केहिंकारनवर
 प्रीहंसरे सुकसारिकाबोलनबोलतीहै ॥ ९ ॥ वागमेठाढीसु
 भागधरी अचुरागसोंस्यासकरै चहुंफेरे । मालिनिसालद
 ईगुंधिहाल वढीछबियोंगरलेगहिगेरे । सेवकदोसलगाइ
 रिसाइ कछोफिरिल्याईजथाचचितेरे । दीन्हीजुहीकीहमै
 काहिकै सवैसोनजुहीकीकछोउरमेरे ॥ १० ॥ सेवकजाकेनिदे
 ससोंसोहि गईदप्रकृष्टितकंजकसायरी । उतरकौनसोदैंहीं
 कहासै । गंवारताकैलौरहौठहरायरी । तेजलग्योनतुपार-
 लंग्योन हसैहरिरूठिरहेअनखाचरी । मालिनसोंसैलयेअ
 वहीं करकेकरहीसैगेयेसकुचायरी ॥ ११ ॥ देखेसुगंधतमोति
 येदेत भयेकरलेतजपागुलजैसे । त्योंडरिडारेपरेप्रगपीठि घ
 रेरगसोनजुहीमहैजैसे । सेवकहंसीलगीउलभारि निहा-
 रिपरैनलखौसवलैसे । टोनेकरेनयेलोनैअवरी दयेइहिंना-

लिनफूलधौं कैसे ॥ १२ ॥ नसरोजनकी कलीचाहौ अली तौक-
 हौंतेहिमैमनदैचलोरी । फिरदहौकलंकटथाहीसबे इहिं
 ते पहिलेहीवचैचलोरी । तुमऔरकहं जोकहोगीचलै चलि
 हौं हनुमानअवैचलोरी । मनभायेनफूलमिलैंगेतुमै नसरोव
 रपैहसैलैचलोरी ॥ १३ ॥ खेलनतोकहतीहौसही चलिनिव्य
 हीमोहिबवाजुकैवागै । पैरघुनायकीसौंहसुनो मनयाते नखे
 खिवेसेअबुरागै । मेरोखरूपनहींयहव्याधिहै पूरवलीअंग
 केसंगजागै । कासैकहौंवरवाहिरहोतिही लागतिदीठिवि-
 लंबनालागै ॥ १४ ॥ काहेकोमोहिसिखावतीहौ यहमोहनमंत्र
 नजीभगहैहौं । औरघुनायकीसौंहकरौं विधिमोहिकरीभ
 रीरूपमहैहौं । गौनेभयेइतनीसुनिलीजियै सौतिकोमानगु
 मानवहैहौं । कौवसथारे कौंऔरकहाकहौं कैसबकीसिरमौर
 कहैहौं ॥ १५ ॥ हैबड़ीअनियारीअनूपस पानिप्ररूपभरी
 कहाकैहौं । सौनदलेअंगमानमले नभलेलगेभौरभोराईनलै
 हौं । भोरते आजसराहतहौ सुअनाहकहौजभैविषबैहौ ।
 लाखनवारतुमैवरजेपिय काहूकिआंखिनदीठिलगैहौ ॥ १६ ॥
 देवसुरासुरसिद्धवधूनकै जेतोनगर्वतितोयहतीको । आपने
 जोवनकेगुनके अभिमानसबैजगजानतफौको । कामकीओ
 रसिकोरतिनाक नलागतनायकनाककोनीको । गोरीगुमा
 निनिग्वालिगवारि गनैनहीरूपरतीकरतीको ॥ १७ ॥

॥ प्रेमगर्विता यथा ॥

नहानजोजाज तौसंगसखी पगपाँवडेपाँदरीकेकरिवो-
 करै । केसरआडवनायिकैआज निहोरिकैनेहनहींनहिवो

करै । जोससिनाथनदीठिपरौ कुलकानिभञ्जोजिवराडरि
वोकरै । योनिशिवासरसावरिया घरहीनितभावरियास-
रिवोकरै ॥ १ ॥ केतीनगोपवधूनकेअंगनि रूपलुधासरसा-
नोरहैरी । पैयहलालकीचालपरी चितमेरेहिप्रेमरुमा-
नोरहैरी । अंतरवाहिरसाभासवारै विलोकनवोचविका-
नोरहैरी । मोसुखमोहैमहासनमोहन मारगमैनेडरानो
रहैरी ॥ २ ॥ न्हांससैनवमेरीलखै तवसाजलैवैठतआयअ-
गाज । नायकहौजूनरावरलायक यो कहिकैकितनोसम-
भाउ । दासकहाकहौपैनिजहायही देतनहौह सवारनपा
ज । मोहितोसाधसहाउरहैरी सहाउरनाईनतोसोंदिवा
ज ॥ ३ ॥ आजुतेवीरीवयारतजौंगी महावरोदैवदियोपगदू
मे । कासोकहौसुखआपनोरामै भईलघुसेवकदासिनहमे ।
बीजनवारीहुतीढंगजे अबैरीभनोलैकैवहुपरभूमे । मेरे-
हिदेखतमेरीभटू लैदोंछकरनायिनकेपियदूमे ॥ ४ ॥
सखिअंतभलेतिनकेतियवे नितभूषनजेपहिरेहीरहै । तनअं-
तरसोंउतरावनको पियमेरेकेनैनअरेईरहै । मनिमानिक
लालअमोलनेसों सुकविंदमसूसभरेईरहै । गहनेपहिनेन-
हिंपावतिहौ गहनेगहनेसेपरेईरहै ॥ ५ ॥ आंखिनसेपुतरौ
हैरहै हियशामैहराहै सबरसलूटै । अंगनसंगवसैअंगराग
है जीवतेजीवनमूरिनटूटै । देवजूष्यारेकेन्यारेसबैगुन मो
सनमानिकतेनहीछूटै । औरतियानिते तौव्रतियाकरै मो
छतियाते । छनौजबछूटै ॥ ६ ॥ बैठतीहैमिलिसंगसखी सुसु
खीसवभातिसुखीअतियाते । आवतीहैइतमेरेलिये इनके

पियधन्यसबैबतियाँते । मेरे तोवेनीप्रवीनपिया दिनहूँ मैकि
 येहौरहै रतियाते । कासोकहौं दुखमेरीभट्टू नहिंछूटनदेत
 छिगौछतियाते ॥ ७ ॥ हौंगईभेटभईनसहेटमै ताते रखाह
 टसोमनछायगो । कालिंदीकेतटभाँवतपाँयहौं आयोतहाँ
 लखिरूखेसुभायगो । भीरमैबीरनबोलनकोसमै न्हैवेबहान
 हिंतीरहिआयगो । सोपगैकैसिरछाँहवरौकलों मूदेसुसो-
 हनसोहिमनायगो ॥ ८ ॥

॥ गुनगर्वितायथा ॥

हौंजबलौंतबलौंसिगरोदिन मैगुड़ियानसोखेलिवितैहौं ।
 धायसिखायमरैकितनी गुनसीखिबेकेमैनजीकनजैहौं । पैइत
 नीकहेराखतिहौं धनिसौतिनमेरघुनाथकहैहौं । गौनेहिंजा
 यकैशेरीभट्टू सुनिमायकेफेरिनआवनपैहौं ॥ १ ॥ मैनसकी
 कहिलाजने आजुलौं पैअबआसरहैकहिआवै । सोसोंकहो
 नितहौंनपढीकछू हौंनपढीसोसुनोअहिदावै । औरतोवा-
 तकहामैकहौं रघुनाथकोसोंहलखौभरिचावै । कोतियहैजग
 मेजिंहिकों पियकोकरिबोवससौतिनभावै ॥ २ ॥ मनभावन
 पूसमैरूसचल्यो चितबीचबिवारविदेसकियो । सुनिकैसब-
 सौतिनकी।सगरौसुधि जातिरहीअरुकाँप्योहियो । सकिहै
 सरिकोकरिहेरघुनाथ उठायकैहाथमैवीनलियो । कछुगाय
 कैमेघअकासमैछायकै मैतबहींवरसायदियो ॥ ३ ॥ वंसौव-
 जावतआनिकढे बगितावनीदेखनमेअनुरागी । हौंहूँअभा
 गभरीडगरो मगरोगिरेचौकिसवैडरिभागी । लागैकलंक-

नसेवकसों इन्है फोरिहौंसौतिसुभावलैजागी हायहमारी
जरीअखियाँ विसुवानहै सोहनकेउरलागी ॥ ४ ॥

॥ अथ मानवतीलच्छन ॥

दोहा । कछुकईरपागहिकरै भामिनिपियसोंमान ।

मानवतीतासोंकहत कविकोविदमतिमान ॥

॥ मानवतीयथा ॥

चंद्रमशूपनिद्रूपितअंग अनंगमहासरतीखनसाधे । ल्यौ-
अलिकोकिलकेकुलकेरव क्योंबचिहै दुखसिंधुअगाधे । वारि
वयारिनहारियकौसब सेखरप्रानप्रियारटनाधे । वीथिनसै
वगरीधुनिहा समजीवनमूरिसिरोमनिराधे ॥ १ ॥ कुंजगु-
लालकेपुंजनसोंअलि गुंजनसोंतरताललतारी । प्रेमभरीप्र
जकौवनितानकौ तानकौमानकौगानकौगारी । तेरेलियेत
जिताकिरहेतकि हेतकियेबलवीरविहारी । येवडेनैनदिखा
इदनेकुतु अघरघालनिधूंघुटवारी ॥ २ ॥ तनकोतरसायवो
कौनेबद्यो मनतोलिलयोपयमैजलजैसो । कौनदुरावरह्योउ
नसों जिनकेतनसैमिलयोतनअसो । ठाकुरकौविनतीसुनि-
लीजिये कौनसुभाप्रयासीखीअनैसो । प्रानप्रियारीप्रवीनति
या चितसैवसिधूंघुटघालिवोकैसो ॥ ३ ॥ सैतौनतोहिमनाव
तीहौं सबसोहनैतुखवहूँजनिजोहै । सौतिपैजाँयतौजाँयभ
लेँ औकहाअयोतोसोंनराखिहै छोहै । प्रैहनुमानकहौंसो
करै कछुतेरोतोकोहनसोपैभरोहै । नेकुतौधूंघुटखोलिलख
याकरैविनैठाढोकोजानियेकोहै ॥ ४ ॥ अपनोहितमानिसुजा
नसुनो धरिकााननिदानतेँजकियेना । निजप्रेमकौपोखनिहा

रिबिसारि अनीतिकारोखनहू कियेना । हियअंदररावरोमं
दिरहै तेहिंयो विरहानललू कियेना । वहजोहितहीनहै दीन
हैंतौ तुमप्रेमप्रवीनहू कियेना ॥ ५॥ राधेसुजानइतैचितदै
हितमैकृतकीजतमानसरोरहै । साखनतेमनकोमलहै यह
वानिनजानतिकौनकठोरहै । साँवरेसोंमिलिसोहतजे सोक
हाकहियेकहिवेकोनजोरहै । हैधनअनदतेरोपपीहरा जोट
जचंदतौतेरोचकोरहै ॥ ६॥ प्यारेकेप्यारसोंपैयेसोहाग सुन्या
रोभयेजितनेहनिहोरिये । जासुखसंगकोअंगसिंगारतितासों
विगारिकैक्योंदुखभोरिये । जासोंबँध्योतनजोवनजीवनदेवत
हींचितदैहितजोरिये । तेरेहीगोहनलागयोफिरै मनसोहन
सोंअटूभोंहनभोरिये ॥ ७॥ बलिकजसोकोमलअंगगोपालको
सोअसबैतुमजानतीहौ । वहनेकुरुखाईधरेकुंभिलीतइतोह
ठकौनपैठानतीहौ । कविठाकुरयोंकरजोरिकहै इतबेपैविनै
नहींमानतीहौ । दृगवानअभोंहैंकमानसुतौ तुमकानलों
कौनपैतानतीहौ ॥ ८॥ गहीजोहठटेकनसोसपनेहू तजी
सखितैसुतोनाधेरही । नहिँकेहूँसिखाअसोंमानतिहै तनते
रेमैतोयहबाधेरही । मिलतोउठिसूधेसुभावनहीं प्रियकेहि
यआसअगाधेरही । रिसमैरसलैहँसीहोंसमैतेरीतो सूधी
चितौनिकीसाधेरही ॥ ९॥ कौनदईयहसूखतुहूँ तुमजोइ
तनोहठुआजगहाहै । अतेहूपैनप्रतीतिरौ बहुरोदिवदे-
वकोचित्तचहाहै । भूँठिकोवोलितजधरमै रघुनाथकहैअस
कौनवहाहै । तोकुचसंभुकीसाँहकियेजव हेतवसंभुकीसाँ
हँकहाहै ॥ १०॥ तोहिनरूसिवेजोगवलायलों धैरकियेम

तिकाहूकेलागहि । आपनपोपहितेहूँ विचार हैंकोरघुना
 थकहाउरपागहि । तोसौवडुभागिनको जेहिँकोसवसौ
 तिलियेअनुरागहि । देखिसरूपसनेहसराहती प्यारकेभा
 गहितेरसोहागहि ॥ ११ ॥ हरौकंजप्रभापदपंकजते गति
 देखिकैतेरीलजानोकरी । करोचंदहूँकीगतिमंदअली सुख
 चंदउधारतितहोषरी । धरोहै विधनावडु भागिनित
 सौ तनकेउरसालअरी । अरीजापरवारतप्रानसवै सोबि-
 कानेत सूरतदेखिहरी ॥ १२ ॥ आननकीधुनियेसुनिये
 तिकूकनिकोयलकीधंसतीहै । खासकोचारुप्रकासवचमै
 मंदसुगंधहियोमसतीहै । दंतनकीदुतियेरघुनाथ कलगु-
 लानिविकीगंसतीहै । देखभरीरिसिप्यारीतुह्यै येदोत्र
 सिआपुसभैहंसतीहै ॥ १३ ॥ मानोमढीदिसिरूपेकेपत
 सोहतयो दुतिह्यौसकोदूसै । सौतलमंदसुगंधबाचारि
 धनवेलीनवेलीकोमूसै । कोइलकूकतिहैरघुनाथ जहात
 बालरसालकोचूसै । अैसेसमाजकीचैतकीजोन्हमै कौन
 गोभलीतुमैरूसै ॥ १४ ॥ जलबूंदवड़ीवड़ीसोंबरसंधनमैजोव
 गीकोदूसतहै । मिलफूलअनेकनसोंबलकौ तनपौनफुकार
 कूसतहै । रघुनाथसहायविनालखिके अरुमैनदुकुसमनसू
 सतहै । पियप्यारेसोंप्यारकीवातें विसारिके अिसीसमैकोउ-
 रूसतहै ॥ १५ ॥ बारुनीओरकीवायुबहै यहसौतकीईतहै
 बोसविसामै । रातिबड़ीजुगसौनसिराति रछ्यौहिमिजूरदि
 साविदिसामै । गोहुलडारिहैमैनमरोरि कहोवकहाकहेमा
 नकिसामै । कौनकाँछाँहछपौगीछिया छतियांतजिनाहकी

माह निसामे ॥ १६ ॥ बनेपंकजसेपगपानिसूनोहर काननलों
 टगघावतुहै । रघुनाथलसैलगिएड़िनलोंकच चंदसोआनन
 भावतुहै । विधिऐसोअपूरबहूपरव्यो जिहिंतेंधनआपुकहाव
 तुहै । अपुदेखतोहौनगुविन्दकीघोर तौकामकहीकिहिआव
 तुहै ॥ १७ ॥ कछुदेखकैलच्छनछोटीबड़ो समबातचलेकहि
 आवतुहै । इतनेकैलियेकरियेइतनीरिसि कोसुनिकैसुखपाव
 तुहै । कहतीहौकिचाँदनीदेखरहै जोकहींरघुनाथबुलावतु
 है । तुमहींकरोन्यावलखेविनतोहि ललाकोंकलानिधिभाव
 तुहै ॥ १८ ॥ उनहाहाकरोरिनकैपठई तुमतौरिसहीसरसा
 विगहौ । मनुहारिकरीहमहंपैतज सुखनेकहनादरसाव
 हींचि । हनुमानमसूसिरहीहौकहा मिलिमोदनक्योंवरसा
 सोअहौ । यहचैतकीचाँदनीमाहिंदैया मनमोहनक्योंतरसा
 सोअहौ ॥ १९ ॥ यहचारिहं औरउदोसुखचन्दको चाँदनी
 ठकैनिहारिलैरी । बलितोपैअधीनभयोप्रियप्यारो तुएतो
 नहँवारविचारिलैरी । कहिठाकुरचूकिगयाजोगोपालतौ तू
 कौगरेकोंसुधारिलैरी । फिरिरैहैनरैहैयहौससयो बहतीन
 साप्रायपखारिलैरी ॥ २० ॥ बतियाँनलुनायकैसौतिनकी छ
 रतियाँनमैसालसलायलैरी । सपनेहँनकीजियेमानअये अप
 नेजावनाकीबलायलैरी । पासेसजूहपतरंगनसों अंगअंगनरु
 परलायलैरी । दिनचारिकतुप्रियप्यारिकेप्यारसों चामकेदा
 मचलायलैरी ॥ २१ ॥ वं कबिलोकनदीठिचलायरी नेहलगा
 यकैपीठिनादीजै । बौरीनहूजियेमानकह्यो अबपीतसकोंअप
 नायकैलो जै । मोहनीरूपकीवैसहीप्रायकै कोनहिंजीवनके

मदभीजै । ऊजरीजोपैकरीकरतारतौ गूजरीएतोगहरना
 कीजै ॥ २२ ॥ रूपअनूपदियोदईतोहितौ मानकियेनसयान
 कहावै । औरसुनोयहरूपजवाहिर भागवडे विरलैकोउपावै ।
 ठाकुरसूमकेजातनकोऊ उदारसुनेसबहीउठिधावै । दीजि
 येताहिदेखायदयाकरि जोखलिदरितेदेखिवेआवै ॥ २३ ॥
 यहरूपहैचारिदिनाकोमहेस रहैगीनहींछुविरोजहीकी । ब
 लिभूलतिहैइतनेपैकहा सदानोकरहैगीउरोजहीकी । उठ
 लायहियेहरिकोहितसों नकरोहठआननओजहीकी । अस
 तौफिरिकालिरहैगीनहीं याहनोजहैमौजमनोजहीकी ॥ २४ ॥
 तुमरेबिनवावरेसेवैभए तऊवातेकरोतुमसोजहीकी । नहिंमा
 नतीहौमैमनायथकी कहारीतिसिखीमनमोजहीकी । उर
 राखुदयाकमलापतिकी चरदानतजौरसचोजहीकी । कुष
 कोरनतेंससकौजउङ्गै तौहनोजहैमौजमनोजहीकी ॥ २५ ॥
 एधनघोरउठेचङ्गैओर इङ्गै लखिकाकरिहैरिसिहैतू । सौ
 तिपैजायहैजौकमलापति पायहैछँ।हँछनेकनछूँतू । जानिल
 ईअवहीसिगरी कलपैहैसुहायकेहीरकोखूँतू । पायपरहन
 मानतीरो अवजाजिनिऐसीमिजाजिनिहैतू ॥ २६ ॥ घेररहै
 घरहँ।इधनी फिरिबीतिनफागुकछूकहिजायगी । लालगुलाल
 कीधुंधुरमै सुखचन्दकीजौतिकहूँलहिजायगी । प्रेमपगीव
 तियानतैरी छतियानकोलाजसवैवहिजायगी । जोनमिलीम
 नमोहनैतो मनकीअनहीमनमैरहिजायगी ॥ २७ ॥ रूपकी
 चासअनूपचढ़ी यहप्रेममिठासपगायलैजीकी । नैननसैनस
 लोनीभली सुखवैनरसालकढै अतिनीकी । तेरेअधीनभयोर

सिधा विधिक्यौ नवनायरिभायलैपीको । साजिकैजंचीटुका
 नअरी फिरिराख्योकहापकवानकैफीको ॥ २८ ॥ लघुवैस
 कीऐसछिनौछिनकी भरीभेदनसेजेनठानतीहैं । तिनकेगुनहूँ
 पलोनाईविमोहिनी भावनकींधिकमानतीहैं । सुखऐसोनद
 सरासेवकजानै हितूतुमयातेंअखानतीहैं । नहिलैमिलेंप्रोत
 मसौतियजे हमजानतीहैंकीअजानतीहैं ॥ २९ ॥ लागिरीना
 इनबातनतें हरिआएहैंजानबड़े निजभागरी । भागरीवैरिन
 कीचएचातें तजैकिनमानपियारसप्रागरी । प्रागरीसोहैन
 पायनपै कविपारसहैतुतौबुद्धिकीआगरी । आगरीलागैति
 हारेहठै मनसोहनकेउठिकंठसौलागरी ॥ ३० ॥ माधवीमंड
 पभंडितकै सहकैमधुयोमधुपानकरैरी । रातीलतानबितान
 नतानि मनोजहसाजिरह्योसरसैरी । धीररसालकेबौरन
 बैठि पुकारतकोकिलडौं डिनदैरी । भूलिहकंतसोठानबीमा
 न सोजानवीबीरबसन्तकोवैरी ॥ ३१ ॥ रुसनहारीघनेरीज
 ती पैकहालागिरावरीकीजैषडाई । रुसेसमैप्रियकेजियकी ति
 यकाहूनैयाविधिपीरनपाई । रीझीहौंतेरीयाबूझनिजपर
 तेरीसोतेंबज्जतेहोरिभाई । भावतोभोरकोभूखोज्जतो तैंभ
 लीकरीनेकुहहातीखवाई ॥ ३२ ॥

अथप्रोषितपतिका लच्छुन ॥

दोहा ॥ जातियकोपरदेसप्रिय गयोविरहसरसाय ।

प्रोषितपतिकाकहतहैं तासोंसबकविराय ॥

अथ सुग्धाप्रोषितपतिका यथा ॥

मिलिसंगसखीनकेबैठैकछू नहिंखिलकहानिजंरोचतसो

परिपीरीगईकहिबेनीप्रवीन रहैनिस्त्रिवासरदोचतसी । जव
 तेपरदेससिधारेपिया अँसुवाअँखियानिविसोचतसी । यह
 सोनजुहीसमसौनभई लुकिभौनकेकोनसैसोचतसी ॥ १ ॥ नै
 ननमेभरिआवतनीर पैवाहिरजाहिर हैतनआयहै । बोल्यो
 चहैतौगरोभरिआवै सखीनहँ मेरहिजातिलजायहै । और
 वियोगिनीहैपैअनोखी लगीकछुयाहिवियोगवलायहै । आ
 जहीकेविछरेयहहालतौ औधिलौ कैसेकैकोपङ्गचायहै ॥२॥
 बालमकेविछुरेजवालको हालकछोनपरैकछुछाँही । चैसी
 भईदिनतीनहीमैं तवऔधिलोंकरोँछजिहैकछुछाँहीं । तीरसो
 धीरसमीरलगै पदमाकरबूझहँ बोलतिनाहीं । चन्दउदोल
 खिचन्दसुखी सुखमंदहँ पैठतिसन्दिरमाहीं ॥ ३ ॥ वारकि
 तेकसहेलिनकेकहें कैसेहँ लेतिनवीरीसँवारी । राखतिरो
 किकहैसतिराम चलैअँसुवाअँखियानतेभारी । प्रानपियारो
 चल्योजवतें तवतेंकछुऔरहीरीतिनिहारी । पीरजनावति
 अंगनसे कहिपीरजनावतिकाहेनप्यारी ॥ ४ ॥ खिल्योकरैसँ
 गसेवकसेरे नहींपलओटहँ देतिअनन्दहि । जाग्योनजीवनको
 रसहँ अलुरारयोनहींहियकामकेफन्दहि । हावतैकीह्लीक
 हाकरुणा नविचारतिदूसरेकेदुखदन्दहि । प्रानतजौंगीअरी
 बलिजाउँ विदानकरैअवैमेरीननन्दहि ॥५॥ निजकन्तवियोग
 सौवैठीइकन्त नवायकौसीसरहीधरीहै । कुचऊपरआनिपरै
 दुखसाँ जेचलेअँसुवासुखऊपरहै । लखिसंकरज्योंललनाकी
 प्रभा त्योसकैससताकहोऔरकोछै । मनोहृद्रनकीविषआ
 दिकीआँचसों चन्दसुधारसकोचल्योचै ॥ ६ ॥ लिखिताख

उपायनआखरद्वै पठईधरिधीरजरंगरची । गुरुसौदुरिद
तिनदासीकीहाय दईतियकोंपियप्रमपची । कविदेवजूबाचत
आयोगरोभरि हायकीहायहोजाततची । दिनबीसकलौप
तिकीपतियाकी वियोगिनपैवतियाँनवची ॥ ७ ॥

अथमध्याप्रोषितपतिका यथा ॥

अबह्वैहैकहाअरविन्दसोआनन इन्दुकेहायहवालिपरग्री
एकमीनविचारोविध्योवनसी पनिजालकेजायदुमालिपरग्री ।
पदमाकरभाखैनभाखिवनै जियऐसोकछूबकसालिपरग्री । मन
तोमनसोहनकेसंगगो तनलाजमनोजकेपालिपरग्री ॥ १ ॥ ही
तौविधावज्जतैपैभईअब चौगुनीचन्दनकीचरचाही । योहीँदवा
सेलगेईहते अबचादनीआयदसोंदिसिदाही । औधिलौंजीवन
औधिवदै सखितूकहितेरेकहाभनमाहीं । चाहतियोंकह्योप्या
रीसखीसों पैलाजनतेंकहिआवतिनाहीं ॥ २ ॥ तीखनवानन
सोंमनवेधत कामभलेनितदेहदहैरी । भावतनाघरआंगनने
क सोहायनहींवनबागउतैरी । सुंदरिगुंजतभौरनकोलखि
देखतचन्दहिकोंडरपैरी । काहूसोंजोकहिबेकोकरैकछु आ
वतकंठहिलौंसकुचैरी ॥ ३ ॥ सेवकबोलैविलोकैनहीं नसुनै
हलरायभुलायकैटोके । पानीऔपानछुटेसिगरे भगरपर
लाजऔकामदुवोके । कंतकाहूकेजुदेनकरौहरि अन्तकोप्रा
नरुकैनहिंरोके । औरईसीभईऔरईदेखत बौरईसीभईबौ
रविलोके ॥ ४ ॥ सखिजादिनतेंपरदेसगयेपिय तादिनतेंतन
छीजतहै । निसिवासरभौनसुहातनहीं सुधिआएउसासन
लीजतुहै । अबऔरवनावनैनकछू अलुभौइतनोसुखकीजतुहै ।

उनकी अनुहारिनिहारिसखी ननदीसुखदेखिकैजीजतुहै ॥ ५ ॥

अथ प्रौढ़ाप्रोषितपतिका यथा ॥

आजहीप्यारोचल्यायहआजही आयद्वार्यव्यघातनजी
तिहै । पैडोनिहारतिआइवेको कछुआजहीऔरैभईपरकी
तिहै । कंठहैप्रानरहेअवही अवऔधिकेपैवेकीकौनप्रतीति
है । द्यौसतौवीत्यौमरुकरिके अवआईहैरातिसोकैसधौवी
तिहै ॥ १ ॥ सांभकेऐवेकीऔधिदैआए वितावनचाहतयाह
विहानहिं । काङ्गजूकैसेदयाकेनिधानहौ जानौनकाहकेप्रेम
प्रमानहिं । दासबड़ोईविछोहकैमानती जातसमीपकेघाटन
हानहिं । कोसकेबीचकियोतुमडरो तौकोसकैराखिपिया
रीकेप्रानहिं ॥ २ ॥ बालसकेबिछुरेदृजबालकों व्याकुलतावि
रहादुखदानितें । चौपरिआनिरचीनृपसंभु सहेलिनिसा
हिविनीसुखदानितें । तूजुगफूटैनमेरीभट्ट यहकाहूकह्योस
खियांसखियांनितें । कंजसेपानितेंपासेगिरे असुवागिरेहुंज
नसोअखियांनितें ॥ ३ ॥ वैठीविसूरतहीपियआगम एतेमै
कोइलकीसुनिवानी । जागिउठीविरहागिमहा लखिमैरवु
नायकीसौहसकानी । चन्दनलायभिलायकपूर निसाभरि
सीचीगुलावकेपानी । कौनकहैवतियांसिकी नतियाकीत
ऊकृतियांसियरानी ॥ ४ ॥ सुखसेजसुगन्धसुधाकरसीत स
मीरसुहातनहींसखियो । कविराजकहैइनभांतिनकैसे विना
जगजीवनजायजियो । कवह्वविरहागिनमैपजरयो कवह्वंध
रिनीरमैवारिदियो । पियकेबिछुरेहियरायहकाम लोहार
केहायकोलोहोकियो ॥ ५ ॥ भरीअंगअनंगकीदीहव्यथासीं

खरीहीअटापैअलीनधिरी । मगजोवतहीमनभावनको ध
 रिध्यानमेपायसरोजसिरी । कविगोकुलबोलेकलापीइतेमै
 चितैचङ्गँषाँअकुलायधिरी । कहिहायगएपरिटीलेसेगात अ
 वाचतियाथहरायगिरी ॥ ६ ॥ छितिमंडलकैनममंडलमेघ
 उमंडिदसोंदिसिधायरहे । कविचन्दनचावसोंचातकमोर ह
 रेवनसोरमचायरहे । पियपावसमेबिछुरेवनितानिनों आवन
 हारसोआयरहे । किहिकारनहायविहायहमै हरिजायवि
 देसमैछायरहे ॥ ७ ॥ कैसेहूँसोतकेद्यौसटरे बङ्गरेसुधिकीने
 सुधोविसरैगी । ग्रीषममैबहरायकैराखी इतोकोऊधीरज
 औरधरैगी । आएनलालअजौकविवीर सुयाकीउपायकहा
 धोंकरैगी । खायदराररहीछतियाँ अवपानीपरैअररायपरै
 गी ॥ ८ ॥ कछुऔरउपायकरोमतिरी इतनेदुखसोंमरिबोई
 भलो । निजदेखिअवीरकीधूंधरिकों जिनबीरदृथाअबहाथम
 लो । यहअन्तकसोविनुकन्तएकन्त बसन्तसुतन्तहीआवैचलो
 चढ़िनारिपरासकीडारिनमै निरधूमअंगारनक्योंनाजलो ॥
 ९ ॥ फूलनदैइनटेसूकदंबनि आमनबौरनछावनदैरी । रीम
 तिमन्दमधुवृतपुंजन कुंजनसोरमचावनदैरी । कोसहिहैसुकु
 मारिकिसोर अलीकलकोकिलगावनदैरी । आवतहीवनिहै
 धरकन्तहि बोरबसन्तहिआवनदैरी ॥ १० ॥ आगतोआपुअ
 केलोरह्यो अवसाजसमाजधनोसंगछायो । बैरवहैनिजबूभ
 तहै मिलिकूजतहैकलकंठमेभायो । औधिकीआसबचीअबलों
 अबचाहतहैरघुनाथसतायो । ऊधोमिलेरुधुसूदनसों कहि
 योवृजमेबङ्गरोमधुआयो ॥ ११ ॥ फ़ैलिपरीघरअंबरपूरि म

रीचिनबोचिनसंगहिलोरति । भौरभरीउफनातिखरीसु
 उपावकेलावतरेरनितोरति । कप्रोंवचियेभजिहूषनअनद वै
 ठिरहेधरपैठिठोरति । जेहप्रलैकेपयोनिधिलीं वदिवैरि
 निआजविद्योगिनिवोरति ॥ १२ ॥ पावकपुंजनखायअघाय
 घनेघनेघायनअंगसँवारत । ऐसेहीदीनसलीनहुतो मनमेरो
 भयोअवतोअतिआरत । एलनमोहनमीतमनोज दयादृगतं कि
 ननेकुनिहारत । जानतपीरजरकीतज अवलाजियजानकहा
 अवजारत ॥ १३ ॥ उनकोनहींटोसपरोसतज्यो कहिकोफ
 रफंदपराएपरै । अपसोसयहैकहिवेनीप्रवीन जौऔरनकेतू
 अराएअरै । सखियानकीसीखविहायदृथा अखियानकेहाय
 हराएहरै । मननीचनिदानतूनन्दवेजोग मनोजजरकेजरा
 एजरै ॥ १४ ॥ वधिकौसुधिलेतसुन्यौहतिकै गतिरावरीकप्रों
 हंनबूक्तिपरै । मतिआवरीवावरीह्वैजकिजाय उपायकहू
 किनसूक्तिपरै । घनअनदरूपसुधाअंचयो इनसोचनहींमभूमि
 परै । दिनरैनिसजानवियोगकेवान सहैजियपापीनजूक्तिपरै
 ॥ १५ ॥ संगवारीसुनोसवकाननद वै विरहागिकेहौं तौमरी
 सुखमै । करिचेटकचन्दनवन्दनरीति निहारियोभावतेकेरु
 खमै । सुधिलेहिं गेसेवकजातहोमेरी पठाइहैंघावनकेदुखमै
 तजिआगिसुधागुनपीतमकी धरिदोजियोपातीमेरेसुखमै ॥
 १६ ॥

अथपरिकीयाप्रोषितपतिका यथा ॥

वालवियोगिनीलालविना कुंभिलायगईमनोपल्लवसाखै ।
 बोलैनडोलैनखालै हियो ससिनाथघरीकीगनावतिलाखै ।

जोवमैमैमहरउठै उडिपीयपैजैवेकोंचाहतिपँखै ॥ द्वारपै
 ठाढ़ीकिंवारकीओट बड़ेबड़ेबारबड़ीबड़ीआँखै ॥ १ ॥ मनहीं
 मनभीतरसोचिरहौं अपनेनहिंदुःखकहौं परसों ॥ कबहोय
 वरीकविरामभली जबजाहिनजायप्रियापरसों ॥ अबकासों
 कहीं कबआवैगेभोजन आजकीकालकिधीपरसों ॥ मनऐसो
 करैउडिजायसिलौं कडकैसेउड़ोंरीविनापरसों ॥ २ ॥ ह्याँ
 भिलिभोजनसोंसतिराम सुकेलिकरीअतिआँनदवारी ॥ ते
 ईलतादूनदेखतदुःख चलैअसुवाअखियानितेभारी ॥ आ
 वतिहोंजमुनातटकों नहिंजानिपरैविकुरेगिरिधारी ॥ जा
 नतिहोंसखीआवनचाहत कुंजनतेकठिकुंजबिहारी ॥ ३ ॥
 गोकुलनाथचलेजबसों तबसोंविरहानलतापतईसी ॥ भोजन
 भूषनपानिआँपानकी जानिपरैसुधिशूलगईसी ॥ केलिकेकुंज
 नसाथसखीनके जाइवेकीनितवानिलईसी ॥ भेंटतिहैहयला
 यतभालन लालनबावरीवालभईसी ॥ ४ ॥ न्यौतेगयेनंदलाल
 कहं सुनिवालबिहालवियोगकीघेरी ॥ जतरकीनहंकेपद
 माकर हैफिरैकुंजगलोनसैफरी ॥ पावैनचैनसुसैनकेवाननि
 हातिछिनैछिनछीनघनेरी ॥ बूझैजुकलकहैतौयहैतिय पीय
 पिरातहैपाँसुरीमेरी ॥ ५ ॥ जायलकीहूँविहारअनेकन ता
 यलकाँकरीबैठिचुन्योकरै ॥ जारसनातेकरीवज्जवातन ता
 रसनासोंचरिबगुन्योकरै ॥ आलमजौनसेकुंजनसे करीकेलि
 तहँअबसीसधुन्योकरै ॥ नैननमेजेसदँरहते तिनकीअबका
 नकहानीसुन्योकरै ॥ ६ ॥ कहिवेकीकछूनकहाकहिये सगजा
 वतजोयतज्वैगयोरी ॥ उनतेारतवारनलाईकछ तनतेठयाजा

बनखुँ गयोरी ॥ कबिठाकुरकूवरीकेवसहै रसमैबिसासीविस
 वूँ गयोरी ॥ मनमोहनकोहिलिवोमिलिवो दिनाचारिकोचाँ
 दनोहूँ गयोरी ॥ ७ ॥ बिकुरेवलवीरपियासजनी तिहँहेतस
 वैबिकुरावनेहै ॥ हरिचंदजूष्योसुनिकैअपवादन औरहूँसो
 चवढावनेहै ॥ करिकैउनकेगुनगानसदाँ अपनेदुखकोविस
 रावनेहै ॥ जेहिंभाँतिसोँद्योसयेवीतैसखी तेहिंभाँतिसोँवै
 ठिबितावनेहै ॥ ८ ॥ मनमोहनसोँबिकुरीजवसोँ तनआँसु
 नसोँसदाँधोवतीहैं ॥ हरिचन्दजूप्रेमकेफन्दपरी कुलकीकुल
 लाजहिखावतीहैं ॥ दुखकेदिनकोँकोजभाँतिवितै विरहाग
 मरैनसँजोवतीहैं ॥ हमहींअपनीदसाजानैसखी निसिसोवती
 हैकिधोरोवतीहैं ॥ ९ ॥ धिगदेहअगैहसवैसजनी जेहिंकेव
 सनेहकोटूटनेहै ॥ उनप्रानपियारेविनाएहिंजीवहिं राखिक
 हासुखलूटनेहै ॥ हरिचन्दजूवातठनीसोठनी नितकेकलका
 नितेछूटनेहै ॥ तजिऔरउपावअनेकअरी अवतौहमकोँ
 विषधूँठनेहै ॥ १० ॥ वरुनीनहूँ नैनकिकैँभिभिकैँ मनोखंज
 नमीनपैजालिपरे ॥ दिनऔरधिकेकैसगनोसजनी अँगुरीनकेपो
 रनछालिपरे ॥ कहिठाकुरकासोँकहाकहिये हमेप्रीतकरकेक
 सालिपरे ॥ जिनलालनचाहकरीइतनी तिहँदेखिवेकेअवला
 लिपरे ॥ ११ ॥ सगहेरतदीठिहेरायगई जवतेतुमआधनऔधि
 वदी ॥ बरसौकितहूँ धनआनदयारे वढावतहोइतसाचनदी ॥
 हियरासधिदैउदवेगकीआँच चुआवतआँसुनमैतमदी ॥ कब
 औसरपायमिलीगेसुजान वहीरलौँ वैसतौजातिलदी ॥ १२ ॥
 अभिलाषनलखनभाँतिभरो वरुनीनकेरोमसुकुँपतीहैं ॥ ४

न आनद जानि सुधाधर मूरति चाहन अंक सुचाँपती हैं ॥ टक
 लायर हीं पल पाँवरेके सुधिसोँ रचि चौपही भाँपती हैं ॥ जब
 ते तुम आवन औ धिबदी तबते अखियाँ मगनापती हैं ॥ १३ ॥ ज
 वते तुम आवन आसदई तबते तरसों कब आयहौजू ॥ मन आस
 रता मन हीं मैलखीं मन भावन जानि सुनायहौजू ॥ विधिद्यौ
 सलौं औ धिबदी दिनहीं दिन जानि विध्याग बितायहौजू ॥ रस
 सोँ धन आनद वारसकुंज रसारस सोँ कब छायहौजू ॥ १४ ॥
 मीत मुजान अनीतिकरौ जिनि हाहान हूजिये सोहि अमीही ॥
 दीठिकों और कहीं नहीं ठौर फिरी हृगरावर रूपकी दौही ॥
 एक विसासकी टेक गहे लगि आसर हँवसि प्रानवटोही ॥ ह्वे धन
 आनद जीवन मूरि दई कत प्यासन मारत मेही ॥ १५ ॥ जासुख
 हाँसी लसी धन आनद कैसे सुहात वसीत हाँनासी ॥ जाइ हितै
 हतिये नहि तू हँसि बालनकी कतकी जत हाँसी ॥ पोखिर सैजि
 यसे खतक्यौ गुन बाँधि हूडारत दोसकी फाँसी ॥ हाहा सुजा
 न अचंभो अयानजू वेधिके गाँसहि बेधत गाँसी ॥ १६ ॥ जीवन
 हीं जियकी सब जानत जानिकहा कहिवात जतैये ॥ जोककुँहै सु
 खसंपति सौंज सुने सुकही हँसि देन मेपैये ॥ आनदके धन लागै अ
 चंभो पपीहायुकारते क्यौ अलसैये ॥ प्रीतपगी अखियानदिखा
 इके हाय अनीतिजे दीठि कपैये ॥ १७ ॥ लैहीर है हीसदा मन
 औरको देवोन जानत जानदुलारे ॥ देख्योन है सपने हँकहँ दु
 खत्यागे सकोच औ साँच सुखारे ॥ कैसे सँजोग वियोगधौं आय
 फिरी धन आनद हँ मतवारे ॥ मोगति बूझि परै जु कहीं तबही
 ऊधरी कहँ आपते न्यारे ॥ १८ ॥ मेविन जाजिय और रचीतौ

नचैनतुम्हैविनमोहिजियोजू ॥ आंखिनमेठरिआयरहेसु दहै
 दुखियांगहिआसहियोजू ॥ सूतभयोगुनजोजेहिअंगको दीप
 सोवारिवियोगदियोजू ॥ हायसुजानसनेहोकरहायकरो मोह
 जनायकद्रोहकियोजू ॥ १६ ॥ घनआनदजीवनरूपसुजानहै
 पीवतकरोदृगयासनहीं ॥ फुविफूलिरहेकुसुमाकरसे सुक
 हंपहिचानकीवासनहीं ॥ रसिकार्द्धभरेअपनेमनमै सुकह
 रसआसहपासनहीं ॥ पचिकौनेविरंचिरचेहोकरहोजू हित
 नहतीहियवासनहीं ॥ २० ॥ करोहंसिहेरिहरग्रीहियरा अ
 रुकरोहितकैचितचाहवढार्द्ध ॥ काहेकीवालिसुघासमयैनि
 नैननिचैननिसैनचढार्द्ध ॥ सोसुधिमोहियमैघनआनद साल
 तिकेहं कहेनाकढार्द्ध ॥ सीतसुजानअनीतिकीपाटी इतेपैनजा
 नियेकौनपढार्द्ध ॥ २१ ॥ सुधिहातीसुजानसनेहकीजौती क
 हासुधियोंदिसरावतेजू ॥ छिनजातेनवाहरजौछलछुटिकह
 हियभीतरआवतेजू ॥ घनआनदजाननदोसतुम्है गुनभावते
 जोगुनगावतेजू ॥ कहियेसुकहाअवमौनभली नहिंखावतेजो
 हलैपावतेजू ॥ २२ ॥ मोअवलाजियजानतुम्है विनयोवलकैव
 लकैजुवलाहक ॥ त्योंदुखदेखिहंसैचपलाअरुपौनहं टनावि
 देहतेदाहक ॥ चन्दसुखीसुनिमंदमहा तमराहभयोयहआन
 अनाहक ॥ प्रानधरोवरहैघनआनद लेज्जनतीअवलेहिंगेगाह
 क ॥ २३ ॥ प्रानपखिरूपरेतलफौं लखिरूपदुगेसुफाँदेगुनगाय
 न ॥ करोहतियेहितपालसुजान दयाविनव्याधवियोगकेहाथ
 न ॥ सालतिवानसमानहिये सोलहेघनआनदजेसुखसाधन ॥
 देज्जदेखायदर्दसुखचंद लग्यौअवश्रीधिदिवाकरआधन ॥ २४ ॥

सेतसरीरहियेविप्रस्वाम कलाफनरीसनजानिजुझाई ॥ जी
 भमरीचीदसोंदिसिफैलति काटतजाहिवियोगिनिताई ॥
 सीसतेपूछिलौ गातगरुो पैडसेबिनताह्विपरैनारहाई ॥ से
 सकीगीतकेऐसेहिहोतहैं चंदनहींयाफनिंदहैमाई ॥ २५ ॥

अथ सामान्याप्रोषितप्रतिका यथा ॥

आलीसिंगारतिहैहठसों परलागतअंगअंगारसिंगारी ॥
 पीरीपरीतनमैमतिराम चलैअख्यानितेनीरपनारी ॥ सो
 जनहींमनभावतनायक आवतजोबज्जतैधनवारी ॥ वारवि
 लासिनीकींविसरैन विदेसगयोपियग्रानपियारी ॥ १ ॥ बी
 रअवीरअभीरनकोदुख भाखेंबनैबनैबिनभाखें ॥ त्योंपद
 माकरमोहनसीतके पायेसँदेसनआठयेपखें ॥ आयेनआप
 नपातीलिखी मनकीमनहींभैरहीअभिलाखै ॥ सीतकेअंत
 वसंतलग्यो अबकौनकेआगेबसंतलैराखै ॥ २ ॥ घनसारप
 टोरसिलैसिलैनीर चहैतनलावैनलावैचहै ॥ नबुझैविरहागि
 निभारक्षरीहू चहैधनलावैनलावैचहै ॥ हसटेरसुनावतीबेनी
 प्रवीन चहैमनलावैनलावैचहै ॥ अबआवैविदेसतेंपीतमगेह
 चहैधनलावैनलावैचहै ॥ ३ ॥ गाँवनकींमनभावनजात दसा
 यहवारवधूकीविराजी ॥ खालतनैननडोलतबालत वैनसुनै
 नबकैकोऊकाजी ॥ गोकुललीकलिखीसीपरैलिखि साँसती
 लूकसीलागतिताजी ॥ ताररहेनतमूरनपै सबजातरहेसह
 साजसमाजी ॥ ४ ॥

अथ खंडितालक्षण ॥

दाहा ॥ पियतनऔरहिनारिके भोरदेखिरतिचीझ ॥
 दुखितहातितेहिंखंडिता सुकविनिहूपनकीझ ॥

सुग्धाखंडिता यथा ॥

जावकसीसधरेंउठभोरही पीवक हंतेपियादिंगआयो ॥
 कौनेदियोयहभालमैलाल गुलावकीफूलकहीकहंपायो ॥ यों
 कहिमागतिखिलिवेकीं लडवावरीवातनज्योवहलायो ॥ त्यों
 हंसिकैसुखसोंसुखछूाय लिलारसोंप्यारेलिलारलगायो ॥१॥
 रैनजगेरतिरंगरंगे परभातभएँपियआयगयेरी ॥ ऊंचेउरो
 जनखाजलगे उरमौजमनेजकेचौजदयेरी ॥ बूभिवेकींनववा
 लरसालके ओठनलोंअखराउनयेरी ॥ पौरितेदौरिकेप्यारे
 नेप्यारीके पाननिलोयनमूदिलयेरी ॥ २ ॥ भोरहींआवतनौ
 लकिसार विलीकतहीलतनाउठिदौरी ॥ वेनीप्रबोनदोजक
 रसोंगहि गाढेकैलागिगईलडवीरी ॥ जानैकहायेअजानैस
 वै मैदेखायहौलैसखियानकींओरी ॥ साँवररंगलगेहरिरा
 वरो साँवरीह्वैगईपीतपिछौरी ॥ ३ ॥ अंकितचारुचुरीवल
 या मलयागिरजातलगेलखिलीजै ॥ सिंदुराविंदुरवानकेचि
 क्क चुनीजरिकेसरकुंटनकीजै ॥ चूरह्वैलागिरछ्यौकनसै ज
 सवंतजूपूरनप्रेमलहीजै ॥ राख्यौभुजामैछपायजरायकी कंक
 नसोहसकींपियदोजै ॥ ४ ॥ नाहकीछातीमैदेखिनखच्छत
 नारिनवेठकछ्यौपुनिएसैं ॥ सुंदरवागैकिचोलीमैभूलिकै ल्या
 एहैचंदकलाधरिकैसैं ॥ खिलिवेकींहसकींयहदेऊजू योंसु
 निकैहरिदौरेहरेसैं ॥ लायलईउरसोंहंसियोंगसिदेाजर
 हेकसिराखियेजैसे ॥ ५ ॥ लालकैभालमैपावकसी अवलोकति
 जावकजोतिजगाए ॥ दौरिकैगोरीभरेअसुवा जसवंतसखी
 सोकहैचितलाए ॥ दोजैहमैजूवतायहमारीसों बूभितितो

हिहितूहितपाए ॥ कालतौ द्वैजकीटीकोकह्यो अबआजक
 हीयेकहाहैंलगाए ॥ ६ ॥ अंजनविंदुबन्योअधरानिमै मैछवि
 आजुअनूपमपेखी ॥ तोपुतरीनकीकुँहंपरी ढरिओरकीऔ
 रअलीलखिलेखी ॥ जोयहकुँहंतौनाहकहायह हैनखरेख
 हियेअवरेखी ॥ लायलईहंसिकैहियमै कहितेरोसोंतीरीहैतै
 अबदेखी ॥ ७ ॥

अथ मध्याखंडिता यथा ॥

आयेकहंरतिमानिकैभोरही भूपनभेषसबैवटलेहैं ॥ यों
 पियकोतकिरूपतिया तऊबोलीकछूनबुरेकीभलेहैं ॥ आंखिन
 छोरतेंआंसूगिरे कहिसुंदरकाजरसोंमसलेहैं ॥ सोछविथों
 अरविंदनतें अलिकेमनाचेटुवाकूटिचलेहैं ॥ १ ॥ रातिकहं
 रमिकैमनमोहन प्रातबड़ेउठिगेहकोंआये ॥ देखतहीउरमाँ
 हनखच्छत बालकेलाचनलालसुहाये ॥ भूलिगयारसरोसब
 ढो उरबैनकहेनकछूमनभाये ॥ आंसूकहेटुगमाहिंजबै अंगि
 रायजम्हायजम्हायछिपाये ॥ २ ॥ हारबड़ेऔउरोजगड़े उर
 योंनिरख्योद्विगयौपरभातहै ॥ ताहीसमैनखतीसिखलीं अ
 तितीछनताप्रगयोचद्विगातहै ॥ चिबमैकाहीसीठादीठगीसी
 रहीकछुदेख्योसुन्योनसुहातहै ॥ रोचनसेभएलोचनलाल स
 कोचनतेनकहीकछूबातहै ॥ ३ ॥ सुखआरसीमैलखिआयेक
 री सिखसेवकयो कहिआलीभई ॥ धनरावरीवावरीतेंबढ़िहै
 गुनजोवनजेतिनिहालीभई ॥ समुझोंसमुझाओंकहाअबमै
 सिखलाजमनाजप्रनालीभई ॥ भूखियाँसमसोचसनीइनकी
 अंखियादीऊरोवतलालीभई ॥ ४ ॥

अथ प्रीटाखंडिता यथा ॥

आइयेवैठियेआजअजौँ आँखयानितेँआरसहेतनहीनो ॥
 साँवरैअंगसैसाँवरैदूकछूँ आजविराजिरह्यौपटभीनो ॥ भा
 गतेँआएहीभौनहमारै पैकाहसिंगारभल्लायहकीनो ॥ ओठ
 मैअंजनरेखदईअरु भाल्लसैलालमहावरदीनो ॥ १ ॥ घूमतनै
 नकटैँ सुखवैनन भूमतनीदभरेअलसाने ॥ अंजनओठमहाव
 रभाल्ल मरुँ करिसंभुपरोपहिचाने ॥ गोदगहीतिनहीँजिन
 तेँ सवरैँनविनोदकरैँमनसाने ॥ पाँयनजायपरीतिनहीँके र
 हेजिनकेहरिहायविकाने ॥ २ ॥ जाहीपैँआएहीमानमहार
 ति साँझसमैपुनिताहीपैँजैही ॥ आवतप्रातहियौँहीँचलेषर
 मेरेयहँपैँकहासुखपैँही ॥ चिह्नलगेउरमेकुचदोउके माहिभ
 लेफिरिअंकमिलैही ॥ देखहुँक्योंनवनायकैँअंक कहाँलोकलं
 कीकलकछिपैँही ॥ ३ ॥ पीतमआयेप्रभाततिया सुसकायउ
 ठीदगसौँदगजारे ॥ आगेह्वैँआदरकैँसतिराम कहेमृदुवैनसु
 धारसवारे ॥ ऐसेसथानसुभायनहीँसों मिलोमनभावनसोंम
 नभारे ॥ मानगोजानसुजानतवैँ अगियाकीतनीनछुटीऊवको
 रे ॥ ४ ॥ नखतेसिखलोलखिमोहनकीतन लाडिलीलीटिन
 पीठिदई ॥ कविवेनीछवीलिभरीअंकवार पसारिभुजाकरिने
 हमई ॥ यहगंजकीसालकठोरअहो रह्यौँमोछतियांगडिपीर
 भई ॥ उचकीलचीचौँकीचकीसुखफेरि तरेरिवड़ीआँखयाँ
 चितई ॥ ५ ॥ रैनजगेतुमकाहकेसाथ लहेरतिचैनभयेअति
 आरसी ॥ रावरेओठरह्यौरामभौँर सुमेरेहियेमेगडावतआ
 रसी ॥ नेकुनआवतलाजअजौँ हनुमानवहैँतियनैननआरसी

वातैवनावतकाहेलखौकिन हाथकेकंकनकोकहाआरसी ॥६॥

अथ परिकीयाखंडिता यथा ॥

भारहीभांवतोआनिकटगौ तियगैलह्वैनेनकियेसकुचोहें ॥
 लाललिलारललाकेलखे गएलोचनह्वैललनाकेलकीहें ॥
 डोरनहीबिनहारहियेलखिदूतीकीओरतकैसतरोहें ॥ पांय
 अंगठेखलीछितिकेालतिबे लतिहैनचितीतिहैसोहें ॥१॥ सा
 हंसहंनकहूँदुखआपनोभाखेवनैनवनैबिनभाषे ॥ लोपदसाक
 रथीमगमेरंगदेखतिहैंकबकीकखुराखें ॥ बाविधिसाँवरेराव
 रेकीनमिलैमरजीनभजानमजाखें ॥ बोलनिबानिविलोकनि
 प्रीतिकीबेमनत्रेतरहीअबआखें ॥२॥ आएहोमेरेमयाकारिमे
 हनमोहनोभूरतिमैनमईहै ॥ आरससोंरससोंअनुरागसोंवा
 हीकिदोठिसोंदीठिछईहै ॥ रावरेओठनअंजनदेखिकैसीरन
 मोसतितेहतईहै ॥ मानह्वैआनतेवोलिबेकीं वहिभांवतीनैमु
 खछापदईहै ॥३॥ लोचनलालगुलालभरेकीखरेअनुराग
 सोंपागिजगाये ॥ कैरखचाँचरिचैचँदमेकृतियापरकैलनख
 च्छतकाये ॥ भीजिरहेअमनीरसुजानधरौडगहीलियेलागी
 सहाये ॥ भारह्वैसीखेलारिनपैघनआनदकाहलछटनपा
 ये ॥४॥ हियकीगतिजानतजानसुजानहीकौनसीवातजूआ
 यदुती ॥ टपकेगईपरैहियअंजुरओसलौऐसीकछरसरीति
 धुती ॥ निछुरेकितसाँतिमिलेहनहेति छिदीछतियाँअकुला
 निछुरी ॥ तुमहीतेहिँसाखीसनेघनआनदप्यारनिगोडेकि
 पीरबरी ॥५॥ बंकविसालरंगीलेरसालछबीलिकटाच्छक
 खानिमैपंडित ॥ साँवलसेतनिकाईनिकेतहियोहरिलेतहौ

आरसमंडित ॥ बेधिकैप्रानकरोफिरिदान सजानभरेखरेने
 हअखंडित ॥ आनदआसवधूंमरेनेन मनोजकेचोजनिओजप्र
 चंडित ॥ ६ ॥ एहाहितहितऐसेईकीजत कैहितसांचोकिया
 उपखानहे ॥ वेनीहंसायहमैजगमै वरसायसनेहवठैयतमान
 हे ॥ पौरिपरार्इकेपाहहूँ बलिकीवोगहरवडोईअयानहे ॥
 नातोकाहाहमसांतुमसां रसराखवोसैननहीकासयानहे ॥ ७
 तुमरेईलियेहजवीधिनमै फिरिकैबिनदेखंतईतीतई ॥ नहिं
 काहकिखारिहैयामैकछु दई मोहव्ययाजोदईतीदई ॥ हनु
 मानइतीबिनतीहैसुना विकुरेनिसिमैरीगईतीगई ॥ उनहीं
 कालगाओललाछतियां हसकोवदनामीभईतीभई ॥ ८ ॥
 रावरेनेहकोलाजतजी अरुगेहकेकाजसवैविसराये ॥ डारि
 दयोगुरुलागनकोडर गांवचवायमैनावधराये ॥ हेतकियोह
 मजोतीकहा तुमतीसतिरामसवैविसराये ॥ कोऊकितकउ
 प्रायकरी कहूंहेतहैंआपनेपीवपराये ॥ ९ ॥ सीखनमानी
 सयानीसखीनकी ल्योपदसाकरकीअसनैकी ॥ प्रीतिकरीत
 मसांवजिकै सुविसारिकरीतुमप्रीतिधनेकी ॥ रावरीरीति
 लखीदूमिसांवरै हातिहैसंपतिज्यौंसपनेकी ॥ सांचहताका
 नहातभलीं जोनमानतहैकहीचारिकनेकी ॥ १० ॥

अथ गणिकाखंडिता यथा ॥

रामिदैनसवैअनतैवितई साकियोदतआवनभोरहीको ॥
 नहिंछटतकैलकवीलिलला जोसुभावरक्षीपरिछोरहीको ॥
 हितप्रानहैसोहनवेनीप्रवीन कहानितहैउतओरहीको ॥ तर
 वासहरावनमेरेचले हरबापहिरायकैओरहीको ॥ १ ॥ भो

रही आवत प्रीतमके टकटेरिबेकों। सजनीसमभाई ॥ चौरिबे
 कोंचितये। वितवालनै कारिककामकलावगराई ॥ तारिन
 दीजियेसो। तिनसालते मोरियेना। मुखभाखिअगराई ॥ घोरि
 हीवारमेअं गुरीछेरते मानिककीसुदरीउतराई ॥ २ ॥ ह्यं
 हमसो। मिलिवोठहरायके सैनकहूंअनतेहीकरीजै ॥ भोरही
 आयबनायकेवातन चातुरहूँ बिनतीबहुकीजै ॥ ऐसियैरीति
 सदां। मतिराम सुकैसेपियारेजुप्रेमपतीजै ॥ सैं। हूंनखाइयैजाइ
 यैह्यंते नमानिहो। जोऊपैलाखनद्वीजै ॥ ३ ॥ छैलकीछाती
 मैछापछबोलीकी छोभछई छतियाँछबिछाकी ॥ भीनेक्षगा
 मैभूपीभूमकादृति भूमैभुकैभूपकैदृगताकी ॥ अइभरैमगपै
 डधरै उधरैनकछूमतिकीगतिथाकी ॥ बाकीसीदीठिफिरा
 यकह्यैअहा जाउजूदैकरिकालिकीवाकी ॥ ४ ॥ भोगिच
 दीतरनाई नहीं तुम्हैचोपचदीइहिंओपभुराए ॥ बेनीजबैउ
 भरेकुचरंच परेतुममानोमहाधनपाए ॥ जाहुजूजानिपरेहो
 खरे कितदूतिनसोंजितभेदलगाए ॥ मैअपनाएजबैचितदै
 हितते। रिक्हावितदैइतआए ॥ ५ ॥

अथ कलहान्तरिता लक्षण ॥

दोहा ॥ पहिलेपियसोंकलहकरि पुनिपाछेपछिताय ॥

कलहन्तरितानायिका ताहिकहतकविराय ॥

सुग्धाकलहान्तरिता यथा ॥

वादिनवामडवाकेतरे जोहिँकेसंगभावरीआनिसोखेली ॥
 आयअचानकहीअंखमीचनी ताहिरथ्योलियेसाधसहेली ॥
 मेरेहीसंगछिप्योचहैकुंज रिसायकैमैभईतासोंअकेली ॥ आ

योयहीप्रकृतिायोअली गयोआजुकोखेलिवोकुंजचमेली ॥ १ ॥
 वारीबहसुरभानोविलोकि जिठानीकरैउपचारकितिकी ॥
 त्योपदमाकरऊंचीउसास लखेंसुखसासकीह्वैरह्यौफीकी ॥
 एकैकहैइकूँदीठिलगी परभेदनकोजलहैदुलहीकी ॥ ह्वैकैअ
 जानजोकाङ्गसोंकीङ्गोलु मानभयोवहज्यागहैलीकी ॥ २ ॥ यौ
 नेकीचूंदरीवैसियैहै दुलहीअवहीतेंहिठाईवगारी ॥ वेऊमना
 वनआएहैंआपने हाथसोंजातिनपानसँवारी ॥ पाँचपरमति
 रासलला मनुहारिकरीकरजोरिहहारी ॥ आपुहीमान्यो
 सनायेनकाङ्गके आपुहीखातिनपानपियारी ॥ ३ ॥ किनकेम
 तऐसीअनेसीवनी पियसेवकूँसोंगवारीकरी ॥ गतिभालकी
 कालकीकोसमुझै नकहूँपरऐसीधवारीकरी ॥ दुखकासोंक
 हौं यहलाजलटो हठगाजकीआजअसारीकरी ॥ हमरीग
 तिसौतिकोंदीङ्गीदई गतिसौतिकीहायहमारीकरी ॥ ४ ॥

मध्याकलहान्तरिता यथा ॥

पाँचपलोठिकैनीवीगहीतज तासोंकरीरसमैरिसराति
 है ॥ भोरलोंनाङ्गनिहारिरह्यौसु गयोअवजानीकछूनवसाति
 है ॥ हठिकैपीठिद्वैठि रही तवतौअवलालनकोललचातिहै ॥
 भेद्यहैसजनीसोंकछूँ मिसिकैकह्यौचाहतिहैपैलजातिहै ॥ १ ॥
 विरसनसँतापजताएविना जगजीवनकीअहैरीतियही ॥ करें
 जाहिरजीभसोंलाजलगे जाअकाजनआजफिरैउमही ॥ प
 तिसोंनतिकीअतिभूलिगई कलहीजियरेनपरैकलही ॥ सखि
 यानिसोंसोभसहेलिनिसों कहिवेकोंचहीपैकछूनकही ॥ २ ॥
 हमसासकेपासकहाँसंगई सिरदेखतहीउतनेछूनमे ॥ पियसे

वकहारेबुलायअटाते लगेसंगसैनभरोखनमे ॥ रफिजातेनजा
 तवनैदुचितो हरिहारिगेकैसीकियेननमे ॥ ननदीहंसैसौति
 कोदेखिदई विधिभूलकीहूलउठैतनमे ॥ ३ ॥ पाँयनआवपर
 तौपररहे केतीकरीमनुहारिसुहेली ॥ मान्योमनायोनामै
 मतिराम गुमानमैऐसीभईअलबेली ॥ प्यारिगयोदुखमानिक
 हौअवकैमे रहैइहिंरातिअकेली ॥ आपुतेल्याउमनायकझा
 ईकोमेरोनलीजियोनामसहेली ॥ ४ ॥

अथप्रौढाकलहान्तरिता यथा ॥

बैरीमनेजहनैइखुलै विषकोकिलकूकनिमाहँपगैलगी ॥
 चंदमयखनितेचिनगीउठी चंद्रिकाचैतकीज्वाललगैलगी ॥
 पीतमकेअपमानकियेको भयोफलवातनवीरदगैलगी ॥ सीत
 लमंदसुगंधसमूह समीरहलुककेतूललगैलगी ॥ १ ॥ भईचू
 कबडीहमतेसजनी वहहैकसिटेनहीनावरेकी ॥ विजयानद
 प्यारोमोहठिगयो तवतेगतिहैरहीवावरेकी ॥ घरबाहिरह
 नासुहातअजौ भईछीनदसातनभाँवरेकी ॥ खटकैवासनेहम
 रोवतियाँपै चितौनिअरीवहसाँवरेकी ॥ २ ॥ क्यौभएलाल
 सोलोवनलालरे तैहीजँजालकीज्वालबढाई ॥ रेकरकौनकरी
 करनी पिथकेकररोकनकीअधिकाई ॥ तौमैकछूरसनारस
 ना रिसनाहककैसठयेरसिकाई ॥ रेविधितेरीसबैउलटीवि
 धि अंतरपारतमेहिंकंधाई ॥ ३ ॥ ठाढ़ेभएकरजोरिकैआ
 गे अधीनहूँ पाँयनसीसनवायो ॥ केतीकरीविनतीमतिराम
 पैमैनेकियेहठतेमनभायो ॥ देखतहीसिगरीसजनीतुम मेरे
 तौमानमहासदह्यो ॥ हठिगयोउठिप्रानपियारो कहाकहि

येतमहूनमनाया ॥ ४ ॥ कासोंकहौं कहीकैसीकरूं अबक्यों
 निबहैयहठाटजेठायो ॥ पाँयनप्यारोपरोईरह्यो मैअयानतें
 आदरकैनउठायो ॥ भूँटियैवातनतेंसिगरी मनमेरोभोराय
 कैमोहिभुंठायो ॥ रुठिहौं जानौकहाइनदारी सहैलिनिसो
 खदैमोहिरुठायो ॥ ५ ॥ बैरिनजीभहीकाटिकरौं मनद्रोही
 कोंमीजिकैमौनघरौंगी ॥ जानैकोदेवकहाभयोमोहि लरीक
 हेलोकमैलाजमरौंगी ॥ मानपतीसुखसर्वसुखे उनसोंगुनरूप
 कोगर्वकरौंगी ॥ अंजलीजेरिनिहारिगरेंपरि होंहारियारे
 केपाँयपरौंगी ॥ ६ ॥

अथ परिकीयाकलहान्तरिता यथा ॥

प्रेमसमुद्रपरयोगहिरे अभिमानके नरह्योगहिरेमन ॥
 कोपतरंगनतेंबहिरे अकुलायपुकारतक्यों बहिरिमन ॥ देवजू
 लाजजहाजतेंकूटि भज्योसुखमूटिअजोरहिरेमन ॥ जोरतता
 रतप्रोतितुही अबतेरीअनीततुहीसहिरिमन ॥ १ ॥ जाके
 लियेगृहकाजतज्यौ नसिखीसखियानकीसीखसिखाई ॥ बैर
 क्रियोसिगरेब्रजगँवसों जाकेलियेकुलकानिगँवाई ॥ जाकेलि
 येषएबाहिरहू मतिरामरहैहँसिलोगचवाई ॥ ताहरिसोंहि
 तएकहीबार गँवारिमैतोरतवारनालाई ॥ २ ॥ जाकेलियेज
 गसोंभयोबैर भलीनमैकाहूकहूनकहीहैं ॥ ठानिअठानजि
 ठानिनसों नितजाहिनिहारिवेकोंउमहीहैं ॥ जाकेसुधाऊ
 तेंसुन्दरबैन सुनेबिनमैनकेदाहृदहीहैं ॥ कौनसयानकहैअ
 प्रने सखिताहूसोंआजमैरूसिरहीहैं ॥ ३ ॥ कासोंकहैमैस
 हैदुखयै। सुखसुखतईहैपियूषपियेतें ॥ त्योंपदमाकरयाउप

हासको वासमिटैनउसासलियेतें ॥ व्यापैव्यथायहजानिपरी
 मनमेहनमीतसोंमानकियेतें ॥ भूलिहूंचूकपरैजोकहूँ तिहि
 धूककीहकनजातहियेतें ॥ ४ ॥ बालिवेकींतुमकींपठई उनजा
 निकैमोहिहिहारियेनाइन ॥ आपुनमान्योअयानमई भईहा
 रिगईकरिकोठिउपाइन ॥ गोकुलनाथनिकुंजनतंगए कौनसी
 वामकेधामसुचाइन ॥ हातकहाइनबातनसोंब मसूसिरहाम
 नमेठकुराइन ॥ ५ ॥

अथ गणिकाकलहान्तरिता यथा ॥

कैसह्रातुरआवैतबै सोरहैएकजामहीलोअनुरागी ॥
 भायानसेवकहसेधनीकोसु सौतिकेभागनसोंउठिजागी ॥ ए
 अरीमानदर्दनिदर्दतूं अहैसठमूखमंदअभागी ॥ पीतमकेसँ
 गआयोसही कैरागयोफिरिपीतमकेसँगलागी ॥ १ ॥ चाहि
 कैमेरेईगातसलानेजा सोनेकोआदरनेकुनामानै ॥ जोपाहरा
 यहराफिरिपीछे भुजानकीमालगरेगहिआनै ॥ मेरेईछोठ
 कारंगलखै जोनविद्रुमलालकछूकरिजानै ॥ वृक्षियैताहिरि
 बावरेजीव जोऐसेऊपीवसोंहसनेठानै ॥ २ ॥ जातेंलईजगबीच
 वडाईमै मेरेवियोगजोहातहैछीना ॥ मोहिगनैमतिरामजोप्रा
 नकै मेरेसदाँईरहैजोअधीना ॥ मेरेलियेनितहींउठिकै गह
 नेजुगढायकैल्यावनवीना ॥ प्रानपियारेसोपायनलाग्योरि
 मैहँसिकंठलगायनालीना ॥ ३ ॥ हीरकेहारहजारनकोधन
 देतहुतेसुखसोंसरसाने ॥ हौनलयेपदमाकरत्यौ अरुवाली
 नवालसुधारससाने ॥ वैचलिह्यातिंगएअनतै हमकाअबआप

नीचूकवखाने ॥ आपनेहाथसों आपनेपाँवपै पाथरपाारपरगो
पछिताने ॥ ४ ॥

अथ विप्रलब्धाको लक्षणा ॥

दोहा ॥ जायमिलनसंकेततिय मिलै नपियतिहिँठौर ॥

ताहि विप्रलब्धाकहै विरुलहेयसवतौर ॥

सुग्धाविप्रलब्धा यथा ॥

आलिनकेसुखमानिवेकों पियप्यारिकिप्रीति गर्दचलिव गै ॥
छायरह्यौ ज्यरोदखसों जबदेख्योनह्वानदलालसभागै ॥ का
हसोंबैलकछूनकहै मतिरामनचित्तकहूँअचुरागै ॥ खिलति
खिलसहेलिनिमै परखिलनबेलीकीजेतसेलागै ॥ १ ॥ आलिह
सोंवतरातिलजातिहै जातिहैमैनकेदागदगीसी ॥ आवतज्यो
कछुबूडतमो हदछेाडिकैप्रेमनटीउमगीसी ॥ योविनदेखेगया
सुखसूखि सराजमैजेजङ्गकीभारतगीसी ॥ गाढीव्यथाहियबा
ढीविस्मृति ठाढीसहेटकेठौरठगीसी ॥ २ ॥ कोटिकसैंहँस
खोनकेसाइस केलेसँकेतसिधारीखगीसी ॥ तापैतह्वानमि
ल्योमनभावन छोभछटानकीछींटलगीसी ॥ हातनहीं धरता
तनमै चलहनसकैचकवानिपगीसी ॥ मुंजभईसुखकीछविअौर
र विलोकतकुंजकेपुंजठगीसी ॥ ३ ॥ ल्याईलिवायसखीसबसाय
की सैंहँनखायकैसुंदरिकोहैं ॥ कुंजकेभीतरसूनोचितैकरि
बैठिरहोहैनवायकैभैंहैं ॥ लालभईदुतिकोयनकी चमकैसुत
रोअतिदाठिलजैंहैं ॥ लोहितकुंजनसध्यमनो रसचाखतलो
लमधुप्रतसैंहैं ॥ ४ ॥

अथ मध्याविप्रलब्धा यथा ॥

प्यारीसँकेतसिधारीसखीसँग व्यामकेकामसँटेसनकेसुख ॥
 सूनाइतैरँगभौनचितै चितसौनरहीचकिचैकिचहूसुख ॥
 एकहीवाररहीजकिज्यौकीथौ भौहनितानिकैमानिमहादु
 ख ॥ देवकछरदवीरीदवीरीसु हाथकीहाथरहीसुखकीमख ॥
 १ ॥ केलिकेमन्दिरदेल्योनलालकों बालकेदाहनिसंगदहेहैं ॥
 भौहँचहायसखीकोंलख्यो मतिगामकछूनकुबालकहेहैं ॥ भू
 लहलासविलासगए दखतेभरिकैअँतवाउमहेहैं ॥ ई छनछो
 रनतेनगिरैमनो तीछनकोरनिछेदिरहेहैं ॥ २ ॥

अथप्रौढाविप्रलब्धा यथा ॥

गुंभिफूलनकेगहने पहिनेगहिरैरँगबीरदुकूलनदै ॥ कविबेनी
 सिंगाररचेसबदेह खनेहसखीअनुकूलनदै ॥ चितयेनउतैवज
 चंदजूबै तनतोरिगरेभुजमूलनदै ॥ अलिसूलनदैसरमैनके
 डोले हहाअबमोकरफूलनदै ॥ १ ॥ उठिआइ हैटेखनकोंपिय
 पास बनावबन्योसुनिकैधरको ॥ कहिसुन्दरभीतरजायजेदे
 खांती खाजनहींरहूँकाधरको ॥ यहिँबीचहीबानकबानगहे
 करतानउठोअरिसंबरको ॥ जबजान्बोवचावनकेहूसखी त
 वध्यानधरगोहियमैहरको ॥ २ ॥ कातिकीपून्योकेचंटकीचाँ
 दनी पूरनछोरधिकीछविछीनी ॥ सूनाविलीकिविहारकोमं
 दिर कैप्रौकरजीवैगीप्रेमप्रवीनी ॥ बाहिबुलायहोँऔरपैजात
 सु कैसेवनैयहवातनवीनी ॥ वंचनमेरोकियोसजनीयह रंचन
 प्यारैदयामनकीनी ॥ ३ ॥

अथ परिकीयाविप्रलब्धा यथा ॥

अवक्रों करिकै धरजै यत है अरु काहिसुनै यत वीती दइ ॥
 कवि संडन मोहन ठी कठगी विधियों हीं लिलाटलिखी सुभई ॥
 सुखि और भई सो भले हीं भई पर एक ही वात वीती ती नई ॥ र
 ति हते गई मति हते गई पति हते गई पति हते गई ॥ १ ॥ आई है
 लोग नखाय सबै घर के सुसुखी अति ही अनुरागै ॥ सूने सो ह्वै ग
 योगात सबै वह सूने सँकेत लख्यौ जव चागै ॥ दूती सो वादति वा
 र होवार सिंगार अंगार ह्वै देह सो दागै ॥ जो जल गै अवपाव कपुं
 ज औ कुंज के फूल फुलिंग उथौ लागै ॥ २ ॥ कुंज सहित न भेंट भई
 अंग अंग अनंग के पुंज सतावहिं ॥ आलस आली सो आपनी वात
 कहै न कछू अखियां भरि आवहिं ॥ कालिमा कज्जल की कृवि जुं द
 परै अधरा परयो दुति पावहिं ॥ मानहुं मत्त मधूपन के सुत कंज
 कों को डि वधू क कों धावहिं ॥ ३ ॥ बनिका लिदीं कूल करारै कि
 खाहिं लता मिलि सो है तमाल न सो ॥ कवि ने नीहिले रै त्यौ पौन
 भकोरै अली कुल भौरै रसाल न सो ॥ तहँ प्यारी गई प्रिय भेंटि
 वे कों करिके छल न्यारी ह्वै वाल न सो ॥ जव लाल न सो न मिली ल
 लना लटिलो टै भरी उर साल न सो ॥ ४ ॥

अथ सामान्याविप्रलब्धा यथा ॥

साँभही मोहि बुलाई पठाय सुखी जती जौ नमिलि पाकी मे
 रो ॥ मै हूँ सिंगार सवारि सबै इत आय करी परती ति घनेरी ॥
 गोकुल नाथ ग एक हूँ अंत ही कौन के कंत एहात है एरी ॥ माती
 किमाल दुसाल गई हिय साल भई यह रैन उजेरी ॥ १ ॥ नेह कै
 मोहि बुलायो इत अववोरत मेह महीत लको है ॥ आई मभार

महावनमै तनमैअमसीकरकोभलकोहै ॥ नमिलेअवनौलकि
 सारप्रिया हियोबेनीप्रवीनकहैकलकोहै ॥ सोचनहींधनपावन
 को सखिसोचयहैउनकेछलकोहै ॥ २ ॥ बारविलासिनिकोटि
 जलास बढ़ायकैअंगसिंगारबनायो ॥ पीतमगेहगईचलिकै
 मतिरामतहानमिल्योमनभायो ॥ संगसहेलीसीरोसकियोन
 हिंआपनकोयहदेसलगायो ॥ हावमैकीज्जोअतीयहकौन
 जोआपनेभौननबालिपठायो ॥ ३ ॥

अथ उल्काको लक्षण ॥

दोहा ॥ कौनहेतसंकेतपिय अजजुनआयोआज ॥

योसाचैउल्काबिदुता ताहिकहतकविराज ॥

सुग्धाउल्का यथा ॥

साचैअमागसकारनकंतको साचैउसासनआसुहमेचै ॥
 साचैनहेरिहराहियको पदमाकरसाचिसकैनसकोचै ॥ को
 चैतकीयहचांदनीतें अलियाहिनिवाहिव्यथाअबलाचै ॥ लो
 चैपरीसीपरीपरजंकपें बीतीधरीनधरीधरीसाचै ॥ १ ॥ लाजतें
 बूझिसखीहूसकैन बिचारतिसीकछूएईबिचारहै ॥ कौतौरिभा
 इलियोकहूंकाल खिभायोकितीअतिहीसुकुमारहै ॥ रसनत
 जौरहैपियपास कहैकिनकाहेतेंकीज्जोअवारहै ॥ प्यारीहैपी
 रीगईइहिंसाच मनोपतभारलवंगकीडारहै ॥ २ ॥ लखि
 मोहनकोमगअलसकै सखिपैअरुहैअगिरायरहै ॥ कविवेनी
 कछनकहैमुखसों दुखछोहविछोहकेछायरहै ॥ उसहैपरजंक
 तेंअननभूमिलीं धूमिगिरैनवचायरहै ॥ चकिचायरहैउचकै
 लघकैचहुंओरचितैसुरभायरहै ॥ ३ ॥ प्यारीहमारोनआ

योअजौ कहूंन्यारोहूँ औरहीभीनभुलानो ॥ ऐसेविचारवि
 चारनलागीसु चारकथाकोउचारहिरानो ॥ संगसहेलिनसों
 उभकीन उसासलयानगरीगहरानो ॥ हूँगयोप्यारीकीकेस
 ररंगतें आननकेतकीरंगकीवानो ॥ ४ ॥ बीतिगईजुगजाअनि
 सा मतिराममिटोतमकीसरसाई ॥ जानतिहोंकहूंऔरति
 यासों रह्योरसमैरमिकैरसिकाई ॥ सोचतिसेजपरीथोंनवे
 ली सहेलीसोंजातिनवातसुनाई ॥ चंदचदोउदयाचलमै सु
 खचंदपैआनिचढीपियराई ॥ ५ ॥

मध्याउत्का यथा ॥

आएनकंतकहाँधोरहे भयोभोरचहैनिसिजातिसिरानी ॥
 योपदमाकरबूझोचहै परबूझिसकैनसकोचकीसानी ॥ धारि
 सकैनउतारिसकैसु निहारिसिंगारहियेहहरानी ॥ सूलसे
 फूलनकेफरपै तियफूलछरीसीपरीमुरझानी ॥ १ ॥ छपाक
 रजोतिसलीनसहा दुतिछीनथौं तारनकीदरसात ॥ नआए
 गोपालकहाँधोरहे यहकासोंरुहोंहियराहहरात ॥ कहैल
 लितेदूमिलाजऔकाम परीदुवोंबोचवनैनवतात ॥ कछूतिय
 वैनजुवानपैआथ अलेंनटकैसेनटाफिरिजात ॥ २ ॥ उभकैभु
 किभूमिभरोखनकाकि अँकैगुल्लोगनिपैठतिभौनै ॥ कविवे
 नीउठैछिबुअँठिभुजा छिबुअँठतिमोहनकेभ्रमपौनै ॥ अति
 व्याकुलमैनभईतनमै दुखबूझेसखीनकेहूँ रहैमौनै ॥ अलिहा
 यरह्योधौंलाभायकहूं चितसोचतिलाललटूकरोकोनै ॥ ३ ॥
 बातनलीतनसोंअटक्योकी मिलीतियकोऊरहैरंगताही ॥ औ
 रतोचूकनसुन्दरवादिन मैकह्योअँठनिलागीहैस्याही ॥ आ

एनहीं सखिवृत्तियै कैसी कहामनदेत है तेरोगवाही ॥ चोपघ
 टीकीमिटगोचितचाव कीआलसनीदकीबेपरवाही ॥ ४ ॥ वी
 नमैकोऊप्रवीनमिलीतिय कैतौमिल्योकविराजसमाजहै ॥
 काहूकीचातुरीमैचितलाग्यो किधोंउरभोकहूँकाहूँकेकाज
 है ॥ जेनकहैंतौरह्यौनपरै जुकहैंतौकहैपरआवतिलाज
 है ॥ आइवेकोंइहिँओरधोंकाहैते आजुअवारकरीटजरज
 है ॥ ५ ॥ बारहीबारविलोकतिद्वारही चाँकपरैतनकेखर
 केहूँ ॥ सेजपरीमतिरामबिसूरति आईअहीअबहींलखिमै
 हूँ ॥ संगसखानकेखेलतहौ अजहूरजनीपतिकेअथयेहूँ ॥ ला
 लनबेगिनजाह्वरे फ़िरिवालनमानिहैपाँइपरैहूँ ॥ ६ ॥

अथ प्रौढाउत्का यथा ॥

लखुचाँदनीचारुमलीनभई गनतारनकेपियरानलगे ॥
 चिरियाँचङ्गँओरकरैचरचा चकईचक्रवानियरानलगे ॥ सि
 गरीनिसिमैनमरीरनिमै येसिंगारकछूजियरानलगे ॥ मन
 मोहनताहियरानलगे नथकेसुकतासियरानलगे ॥ १ ॥ आ
 जुविलंबभईकछुकाजमै औरैपैयारेकीचिन्तनजैहै ॥ कोकपटी
 वज्जजातबडीहैतु पीवतिहारीप्रभातमैऐहै ॥ आनदहूँहैरीकी
 कउरोजन नैनसरोजनसोंसुखपैहै ॥ तेरोकह्योसबहूँहैसखी
 यहपूरनचंदकोजीवनदैहै ॥ २ ॥ ख्यालनमैनकह्योकवहूँकछ
 भेरेहूँभूलिनभौहँचढाई ॥ देख्योविचारि विचारिमैआपनी चू
 कनकौनीकहूँमनआई ॥ गाढीगहीअंगियातवनेसुक हाथनि
 रोकिभईरिसहाई ॥ याहीतेँआजुधोंआइवेकोंकहूँ नंदकुमा
 रअवारलगआई ॥ ३ ॥ जोकहूँकाहूँकेरूपसेरीभेती औरके

रूपरिभावनवारी ॥ जीकहं काहकेप्रेमपगेहैंतौ औरकेप्रेम
प्रगावनवारी ॥ दासजूटसरीवातनऔर इतीवडिबेरविताव
नवारी ॥ जानतिहैंगईभूलिगोपालै गलीइहैं औरकीआव
नवारी ॥ ४ ॥

परिकीयाउत्का यथा ॥

विनसाकरमारिकिवारलये वहरादयेछेरिगिरैयनतें ॥
बलिन्यारीतिवारेमेडारिकैसेज सवारतेंपौटीलागैयनतें ॥ ध
मकैरुछुयोभ्रमकैउठिआवै छपावतिछाहसोवैयनतें ॥ चित
हीचितसोचैकिशोरकीराह कराहतिभोरचवैयनतें ॥ १ ॥
ठानेअठानजेठानिनहं सबलीगनहं अकलंकलगाए ॥ सासु
लरीगहिगांसखरी ननदीनकेवालनजातगनाए ॥ एतीसही
जिनकेलियेमे सखितैकहिकौनेकहँविलमाए ॥ आएगरैल
गिप्रानपैकैसेहं काहरअजअजोनाहँआए ॥ २ ॥ सकुची
नसखीनसोसौतिनसो सपनेहं नसासुकीकानकहं ॥ कुनवा
नकीतीयनसोकैहँभाति डराएतैहैंनडरीकवहं ॥ कहिसु
न्दरनन्दकुमारकिवे तनकोतनकोनहिचैनकहं ॥ हरिके
हितमैतीकरीइतनी हरिकीह्रीजुआएनहींअजहं ॥ ३ ॥

गनिकाउत्का यथा ॥

रैनिरहीअतिथोरीकहं भटकवनवालनचाहतकागहैं ॥
आएनवेनीप्रवीनववाकिसों नौलकिसोरभरैअनुरागहैं ॥ का
लिगएकहिदेनगढाय वढायसनेहसमूहसोहागहैं ॥ भूपनभू
रिजरायकेदेते बदेसजनीकोजऔरकेभागहैं ॥ १ ॥ काहकि
योधोकहं वसभावता काहकहं धोकछूछलछाया ॥ त्योंपद

साकरतानतरंगनि काहूँकिधोरचिरंगरिभायी ॥ जानीप
 रैनकछूगतिआजकी जाहीतेएताविलंबलगायी ॥ मोहनमोम
 नमोहिवेकोकिधों मोमनकोमनिहारनपायी ॥ २ ॥ प्रीतम
 कोधरैध्यानषरीकु करैमनहींमनकामकलालै ॥ पातज्जकेख
 रकेमतिराम अचानकहीअँखियाँपुनिखालै ॥ प्रीतमएहैंअ
 जौंसजनी अँगिरादजम्हाइषरीकुर्योबालै ॥ गावैषरीकुगरेही
 गरीपुनि गेहकेबागहरेहरेडोलै ॥ ३ ॥

अथ वासकसज्जातक्षण ॥

दाहा ॥ मेरेहीगृहआजपिय ऐहैंहियहितमानि ॥
 साजैसेजसिंगरतिहिँ वासकसज्जाजानि ॥
 सुरधावासकसज्जा यथा ॥

सुसक्यातिखरीखुंभियाअभिरि विरीखातिलजातिमहा
 मनमै ॥ कविवेनीभरीउषरीछुबिसों निखरीदरीजातिहैलौ
 गनमै ॥ बलिजेठिनकीरचिसेजसोवाय रहैछुकिप्रेसमईमन
 मै ॥ अलिज्यौं ज्यौं सँवारतिफूलनसेज त्यौं त्यौं तियफूलति
 फूलनमै ॥ १ ॥ फूलसीआपुहीआपनेहाथन फूलकेगुंथतिहा
 रनवीने ॥ आपुहीआपनेहाथदुकूल कियोचहैकेसरिकेरँग
 भोने ॥ भेदकहैनसखीनहूसों हरखैहियमैपियआयवोकी
 ने ॥ प्यारीकछूमिसिकैमगदेखति द्वारकीदेहरीमैदृगदीने ॥
 २ ॥ गुँदिकैफूलहरापहिरे गहिरेकसेकेसनिज्योँचितचाही ॥
 मोतिनसागभरीसुधरीलसै कंठसिरीगरसीअवगाही ॥ नूपु
 रघूँघुहूपाइलकी धुनिकिंकिनीकीभनकारभुलाही ॥ जोर
 तहारकीओरदृगैधरि थोरिसनेहप्रदीपकेसाही ॥ ३ ॥

अथ मध्यावासकसज्जा यथा ॥

द्वारईदेखतिद्यौसहीतें हियमैकरितालनकोललचाति
 है ॥ मारिकैमारसुमारकरौ अवलोंअवतायहआवतिराति
 है ॥ फूलनसाजतिसेजसोहागिनि भाँयतीहौसाह्येसरसा
 तिहै ॥ वैठीसिंगारसिंगारतिपै लखिलोगनलाजनहींगड़ीजा
 तिहै ॥ १ ॥ कैसेहैगूंदतिहारअली सुनिऐसेविहारविचार
 सँभारे ॥ कैसेसिंगारसिंगारतियासिस औरजकोजसिंगार
 सिंगारे ॥ भुखनभूषितअंगनिज्योतुही त्यौंहींअभूषनकोअ
 वधारे ॥ द्वारकिंवारसुधारनकेमिस प्रीतममारगनारिनिहा
 रे ॥ २ ॥ करपूरकीदीपसिखासोदिपै छिपीचाँदनीचन्द्रहै
 नितसंकमै ॥ अलवेलेउरोजलसँउरपै धसँप्रानमैजापैलगैक
 हँअंकमै ॥ मारकंडेसुहागभरीपियके धनुमैनलजैजिहँके
 भुअंकमै ॥ हरवारहीवारविलाकतिद्वार लजातसीवैठीप्रि
 यापरजंकमै ॥ ३ ॥

प्रौढावासकसज्जा यथा ॥

सुखसेजहीसाजिसिंगारसजे गुहिवारसुगंधसवैवसिकै ॥
 चुनिचूनरीचारुखरीपहिरी कहिदेवसुवेसुरह्यौलसिकै ॥
 पियभेंटिवेकोउमगीछतियाँ सुछिपावतिहेरिहियोहँसिकै ॥
 अगियाकीतनीखुलिजातिधनी सुवनीफिरिबाँधतिहैकसिकै
 ॥ १ ॥ द्यौसहीमैकलकेलिनिकुंज कियोमणिमंडितसोमन
 भावै ॥ सेखरसींचिसुगंधनसों सुकतानकेबंदनवारबँधावै ॥
 सेजविछायकैवैठिरही सबअंगअनंगनकीछविछायै ॥ आवत
 हीरजनीसजनीन लगीपतिप्रीतिकीरीतिसिखावै ॥ २ ॥

वारनिधूपिअगारनिधूपिके धूमअंधारीपसारीमहाहै ॥ आ
 ननचंदसमानचुयो मृदुमंदहसीजतुजाङ्गछटाहै ॥ फ़ैलिरहीम
 तिरामजहाँतहाँ दीपतिदीपनकीपरभाहै ॥ लालतिहारेमि
 ल्हापकोंवाल सुआजुकरीदिनहींमैनिसाहै ॥ ३ ॥ सेजसजी
 श्रीसिंगारसजे रचिकैरतिकेलिकोसंदिहनीको ॥ आयोहिये
 बढिचौगुनाचाबत्थी भावभयोसवजाहिरजीको ॥ आननआ
 निधरगोकरऊपर कौलमैमंडलमानोससीको ॥ द्वारकीओ
 रदियेदृगदेऊ निहारतिप्यारीप्रियाभगपीको ॥ ४ ॥

अथ परिकीयावासकसज्जा यथा ॥

साभहीतेकरिराखेसवै करिवेकेजुकाजहुतेरजनीके ॥ पौ
 ढिरहीउमगेअतिही मतिरामअनंदसमातनहीके ॥ सोवत
 जानिकेलोगसवै अधिकानेमिल्लापमनोरथपीके ॥ सेजतेनारि
 उठीहरअंहरअंपटखालिदियेखिरकीके ॥ १ ॥ आसुनिपीकोल
 खेमगएसी लरींकतवासोभरीरिसरेजहै ॥ एनंदसासुजिठानी
 सवै तुम्है आईनजानीकहाँकीमजेजहै ॥ वाकेलखेअंसुवामंड
 री अरीसेवकरावरोकौनकरेजहै ॥ कसिकैरोखसनीसजनी
 घरसूनमैजाइविछावतिसेजहै ॥ २ ॥

अथ सामान्यावासकसज्जा यथा ॥

साजिसिंगारसखीसोंकहैकि हीदेखतलालकोंज्योललच
 हैं ॥ सेजमैजौकरिपायहैंनेकु तहाँपुनिभांतिअनेकरिभौ
 हैं ॥ आपनेप्रानपियारेकोंआजुहैं ॥ कैसेहंजोइहिँठौरकैपे
 हैं ॥ डारिभुजानकीमालगरें सुकतानकीमालउतारिहोंलै
 हैं ॥ १ ॥ लैहैंतिरीछीचितौनिचितैकर चंपकलीभलीमा

तिनमात्ता ॥ हाथगहेगहिहैहठसाथ जरायकीबंदिघावेसदु
 सात्ता ॥ फूँदकेछेरिनमदह्वैलैहै जवाहिरभीपङ्गचीगुनआ
 ता ॥ सागतअंगसिंगारनएसे मनोरथसाजहियेपरवात्ता ॥
 २ ॥ संजुचमेलिनवेलिनके गजरानसोंसेजसजीसुखदाई ॥ अं
 गविभूपनभूपतकौ रतिरंगउसंगनसंगसुहाई ॥ सेखरवारसँ
 वारवहै विनसोतिनलागभरीमनभाई ॥ भानुगयोअसताचल
 कों सितिभानुकीआननमैकृविक्राई ॥ ३ ॥

अथ स्वाधीनपतिका लक्षण ॥

दोहा ॥ जातियक्षोगुणरूपलखि रहैलालाअधीन ॥

स्वाधिनपतिकाकहतहैं ताकहँपरमप्रवीन ॥

सुग्धास्वाधीनपतिका यथा ॥

सोवतलेतिकरोटनवाढकी नीचेलटैपलिकातेंपरीहै ॥ दे
 खितहँहरिसुन्दरदौरिकौ जाइकौनागिनसीपकरीहै ॥ लैदु
 पटाअपनोअपनेकर पोंछिकैसेजहिमाभधरीहै ॥ प्यारिको
 प्यारनिहारियोंरीक्षि भईचकचूरसखीसिरीहै ॥ १ ॥ ना
 कटिछीनप्रवीननावातन पीनकठोरनहींकुचमेरे ॥ वांकीबडा
 ईवडीअखियाँन धनीवननीकरनीतिनिवेरे ॥ नागनकीगतिरु
 पकीसंपति राजैनहींरतिकोरतिनेरे ॥ जानोनहींसखिकार
 नएरी पैकाहितेपीतमह्वैरहेचेरे ॥ २ ॥ आपनेहाथसोंदेतम
 हावर आपुहीवारसिंगारतनीके ॥ आपुनहींपहिरावतआ
 निके हारसँवारिकेमौलसिरीके ॥ हँसखीलजनिजातिग
 डी मतिरामसुभाइकहाकहँपीके ॥ लागमिलेधरघैरकरैअ
 वहीं तेएचेरेभएदुलहीके ॥ ३ ॥

अथ मध्यास्वाधीनपतिका यथा ॥

सुसक्यानभरेअखरानमैवेनी याडागीठगोरीहैमोहनसै ॥
 छिनकीबिछुरैनछमैछकिछैल छपायरह्योछविछोहनसै ॥ प्रि
 यप्यारेकेष्यारकोचैचँदवीं सकुचीसुनिसुन्दरिगोहनसै ॥ सु
 खमोरिअलीपैनईसरमाय गईअठिलायसीमोहनसै ॥ १ ॥
 तेरियैकीरतिकानसुनै अरुतेरोईरूपसदाँदृगदेखै ॥ तेरियै
 वातकहैरसनाकरि धूलिहं औरकीओरनापेखै ॥ तूजियसै
 द्विधसैपियके पियताविनजातघरीजुगलेखै ॥ जानिदिनेसकि
 येवसतै कीभएररिआपुहीहायकीरेखै ॥ २ ॥ ताछिनतेरहे
 औरनिभूलि सुभूलीकदंबनकीपरछाँही ॥ त्यौपदमाकरसं
 गसखानकोभूलसुल्लायकलाअवगाही ॥ जाछिनतेतबसीकर
 संवसी मेलीसुखानकेकाननसाहीं ॥ दैगलबाँहीजुनाहीकरी
 बहनाहीगोपालकोभूलतिनाहीं ॥ ३ ॥ सीधीविलोकनिसी
 धियैचाल कछालखिलालभयोवसलीना ॥ लागकहैयहआए
 अपूरव पूरवकोपदिआगसकोना ॥ काहेलजातनहींतुसता
 माहिलायैरहौहियसूसजरोसेना ॥ हैपियलाजनिजातिग
 ढी सिगरेब्रजमेहिलगावतटानो ॥ ४ ॥

अथ प्रौढास्वाधीनपतिका यथा ॥

चोवाभिलैअगमेदवसै वनसारतीकेसरगारतडोलै ॥ दे
 वजुफूलफुलेलनकी घरबाहिरवासलगावतडोलै ॥ सूपनअष
 बनायनए पहिरायपुरानेडतारतडोलै ॥ राधेकेअंगनहींसि
 गरोदिन संगहीसंगसिंगारतडोलै ॥ १ ॥ सीसुधारिधरै
 सिरफूल सुतीसरसरविकीछविजीतै ॥ आपुहीदेतमहावर

पाँयन लाजतेहीतकछूनासभीते ॥ देख्योतवैठिंगवैठोमहै स
 पनेहूनअरतियाचितचीते ॥ प्यारेकोंप्यारीतियाकेसिंगार
 सिंगारतहीसिगरोदिनवीते ॥ २ ॥ सोईतियाअरसायकैसेज
 मै सोछविजालविचारतहीरहे ॥ पोंछिरुमासनसोंसमसीकर
 भौरकीभीरनिवारतहीरहे ॥ त्योंसुखइन्दुविलोकिवेकों अलकै
 हरिचन्दजूटारतहीरहे ॥ द्वैकषरीलोंजकेसेरहे वृषभानकुमा
 रनिहारतहीरहे ॥ ३ ॥ वारिद्वारसहीरघुनाथ कहैजिनचा
 रुकियेदृगमोरहैं ॥ ईछनकंजसहीसुधरे जिनलोचनभौरकिये
 वरजोरहैं ॥ वोलनिजे।सोसहीसुकतां जिनआंखिनकोंकिसेहं
 सकिसोरहैं ॥ प्यारीकोआननइन्दुसही जेहिंकीङ्गेगीविन्दके
 नैनचकोरहैं ॥ ४ ॥ लालनभैरतिनायकते सुभरन्दरतांरुचि
 पुंजनिपेखी ॥ बालमैत्योभतिरामकहै रतितेंअतिरूपकलाअव
 रेखी ॥ सामुहेंवैठलखेंएकसेजमै बोलीअलीसुखप्रीतिविशेखी ॥
 भालमैतेरेलिखीविधिसो यहलालकीभूरतिलालमैदेखी ॥ ५ ॥
 हैंदुलहीसबदुलहपैभदं यादुलहीयेईदुलहनेखे ॥ वेनीछिनौ
 नकहंसंगछाँड़त आएअटाधरैध्यानभरोखे ॥ वांसरमैमिलि
 जातलजातम जातकैगेहकेमांलुखओखे ॥ चंदमुखीतनसोनो
 सोसौपि करेभनसोहनसेवकचोखे ॥ ६ ॥ पाँवभाँवावतिहीन
 दनंदपै अँठतिओठनरीकभरीसी ॥ चारुमहाकविकीकविता
 सी लसैदुलहीरसमैउलहीसी ॥ सीवीकरैतरवानकेभाँवत
 देहदिपैभरीनेहज्योंसीसी ॥ दंतनकीदुतिवांहिरहूँकर जाहि
 रहातिजवांहिरकीसी ॥ ७ ॥

अथ परिकीयांखाधीनपतिका यथा ॥

मोलियेमोहनजेठकीधूपमै आएउवानेपरपेगछाले ॥ बे
 नौखरेमगद्वारखिलोकत बैठेनसोएचलेजनहाले ॥ कीजैकहा
 हरिहांथवलायल्यो जागिवेजोगहमारैईताले ॥ देखतहौघर
 कौनबचे घरकोनगएघरहाई निवाले ॥ १ ॥ पियष्यारेतिहारि
 येसोहकियेकहौ नैननरावरीहौसरहै ॥ संगछाहज्योसासु
 फिरअनखानी जिठानीदुकादुकीसौसरहै ॥ कविनाथजुजान
 तिहोहियमै वयवीतगएकहामोसहै ॥ परकीजैकहाईहंगा
 वकोलोग गुहैचरचानकोचौसरहै ॥ २ ॥ सिवठौरकुठौरकछू
 नगने जितहीनितहीहंसिबालतहौ ॥ हमघातपरेमिलिजै
 बोकहं यहप्रेमदुरोक्तखालतहौ ॥ चरचोईकरैचहंओगनेते
 नचवाइमकेचिततीलतहौ ॥ हरिनाहीभलीयहवातकरो पर
 छाहोभएसंगडोलतहौ ॥ ३ ॥ ताकिनिप्रारतमोमनकीं नव
 नेहपयोनिधिह्वैलसिबेहै ॥ चाहभरेचखचंचलये इनकीनित
 दीनटसानसिबेहै ॥ सेखरलोगचवैयनकी चरचाचितदैनकहं
 फांसिबेहै ॥ मीतनजाहिरप्रीतकरो ब्रजगांवगवारनमैबसिबेहै
 ॥ ४ ॥ आयअगीतपछीतह्वै जो नितटेरतमोहिसनेहकीकूक
 न ॥ जानतहैकीनजानतकोज जरैनरनारिसरोसभभूकन ॥
 ठाकुरकौबिनतीइतनी अरीतकहियोयहवातअचूकन ॥ देखि
 उरुनदिखातकछू ब्रजपूरिरह्योचहुँओरचह्वकन ॥ ५ ॥ कैसे
 सुचित्तभएसेतको देहंसौविलसौसबसोंगलवाहीं ॥ वेकल
 छिद्रसकैकलता कलताकतीहैसबकीपरछाहीं ॥ ठाकुरसौभि
 लिएकभई रचिहैपरपंचकछूवृजमाहीं ॥ हालचवाइनकोटह

चालसे लालतुम्है है दिखातकीनाहीं ॥ ६ ॥ होंहूं समै लखि
 कैउत आय कह्यो करिहैं सवरावरेजीको ॥ वारहीवारनऐये
 इतै यहमेरोकछुहैपरोसननीकी ॥ चाहभरेषंसिचंदनलाव
 त हारवनावतमौलसिगीको ॥ कोऊकहूं यहजानिजौजाय
 तौहीयललामाहि लीलकोटीको ॥ १ ॥ चौचढ़हैंलगीचहूं
 और लख्योकरै नैननिओरतुम्हारे ॥ ऐसेसुभायनसो निरखाकि
 उल्लू लगेरुखेहमैरसवारे ॥ कीजियैकैसीदईनिदई नदईहैदई
 करमौतहमारे ॥ देखेविनाहं रह्योनहींजात कह्योनहींजात
 नआइयेप्यारे ॥ ८ ॥ मेजुगनैनचकारनकों यहरावरोरूपसु
 धाहीकोनैवो ॥ कीजैकहाकुलकानितेआनि पर्योअवआपनो
 प्रेमछिपैवो ॥ कुंजनमैमतिरामकहूं निसिद्यौसहूंघातपरेमि
 लिजैवो ॥ लालसयानीअलीनकेबीच निवारियेह्याकीगलीन
 काऐवो ॥ ९ ॥

अथ सामान्यास्वाधीनपतिका यथा ॥

मंदिरमंदिरचेजनवारी सरोजमुखीलसैरूपनवीना ॥ गा
 वतीताननिकामविधाननि पाननदैरिभवैपरवीना ॥ हासवि
 लासज्जलासहरै चितवासनिवाससुगंधनवीना ॥ जानानप्रीत
 मप्यारेनेकाहेते आपनोहीरारीमोकरदीना ॥ १ ॥ आपुहीपा
 नखवावतिआय सहेलीनआवनपावतिनेरे ॥ भूपनअंवरल्याव
 तआप रहैंपहिरावनकोंसुखहेरे ॥ तापियसौरिसकैसेकहूं म
 तिरामकहैसिखएसखितेरे ॥ पूरिरहेमनभावनकेगुन मानकों
 ठौरनहीमनमेरे ॥ २ ॥ दुनिचीरसुगंधितकैकौनये अपनेकर
 तेपहिरावतुहैं ॥ नितमेरेलियेपियसोननके गहनेहूंनवीनगटा

वतुहैं ॥ पिककेकीनकीकिलवैनदिवाकर नेकूनहींजियल्यावतु
हैं ॥ जिनकेचखचारचकीरसखी मुखमेरोमयंकहिभावतुहैं ॥

अथ अभिसारिकालक्षण ॥

देहा ॥ आपुजायपियपैकितौ पठवैपियहिबुलाय ॥

ताहिकहतअभिसारिका सुकविनकेसमुदाय ॥

अथ मुरधाभिसारिका यथा ॥

किंकिनीछोरिछपायकहूं कहूंबाजनीपायलपायतेनाई ॥
त्यौं पदमाकरपातहूंके खरकेकहूंकापिउठैछविछाई ॥ लाज
हीतेंगडिजातकहूं अडिजातिकहूं गजकीगतिभाई ॥ वैसकी
घारोकिसोरीहरेहरे याविधिनंदकिसोरपैआई ॥ १ ॥ वातन
जायलगायलई रसहोरसमैमनुहायमैलीना ॥ लालतिहारेबु
लावनकों मतिराममैबोलुकह्योपरवीना ॥ बेगिचलौनविलांब
करौ लखीवालनबेलीकोनेहनवीना ॥ लाजभरीअखियाँविह
सी बलिबालुकह्योविनऊतरुदीना ॥ २ ॥

अथ मध्याभिसारिका यथा ॥

वैठिरहेमतिरामलला घरभीतरसांभहीतेअनुरागी ॥ वा
निकसोंवमिचारुसिंगारनि आईसोहागिनिप्रेमसोंपागी ॥ ध्या
रेकह्योहंसिआइयेसेजहिं धारीकीजोतिविलासनिजागी ॥
नैननवाइरहीमुसुकायकै हारहियेकोसंवारनलागी ॥ १ ॥
ज्यौं ज्यौं वितैइतजामिनीकामिनी भौनतेआंगनमाहिकदी
सी ॥ नौलकिसोरललामनमोहन त्यौं विप्ररोतकीरीतपदी
सी ॥ सोसुनिबेनीप्रवीनभनै मनमाहमनोजकोफौजचदीसी ॥
ठाढीगईह्वैतहाकरठेढीदै पोढीगईपरिलाजगदीसी ॥ २ ॥

पौढे ऊतेपलिंगपरथ्यौ सुखजपरत्रोटदियेदुपटाकी ॥ लाई
 लिवायअलीनवलाकहँ वातेवनायअनेकछटाकी ॥ जेहरिकी
 खटकोजवहीभयो सुन्दरदेहरीआनिअटाकी ॥ अंगअनंगतरं
 गउठी वनमीरकोंडयोनुनिघोरघटाकी ॥ ३ ॥ हलैइतेपरमैनम
 हाउत लाजकेआँदूपरेजऊपाइन ॥ त्योंपदमाकरकौनकहँ
 गतिमातेमतंगनकीदुखदाइन ॥ अंगअनंगकीरिसनीमैसुभ
 सोसनीचीरचुभ्योचितचाइन ॥ जातिचलीवृजठाकुरपैठमका
 ठमकीठुमकीठकुराइन ॥ ४ ॥

अथ प्रौढाभिसारिका यथा ॥

देखियेदेखियारूपकीरासि सवासतेंखासकहीरंगराती ॥
 भूषनभारनतेलचकीपरै चालगयन्दनकीसरमाती ॥ कानलौ
 भौहैंकमाननतानि कटाच्छुकीवानद्विजेवरसाती कीगलीन
 नयेद्वैजुभारन जंगकोंजातिअनंगकीमाती ॥
 कितजातिचली वलिवीतीनिसाअधरातिप्रमाने नीना ॥ गा
 रभावतीहैं निजभावतेपैअवहीमाहिजाने ॥ त हासवि
 लीडरैकिन क्यौडरैमेरीसहायकेलाने ॥ हैस गानेनप्रीत
 सोभट कानलौवानसरासनताने ॥ २ ॥ अ आपुहीपा
 सीधसीजातिहियेमैप्रभालहरावति ॥ आपने वरल्याव
 तिहँपुरकीउपमाभहरावति ॥ मोहनसोमिलि कहँ म
 रकंडेसवैजगकोंहरावति ॥ कुंजमैकामिनीदा निकर
 जातिअनंगछटाछहरावति ॥ ३ ॥ उभरेकुचकंनानकों
 छिपैलौनीछटाजगफाँदनीसी ॥ गतिपैगजहकील निकर
 प्रवीनभईयोअमादिनीसी ॥ मारकंडेमयंकमुखीपियदा

बेकोंचलीकविछाँदनीसी ॥ गजचारिलौचौधिसिजाकीप्रभा
मगमैभईजातिहैचाँदनीसी ॥ ४ ॥

अथ परकीयाभिसारिका यथा ॥

पीपैचलोबिछियानकेकाँकर काढेनचौधकेभूषनछोरे ॥
कोसिखदेइजोकाहसोंपूछों सखीतिमिलीजिनकेमनभोरे ॥ जा
तिकहंहीलगाएकहंसाधि योंजवपूछिहैनैनमरोरे ॥ सुन्दरि
येईपरोसिनिसों कहिदेइ गेदौरिसुगंधकेडोरे ॥ १ ॥ स्याम
कोल्यार्इसँदेसोसखी सुनिकैतनसुन्दरिकरसवाढे ॥ चौधकेभू
षनखालिधरे बिछियानकोबेधिकैकाँकरकाढे ॥ घषरीकीधरि
छोरीकसी अँगियाहुकेबंदकसेगहिगाढे ॥ जायरहीस्तहँव
हप्यारी जहँहरिहरतइमगठाढे ॥ २ ॥ नाइकेतेनपरोसिनि
इकेहैधनअरिननेरे ॥ व्यौतबन्योसवयोलखिकैते
लावनकोसाखीजतीनेरे ॥ दूरिकैधूंधुहअबिछियाखिरकी
करौलखीवाहिनहफेरे ॥ दूतीलियेपियपासपठैगई प्यारीप
सी बलिबालुकरे ॥ ३ ॥

अथ गणिकाभिसारिका यथा ॥

वैठिरहेमत्तिकैसुखऊपर लूटीसीलंकनितंबहैपीने ॥ चंद
निकसोंबमिचाराचुकी अंजननैनअंजायनवीने ॥ ओढनीसूही
रेकह्योहंसिअपायलकीधुनिमैरसभीने ॥ जातिविहारकोवा
नैननबाइरहीसैहारमनोरथकीने ॥ १ ॥ केसररंगरंगीसिर
ज्यौज्यौबित्तैकीङ्गेगुलावकलीहौ ॥ भालगुलालधरप्रोपद
सी ॥ नौलभूषितभातिभलीहौ ॥ औरनकोछलतीछिनमै
सी ॥ सोसुअरनसीजुछलीहौ ॥ फागमैमोहनकोमनलैफगु
ठाढीगईअवलैनचलीहौ ॥ २ ॥

अथ लक्ष्णाभिसारिका यथा ॥

नीलेनिचोत्तरचेतनस्य कचमेलिफुलेलरचीकवरीहै ॥ कं
चुकीचोवाकेसैंधेसोंनोरिकै रयामसुगंधनदेहभरीहै ॥ कैंकै
सिंगारचलीहरिपैं हरअंहरअंतकिकुंजधरीहै ॥ भूपनलूटिग
एतसपुंजसै भावतीजातिनजानिपरीहै ॥ १ ॥ सांभरीसारीस
खीसंगसांभरी सांभरेधारिविभूपनध्वैकै ॥ त्यों पदसाकरसांभ
रेई अंगरागनिआंगीरचीकुचद्वैकै ॥ सांभरीरैनिसेसांवरियै
वहरैधनघोरघटाछितिच्छुवैकै ॥ सांभरीपासरीकीदेखुही वलि
सांभरेपैचलीसांभरीद्वैकै ॥ २ ॥ छायरह्योतसकारीघटानयें
आपनाहाथपसारिलखैको ॥ अंगरचेसुगकेसदसों कनिभक
तभूपनसाजिअकैको ॥ नीलेनिचोत्तरकीछविआजति त्यों भ
भरावलीसोंभगछैको ॥ सावनकीनिसिसाहसकै निकसीमन
भावनकेमिलिषैको ॥ ३ ॥ रयामनिसालखतैसोईसाज सिंगा
रिकैहोंपियपासचलीरी ॥ त्यों अधगैलउटोतभयोससि देख
तहीमतिसोचरलीरी ॥ पंकजछाडिसुगंधकेलोभ लगीसंगभों
रनकीअवलीरी ॥ ताहीसमैनिजभागनआयकै छायलईतिन
कुंजगलीरी ॥ ४ ॥ नखतेसिखलींसजिनीलेनिचोत्तर सुसांभ
सनैनवलानिकसी ॥ तिहिंहेरतहेहियकोहितसों कविनंदनगी
कुलचंद्रसी ॥ लखिकैचखआतुरप्रीतसके तियआननअंचल
टारेहंसी ॥ नवनीरदमंडलतेनिकस्यो ननुदेतचकोरनचेत
ससी ॥ ५ ॥

अथ सुक्ताभिसारिका यथा ॥

जे हैंजहाँमगनन्दकुमार तहाँचलीचंद्रसुखीसुकुमारहै ॥

मोतिनहींकेकियेगहनेसब फूलिरहीननोकुंदकीडारहै ॥ भी
 तरहीजोलखीसोलखी अबवाहिरजाहिरहीतनदारहै ॥ जो
 कसीजोङ्गईमिलियो मिलिजातज्यौदूधमैदूधकीधारहै ॥
 १ ॥ मोतिनमँगभरीसुकताहल हारहियेसितसारीहैवैसी ॥
 चंदनअंगकियेकविराज चलीब्रजराजपैचाँदनीजैसी ॥ पाछे
 नआगेहजानिपरै भ्रममैसजनीरजनीभईतैसी ॥ जोवैनहीजुव
 तीटिंगजात गईमिलिजोङ्गमैजोङ्गसीऐसी ॥ २ ॥ औधकेआ
 संगोपालकेपास चलीवनकोंनिसिजामगएइ ॥ एतेमैमेषअ
 कासमैआयकै छाँयदिसानअंधरीलईचै ॥ पायवेकोंपथऐसी
 समै रघुनायकीसींहुसुनोसुखसींभै ॥ अंगकेसंगअभूपनजा
 लसीं आषुहीबालमसालगईचै ॥ ३ ॥ हीरनकेसबभूपनअंग
 लसैसुकतानकीमालभलीहै ॥ सेतदुकूलनमैदुरिकै सुभईदुति
 देहकीकुन्दकलीहै ॥ चारदुवोकरचौरनिवारत सेखरमौरन
 कीअवलीहै चंदसुखीचितचाहभरी वृजचंदविलीकनजातिच
 लीहै ॥ ४ ॥

अथ दिवाभिसारिका यथा ॥

जेवरअंबरवादलीचाह रंगेगहिरैरंगकेसररूपमै ॥ बेनी
 चुनीचसकैकिरनै सिरफूललख्योरवितूलअनूपमै ॥ ऐसेसमै
 दिनमैसनमोहिनी मोहिरहीधिरहै वृजभूपमै ॥ जातिचली
 मिलिवेकोंवई मिलीदेंहँकीदीपतिजेठकीधूपमै ॥ १ ॥ आहट
 पायगोपालकीज्वालि गलीमहँजायकैधायलियोहै ॥ बातनये
 सेगयेजुरिकै नमुन्योतहँमानुप्रकोजवियोहै ॥ सुन्दरहीतेार
 हीचकिसी तकिदंपतिकेअतिगाढोहियोहै ॥ चाहियेराति

कियोदुरियों सुदुर्लभिलिकैदिनहीमेकियोहै ॥ २ ॥

अथ प्रवत्सप्रतिका लक्षण ॥

दोहा ॥ चलनहारपरदेसकों जातियकोपियहिय ॥

ताहिप्रवत्सप्रतप्रेयसी वरनतहैसबकोय ॥

सुग्धाप्रवत्सप्रतप्रेयसी यथा ॥

वीसोंविसैब्रषभानसुतापर जानतकांधकरप्रोष छूटोना ॥
काहकह्योवरसानेतेरी नदगांवचलप्रोधनस्यामसलोना ॥ खे
लतहीकौअचानकचौकि चितैचहुँदेवदएटगकोना ॥ सुलउ
ठपौतनहल्लगयोसन भूल्लगयेसवखिलखिलौना ॥ १ ॥ पौढेहैपी
उपियापलगां चलिवेकीकरीचरचापियतोलै ॥ वेनीरहीछति
बालगिलाडिली लाडअनेककरेजनबोलै ॥ मैकगीहासीहहा
गहिगी पीकहाभईपीगीयोवातनछोलै ॥ धूंधुटमैसुसकैभरैसां
सैं ससैमुखनाहकेसोंहैनखोलै ॥ २ ॥ चापभईदिनचारिहीते
लगेलागनपीकेविलाससुधासे ॥ ऐसेहिमेचलिवेकींविदेस क
हूंसुहतेपियवैननिकासे ॥ चंदमुखीसनतैविलखी उलहेविर
हानलकेअकुगसे ॥ आसुगिरेटगकेरनतेभव मोरनकेमह
तेसुकतासे ॥ ३ ॥ आएहौवूभनमोसोंकपाकरि आपहीजीते
अहामनसेसको ॥ मैकिहिंभातिसनेकैसकौ रघुनाथमैजाने
हैंनेहनरेसको ॥ पैविनतीयहएकहमारीहै मानोतामानोहै
कारनवेसको ॥ हीरीकेवासरगारीकीवैस विचारिकैकीजोवि
चारविदेसको ॥ ४ ॥ रावरेजोचलिवेकींविदेसकीं विप्रनबूक्ति
विचारकियोहै ॥ कौजियैसोसुभकारजकीं मनमैपनजोरघुना
थलियोहै ॥ मोहिनऔरअंदेसोसुनो सुनएतिककापतमेरो

हियो है ॥ वामत्रियोगिनिकेबधकीवेकीं कामवसन्तहीपानदि
 यो है ॥५॥ तरिहैं दृगनीरहिजायहोतीर मिलै न मिलै हरिना
 वटीऊ ॥ वंसिहोषनसारपटीर मिलै मिलै बातकहो नवनावटी
 ऊ ॥ यहवेनी प्रवीन है भेरीमहा नकवीं विरहानल आवटीऊ ॥
 लगेसीरसमौरलल करिजाइये एकउसीरकीरावटीऊ ॥६॥ दे
 वजोवाहिरहीविहरैतीसमीरअमीरसबिंदुलैजै है ॥ भीतर
 भौनवसैवसुधाह्वै सुधामखसूं धिफनिन्दलैजै है ॥ जैयेकहूँ इ
 हिंराखिगुबिन्दके इन्दुमुखीलखिइन्दुलैजै है ॥ राखिहो जौअ
 रबिन्दहूमै मकरन्द मिलैतीमलिन्दलैजै है ॥ ७ ॥

अथ मध्याप्रवत्प्रतप्रेयसी यथा ॥

नन्दधरें व्रषभानकेभौनतैं जानकहृप्रोहरिदेवसुहासनि ॥
 ताहीषरीतें धिरीपललाज परीकैषरीउषरीवतियांसुनि ॥ प्रा
 तअरंभकौखंभलगी निरदंभनिरंभसंभारै नसांसुनि ॥ ठाटी
 बड़ेखनकौवरसै बड़रीअखियानिबड़ेबड़ेआंसुनि ॥ १ ॥ दधि
 आछतआछतभालसैदेखि गएअंगकरंगछीनसेह्वै ॥ दुखआं
 चकवारोकहेनवनै धिधिसेवकसोहेअरीनसेह्वै ॥ मृगराजके
 दाबेविधेवनसीके विराजेभलेमृगकीनसेह्वै ॥ हरिआएवि
 दाकींभटूकेतहीं भरिआएदोजहृगदीनसेह्वै ॥ २ ॥ जाकेवि
 लोकिविलासहुलासके फांसपरेतेंउदासनहीको ॥ नेकहूँदूर
 भयोनाकवीं कितहूँनितहूँसुठिमालसोहीको ॥ आंचकहीवि
 जयानदपीके पयानसमैलखिटीकोदहीको ॥ पीरगंभीरउठी
 हियमै वहतीरसोतीखालग्योदुलहीकीं ॥ ३ ॥ प्रीतसमाग्यो
 विदेसनिदेस सनेतिथकेविरहागिनिजागी ॥ नैननिसेअंसु

वःशुलके तियकेहियतेसिगरीसुधिभागी ॥ सुन्दरिसीसनवा
 यरही सुभईमतिहैअतिहीदुखपागी ॥ योंनिरख्योमनोजीव
 सोंपियके संगसिधारिवोवूकनलागी ॥ ४ ॥ भोरभएसधुरा
 कोंचलैंगे योंवातचलीहरिनन्दललाकी ॥ बोलिसकीनसको
 चनते सुनिपीरीभई मुखजोतितियाकी ॥ हाथलगायतिल्ला
 टसोंवैठी यहैउपमाकविसुन्दरताकी ॥ देखैमनोकरआयुके
 आखर औररहोहैककुत्रचिवाकी ॥ ५ ॥ वातचलीचलिवेकी
 जहीं फिरिवातसुहानीनगातसुहानो ॥ भूपनसाजसकैकहि
 को सहरोजगयेकुटिलाजकेवानो ॥ योंकरमीजातहैवनिता
 सुनिपीतसकेपरभातपयानो ॥ आपनेजीवनकेलखअन्त
 सुआयुकोरेखसिटावतिमानो ॥ ६ ॥ सूखेअजौनतेओधिके
 द्यौस गनेजेपरैअंगुरीनसैह्वाले ॥ सैनकेवाननकेअतिगढे
 वनेधनेधोयअजोंउरआले ॥ आएसनेकीसुन्योचलिवो सु
 हियेलगिदूरक्रियेनाकसाले ॥ आखैलजोलीकैधोंकहिराधि
 का राखतिगोकुलचंदकेचाले ॥ ७ ॥ गोगृहकाजगुवालनकेक
 हें देखेकोंकहूंदूरिकोखेरो ॥ सागिबिदाचलेमोहिनीसों
 पदमाकरसोहनहोतसवेरो ॥ फेटगहीनगहीदहियांनगरो
 गहिगींविदेगौनतेफेरे ॥ गारीगुलावकेफूलनको गजराले
 गोपलकीगैलसैगेरो ॥ ८ ॥

अथ प्रौढाप्रवक्त्रतश्चिका यथा ॥

ज्वालतेजोरजुझाईकैडारिहै चारोंदिसाबिखसोवगरै
 है ॥ देखतहीदगदहैअचानक आचतेकोटिकनाचनचैहै ॥
 ओमुखकीकवहूंतुमसों समताईनपाई रड्यौरिसकैहै ॥ प्रान

पि प्रारेतिहारेचले अबहीयहचंदलबोलहैजैहै ॥१॥ वातकहो
 सुकहीचलिवेकी नयीं कबहूँ बज्जरोउरआनवी ॥ आँसूचले
 सोचलेहीचले अबभूखरूप्यासचलीपहिचानवी ॥ जीकं हूँ जा
 नकहौंगेअचानक देखूँघोंनिहिँचैमनमानवी ॥ ठूँढिहौप्या
 रेकपूरलोंप्रान सोयातनतेँउडिजातनजानवी ॥ २ ॥ संगर
 ह्योसुखसंगलह्यो कबहूँनभयोकसुकैपलन्यारो ॥ छोडकैता
 हिचलयोप्रियचाहत कैसेवनैबलिकोऊविचारो ॥ प्रीतमकोअ
 रप्राननको हठिदेखिवेहैअबहातसँवारो ॥ कौधोंचलैगोअगा
 रसखी यहदेहतेँप्रानकीगहतेँप्यारो ॥ ३ ॥ रावरजानकीका
 नपरीधुनि ताकिनतेँकृवियोंउनमानो ॥ छुटिपरेकबतेकसेकं
 कन मूदरीकीनलईधिरथानो ॥ भूषनभोजनभावतभौजन भू
 लिफिरैभभरीपहिचनो ॥ नाथजूजातविदेसभलेतुम प्रानपि
 यारीकेसाथहीजानो ॥ ४ ॥ वातचलीयहहैजबते तबतेचले
 कामकेतीरहजारन ॥ भूखआँप्यासचलीमनतेँ आँसूआचलेनै
 ननतेँसजिधारन ॥ दासचलीकरतेँबलया रसनाचलीलंकतेँ
 लागीअवारन ॥ प्रानकेनाथचलेअनते तनतेँनहींप्रानचलेकि
 हिँकारन ॥ ५ ॥ प्रीतमगौनसुन्योगजगौनीको भोजनभौनस
 बैविसरेहै ॥ अंगपरीतलबेलीमहा कविराजतहाँभरिआये।
 गरोहै ॥ नैननतेँधरिधारधरयो जलअंजनसोंउरआयपरोहै ॥
 चीरिवेकोंतियकोहिँयरा विरहावदईमनोसूतधरोहै ॥ ६ ॥
 केलिकैरातप्रभातचलैमो पिथाधृतिपाठपढ़ावनलागे ॥ सोसु
 निसेवकराधेवेचैन सोवैनकरेजे।कढ़ावनलागे ॥ प्रेमपयोनिधि
 सोंकुचपै धनसेदृगआँसुबढ़ावनलागे ॥ मानोसुरारिनजाहिँ

विचारि पुरारिपैवारिचढावनलागे ॥ ७ ॥ मिसहीमिसजा
 नकीवातकहोजु सुनेनविद्यासहिजातिभई ॥ दरलाडिलीके
 विरहागिजगी सुधिअवुधिहृदहिजातिभई ॥ ठगिमेरहैसेव
 कस्यामलखे रसनागतिकीगहिजातिभई ॥ इमिनैनेतेनो
 खीनदीप्रगटी बलिहारीविदावहिजातिभई ॥ ८ ॥ बालसों
 लालविदेसकेहेत हरेहंसिकैवातियाकछुकीनी ॥ सोसुनिबाल
 गिरीसुरभाय धरीहरिधायगरेगहिलीनी ॥ माहनप्रेमपया
 धिभयो जुरिदोठदुहकीगईरसमीनी ॥ मागेविदाकोविदा
 कोकरै मिलिदोऊविदाकोविदाकरिदीनी ॥ ९ ॥

अथ परकीयाप्रवत्प्रतर्भक्ति का ॥

पहिलेअपनायसुजानसनेहसों क्योफिरिनेहकोतारिये
 जू ॥ निरधारद्वैधारमभारदई गहवाँहँनकाहकोवारियेजू ॥
 धनआनदआपनेघातिकको गुनवाँधिकमौननछोरियेजू ॥ र
 सप्यायकैज्यायवधायकैआस विसासमैथोविखवोरियेजू ॥ १ ॥
 जोउरभारनहींभुरसी मृदुमालतीमालवहैमगनाखै ॥ नेह
 वतीजवतीपदमाकर पानीनपानकछुअभिलाखै ॥ भाँकिभ
 रोखरहीकवकी दवकीदवकीसुमनैमनभाखै ॥ कोऊनऐसा
 हितूहमरीसु परोसिनिकेपियकोगहिराखै ॥ २ ॥ पन्नगसी
 सपैपायधरे तजीलोककीलीकसराहियेहै ॥ नीतिनिवासीअ
 नीतिगही तऊनीतिअँअवगाहियेहै ॥ ताहितकोटिकले
 ससहे सोविदेसचलोतानिवाहियेहै ॥ नायतिहारैइसाथर
 मै इहिँजीवअनायकोँचाहियेहै ॥ ३ ॥

अथ गणिकाप्रवत्प्रत्येयसी ॥

आखिनकीअसुवामहीसीं निजधामहींधामधराधरिजैहै ॥
 त्योंपदसाकरधीरसमीरन धीरधनीकङ्कयो धरिजैहै ॥ जीत
 जिमोहिचलीगेकहूंतौ दूतीबिरहागिनियाअरिजैहै ॥ जैहैक
 हाकहूरावरेको हमारैहियकोलाहाराअरिजैहै ॥ १ ॥ परदेस
 तुम्हैचलिबोअवहीं बिरहागिनिसागीहसारेहिये ॥ कहीक्यों
 हमसोरहिजैहैविना इनआखिनरावरोरूपपिये ॥ कितोहीर
 नहीकेहूरासुखपैहै। कितोसुकतानकीमाकदिये ॥ प्रियदीजि
 येरेसौनिसानीकहूजे। तिहारेबिछोहमेजे।हिजिये ॥ २ ॥

अथ आगतपतिकालक्षण ॥

दोहा ॥ आतिथकोपरदेसतें आवैपतिसुखधाम ॥

ताकींसकलवखानहीं आगतपतिकामास ॥

अथ सुवधाआगतपतिका यथा ॥

आयोधिदेसतेंप्रानपिया सतिरामअनंदवहाइअखेखै ॥
 लोगनकोंमिलिआगनवैठ धरीहीधरीसिगरोधरपेखै ॥ भीत
 रभीनकेहारखरी सुकुमारितिघातनकंपविसेखै ॥ धुंघुटमैपट
 घोटकिये पटघोटदियेपतिकोलुखदेखै ॥ १ ॥ नबिलोकैहंसै
 सुनिसेवक्यों मनकीमनहींमैरकीसीपरै ॥ ललनापैबुकाइच
 लीबिरहागि सुवातनहूंमैचुकीसीपरै ॥ फारकैअंगडामविघा
 धिकेव्याज सुअौषधिहेतसुकीसीपरै ॥ पतियापदैनंदतियापै
 तिया कृतियाअपनीसैलकीसीपरै ॥ २ ॥

अथ सध्याआगतपतिका यथा ॥

आगनवैठीसुन्योपियआवत चित्तकरोखनतेंलरक्योंपरै ॥

देवजूषूषुटकेपटहमै समातनफूल्योहियोफरकोपरै ॥ नैनन
 आनदकेअँसुवा मनोभारसरोजनतेसरकोपरै ॥ दंतकसेमृ
 दुमंदहँसी सुखसोंसुखदाडिमसोदरकोपरै ॥ १ ॥ लाजभरी
 गुरुलोगनिमै गुनलागीविस्तरनवैठिपियाके ॥ सेखरदेसधितै
 बज्जतैदिन आयगोमंदिरप्रीतमताके ॥ आननपैछवियोउमगी
 मुखदेखिदुवोटगआनदछाके ॥ मानोसुधाकेसरोवरमै विल
 सैजुगमीनमनोजधुजाके ॥ २ ॥ आएविदेसतेवेनीप्रवीण खरे
 अँगनाअँगनामनमोहै ॥ श्रीधिवितीसोकहीसखियान विमो
 गव्यथासुनीसीसनिचेंहै ॥ भीतरभौनतेप्रानप्रिया सोकिताच
 हैपैगपड़नाअँगोहै ॥ सोचविमोचनसोंहैभए पैसकोचनको
 चनहातनासैंहै ॥ ३ ॥ चंदसुखीसजनीनकेसंग जतीपियअंग
 निमैमनफेरत ॥ ताहीसमैपियप्यारेकोआवन प्यारीसुखीक
 ह्यौद्वारतेटेरत ॥ आयगएमतिरामजवै तवैदेखतनैनअनंदभ
 एरत ॥ भौनकेभीतरभाजिगई हँसिकैहरअँहरिकोंफिरिह
 रत ॥ ४ ॥ नंदगावतेआइगोनन्दलला लखिलोडिलीताहिरि
 भायरही ॥ मुखधूषुटधालितकैनहींमायके मायकेप्रीछूदुराय
 रही ॥ उचकैकुचकोरनकीपदमाकर कौसीकछूछूविछायरही
 ललचायरहीसकुचायरही सिरनायरहीसुसुकायरही ॥ ५ ॥
 चारिदिनाकोवियोगभयो सुनवोलीहलायभुलायजगाए ॥ से
 वकनैमसुदेसोसुदेरी जुदेसेअुतीनहँकेढँगपाए ॥ बैनसुनेति
 नकोउठिभागी सुअंगनिमेरँगसौगुनोछाए ॥ प्रीतमकेसंगसे
 गएप्रान मनोफिरिप्रीतमकेसंगआए ॥ ६ ॥

अथ प्रौढा आगतपतिका यथा ॥

बैठीहि सुंदरिसंदि रमै पतिकोपयपेखिपतिव्रतपोखे ॥
 तौलगिआएरिआइकह्यो डुरिद्वारतेदेवरदौरिअनोखे ॥ आन
 दतेगुरुकीगुरुताहू गनीगुनगौरिनकाहुईअखे ॥ नूपुरपाय
 उठेकननाय सुजायलगीधनधायभरोखे ॥ १ ॥ बेईसलीकनि
 चोत्तसजे सबदेहवहैबिरहानलदाढी ॥ वैसेईपूरनहैअसुवा दृ
 गजैसेईअधिबिसूरतिठाढी ॥ आयगएपियबेनीप्रवीन नवीन
 कछूहुतिहैअतिक्वाढी ॥ जैसेउदोतभएरविके छविप्रातसमैपुर
 ईनमैवाढी ॥ २ ॥ बैठीहुतीबिनहींपलटेपट अंजनसंजनभूषन
 त्यागे ॥ बालमकांधविदेसवसन्त बिसूरतिकोकिलबागनबागे
 इयामजूआएसुनाएसखीन सुतौलगिआइगेआखिनआगे ॥
 योंबढिगीहियराकोहुलास ज्योंफूलकीबासवयारकेलागे ॥ ३ ॥
 प्रानप्रियारोमिल्योसपनेमै परीजबनेसुकनीदनिहीरे ॥ नाह
 कोआयबोख्यौ हींजगाय कह्योसखिवैनप्रियूषनिचोरे ॥ योंम
 तिरामवढीजियमैसुख बालकेबालमसोंदृगजोरे ॥ ज्योंपट
 मैअतिहीचटकीलो चढैरंगतीसरीबारकेवोरे ॥ ४ ॥ दूरिभ
 ईकसिकैकविबीर जेजीमेतवैनटसालसीसाली ॥ मैनवियोग
 तगीरकह्यौ अबलायोलिखायसंयोगवहाली ॥ आवतहीवन
 मालीविदेसते बालकीओरलखैसवआली ॥ वापियराईमेआ
 यकैआज चढीकछूऔरईभातिकीलाली ॥ ५ ॥ आनमितेवि
 कुरेवहुथीसके प्रानप्रियाकविराजप्रियारे ॥ फूलेसमातनभौ
 नकेभीतर दंपतिसेजपरेरसभारे ॥ छूटिगेवारविहारसमै गि
 रेमागतेमोतीसुऐसेनिहारे ॥ हातसंजोगरह्योनपरगो सोवि

योगमनोअसुवाअमुसारे ॥ ६ ॥ वाक्कमलालविदेसकए दुखए
सीभईमनुकायकराके ॥ केहुरियाँकरआवतीनाहिनै तेहुरि
याँभईठौरवराके ॥ आलमनालबिसूरतितान्छिन आएसुमेय
हृदवारवराके ॥ याँधुकीमैकुचयोँफारके सुगएबँदटाँटतराकत
राके ॥ ७ ॥

अथ परकीयाआगतपतिका यथा ॥

एकआलीगईकाहिकानमैआय परीजहामैनसरोरिगई ॥ ह
रिआएविदेसतेवेनीप्रधीन सुनेसुखसिंधुहिलोरिगई ॥ उठबै
ठीउतायलघायभरी तनमैछनमैछविदौरिगई ॥ जेहिजीवन
कीनरहीउतीआस सजीवनझीसोनिचोरिगई ॥ १ ॥ अधि
छईछविछीनदिनौदिन दीनभईकतिनेकुनाखालति ॥ आईइ
तेवतियाँफहिकै नितअधिजसेमतिसोंटकटोलति ॥ सेखर
आएसुनेइतहीं लखिनैनललामनसोंमनतीलति ॥ बोलिस
कोचनसोंनसकै अतिलोदभरीमनभावतीडोलति ॥ २ ॥ एकैच
लेरसगोरसलै अरएकैचलैसगफूलविछावत ॥ त्यौंपदसाक
रगावतगीतसु एकैचलैउरआनदछावत ॥ त्यौंनदनन्दनिहा
रिवेकीं नदगावकेलोगचलेसबधावत ॥ आवतकाँज्जवनेवरसा
नेते प्राणपरेसेपरोसिनिपावत ॥ ३ ॥ विरहागिसोवैतीदवा
गिभई जरेजातहेअंगसुमेसिनीके ॥ सुनिसेप्रकजाकेविलाप
केवेन नचैनहींकाह्अदेसिनीके ॥ पविसोहियकैकैसहेसज
नी अठपाँहहआहवेहेसिनीके ॥ धनरामहैरंजदलेसवके भ
लेआइगेपीउप्ररोसिनीके ॥ ४ ॥

अथ गच्छिकाआगतपतिका यथा ॥

वैठीहिभूषनभेप्रविसारेथों प्यारेकोतीकेवियोगरह्यौव

सि ॥ बेनीजुतौलौसुनायोयैकाह्ण किआयोविदेसतेंपौरिगयो
 धसि ॥ लैपहिरैगहनेवरचीर कडप्रौअलिसेजकीडोरीदैतु
 कसि ॥ लीबेकींलाखकरैअभिलाष करैकह्ण साखपरैकवह्णह्ण
 सि ॥ १ ॥ आवतनाह्णछाह्णभरे अबलोकिबेकींनिजनाटकसा
 ला ॥ ह्येनचिगायरिभावह्णगी पदमाकरत्यौरचिरूपरसा
 ला ॥ एसुकमेरेसुमेरेकह्यैया इतिकहिवोलियोबैनरसाला ॥
 कंतषिदेसरहेह्यैजितेदिन देह्णतितीसुकतानकीमाला ॥ २ ॥

अथ उत्तमानायिका लक्षण ॥

दोहा ॥ पियहितकैअनहितकरै आपुकरैहितवाल ॥

ताह्णउत्तमाकहतहै जेकविस्तुसतिरसाल ॥

जागितेंआलसपागेलसैं कियेवामकीवाससोंबागेवसीले ॥ चंद
 नलाग्योउरोजनकोउर आलकोवन्दनभाललसीले ॥ भोरही
 आएभरेरंगवों रघुनाथसनेहकेसोचससीले ॥ देखतहीहिय
 पायकैचैन मिलीगुनगौरिकैनैनरसीले ॥ १ ॥ आएकहूतें
 प्रभातधरे लखिसोनकीबेंदीगरेलपटाई ॥ सासुकैसोहैनबो
 लिसकी उठिआरसीभीतरह्णैदरसाई ॥ बैठिगएमिस्तुकैपट
 ओठि गहमनसेवकसयामठिठाई ॥ कैसीतियाकीधनीकृतिया
 कीअनीतिपियाकीखुलैनहींपाई ॥ २ ॥ रातिकह्णरसिकैमन
 मोहन आगसप्राततियाधरकीना ॥ देखतहीसुकप्रायउठी
 चलिआगेह्णैआदरकैपुनिलीना ॥ मोहनकेतनसैमतिराम दु
 कूलसुनीलोनिहारिनबीना ॥ केसरकेरंगसोरंगिकै पटपीत
 कैपीतमकेकरदीना ॥ ३ ॥ आएकह्णब्रजभूषनभोर तह्णैवह्ण
 आदरसैचितदीना ॥ आनतियाकेअधीनविलोकिकै मोहन

कामनमोहसोत्तीनो ॥ मेहदसोकवटाइबेकीं रतनेसउपाय
 कियोपरवीनो ॥ जासेंलगेऊतेलाककेनैन सोबाकबुजाइबड़ी
 हितकीनो ॥ ४ ॥ प्यौपरभातपधारतोतक कियोआदरप्यारीब
 होअनुरागहै ॥ पंचदिलोहेंसेपेखपिया पुनिआपनेहायदर्ईस
 लिपागहै ॥ चादरपोंकेकरोंकेसेओठ अंगोछतिलाकलिमार
 कोटागहै ॥ आपहीहैतिनिछावरियोंकहि आजहूमहैयोतखे
 बड़ेभागहै ॥ ५ ॥ हैतौरहैपियचेरीकीचेरीहै जामेसुणीत
 मव्यौ सुखपाऊं ॥ जासोंपग्योमनसोईकहौकिन दूतीहैताहि
 सुभायहील्याऊं ॥ गंधरजासोंजुप्यारकरौ पुनिताहकेपायप
 ले।टनधाऊं ॥ आपनतौरसकेवसह्वैरहै हैरिसिकैक्यौ कलं
 कलगाऊं ॥ ६ ॥ केसरिसोंउवटोसबअंग वड़ेसुकतानकीमांग
 सँवारी ॥ चारसुचंपकहारहिये अतिओछेउरोजनकीछवि
 न्यारी ॥ हाथसोंहाथगहेंकबिदेवजू नाथतिटारेईसंगसिधा
 री ॥ हाहाहमारीसोंसाँचीकहै बहकाइतीछोहरौछीबरमा
 री ॥ ७ ॥

अथ मध्यमाकक्षण ॥

दोहा ॥ हितकीनेहितकरतिजो अनहितकीमेरोस ॥

ताहिमध्यमाकहतहैं सुकविसवैनिरदोस ॥

मध्यमा यथा ॥

प्यौरदचिह्नक्येषितये कविबेनीरहीललनासुखफेरे ॥
 पीछेखरेकरजोरेशरीक रहेहरिमाहनीकोरुखहरे ॥ लीनेबो
 लायलगायगरे कह्योलालवसैतनसैमनतेरे ॥ एवलिऐसेनबो
 लोवलायत्यों हौतुमप्रानसजीवनमेरे ॥ १ ॥ औरकीओरतकै

जबधौ तबधौरीचढ़ाइचढ़ाइरिसातिहै ॥ मीठीसीवातेंसुनैह
 तकी तबहीलखिलालनकोललचातिहै ॥ जोअपराधकोलेस
 लखैती नकैसहं रोसकीआगिवुभातिहै ॥ पाँचनप्यारोपरै
 जबहीं तबहींगुनगौरिगरेलगिजातिहै ॥ २ ॥ हैरहीहसिप
 रेपगवै अगप्रेमकेमैपगधोरतहीवन्यो ॥ धीरसिखापनआपन
 हको बिसूरिविसूरिविसारतहीवन्यो ॥ मोहमढीवतियानह
 को सुनिकैपनहारनिहारतहीवन्यो ॥ छूटिगोमानभटूछिनमै
 हंसिकैहरिसोंवतरावतहीवन्यो ॥ ३ ॥

अथ अधमालक्षण ॥

दोहा ॥ पियकेहितहकरततिय करैरोसवेकाज ॥

अधमातासोंकहतहै सुकबिनकेसिरताज ॥

अधमा यथा ॥

ज्योंहीनचावैत्यौनाचनचै पैकियेईरहैनितनैननिचोहै ॥
 हखीसिवैठतिपीठिदैदै कवहंमुसुकायचितौतनासोहै ॥ प्या
 रोहहाकरिपाँचपरै कवहंवरिआईतकैतिरछोहै ॥ प्यौमन
 हाथलियेईरहैपै तकतियकीरहैटेदियेभौहै ॥ १ ॥ दबकगोर
 हैनाहगुनाहविनो गुनगावैसदांसुखआखरमै ॥ अतिसज्जन
 साधुमहामनको जुबिनाअपराधधरैभरमै ॥ सपनेहंनआन
 तियासुभिरै तबहंनहँसेजमैनोकरमै ॥ तरपैजिमिबिज्जु
 लसीपियपै क्षरपैक्षननायसवैषरमै ॥ २ ॥ ह्योउरभायरिभा
 इवेकीं रसरासकवित्तनकीधुनिछाई ॥ त्यौंपदमाकरसाहस
 कै कवहंनविषादकीवातसुनाई ॥ सपनेहंनकीनोकवौअपरा
 ध सुआपनेहायनसेजबिछाई ॥ प्यौपरिपाँचमनाईजज तज

पापिनीको कछूपीरना आई ॥ ३ ॥ रतिरंगके चाहेर है पटदा वि
 मरोरति भौह विसानीर है ॥ वसनाभरणादि छुये विभुकी सी दे
 खावतको पनिसानीर है ॥ कविसेवकरयाम अयानके है सखिया
 नकीसीस विसानीर है ॥ अपनेरुचिहृपसिं गारनसीं अरगामी
 अजानीरिसानीर है ॥ ४ ॥

अथ नायकलक्षण ॥

दोहा ॥ सुंदरसुधरसुहावनो सुचिसुसीलसुकुमार ॥

नायकताहि वखानहीं जे कविसुसतिउदार ॥

अथ नायक यथा ॥

आनिकदरौयहिं गैलभट्टवृजमंडलमै अमनैकम और है ॥
 देखतरीकरहीं सिगरी सुखमाधुरीको कछुनाहिमछोर है ॥ वे
 नीप्रवीनविसालविलोचन बाकीचितौनखलाकीकोजोर है ॥
 साँचीकहै वृजकीजुवती यहनंदलहै तोवडोचितचोर है ॥ १ ॥
 बाँसुरीकुण्डलमोरपखा मधुरीसुसकरानभरीसुखहैये ॥ बेभी
 पितंबरहारहरो भरोरूपसमुद्रकोपारनापये ॥ जायअजान
 लखैसो लखै हसजानिकैवाहिकितीकवरये ॥ यादिमहिरिदि
 योमनमानिक देहैकहाफिरिंहेरिकहैये ॥ २ ॥ गुच्छुनकेअ
 वतंसलसैसिर पच्छुनिअच्छकिरीटवनायो ॥ पल्लवलालसमेत
 छरी करपल्लवसोमतिरामसुहायो ॥ गुंजनकोउरमंजुलहार
 निकुंजनतेकहिवाहिरआयो ॥ आजकोरूपलखेवृजराजको
 आजुहीआखिनकोफलपायो ॥ ३ ॥

दोहा ॥ सोनायकहैतीनविधि द्विजकविकरतवखान ॥

एकपतिउपपतिदूसरो वैसिकतीजोजान ॥ १ ॥

अथ पति का लक्षण ॥

दोहा ॥ वेदलोकविधिसींभयो जाकोहीयविवाह ॥

ताहीसोंपतिकहतहैं सबकविभरेउछाह ॥ २ ॥

अथ पति यथा ॥

देखिसराहैंसबैसुखखाल अमोक्षमहाकृविसीउलहीहै ॥
 बेनीप्रवीनजूपूरनपुन्यते ऐसीतियातवतोसुलहीहै ॥ कौनगनै
 नरभेषमकी वरुऐसीनदेवनकेकुलहीहै ॥ जैसोऊतोषनस्याम
 होदूलाह तैसियैराधामिलीदुलहीहै ॥ १ ॥ एहिजोतिजगै
 कहैंई गुर तामैलगैनगैऔचुनीना ॥ बेनीप्रवीनसवैतनकी
 सुठिसुन्दरतासकैसैसगुनीना ॥ काङ्करविंदमरिंदसोइन्दु अ
 भासुखओठसमानदुनीना ॥ ऐसीलहीदुलहीहैललातुम ऐसी
 तोकाहूकिदेखीसुनीना ॥ २ ॥ व्याहकेद्यौसहीतेदिनहीदिन
 प्रेमदुहंकेछियेसरसातहैं ॥ गौनीभयोभयेदोजनिहाल दुहं
 कोदुहं बकेबैनसुहातहैं ॥ बैठकएकहीठौरकियेसु दुहं कोदु
 हं छिनछाडेनजातहैं ॥ रातीदिनादोजदेखैदुहंपै तजनदु
 हंनकेबैनअघातहैं ॥ ३ ॥ मंडपहीमैफिरैमेडरात नजातक
 हूलखिनेइकोऔना ॥ त्यौप्रदमाकरतीहिसराहत बातचले
 जोकहंकछुकौना ॥ एवइभागिनितासीतुहीबलि जोलखिरा
 वरोरूपसलौना ॥ व्याहहीतेभएनाहलटूतवहैहैकहाजवही
 यगीगौना ॥ ४ ॥ तनकोतनकोउधरैपटऔअचक संभुकछूपरो
 पोवतसे ॥ दिनमेहूलगेइंपगेइरहैं भरेनैनकुहीलौंजगावत
 से ॥ बहलाडिलीलाजनजातगड़ी येरहैंअखियानिगडावत
 से ॥ वरुगौनोलेआएललाजवते तवतेरहैसोनीगडावतसे ॥ ५ ॥

आसन एकपै आनदसोंपियै आपुसमैरसहपविलासको ॥ भैर
 धुनायगईतिहिंआसर डाललियेकरफूलकीसालको ॥ रीभा
 रहीदुतिदेखहुँहूँकी औकीतुकएकभटूईहिंहालको ॥ अंगके
 रंगतेअंगकोरंगओ गीरीकीसाँवरीगारेगोपालको ॥ ६ ॥
 दोहा ॥ सोपतिचारिप्रकारको प्रथमजानिअनुकूल ॥

अनदच्छिनपुनिधृष्टसठ सबै कहतरसमूल ॥ १ ॥

अथ अनुकूललक्षण ॥

दोहा ॥ तनमनहूँतेचहतनाहँ जोपरतिचअभिराम ॥

अपनीहीतियसोरमै सोअनुकूलललास ॥ २ ॥

अथ अनुकूलयथा ॥

लैकरकाँगहीलायफुलेल गुहँगुनलालसोंवेनीवनावत ॥
 द्वैउरलेवजवाहिरकी चुनिचोपसोंधूँदरीलैपहिरावत ॥ देखी
 हैंऔरसोजागिनिकेतिकी भागकीवातकहीनहींआवत ॥ रा
 खतिजामुगराधिकापाँय तहाँहरिआगेहूँफूलविह्यावत ॥ १ ॥
 केहूँनहींविसरैनिखिवासर मंदहँसीमुखचंदउज्यारी ॥ त्यों
 हींदिपैअतिनेहसोंदेहकी दीपकलीसमदीपतिन्यारी ॥ तेरि
 यैजोतिजगैहियभीतर आवतऔरनरातिअंध्यारी ॥ नैननहूँ
 अनवैननहूँ तनहूँजनहूँकोतुहीअतिप्यारी ॥ २ ॥ एकहीसे
 जपैसोवतहँ पदमाकरदोजमहासुखसाने ॥ सापनेमैतिच
 मानक्रियो यहदेखिपियाअतिहीअकुलाने ॥ जागिपरपैतज
 यहजानत पौदिरहीहमसोंरिसठाने ॥ प्रानपिघारीकेपाँपरि
 कै करिसोंहँगरेकीगरेलपटाने ॥ ३ ॥

अथ दक्षिणलक्षण ॥

दोहा ॥ एकभाँतिसवतियनसों जाँकोहोयसुप्रेस ॥

दक्षिननायककहतहैं तासोंकविकारिनेस ॥ १ ॥

दक्षिण यथा ॥

सनमोहनकेगरेहारचमेलीको बालनबेलिनसोचितयो ॥
कविवेनीसुगंधसरूपभरो सबहीनकोप्रानलटूहूँगयो ॥ एक
बारकह्योसबहीमिलिदेऊजूनेहनयोहरिव्यौतठयो ॥ चहुँ
ओरकीकोरिमैभारिपितंबर डोरहरेकरतोरदयो ॥ १ ॥ साँ
भसमैललनामिलिआईँ खरोजहँानब्दललाअलबेली ॥ खे
लनकीँनिसिचँदनीसाहँ वनेनमतीसतिराससुहेली ॥ आप
नीआपनीपौरिवतायकै बोलिकह्यौसिगरीननबेली ॥ त्योंहँ
सिकैवृजरजकहयो अबआजहमारिहीपौरिमैखेली ॥ २ ॥

अथ धृष्टलक्षण ॥

दोहा ॥ डरैनतिथकेसानकों करैसटाँअपराध ॥

निलजधृष्टतासोंकहैं जेकविसुसतिअगाध ॥ १ ॥

धृष्ट यथा ॥

ठानैमजाअपनेमनको डरआनैनरोसहूँदोसदियेको ॥
त्योंपदमाकरजोवनके मद्रपैमदहैमदपानपियेको ॥ रातिक
हूरसिआयोधरे डरमानैनहींअपराधकियेको ॥ गारिदैन
रिदैटारतिभावती भावतीहीतहैहारहियेको ॥ १ ॥ सारयो
हैफूलकीमालनसों करबाधिकेत्यों फिरिचौगनेचाइन ॥ सुंद
रवासोंकितोखिभिये नतजैतऊआपनेसीलसुभाइन ॥ दाहि
रैकाहिदियोदैकपाटहों पौदिरहीपटतानिगुसाइन ॥ जीपल

मैपलखालिकैदेखीता पायतेवैठोपकोटतपाइम ॥ २ ॥ का
ढिदियेघरतेत्योषरीहीमे पायनदेखेपरेहहाखातहैं ॥ फूलकी
मालसोवाधेतज सुसक्रायतकैतनकोनसकातहैं ॥ वातनते
छरपैयेकहा भकभोरतहनशरीअरसातहैं ॥ साजकोलेसन
हींमनमे नितसारेहूजाततजनकजातहैं ॥ ३ ॥

अथ सठलक्षण ॥

दोहा ॥ अंतरकपटभरोकरै बाहरतेप्रियमात ॥

सठनायकतासोकहैं जेकविमतिअवदात ॥

सठ यथा ॥

करिकंदकीमंददुचंदभई फिरदाखनकेउरदागतीहैं ॥ प
दमाकरखादसुधातेसिरे मधुतेमहामाधुरीजागतीहैं ॥ गिन
तीकहाएरीअनारनकी एअंगूरनतेअतिपागतीहैं ॥ तुमवाते
नसीठीकहौरिसमै मिसरीतेसिठीहमैलागतीहैं ॥ १ ॥ पाप
पुराकतकोप्रगटो विछुरोतेहिरातिभयोसुखवातहै ॥ जीव
नमेरोअधीनहैतेरेहि जीवनमीनकोकौनसीवातहै ॥ तोख
हियेभरुमैनव्यथाहरु नातोप्रियामनमेपछितातहै ॥ जोतुमठा
नतीमानअयानतो प्रामपयानकियेअवजातहै ॥ २ ॥ बेनीगु
हीलरमोतिनकी भरीईंगुरमागसनेहनिभोरी ॥ हारमनोह
रहीपहिराय रचेकरकंकनजेवरजोरी ॥ याविधिरीतिसीप्री
तिवढाय बढायप्रतीतिघरीचितशोरी ॥ धारतहीरसनाकटि
बीच सदीफुफुंदीकीफुंदीगहिछोरी ॥ ३ ॥

अथ उपपतिलक्षण ॥

दोहा ॥ करैनेहपरवधुनते उपपतिजानोताहि ॥

प्रीतिकरैगनिकानते वैसिकताहिसराहि ॥ १ ॥

उपपति यथा ॥

लखिसंकरबाधरोधेरिषरीकलौ घूमिकेषुधुरधेरोफिरै ॥
 तरनाभीरोमाधलीपंचदिकै कुचसृंगकेवीचदरेरोफिरै ॥ च
 लिंगीसुखचाड़मैठोढीकिगाड़मै बूड़िसुधारसहेरोफिरै ॥ लट
 कोनववेसरिभूलैजहां अटकोमनमेरोनफेरोफिरै ॥१॥ गुरुलो
 गनकीलगीवासवमी संगहीमैचवाइनकोगमहै ॥ इतमैनसोचै
 नमित्तैनधरी बलसैनकेप्रानगहेतमहै ॥ कहिसेवककासोकहा
 कहिये कहाकीजियेभोजुगज्योऊनहै ॥ मिलिवेकीनहींबनि
 आवतिराम भयोचहैवाधरोसोमनहै ॥ २ ॥ हमकोकितकै
 सेकहानलखै नितऐसीव्यथाजियजागतीहैं ॥ नगनाथगुनाथ
 जनाथमनाथ बनाथवहीरंगरागतीहैं ॥ कसकैनसकैकठिकैस
 हूँसेवक सोहनपैदिलदागतीहैं ॥ परतीनकीसैनसुधासोभरी
 बरछीनतेसौगुनीलागतीहैं ॥ ३ ॥ लोककीसंकससंकितलोच
 न वेदुखमोचनकोरनटारिवो ॥ किंकिनीकीधुनिधीरसुने अ
 नधीरहूँ हाथनताहिसुधारिवो ॥ नूपुरकेधुंधुंरूनकीधीरन
 होरनिमैचितकीगतिपारिवो ॥ हैजगजीवनकोफलजीवन ऐ
 सीनवेलीकोनिन्तविहारिवो ॥ ४ ॥ नवलाकोविलोकिरहैस
 खचंद्र वन्योजोविभूषनसोभलहै ॥ करकंजकमालसनोलदो
 उते चप्योभुजमूलनकोतलहै ॥ कुचतुङ्गसोवेधसहैउरको सुनै
 माधुरेवैननकोऊलहै ॥ नविरामगहैपलसेवकराम इतीजग
 जीवनकोफलहै ॥ ५ ॥ छपिकैछपासाहिंसहेटमैजा अधरार
 सलोनोलयोजोनहीं ॥ जिनकेलखिहावनभावनको नलखेवि
 रहासोऊयोजोनहीं ॥ हनुमानकहैरिसमैलखिकै परिप्रायन

प्रथिनये। जो नहीं ॥ पनतीनमै कौन कियो सुख जो परतीनमै ली
 नभयो जो नहीं ॥ ६ ॥ जिनके सुख इन्दु विलोकनकीं दिनरैनगली
 नमै फेरो कियो ॥ जिनके लिये पायन पै परिकै सखी दूतिनकोर
 प्रहेरो कियो ॥ हनुमानदियो सुखतीसिगरो परकीयनको जपै
 चेरौ कियो ॥ विधिकी विप्ररीतिकहैं। मैकहा अपनीदिनहाय
 नमैरो कियो ॥ ७ ॥ वानिरमोहिनिरूपकीरासि जोऊपरिके
 उरअनतिह्वै है ॥ वारह्वारविलोकधरीधरी सूरतितोपहि
 चानतिह्वै है ॥ ठाकुरयामनकीपरतीतिहै जोपैसनेहनामान
 तिह्वै है ॥ आवतहैं नितमेरेलिये इतनीताविसेपहजानति
 ह्वै है ॥ ८ ॥ गतिमेरीयहीनिसिवासरहै निततेरीगलीनको
 गाहिवोहै ॥ घितकीझोकठोरकहाइतनो प्रियाताहिनहींबह
 चाहिवोहै ॥ कहिठाकुरनेकुनहींदरसो कपटीनकोकाहसरा
 हिवोहै ॥ मनभावैतिहारेसोइकारिये हसैनेहकोनातानिवा
 हिवोहै ॥ ९ ॥ दिलसाँचेलगैजिहिँकोजिहिँसो तिहिँकोति
 तकोंपडँचावतुहै ॥ बलिहंसचुनैसुकताहलकीं अरुचातक
 स्वातिकोपावतुहै ॥ कविठाकुरयोनिजभेदसुनो अरुभावत
 सोसरुभावतुहै ॥ परमेसरकीपरतीति यही मिल्योचाहत
 ताहिमिलावतुहै ॥ १० ॥

अथ वैसिकउदाहरण ॥

भौरभयोभरमैमदअंध सुगंधभकोरनकीभकभोरमै ॥ मा
 नोसुधाकेसमुद्रपरगो अकवारसमैसिसकीनकेसोरमै ॥ भूलि
 रछ्योलखिभैंहकेभाय रछ्योठहरायउरोजकेठौरमै ॥ वारव
 धूकेविलासवँध्यो सुकहौमनकैसेलगैतियऔरमै ॥ १ ॥ कुन्द

नसोतनचंद्रसोआनन काननमैसुकतानकीवारी ॥ देखतआ
 रसोपाननखात भुजामनोसुन्दरठारतेठारी ॥ अँठीसीआंख
 अमेठीसीभौहनि पैनकटाच्छलटैसटवारी ॥ वारवधूयोविलो
 कतप्यारेजु देनकोमोतीकिमालउतारी ॥ २ ॥ छोरतहीजुछ
 राकेछिनौछिन छाएतरंगलसंगअदाके ॥ त्यौपदमाकरजेसि
 सकौनके सोरधनेसुखमोरिसजाके ॥ दैधनधामधनीअवते म
 नहींमनमानिसमानसुधाके ॥ बारविलासिनितोकीजपै अख
 राअखरानखराअखराके ॥ ३ ॥ निजबालमैसेवकसूधियैचा
 लन ख्यालयोमीनधजाकेकरै ॥ परनारिसोकोनरहैमनमारि
 चुकेपरसंगसजाकेकरै ॥ गनिकाधनिहैजोनचैरचैरांग विहा
 गमेरंगरजाकेकरै ॥ जुतहावनभावनतेअंगअंग तरंगअनंगम
 जाकेकरै ॥ ४ ॥

दोहा ॥ औरौत्रिविधिवखानहीं नायकभेदप्रमान ॥

सानीवचनचतुरअरु क्लियाचतुरमतिमान ॥ १ ॥

अथ सोनीयथा ॥

साँभगएउठिआवतभोरहौ जानतिहैंतुमहँभएभानहौ ॥
 जाहियथासोकह्योईचहै तुमदेतनहींइनवातनकानहौ ॥ रु
 ठिकैपीठिदैवैठिरहै हियवाकेजगावतकोपकसानहौ ॥ चांहि
 येवाहिकीमानकरै उलटेतुमहींअवठानतमानहौ ॥ १ ॥ दी
 जियेदोसकहाकहिकै वहजायपरीपहिलेकरचीठी ॥ हीजो
 लिखीउनलोयनकीमसि लागतिलालतुम्हैवहसीठी ॥ औउ
 लटेतुमहीपुनिछठन कानकरैकेहँभातिवसीठी ॥ जाउरपि
 तप्रकोपभयो सुखलागतदःखदिनेसनासीठी ॥ २ ॥ रोषर

च्योतिषदोषतिहारेर्द्वयारेकरोरसराखिपरेखा ॥ पाँयनहं
 परिप्यारीसनाइये प्रीतिकीरीतिहैवंकविसेखा नेकतिहारेनि
 हारेबिना कल्पैजियक्यौ पलधीरजलेखा ॥ नीरजनैनीकेनी
 रभरेकिन नीरदसेदृगनीरजदेखा ॥ ३ ॥ बालविहालपरीकव
 की द्वकीयहप्रीतिकीरीतिनिहारो ॥ त्वांपदमाकरहैनतुहै
 सुधि बैरीवसन्तजोकीङ्गवगारो ॥ तार्तेमिलोमनभावतीसोंच
 लि ह्यार्तेहहावचमानहमारो ॥ कोकिलकीकलवानिसुने
 पुनिमानरहैगोनकाङ्कतिहारो ॥ ४ ॥ बातहिवातद्वैपीठिपि
 यां पटियालगिमानजनावनलाग्यो ॥ ज्यौं ज्यौं करैमनुहारि
 तिया रुखताखसुत्थौं त्थौं रुखावनलाग्यो ॥ चूकपरीसोपरीब
 कसोयह प्रानहैरावरेपाँयनलाग्यो ॥ लीजियेसोहिउढाबहि
 येबिच भाँवनजेरजडावनलाग्यो ॥ ५ ॥

वचनचतुर यथा ॥

दाऊननंदववानजसोमति न्यैतेगएकहल्लैसंगभारी ॥
 हैहल्लैइतैपदमाकरपौरिमै सूनीपरीबखरीनिधिकारी ॥ देखै
 नक्यौंकदितेरेसुखितमै घायगईकुटिगायहमारी ॥ ग्वालसोंवो
 लिगुपालकह्यौसों गुवालनिपैसनेमूठिसीडारी ॥ १ ॥ उ
 ठिभोरहींआवतीहौतितह्वै जितद्यौसहमैतमछायरह्यो ॥
 संगकाहतेलेज्जलगायअहे कहियेकहामानतीहौनकह्यो ॥
 कहौकोसुनिलैहैपुकारिबोकाह अचानकजोठगआयगह्यो ॥
 तुमसूनेतमालकीकुंजकीगैल अकेलिहीबेचनजातदह्यो ॥ २ ॥

अथ क्रियाचतुर यथा ॥

देखेबिनावृषभानदुलारिकों भाबैहरीकोंषरीकुवरौना ॥

कामचढ़े कविराजकछू वृजराजसमाजमेआएडरौना ॥ राधे
 बिले।किसखीनमैसग्राम सुभै।हनिमैकहिऐसीकरौना ॥ प्यारे
 गहीवनमालगरेंतर प्यारीगह्रौकरकानतरौना ॥ १ ॥ एक
 समैदिनमाभअलीनमै सुन्दरवैठीहीराधिकारानी ॥ आए
 तहाँपियसैनदई अलिप्यारीचितौनिमैचातुरीठानी ॥ तेहअ
 सेतकटाच्छकरे तिनमैसमजोङ्गकीभाँतिहैआनी ॥ जानिगए
 हरिऔधिवताईहै नैननहींमैनिसाकीनिसानी ॥ २ ॥ बैठीहु
 तीगुरुलोगनिमै तहाँसंगसखीलियेसग्राससिधारयो ॥ अंगही
 अंगअनंगतरंग तरंगहीमैएकरंगविचारयो ॥ तारिलयोकरतें
 करषीफल बामृगलोचनीआगेउछारयो ॥ फूल्योसरोजसरोज
 सुखी मलिकाकरकैकलिकाकरिडारयो ॥ ३ ॥ नदलालगएति
 तहींचलिकै जितखेलतिबालसखीगनमै ॥ तहाँआपुहीमूदे
 सलोनीकेलोचन चोरमिहींचनीखेलनमै ॥ दुरिवेकींगईसि
 गरीसखियौ मतिरामकहैइतनेछनमै ॥ सुसुवायकैराधिकैकं
 ठलगाय छप्योकह्लंजायनिकुंजनमै ॥ ४ ॥ इतनाइनकीघरहा
 इनह्मकै लोगाइनमैचलिजायोकरै ॥ उबटैकसिअंगअनंगसों
 सेवक तैलफुलेललगायोकरै ॥ कह्लंऔसरपायलजीलिनकीं
 रतिरंगकेसंगसतायोकरै ॥ हरिऐसेअनोखिनएरसिया मन
 भायोकरैवचिआयोकरै ॥ ५ ॥

अथ प्रोषितलक्षण ॥

दोहा ॥ व्याकुलहोइजुबिरहवस बसिविदेसमैकंत ॥

ताहीसोंप्रोषितकहत जेकोविदबुधिवंत ॥ १ ॥

प्रोषित यथा ॥

लहिस्त्रुनोसकेतअलिंगनकै मद्नागिनिकीव्यथाखातीर
 ही ॥ सुसुकानिभरीवलिबोलनिते अतिमाहिँपियूपनिचोती
 रही ॥ द्विजप्रानप्रियामोसनेहसनी छतियाँतेलगीसदाँसोती
 रही ॥ तजिताहिविदेसवसेतियजो कवह्लं पलओटनहीतीर
 ही ॥ १ ॥ वाकोविलोकियेजोसुखइन्दु लगेयहइन्दुकह्लं लव
 लेसमै ॥ वेनीप्रधीनमहासरसैछवि जोपरसैकह्लं स्वामलक्रेस
 मै ॥ सोमनसोचिउसोसलैलै निसिवासरहैपरोमैनकलेसमै ॥
 प्रानपियारीविहायकैहाय अनाहकअनिपरेपरदेसमै ॥ २ ॥
 सुखभावनभूषितजाकोविलोकि नचंदकीओरचितैवोभलो ॥
 अधरामृतपानकैसेवकजाके प्रियूपसोकौनहितैवोभलो ॥ जे
 हिँलायकैअंकनिसंकुदई नपरीनकोरंकमितैवोभलो ॥ धिग
 ताकेविनापलकोतजिअै नवियोगसैवैसवितैवोभलो ॥ ३ ॥ ल
 खिलीजियेसाँचनकगौमोहिवोरि भईसुनिसंकजोरगिनिहै ॥
 नछुवैजमवासनतेजरिवेके बढै तवआयुअभागिनिहै ॥ कछुको
 कछुगायोपुराणनमै जोकहैंसोईवाँतअदागिनिहै ॥ गरवाँ
 धिकैसेवकबूड्योवियोगी नवारिधिसैबडवागिनिहै ॥ ४ ॥ साह
 सकैहँसिकैरसकेमिस सागीविदेसविदासृदुवानिसों ॥ सोसु
 निवालगरईसुरभ्नाय दहीवनवेलिज्योंधीरदवानिसों ॥ वैनग
 रोहियरोभरिआयोपै बोलिनआयोकछुवासुजानिसों ॥ सा
 लैअजोंउरमाहिँगडीवे वडीअखियाँउमडीअसुवानिसों ॥ ५ ॥
 जामभरेदिनहैचलिवो सुनिप्यारीनिसासवरोवतखाई ॥ हैं
 कह्यौरोइयेनजैयेघरे यहरोइवोतासुनिहैंसबकोई ॥ सोईनेवा

जसदासुधिसालति साहसकैचलोपगदोई ॥ आधिकदूरि
 लोंजायचितै पुनिआयगरेंलपटायकरोई ॥ ५ ॥ दृगलालवि
 सालउनीदेकछ् गरबीलेलजीलेसेपेखहिंगे ॥ कबधोंविधुरीसु
 थरीअलकै भूपकोपलकैअवरखहिंगे ॥ कविसंशुसुधारतिभूष
 नभेष विलोकनियोंजगलेखहिंगे ॥ अंगिरातिउठीरतिसंदिर
 तें कबधोंवहभावतीदेखहिंगे ॥ ६ ॥ लालप्रवालसेओठरसाल
 अमीरसपानकोतापबुझैहैं ॥ श्रीफलसेबरजोरकठोर उरोज
 कीकोरनकामजगैहैं ॥ कुन्दनकातिसेलोलकपोल अमोलन
 चूमिकैकामबढ़ैहैं ॥ फूलनकीपरजंकपैपौढि मयंकसुखीकव
 अंकलगैहैं ॥ ७ ॥ भीतरतेंउठिआवतदेखि कबैवहवालशुजा
 भरिलैहैं ॥ सेखरकंठलगायकैपौछेतें आनदक्षेत्रुवानिअह्लै
 हैं ॥ कंतभलेभलेबोलकेसांचे कह्योतुमहोहमवादिनऐहैं ॥
 श्रीधिगएयोतियाघरजाय कबैहसहायओराहनापैहैं ॥ ८ ॥
 पीरोइरूपक्रियोअपनो ममतीयसरूपहिंयादकरावति ॥ का
 मकीलायलगायहिये तनतायकैमोहिवियोगजगावति ॥ कौ
 नलईयहरीतिनई विपरीतमईविरहीनसतावति ॥ मैडरसों
 करसोंपरसोंनहीं तूंसरसोंसरसोंहैंचलावति ॥ ९ ॥
 दोहा ॥ दरसनआलंबनहिंमे कहेकविनयेधारि ॥

अवणचित्रस्वप्नहिंबज्जरि औप्रतच्छनिरधारि ॥ १ ॥

ताकेकमतेदेतहों उदाहरनइहिंठौर ॥

जेपण्डितभाषानिपुन सुदितहीवकरिगौर ॥ २ ॥

अथअवणदरसन ॥

राधिकासांकहिआईजोतूसखि सांवरैकौमृदुमूरतिजैसी ॥

ताछिनतेपदमाकरताहि सोहातकछूनबिसूरतिबैसी ॥ मा
नङ्गनीरभरीघनकीघटा आखिनमेरहीआनिउनेसी ॥ ऐसीभ
ईसुनिकाङ्ककथा जोविलोकहिगीतवहीयगीकैसी ॥ १ ॥ हैं
लखिआईअरीतवहीं यहसाँवरोनंदललावडभागी ॥ सोबर
न्योनखतेचिखलीं सुनतैइनकीसतियोंअनुरागी ॥ सेवकबो
लैनखोलैदृगे अंगडोलैनऐसीमसंदमैलागी ॥ पेखनकेसबले
खनछेहि निमेखनमूदिकेदेखनलागी ॥ २ ॥ साँवरोसुन्दर
रूपअनूप रसालविसालवडेवडेनैनरी ॥ यावनआवतगैयनले
नितदेवदेखैयनकोसुखदैनरी ॥ मेहसुनीसुकहाकहैलाज
की वातकहैसखितूकहिऐनरी ॥ वाजगवंचकदेखेविना दुखि
याँअखियाँनिनरंचकचैनरी ॥ ३ ॥ काङ्करकीनितसंभुकथा
सुनिकैइमिकाभिनीकौषुकपागी ॥ सोवतजागतहजोमनैमन
मैमनमोहनकेरंगरागी ॥ दंतकोदागदियोपियध्यानमैध्या
नहींतेंतबसोवतजांगी ॥ आपुदियाटिगआरसीलै अधराअ
धरांतकदेखनलागी ॥ ४ ॥

अथ चित्रदरसन यथा ॥

मूरतिमोहनीमोहनकीलिखि धारीजहाँसखियाँनकीभीरें
वेनीप्रवीनविलोकतिराधिका चिबलिखीसीभईतिहितीरें ॥
जोरीकिसोरीकिसोरकीरीभ सराँहरहीहैंगुवालिगंभीरें ॥
चिन्तचितेरीरहीषकिसी जकिएकतेहैगईद्वैतसबीरें ॥ १ ॥
नरकीरचनामैइताँगुहै मनकामकीपूरतिसीह्वैगई ॥ कस
हायगोसाँचोसरूपजहाँ विधिकीवेसहरतिसीह्वैगई ॥ यह
बातविचारतसेवकह्वै हियरेमेकछूरतिसीह्वैगई ॥ लखिरा

धिकाकीरंगमूरतिकों हरिमूरतिमूरतिसीह्वैगई ॥२॥ चि
 वकेमंदिरतेएकसुंदरी कप्रीनिकसैजिह्वैनेहनसाहै ॥ लींपद
 माकरखालिरहीट्टग बोलैनबोलअडोलदसाहै ॥ भृङ्गीप्रसंग
 तेभृङ्गिहीहात जुपैजगमैजडकीटसहाहै ॥ मोहनमिषको
 चिचलखेभई चिचहीसीतीविचित्रकहाहै ॥ ३ ॥ न्यौतेगईवष
 भानलली सलिताकेजहंपतिप्रीतिपढीहै ॥ भीतमैपीतमैदे
 खिलिखे नवलाकेहियेनवलाजबढीहै ॥ आखिनभीजीसीअंग
 पसीजीसी छोभनहीजीसीमोहमढीहै ॥ चांकीचकीससकीन
 सकीचितै मिषकीमूरतचित्तचढीहै ॥ ४ ॥

अथ स्वप्नदर्शन यथा ॥

सोवतिनीलतिथासपनेपिय आइछुईछुतियाँभयभारी ॥
 सैकिपरीचितचेतीचितैचड्ड आसूउसासनिसौनसम्हारी ॥
 कोहैकहाहैकहैनकहाभयो योंकहिदेवसहेलीपुकारी ॥ नीवी
 दूह करदाविरहीसु गहीउठिपायंपलोठनहारी ॥ १ ॥ आवत
 मैहरिकोंसपनेलखि नेसुकवाटसकोचनछोड़ी ॥ आगेह्वैआ
 डेभएमतिराम चलीसुचितैषखलालचघोड़ी ॥ आठनिकोर
 सलेनकोंमोहन मेरीगहीकरकंपतठोड़ी ॥ औरभटनभईकछ
 वात गईइतनेहीमेनीदनिगीही ॥ २ ॥ सोवतआजसखीसप
 ने द्विजदेवजूआयमिलेवनमाली ॥ जीलोंउठीमिलिवेकहँघा
 य सोहायभुजानभुजानपैघाली ॥ बोलिउठेयेपपीगनतौलगि
 पीवकहँकहिकूरकुघाली ॥ संपतिसीसपनेकीभई मिलिवे
 वृजराजकोआजकोआली ॥ ३ ॥ मोहनआएइहँसपने सुसु
 कातसेखातविनोदसोवीरो ॥ वैठीजतीपरजंकमैहैहँ उठी

मिलिवेकँ हँकै मनधीरो ॥ ऐसेमेदाष्टविसासिनोटासी जगार्ई
 डुलायकिंवारज्जरीरो ॥ झूठोभयोमिलिवोवृजराजको एरी
 गयोगिरिहायकोहीरो ॥४॥ भेंटतहीसपनेमैभटू चखचंचल
 चारुअरेकेअरेरहे ॥ त्यों हँसिकैअधरानहूपै अधरामधरेतेध
 रेकेधरेरहे ॥ चौकीनवोनचकीउभकी सुखसेदकेबुंददरेकेदरे
 रहे ॥ हायखुलीपलकैपलमै दिलमैअभिलापभरेकेभरेरहे ॥५॥
 घायकँअंकमैसोईनिसंक सुपंकजसीअखियानिभकाभकी ॥
 योंसपनेमैमिलीअपनेपिय प्रेमपनेछविहीकीछकाछकी ॥ ठा
 ढेहीठाढेगहीभुजगाढेसु वाढीवभूकेहियेमैसकासकी ॥ देव
 जगीरतियाँहूगई नतियाकीगईछतियाँकीधकाघकी ॥ ६ ॥
 सपनेमैगईसखिदेखनहीं सनीनाचतनन्दजसेमतिफोनट ॥
 वासुसकायकैभाववतायकै मेरोईअँचिखुरोपकरपोपट ॥ तौ
 लगिगायमँभायलठी कविदेववधूनमयप्रोदधिकोमट ॥ जागि
 परीतौनकाङ्ककहं नकदंवकोकंजनकालिंदीकोतट ॥ ७ ॥
 अँचकअनिगह्योअचरा त्योंनहींनहींजीमलगीजपनेमै ॥
 हायनसोंभिकिकारोकियो परीहींकछुऐसेअयानपनेमै ॥ वे
 ताकितेकोकियोअनुराग अभागकहँलोकहींअपनेमै ॥ जा
 हिवखानतहीनिसियौस सोंसावरोआजुमिल्योसपनेमै ॥८॥
 सोवतमैसखिजान्योनहीं वहसोवततेधरआयोहमारै ॥ पीत
 पटीलपटीकटिमै अरुसावरोसुंदररूपसँवारे ॥ देवअवैलगि
 अखिनते वहवाँकीचितौनिटरैनहींटारे ॥ चोरिलियोचित
 सोसपने वहिँचोरहीमोरप्रखौवनवारे ॥ ९ ॥ ह्वैसपनोपिय
 कोपियआय दई करलोयवनायविरीत्यों ॥ चूसतहीचखचँ

किचितैचकि सेजतैभूमिसैधूमिगिरीलीं ॥ देवजुहारकिवार
 नह भक्षरीनक्षरे। खनिक्काकिफिरीलीं ॥ दीनह्वैमीनजराकी
 भईसु फिरैफरकीपिंजराकीचिरीलीं ॥ १० ॥ बितानतनेज
 हांफूलनके दुतिसारदजोङ्गसौजेतिअरुन्द ॥ प्रियासपनेमै
 लखीकविदेव सुजानीभलेसिटिहैदुखदन्द ॥ अतिसौधेसुवास
 सुगंधसने तबहीकोजकूकिलठोमतिमन्द ॥ खुलीअखियां
 तोनचन्दसुखी नचंदौवानचंदनीचंदनचन्द ॥ ११ ॥ सोवत
 हीसपनोलखोलाडिली धूमतघोरघनेबदरानकीं ॥ तांसमैप्या
 रेकहोखलितानीं बुलायहहाकैबड़ेअदरानकीं ॥ ऐसेमे
 लावभिलावबही जेहिँअ छेउरोजलगेगदरानकीं ॥ योंसुनि
 चादरमूढतेंओढि सुदंतनिदाविरहीअधरानकीं ॥ १२ ॥ सां
 भसमैरितसावनकी अवलाअतिहीअनुरागउचाटी ॥ सोवत
 स्याममिलेसपने सबजागतरैनकथांकहिकाटी ॥ बानकहैजां
 बिलासकीबेलिकी बातसबैमिलिदोउनठाटी ॥ चोकिपरीष
 नकेगरजेसु रहीगहिअंकप्रजंककीपाटी ॥ १३ ॥

अथ प्रत्यक्षदर्शन यथा ॥

माधेमनीहरमौरलसै पहिरेहियमैगहिरेगुंजहारनि ॥
 कुण्डलमंडितगोलकपोल सधासमबो लविलोलनिहारनि ॥
 सोहतरीकटिपीतपटी मनमोहतमंदसहापगधरनि ॥ सुंदर
 नंदकुमारकेजपर वारियेकोटिकुमारकुमारनि ॥ १ ॥ कानन
 कुण्डलमालगरे संगमंडितगोपनकेकुंवरेटा ॥ देवगयंदसेआ
 वतमंदसे देखुरौचंदसेनन्दकेबेटा ॥ कामकीदूतीपढावततूती
 बनीपगजूतीवनातलपेटा ॥ पीरोक्षगापटुकाविनछोर छरीक

रत्नालजरीसिरफेंटा ॥ २ ॥ आईभलेहोंचलीसखियानमै
 पायगोविन्दकेरूपकीभाँकी ॥ छोपदमाकरहारिदियो गृह
 काजकहाँअरलाजकहाँकी ॥ हैनखतीसखलीमृदुमाधुरी वा
 कियेभैहैंबिलोकनिवाँकी ॥ आजकीयाकविदेखिभट्ट अवदे
 खिबेकींनरहप्रोकछूवाकी ॥ ३ ॥ बारिकैलाजविसारिकैकाज
 निहागिलैआवतनन्दकिसोरहै ॥ देखेवनैकदिआननते सुस
 कप्रानबसीअखियानिकीओरहै ॥ कानमैखींसेरसालकीमंज
 री मंजुरीगूंजिरहप्रोइसिभैरहै ॥ मानोतियानिकीकानिपै
 कोपि कियोकछिकामकमानटकोरहै ॥ ४ ॥ भौनतेंगौनकि
 योज्जताकुंजकीं पुंजसखीनकेसाथठईरी ॥ सामुहेंभेटभईरि
 पिनाथ लख्योमनमोहनमैनमईरी ॥ छोड़ीनलाजकपायकैअं
 चल घंघुटओटपिछैाड़ीभईरी मीजतिहायहियेपछितात की
 पीठमैदीठिटईनदईरी ॥ ५ ॥ भौनभरेमेपरेहरिआय क
 हप्रोसजनौनदुरोचङ्गओरसों ॥ कैरहीघूंघुटघूंठिहियेदुख घूं
 मतिअंगनिमैनमरोगसों ॥ बेनीचलीनचकीथहराई लगप्रो
 चितचंचलकैलकिसोरसों ॥ ओठनिअैठिगईफिरिवैठिदै पी
 ठितिरीछेचितैदृगकोरसों ॥ ६ ॥ देवअचानभईपहिचान चि
 तौतहिसप्रामसुजानकेसोंहैं ॥ लालचलालचितौतलगप्रो ल
 लचावतलोचनलाजलगोंहैं ॥ प्रेमपुरानेकोबीजउठप्रोजमि
 छीजपसीजहियेउमगोंहैं ॥ लाजकसीउकसीनउतै जलसीअं
 खियाँविलसीकछूभोंहैं ॥ ७ ॥ धारतहीवन्योयेहीमतो गुरु
 लोगनकोडरडारतहीवन्यो ॥ हारतहीवन्योहेरिहियो पद
 माकरप्रेमपसारतहीवन्यो ॥ वारतहीवन्योकाजसवै बरुयोंसु

खचंद्रनिहारतहीवन्यो ॥ टारतहीवन्योघूंघुटकोपट नन्दकुमा
रनिहारतहीवन्यो ॥ ट ॥

अथ उद्दीपनविभाव लक्षण ॥

देहा ॥ अहिंशितवतहीचित्तमे रसकोहोयउदोत ॥

उद्दीपनसुविभाववे कहतकविनकीगीत ॥ १ ॥

सखि दूती उपवन पवन प्रटारतु मलयसुगंध ॥

चंद्रचांदनी सुमजवह्ल रंगराग स्वच्छन्द ॥ २ ॥

तव सखीलक्षण ॥

जासोंतियनिजहीयकी राखैकछुमदुराष ॥

ताहिबखानतहैंसखी जेरसज्ञकविराव ॥ ३ ॥

मंडन सिद्धाकारन युनि उपालंभ परिहास ॥

चारिकाजये सखिनकी तेसवकरतप्रकास ॥ ४ ॥

मंडन यथा (सिंगारना) ॥

येसखियाँबिमकाजरकारी अन्यारीचितैचितमैचपटैसी ॥

सीठीलगेअहिंफ्रीकिल्लबात सुनैसबसौतिनमैदपटैसी ॥ प्या

रौतिहारियैएडोलसैं विनुपावकाजावककीलपटैसी ॥ अंगनि

तेबिनहींअंगराग सुगंधभाकोरमकीक्षपटैसी ॥ १ ॥ मंजनकै

दृगअंजमदै मृगखंजनकीगतिदेखतभूली ॥ बेनीप्रवीनअभूषन

अंबर औरऊअंगनकैअनुकूलि ॥ राधेकोंआजसिंगारोसखी

न तिलोकाकीकोजतियासमतूली ॥ सोनेकिवेलिसुगंधसमूह

मनोसुश्रुतामनिफूलनफूली ॥ २ ॥ सागसँवारिसिहारिसुवा

रनि बेनीगुहीजुछवानिलींछावै ॥ त्योंपदमाकरयाविधिऔर

ह साजेसिंगारजुसप्राप्तकींभावै ॥ रीझैसखीलखिराधिकाको

रंग जाअंगजोगहनोपहिरावै ॥ होतयोभूपितभूपनगात ज्यों
 डाँकपैजोतिजवाहिरपावै ॥ ३ ॥ प्यारेकोजानिसिलापसखी
 सब सौरभलैउवटेसुखदेनी ॥ केसरिकेजलसोंअङ्गवाय कगी
 छविछायहियोहरिलेनी ॥ भूपनसोंसवभूपितकै रघुनाथदेअं
 जनआखिनपेनी ॥ रीशकौदातसुनादतिजाति रिष्कावतिरी
 क्षियनावतिवेनी ॥ ४ ॥ भूपनजेवजरावनकेवर सुंदरिकेसवअं
 गसँवारे ॥ दीरघसगामनहासुकुमारके वारसेवारवनायसुधा
 रे ॥ कुंकुमसोंरचिकंतकेदन्तनि येखलप्रेलनिहीसेनिनारे ॥
 दर्पनदेखतहीसखिकेकुच कुंभदोजजलजातसोंमारे ॥ ५ ॥

अथ सिजाकरन यथा ॥

वैठेकहैंतबवैठियोपास कहैंउठिजानताजाइयोनीके ॥ सो
 यरहौरघुनाथकहैं संगसोइयोजायकैहीयसोंहीके ॥ पाँयप
 लोटियोकौजियेवाच सुभायसोंदीजेसिलायकैजीके ॥ पैहो
 मझासुखसौखसुनोयह याविधिसोंकरियोवसपीके ॥ १ ॥ वैठ
 ऊगीगुरुलोगनकेदिग वातसमैकौविचारिकहौगी ॥ पीतम
 केजनकीकरिहौ तबतौधनकैधनिहोयरहौगी ॥ गोकुलनाथ
 कोंहापसैराखियो तौसवसौतिमसैनिवहौगी ॥ हौगरुईगरु
 वेगुनकी गरुवापनसोंसनमानलहौगी ॥ २ ॥ आँकतीहौका
 करेखिलगी लगलागिवेकीइहँआखेलनहींफिर ॥ त्योंपदमा
 करतीखेकटाच्छनिकी सरिकोंसरसेलनहींफिर ॥ नैननहीं
 कीषलायलिके घनेषयनकोंकहँतेलनहींफिर ॥ प्रीतपयोनि
 धिमेषँसिकैहँसिकैवादिवाँ हँसीखिलनहींफिर ॥ ३ ॥ वारहीगार
 सदेचिरीआजतू सायकेमूडचढ़ैमतिमौड़ी ॥ आवतजातसैहोय

गौसांभ मटूजसुभाभतरै। छलींझौडी ॥ ऐसेमेभेंटतहीरसखा
 न छैहैंअंखियांबिनकाजभनौडी ॥ एरीवलायल्योलाअगीबा
 ज अबैवृजराजसनेहझौडी ॥ ४ ॥ कुललाजगवांअकैहाष
 बलायल्यो। प्रायअथकौचितारजगी ॥ वहनीकौकहैतीसुखेरह
 री तवतींयहनीतिनिफारजगी ॥ अबतोहहिंजोवनशोभलैआ
 लिस काजकेसाथसिधारजगी ॥ दिनबीतेकछूकहमारीभटू
 येहमारियेबातेविचारजगी ॥ ५ ॥ सुनतीहौकहाभजिजाऊ
 घरें विधिजाजगीमैनकेवाननिसै ॥ यहवंसीनेवाजभरीविष
 सों विषसेाबगरावतिप्राननसै ॥ अबहींसुधिभूलिहौमेरीभटू
 भभरौजनिमोठीसिताननसै ॥ कुलआनिजौआपनीराखौच
 हौ अंगुरीदेरहौदोजकाननसै ॥ ६ ॥ बैठोतहानअजौतजि
 भूलति हें। सुनिआईकहानअनूठी ॥ वैघरहं। ईंवनैघरआलतीं
 साकतींमेरेहियेसलभाठी ॥ बेनीप्रबीनक्यौ बैरकरावतीं प्राव
 तीहैंकछूहायनामठी ॥ बीरकीसोंबिगरैगीधनीवनी जोभटूना
 हकनाहसोंहठी ॥ ७ ॥ बारिहीवैसवडीधतुरीहौ वडेगुनदे
 ववडीयेबनाई ॥ सुंदरिहौसुवरीहौसलोनीहौ सीलभरीरसह
 प्रसनाई ॥ राजबहुरलिराजकुमार अहौसुकुमारिनमानोम
 नाई ॥ नेसुकनाहकेनेहबिना चक्रचूरिहैजैहैसवैचिकनाई
 ॥ ८ ॥ हैनसमैयहछुसिवेकोसुनो भूलभरीसीकछुसतिआ
 मे ॥ आवतसेषमवाकेमडे उमडेयेकहाकरिहैंरतिबाले ॥ गो
 कुलनाथकेसाधविना कटिहैकहौकासुकीकोकतियासे ॥ दूरि
 करौरिसकीबतियांवलि जायछुप्रौपियकीछुतियासे ॥ ९ ॥
 जलबुंदवडीवडोसांवरसै धननैनवियोगीकींदूसतहै ॥ निलिफू

लघुनि कनिर्सीवलकै तमपौनफूकारकै भूसत है ॥ रघुनाथसहा
 यधिनालखिकै अरुमैनदुक्रोमनमूसत है ॥ प्रियप्यारेसोंप्यार
 कीवातेंविसारिकै ऐसीसमैकोऊहसत है । १० ॥

उपालंभ यथा ॥ (उराहनी)

हारिगद्दू सिगरीकन्निकैहज रावरेकीजेहितूसखियाँहैं ॥
 भावमभौनसोंहूसिगयो अवश्रानदहकैजमीपखियाँहैं ॥ गोकु
 लमाहसैसामकरैती भदूँतियवारिबिनाभखियाँहैं ॥ दोषवि
 लोकिवेकींपियके विधिकीनीअनोयेवडीअँखियाँहैं ॥ १ ॥ वै
 ठेरहेपलिकाकेतरे दृगवारिभरेहियरेदुचिताई ॥ भूँल्लिगयेसु
 धिसोयबेकी दुखदीहधरेसुखवीरीनखाई ॥ गोकुलनाथसोंऐ
 सीहहातुम्है लायकहीकरिबोनिठुराई ॥ प्रीतनकीइतनोक
 लपाय कहाफलपायकैरातिविताई ॥ २ ॥ सग्रामहींनैनके
 वामनमारगो मरगौसेपरगौभगसैपियरातुहै ॥ ऐसीकोऊसों
 कोऊनाकरै जसकीनीकिधीरजनानियरातुहै ॥ सेवकतैसईहै
 रिकैफेरि हनैतोवनैतवज्धीजियरातुहै ॥ लोकसैहैकहनाव
 तिया जरौआगकोआलिहीसोंखियरातुहै ॥ ३ ॥ योंककुकी
 नीअचानकचेठ जाओटसखीकेसकीमदुकूलहै ॥ देहकंपैसु
 खपीरीपरी सुकह्योनहींजायजुह्यैगयोसूलहै ॥ माहिँउरोज
 सैआनिलग्ये अंगिरातजहींउचक्रोभुजमूलहै ॥ कौनहैख्या
 लखिलारअनोखे निसंकह्यैऐसेंचलैयतुफूलहै ॥ ४ ॥ सैगई
 माइकेकालिकहँतें कदीसखियाँसंगलैबरजोरी ॥ कीरतिजो
 सुनिपावैकहँ तौकरैनहींरावरीकीरतिथोरी ॥ कौलसेकोम
 लगातमनोहर बेनीप्रवीनसेवातनभोरी ॥ ऐसीनबूझियेनौ

लकिसेर जोबीचगलीबहियाँभक्तकीरी ॥ पू ॥

परिहास यथा ॥ (दिङ्गली)

चालेकेधौसभनैसुकविन्द असौसनआई सुहागलुगाई ॥
 नाइनपाइनजावकदेत करीपरिहासकीयींचतुराई ॥ लालकी
 काननकेसुकताहल लालभररहैयाअरनाई ॥ प्यारीलजाधर
 हीसुखफेर दियोहंसिहेरिसखीनकीघाई ॥ १ ॥ गौनेकेह्योस
 सिंगारसिंगारि असीसतींभागसोहागधनेरी ॥ नाइनपाइन
 जावकदेत पढीपरिहासकीखासपहेरी ॥ बाजिहैकंतकीकंधच
 ढी सुसुवाललजीसजनीहंसिहेरी ॥ सौतिमकोंकरिछारिहैकूं
 जरी अजरीगूंजरीगूंजरीतीरी ॥ २ ॥ गौनेकेह्योससिंगारन
 कों सतिरामसहेतिनकोगनआयो ॥ कंधनकीबिछियापहिरा
 वत प्यारीसखीपरिहासजनायो ॥ पीतमझौनसकीपसदावजै
 योंकहिकैपहिकेपहिरायो ॥ कामिनीकोलचलाहूबेकीं करज
 चोकियोपैचल्योनचलायो ॥ ३ ॥ सोरपखानकोसोरधरपोसि
 र ओढलियोपटपीतनधीनो ॥ कांधरकोकरिखानसखी परि
 हासयोंप्रानपिधारीसोंकीनो ॥ गाढेगहैकुचदोजअचानक दू
 रकियोछरतेपटुकीनो ॥ सीवीकैभावसोंभौहैचटाव अलेजभले
 कहिकैहंसिदीनो ॥ ४ ॥ सांवरेगारेकोआरतेसंग लगैमिलि
 दामिनीकोंधननीको ॥ नीलनिचोलसैगारेसेगात निसाअ
 धियारीभैरूपससीको ॥ हौतुसगारीभलोमिल्योसंग लौ सा
 वरोअंगहैमोहनपीको ॥ योसुनिबेनीजुओठनिअैठि हंसिधु
 जमूलउमेठिसखीको ॥ ५ ॥ भेंटभईहरिभावतीसों एकएसे
 मेअालीकह्योविहंसायकै ॥ कीजैलखारसकेलिअकेलियै के

लिकेभौ ननवेलीकोंपायकै ॥ भैंहैंभ्रमायकच्छूदतराय कच्छूक
रिसायकच्छूमसुकायकै ॥ खेंचिखरीदईदौरिसखीके उरोजन
बीचसरोजफिरायकै ॥ ६ ॥

अथ दूती लक्षण ॥

दोहा ॥ इतकीउतउतकीइतै कहैधनावटवात ॥

रतिउपजावैछलबलनि सोदूतीविख्यात ॥ १ ॥

तत्र उत्तमादूतीलक्षण ॥

दोहा ॥ मधुरेवचनसुनायकै जोतियजनहरिलेत ॥

तासोंउत्तमदृतिका सकलसुकविकृष्टित ॥ २ ॥ यथा ॥

कोहसैरोकिसकैधरतीसे जहाँचहँजायतहँ। छलघोरों ॥

मैबहुपिनीसेवकसग्राम सुमोहिनीसंजनकेसरछोरों ॥ राधि

काकोंकछुतेकछुकै एहिकुंजकेकेलितरंगमैवोनों ॥ राधरेकेअ

नुसासमप्रीति अकासकहँकीतियासनजोरों ॥ १ ॥ गोधन

साधवजावतवाँसुरी गोरजसोंधनसातनभारो ॥ चंदसोआनन

चावचढो बड्डेचखचाहिरैचितहभो ॥ गोकुलयाकुलका

निकीआनिको हेरतहेरिवीराखिवोगारो ॥ लौवनकेसंगआव

तभोर धरेसिरभोरपखौवगवारो ॥ २ ॥ भागभरीसवभातिन

सोंकरौ आजकीरैनकहासुखसानी ॥ गोकुलनाथहौबैठेकहा

गुनोंसाँचीकहीसवमेरीकहानी ॥ लालनिहालकरौतुमकों

चलौकुंजलौतौहरिआनदहानी ॥ चंदमुखीचपलालौचितौ

ति तुहैधनसग्रामसोराधिकारानी ॥ ३ ॥ जोतिषवंतजनेनखते

उवटीवतीपारसकंचनखानी ॥ दासीमहाकविमोहिनीआदि

सुगंधभयोहैप्रसेदकेपानी ॥ कोवरनैजेहँसेवकसग्राम नमोह

मरोगुनिबुद्धिऔबानी ॥ धारनेजापैसबैअमरी सोलुटीकमरी
 परराधिकारानी ॥ ४ ॥ एकतोमानकोअररह्योचहि दूजेतुम्ह
 बिलुसाधनिहारै ॥ तीजेहितबूहिओरकीबूभिके भूठीसहाम
 नबीचविचारै ॥ रावरेकोधुनाथबलायल्यो याडरसोंहमसा
 सनटारै ॥ प्यारीकेईछनतीछनवानहैं धायलदेखतहीकरिछा
 रै ॥ ५ ॥ काहुकेवंकचितैवेकिसंकम लागोकलंकविसैकिन
 बीसौ ॥ बांठकराइनकीअवदेव विरंचिमधीरुधिरावरेजीसौ ॥
 देखैनिजायतुसैहैंतिहारियै आनकरैबुप्रमानललीसौ ॥ ब्रा
 ह्मकीसौबबाकिसौसोहन मोहिगजकिसोगोरसकीसौ ॥ ६ ॥
 सुखचादनीचारुप्रकासनसों वरसाहउजासमदगोईरहै ॥ तन
 कीमृदुमंजुलतालखिके भरिभौनबिलासकदगोईरहै ॥ घनसगो
 अनिकुंजहितयावनकों हियसाहँउछाहवदगोईरहै ॥ बलिबा
 अंगनाप्रगनारंगणों अंगनारंग नामैचदगोईरहै ॥ ७ ॥ जैरा
 वनसेतुमहीषनसगाम बनीवहवेनीप्रवीनत्योसंपा ॥ ऐसीतनी
 कसीवातनकों मनमेरोनहींबवहंहरिकंपा ॥ क्यौंकरजोगों
 निहारोंहहाकरैबीरकीसोंअवहीरविभांपा ॥ आजुहीकैप
 हिरावनचोहत कंठमैमालसनोहरअंपा ॥ ८ ॥ पन्नगमीनक
 पोतचकाचकी बालमरालहकेतेनहेहैं ॥ बिदुअश्रीमुकतापो
 खराज बिसाहिवेकोंअतिनेहनहेहैं ॥ देख्यातुम्हैजवसोंतबसों
 उनकेढंगयेरधुनाथलहेहैं ॥ रोजतमासेकोंजाततितै जितैओ
 जसोंफलिसरोजरहेहैं ॥ ९ ॥ दासीहैंअवलिरादरेकी यहमे
 रोकहीहैसहीमतिलूनो ॥ पेखियेआंजुकलानिधिकों केहिभा
 तिकलाधरिकैभयोदूगो ॥ गोकुलकैसीसुधावरसै सरसैसुख

मालहिसारदोपूनो ॥ देखियेताचक्षिभावतीके सुखतेंससि
 आजसोहीतनाजनो ॥ १० ॥ केसरिरंगकेअंगकीवास वसीर
 हैपायसेपासघनेरी ॥ चित्रमईछितिभीतिसवै रघनाथलसैप्र
 तिथिवनिघेरी ॥ प्यारीकेरूपअनूपकीअौर कहलौं। कहैं। महि
 सावज्जतेरी ॥ आननचंद्रकीफैलीअमंद रहैघरमेदिनरातिउं
 जेरी ॥ ११ ॥ जाछनतेंसुसुकराघटई चखषंषजकोरछवीतीति
 यामै ॥ छोहीछरीसीपरीतवतें निवरीसीदनोजखरीकतिया
 सै ॥ बेनीजेजाइवेजैयेजहरताज। निजनार्इहितवतियासै का
 कसरैगीनजौलोवनी सुसकराअसीकीनमीछतियासै ॥ १२ ॥

अथ मध्यमादृतिका लक्षण ॥

दोहा ॥ ककुसकुसथरेकछुपदप कहैवचनजोवास ॥

सुकधिसदांताकोकहै मध्यमदूतीनाम ॥ १ ॥ यथा

भूमिपैपावधरैकवहंनहिँ सूरजदेखिसकैनहींजाकों ॥

मानसकीचरचाकाचलाइये चंद्रचितैनसकैपुनियाकों ॥ अं
 चकक्षांकिफरोखनसै असवंतविलोकतताकीप्रभाकों ॥ लाजं

कहोकेहिँभातिकझाई हवालहवालोंनजानतजाकों ॥ १ ॥

अवहीवृषभानकोमानवट्टी अनुमानजंसीनहींजाचङ्गी ॥

कटिलाडिलीदेतिदेखाईनहीं सेवकाईविनाकिसिराचङ्गी ॥

बरसानहैधीरधरोउरवा पुरवाकोसरूपसवाचङ्गी ॥ धनस्रा

सतुहैविजुरीसीमित्ताय मयूरनिह्वै करिनाचङ्गी ॥ २ ॥

घेरिहीलाइसखीनलैसंग पैभलीमनोवगुलीनमैहंसी ॥ तादि

नताकछुघातचलीन सुवातनबेनीप्रवीनप्रसंसी ॥ धीरधरोजू

गंभीरवड़ेतुम हौजदुवंसिनमैकोजअंसी ॥ लागियैचाहतमीन

सौचंचल रावरेकोहैं। भईहरिवंसी ॥ ३ ॥ करपायनकीछवि
जाकीलखें छविजातिहैअंजअदागनतें ॥ कहिजातिकछूनक
लाधरतें मुखपैदुतिदूनीसुहागनतें ॥ हंसिमोहैहियोहनुमा
नलला सुठिसेहैभरीअनुरागनतें ॥ कलनाविधिकीसवियाँहैं
मनी ललनातुमकींसिलीभागनतें ॥ ४ ॥

अथ अधसादूतिकालक्षण ॥

दोहा ॥ परुषवचनकहिदूनपन जोतियकरैहमेस ॥

तासोंअधसादूतिका कहतसबैकविवेस ॥ १ ॥

अधसादूती यथा ॥

आखिनकीपुतरीकरेराखति सायबहौअतिलाजलपेटी ॥
वैसनवेलीहैबेनीप्रबीन नआजुलोंमैकहूंपौरिपैभेटी ॥ पैजक
कंगीतिहारेलिये सुनोनीलकिसोरहोंरावरीचेटी ॥ हैदुल
कीबड़ेभूपअनूप बड़ेतेबड़ेबृषभानकीबेटी ॥ १ ॥ बारबड़ेअ
वड़ीअखियाँ मुखचंदअमीसुसक्रानसोंभारो ॥ पीनउरोजस
रोजसेपायहैं पातरोलंकनितंबघनारो ॥ गोकुलनाथविलोकि
हठे मिलिवेकींसुनोयहकामहमारो ॥ जातिहैंमैससुभायक
हैं। गी नआयहैतीकछूमेरोनचारो ॥ २ ॥ अँठीसिजातितूह
पगहरमै मूरमैहानितोहैनहींतिरे ॥ वेजहैंसुंदरसावरेलाल
रहैंवृजवालचहूंदिसिधेरे ॥ बेनीसबैबनिआवतियासमै ताम
नआवतिहैयहमेरे ॥ दूनीबढ़ैगीददाकीसोंदीपति देहमैनेस
कहीहरिहेरे ॥ ३ ॥ ऐहैनफोरिगईजोनिसा तनजोवनहैघन
कीपरछाँहीं ॥ त्योंपदमाकरकपौंनमिलैउठि थोंनिवहैगान
नेहसदाँहीं ॥ कौनसथानजोकाहूसुजानसों ठानिगुमानर

हीमनमाहीं ॥ एकजोकांजकलीनखिलीती कहाकहूँभारकी
 ठौरहैनाहीं ॥४॥ कोकहिवालगुपालहिबोधहि तादृगवानअ
 मानलगरी ॥ ताहितप्यारीभयेवदनाम अरामविसारदिघेर
 करी ॥ ठाकुरतूनतजपिधली इतनेपरत्तालनवारधनेरी ॥ प्रीत
 सकीसुअईगतिआ छतियाकसकीनकसाहनतेरी ॥ ५ ॥ रूपअ
 नूपदयोदर्इतोहिती मानक्रियेनसयानकहावै ॥ औरसुनोयह
 रूपजवाहिर भांगबड़ेविरलैकोजपावै ॥ ठाकुरसूमकेजातन
 कोज उदारसुनेसबहीउठिधावै ॥ हीजैदिखायदयाकरिकै
 फिरिजोचलिदूरतेदेखनआवै ॥ ६ ॥ सुनिनीकोननेहलगाव
 नोहै फिरिजोपैलगैतोनिवाहनोहै ॥ अतिओखीहैप्रीतकीरी
 तिअरी नहिँजोसकोरोससुहावनोहै ॥ चलिचंदमुखीब्रजचं
 दमिलौ तुसकोँहमैकासमुधावनोहै ॥ दिनचारकोरूपयापा
 ऊनोहै फिरतोपैरहैगोउराहनोहै ॥ ७ ॥ मारमरोरसीडा
 रीखरीतेहिँ हूँकागिक्रौं नजियावतआनिहौ ॥ वाकोतोज्यो
 तुमहींतेवँध्यो तुमपैनहींछेइतआपनीवानिहौ ॥ मैतोकहा
 ईचहैसमुधाय कहाकरिहोकोकहेँबुरोमानिहौ ॥ जानोक
 हातुमपीरअहीर वड़ेकपटीचतुराईकीखानिहौ ॥ ८ ॥

अथ दूतीकाज कथन ॥

दोहा ॥ है दूतीकेकाजये कविजनकहेवखानि ॥

विरहनिवेदनएकपुनि संघट्टनजियजानि ॥ १ ॥

तत्र विरहनिवेदन लक्षण ॥

विरहविकलतादृजनकी कहतपरसपरजौन ॥

विरहनिवेदनताहिँसी कहतसवैमतिभौन ॥ २ ॥

यथा ॥ सेजपरीहैघरीसीभरै तनतापसोंजातकुवोनदई
 है ॥ डोलनिबोलतिहेनकछू दृगखालिवेकीसुधिभूलिगईहै ॥
 गोकुलजातिघुटीअंसुवानिसों लीकलिखीसीबिलोकिलईहै ॥
 बालकीलालदसासनिये वहवारिविहीनकीमीनभईहै ॥ १ ॥
 अज्दीजैनकप्रोरतिदानउल्लै तुमदानीसुनेबहुदातनसै ॥ वह
 मानैगीकरीएजनीसमुखी करोवीसबहानेजोबातनिमै ॥ बिन
 देखेदिनेसतम्है हरिवाके वहीविरहानलगातनिमै ॥ भईआत
 परेतकीमीनमनो दिनरैनपुरैनिकेपातनसै ॥ २ ॥ प्रथमैबि
 कसेवनवैरीवसंतके वातनतेंसुरभाईहुती ॥ द्विजदेवजूताहूपै
 देहसबै विरहानलज्वालजराईहुती ॥ यहसावरेरावरेनेहन
 सों अंगप्यारीनजोसरसाईहुती ॥ तीपैदीपसिखासीनईदुल
 ही अवलौकवकीनबुझाईहुती ॥ ३ ॥ दूबरोहीबोषोदोसस
 हा जगसैपरसिद्धसोबातरचीहै ॥ मोहितोजानिपरैहैजहागु
 न मानोहियेयहजानोसचीहै ॥ रावरेकेबिछुरेरघुनाथ बड़े
 विरहासोंजोदेहपचीहै ॥ हेरेनपावतिघरेहैआजलों कालके
 हाथसोंबालवचीहै ॥ ४ ॥ काहैकोंकाहूकोंआपनेसगल सने
 हकीज्वालनमैजरिवेहै ॥ पैयहप्रेक्षकोपंथअपार परैपरगोमी
 चबिनासरिवेहै ॥ सोभजमोहनमोहनमोहनी मोहिहैकाहू
 कहाकरिवेहै ॥ केहूँछपाकेकटाच्छनसों विरहातुरताकीव्य
 थाहरिवेहै ॥ ५ ॥ आएकहाकहिकैकहिये वृषभानललीतै
 ललादृगजेरत ॥ ताकिनतैअंसुवानकेधारनि तीरतजद्यपि
 लोकनिहीरत ॥ बेगिचलीरसखानवलावलयों कपीअभिमा
 नतेभौहमरोरत ॥ प्यारेदुरंदरहोहिनप्यारी अबैपलआधि

कमैवृजवोरत ॥ ६ ॥ प्रानप्रियाअंसुवानकेनीर पनारेभएव ह
 कैभएनारे ॥ नारेभएतेभईनदियाँ नादियाँनदह्वै गएकाटिक
 रारे ॥ वेगिचलौजूचलौत्रजकों नदनंदनघाहतचेतहसारे ॥
 वैनदचाहतसिंधुभए अवसिंधुतेंह्वै हैजलाहलसारे ॥ ७ ॥
 आयुनकेविळुरेसनमोहन वीतीअवैधरीएककीद्वै है ॥ ऐसीद
 साइतनेमैभई रघुनाथसुनेभयतेसनभू है ॥ लाङ्गलीकेअंसु
 वानिकेसागर वाढतजातमनोनभळू है ॥ वातकहाकहियेवृ
 जकी अवबूडोईह्वै हैकिबूडतह्वै है ॥ ८ ॥

अथ संघट्टन लक्षण ॥

दोहा ॥ सधुरवचनकहिजुक्तिसों जोदुहुँदेवमिलाय ॥

संघट्टनतासोंकहै सुकविनकेसमुदाय ॥ १ ॥

यथा ॥ मेघजहाँतहाँटासिनिहै अरुदीपजहाँतहाँजेति
 हैभाते ॥ केसजहाँतहाँमागसुवेसहै हैगिरिगेरुतहाँरंगरा
 तें ॥ मोहनसोंमिलिवेकींवलायलथीं मरघुनाथकहाँहठया
 तें ॥ हातनयेनहीं आयोचल्यो रंगसाँवरेगेरेकोसंगसदाते ॥
 १ ॥ वेउतनागरनंदकुमारऔ तूहूँ इतैवृषभानललीहै ॥ जो
 रीवनीहैदुहूँ कीअपूरव पूरवपुन्यकीबेलफलीहै ॥ जोवतहैक
 वकेभगठाढे अकेलेजहाँवहकुंजथलीहै ॥ वेगिनजातलजात
 कहा यहजातिजोझाईकिरातिचलीहै ॥ २ ॥ लेङ्गजूलप्राई
 सुगेहतिहारे परेजेहिँनेहसनेहखरेमै ॥ भेटोभुजाभरिभेटो
 व्यथानि समेटोजुतोसुभसाधभरेमै ॥ संभुज्योंआधेहीअंगलगा
 ओ इषाओकिश्रीपतिज्योंहियरेमै ॥ दासभरीरसकेलिसके
 लिये आनद्वेलिसीमेतिगरेमै ॥ ३ ॥ लेङ्गललीउठिलाईहीं

लालन लोकाकीलाजङ्गसोंतरिराखा ॥ फेरिइह सपनेहंनपे
 यत लैअपनेउरमैधरिराखा ॥ देवललानवलाअवलायह चंद्र
 कलाकटुलाकरिराखा ॥ आठहंसिद्धिनवोनिधिलै धरबाह
 रभीतरहभरिराखा ॥ ४ ॥

अथ दूतीजातिकथन ॥

दोहा ॥ सखिधार्ददासीवज्जरि रजकादिककीनारि ॥
 संन्यासिनिसुपरोसिनी अरुसित्पनीविचारि ॥ १ ॥
 दरजिनिमालिनवारिनौ नाइनगुनगनपीन ॥
 दूतपनेमैऔरह हीतीतियाप्रवीन ॥ २ ॥
 यातेइनकेकहतहैं उटाहरनइहिंठौर ॥
 जानतहैंपढिरीभिक्षे जेररुज्जसिरमौर ॥ ३ ॥

तत्र सखी दूती यथा ॥

कारेमहाअनियारेअमोलहैं कौलजिहलखिलागतफी
 के ॥ बादिहीवाकेकहीतुमजाय हमारेतौराखनहारहैंजीके ॥
 आरसीलैतुमदोजएकंतहू देखतकप्रौ नधोंकौनकेनीके ॥ ऐ
 सेकहावडेनैतिहारेहैं जैसेबडेहैंहमारीसखीके ॥ १ ॥

अथ धार्ददूती यथा ॥

आजहैंराखौंगीस्वायउह रघुनाथकपानिसिमेरेकरौगे ॥
 मैउठिजाउंगीछोड़िकैपास जगायकैसेजपैपायधरौगे ॥ धाय
 हींदेतिभुभायकहे कछुभौहचढायलखिनडरौगे ॥ लाजभरीहै
 सकैगीनबोलि निसंकनबेलीकोंअंकभरौगे ॥ १ ॥ एकधरीन
 जुदीहैसकै रघुनाथधिरीगुरुलोगकीफंदसों ॥ आईसोआपने
 गिहलिवाय तिहारेलियेबसकैवज्जकंदसों ॥ बैठेकहाइतकीजैव

लायल्लो बेगिउतैचलिभीजोअनंदसों ॥ प्यारीकोअननपून्यो
 कोचंद विराजतदोऊप्रकासअनंदसों ॥ २ ॥ एकहीसेजपैरा
 विक्रामाधवै धायलैसोईसुभायसलोने ॥ पारैसहाकविकाङ्ग
 कोमध्यमे प्यारीकह्योयहवातनाहाने ॥ हैहैंनसावरीसावरे
 केसंग वावरीतोहिसिखाईहैकीने ॥ सेनेकोरंगकसौटीलगै
 पैकसौटीकोरंगलगनहींसेने ॥ ३ ॥ यैठीजतीवृषभानलली
 धरधायकेछायरहीतरुनाई ॥ गोकुलनाथअचानकआय गएअ
 खियाँनकेअनददाई ॥ चाहिरहेललचायदोऊ लखिवोलिउ
 ठीयोंलएनिठराई ॥ स्नानछोड़िकैआइयोधाम हींकाइकेआ
 यततैरीदुहाई ॥ ४ ॥

अथ दासीदूती यथा ॥

नैनकेकोरनहमैरुखाई सुभौंहमरोरनिकोंलहिवोकरै ॥
 पाँयअंगूठनकोंगुलचाइवो ऊँचेउरोजनमैसहिवोकरै ॥ आइ
 कैफेरहहाकरिकै करपंकजसोंतरवासहिवोकरै ॥ कोटिनका
 मकथाजसवंत सुपाँयपखोटनमैकहिवोकरै ॥ १ ॥ लागुनदेव
 सुनेजवतें तवतेंसुधियोँनउङ्गैउरकीहै ॥ पीरनहींपह्निचानत
 लाग वखानतवैद्विषाजुरकीहै ॥ लोमचढीप्रतिमोहनकीम
 ति मोहमहागिरितेंदुरकीहै ॥ थोरियैवैसविधोरीभट्ट वृजभो
 रीसीवातनतैभुरकीहै ॥ २ ॥ ताहीसोंराखतिप्यारवडो कछु
 रावरियैचरचाजोचलावै ॥ काँपतिदेँहकटीलीह्वै आवति को
 उतिहारोजोनामसुनावै ॥ रैनदिनाङ्गलसीसीरहै ठकुराइ
 निकोंकछूऔरनाभावै ॥ सोईकथाकहवोवतीजामै कछमजकू
 रतिहारोईआवै ॥ ३ ॥ सोनजुहीकौह्वै जातिहैलाल वनाइकै

सालकित्तीपहिराइये ॥ मोतीकेभूषणभूषियेजे पोखराकफेती
 सिगरेकहिगाइये ॥ जोवनआवतलालीसरीरमे हेरघुनाथक
 हाँलोंबताइये ॥ खौरिलगाइयेचंद्रनकी अँगकेसँगकेसरिको
 रँगपाइये ॥ ४ ॥ आजककृष्णखिरकीसोंसुनो हिरकीमुखजेति
 गलीनमैवाढी ॥ गोकुलनाथपिलोकिलईछवि तादिनतेविर
 छागिनिडाही ॥ दासीबिचारिकैरावरेकी यहमोसोंबिनैकी
 परंपराकाढी ॥ वाहीकरोखिकेपासकपाकरि कैकबहंफिरि
 हाहिँगींठाढी ॥ ५ ॥ कातिकीपून्योकोदेखीकलिंदीपै पै
 झिबेकोजवमैपटदीक्रे ॥ घूंघटकेउधरेतवचारु प्रकासकला
 निधिसोमुखकीक्रे ॥ तादिनतेककुऐसीदसा मगमेरघुनाथ
 मिलेमोहिचीक्रे ॥ नावँतिहारोलैसोंहदिवाय कहैँफिरिस्था
 यअझबैकेलीक्रे ॥ ६ ॥ धीरजनेकुधरोउरमै करिहैंमैसाई
 मिलिहैषहजाते ॥ हैतोसटाँसंगहीमैरहैं कहिदेहैंबुभाय
 सबककुनाते ॥ सोयहैसेजजवैहरिचंद्रजू चाँपिहैंपाँयँलगाय
 कैघाते ॥ आजहौरातिकहानिनकेमिसि भाखिहैंरावरेप्रेम
 कीघाते ॥ ७ ॥ आदितसोमकहौकबहं कबहं कहौमंगलऔ
 बुधहीते ॥ औगुरुशुक्रसनीचरको कहिबोकबहं सुखसोंनहीं
 रीते ॥ मोहिनजानिपरैरघुनाथहि भेटकोहैदिनकोनसोचीते
 आवतजातमैहारिपरी तुम्हैवारवनावतवासरबीते ॥ ८ ॥

अथ धोविनदूती यथा ॥

तुमसोंलैचलीनहकेमगमै हठिवूकप्रोसुगंधकेकारनकों ॥
 सुकह्योउरअंचलराविकाके लियेजातिहैंधोयसुधारनकों ॥
 सेवकानेबिकानेसकानेसुने लपटानेलगेनिरवारनकों ॥ पट

रावरे स्वेदके भीजे भजे हरिलै गे गुलाव उतार मकों ॥ १ ॥ लाई
 हों धोय महुं कै तिहारीसों मोहि मनोत मछाडु गयो है ॥ वाटते
 घाटलों कालिंदीके भंवरानको पुंजस ताडु गयो है ॥ हँडरपौक
 पौवेनी प्रबीन बिलोकत मोटिग आडु गयो है ॥ प्यारीदू कूलमको
 फलरावरे साँवरो एकवताडु गयो है ॥ २ ॥ तीरकलिंदीके हों
 उतसंभु सुखावत हीपटधोय वगारगौ ॥ तूवतरातिऊतीसखि
 यानिसों आनकहूँति उहोंपगुधारगौ ॥ आँषकतूँहँसिआनन
 फोरि बड़ेवड़ेनैननितानिनिहारगौ ॥ काहूँअचेतपरगोकहँरे
 सखी वादिनकी मसकानिको मरगौ ॥ ३ ॥ देतीहौधोइवेकोत
 बहीं फिरिमागतीहौकरिभौहँतनेनी ॥ ह्वाँतौवैवीचहींलेहिँ
 कुड़ाय सुगंधनरीक्षिहँसृगनेनी ॥ धोयतौदेँहँजोधोवमपाँ
 ऊँ लखीउनकीमैबिलोकनिपैनी ॥ राखतलैलगायहियेँ क
 वहँअंगियाकवहँउपरैनी ॥ ४ ॥ मैलोकेडारतपीतपटै वरजा
 ननापैयेवुलावनीधावत ॥ लालहँमैलोहँजातसदाँ अरीवार
 हीवारसनेहलगावत ॥ औरनसोंवरुलीजैधुवाच हँमैनृपसंभुज
 धोयनाआवत ॥ तूँकलपावतसाँवरेरंगनि साँवरोरंगनहींक
 लपावत ॥ ५ ॥

अथ सन्यासिनीदूती यथा ॥

आवतहीउठिआदरकै सिगरींमिलीदौरिकैसिद्धिनिआई ॥
 काहूँकेगातमैहाथदियोपढ़ि काहूँकेमाथविभूतिलगाई ॥ वै
 ठिगईमृगछालाबिछायकै राधिकैआपनेपासवुलाई ॥ अँन
 समीपहँगोदमैराखि गुसाँईनिगोसेकीवातसुनाई ॥ १ ॥ सि
 द्धिकोधरिभेप्रगई व्रषभानकेभौनजहाँसवगाती ॥ काहूँके

हाथदयोतुलसीदल काहूकेलायविभूतिलगाती ॥ पीतमरा
 धिकैनीरेबुलाइके भीदभैराखिकरीनिजवाती ॥ गोसेकछूक
 हिवांधिगईगर जंतरकोमिसकाङ्गकीपाती ॥ २ ॥ काङ्गहींचे
 रीवनायकसंभु गईप्रभानकेभौनगोसांइनि ॥ यासुनिकैजुरि
 आंईसवै अरुडारीसहेलिनिराधिकापांइनि ॥ लायलिलार
 विभूतिकहीइमि हींरचिवीकछुऐसीउपाइनि ॥ याहएकंत
 लैमंजपै यइहीयसवैवजकीठकुराइनि ॥ ३ ॥ लोचनलाख
 कियेमृगछाल विभूतिविसालखसैजटाभूरे ॥ पूछनलागीतप
 स्विनिजानि गहेपगअनितियागनछरे ॥ बेनीप्रबीमजराधि
 कासोंकझो आवैकुटीमैजुतंगजधरे ॥ छैहैकलेससवैतनके
 नकेचहेहैहैममोरथपूरे ॥ ४ ॥ अरीहैफेरीगलीवरसानेमैदू
 सरेद्योसकोनेमगह्योहै ॥ तातेहोंचाहतिजानउतै सुभलोय
 हआंसरआजुलह्योहै ॥ ठाढ़ेहैनेकुसुनोमनमोहन बोभह
 भैरघुनाथरह्योहै ॥ जाकोक्रियोतनछामचितैपल सोवहिंवा
 सप्रनासकह्योहै ॥ ५ ॥ होंप्रभानपुराकीनिवासिनी अरीरहै
 वजवीयेनभांवरी ॥ एकसंदेसोकहैंतुमतें तुमभूलियोनाइहि
 मंनलोंसावरी ॥ जोहरिचंदजूकुंजनमैमिली जाहिकरीलखि
 कैतुनवांवरौ ॥ वृक्षीहैवानैछपाकरिकै कहियेपरसोंकवहोय
 गीरावरी ॥ ६ ॥

अथ परोसिनीदूती यथा ॥

चोपतिहारीहोंजानतीहैं रघुनाथचुभीचितवीचसुनी
 जो ॥ तातेहोंदेतिमिलायतुहै परअरीकहीमैसहीमनदीजो ॥
 वासपरोसबड़ेमिसवासको जातेकुनावकड़ेसोनकीजो ॥ ना

रिजवेलोहैवातनसों वसकैपहिलेउनकोरसलीनो ॥ १ ॥ न्यौ
 तेगईजवतेनदगाँउँ चुनाउँभयोसवकोरुचतीहौ ॥ रूपसुसील
 तावेनीप्रवीन सराहिसिलीसवसोंउचितीहौ ॥ मोहिनीसीत
 मछारिप्ररोसिनि आपुनमोहिरहौसुचितीहौ ॥ आवतिगेह
 विदेहभईमनौ ऐसीकछुजकूहादुचितीहौ ॥ २ ॥ आईइतैसु
 सुक्यायचितै वरभेरोसुधाकेससहससोवति ॥ रावरीवातेजो
 कोजकहैतौ लगायटकौसुहवाहीकोजोवति ॥ देखीवहौतौर
 हौकहूँवैठि सुजागतहोसिगरीनिसिखावति ॥ रोसप्ररोसि
 नीकैपियसों दिनद्वैकतेसंगहमारैईसोवति ॥ ३ ॥

अथ सिलिनीदूती यथा ॥

रंभासुकेसीकीमैनकाकी रतिकीअतिछुपधरीरहीआगे ॥
 वेनीप्रवीनतिलोत्तमाकी नरमाकीविलोकिललाअनुरागे ॥
 देखतराधिकेतातसवीरहि वीरकीसोंजनुसोवतजागे ॥ वार
 हिवारनिछावरिहै हरि भरेदोजकरचूसनलागे ॥ १ ॥ ताहि
 धौदेखिगएकितहै तवतेउनकोकछुऔरनाभावत ॥ मोघर
 आवलटूहै लला सवआपहीवैठिकैरंगवनावत ॥ चित्रविचित्र
 वनायहै।देतिहैं। पैउनकेमनएकोनभावत ॥ हायदैलेखनी
 खायहहा हरितेरिहीसूरतिभेपैलिखावत ॥ २ ॥ पाँइभँवा
 वतिफलनसोंरची नासिकासैसिसिकीनकीवैजें ॥ सेवकभौर
 भुकेचङ्ग और चकेचकजसुदीकंजकीफौजें ॥ राधिकेसूरति
 रावरीकीलिखि ल्याईसरंगभरीवङ्गचौजें ॥ तासोंनजानीक
 हाधौमिलै मगसाँवरेदेखिदईमनसौजें ॥ ३ ॥ मोहिलगौतुम
 प्यारेमहा मैतुम्हैरवुनाथलखिसुखपाँऊँ ॥ मेरेपैकीजैकपाक

छू आजतौ आप कींमैहं हितूनमैगाऊं ॥ नावसुन्योजेहिकोक
 हिये पहिलेतेहिंकोलिखिचित्रलैआज ॥ देखिकैरीभौतौआ
 सरपायकै लालतुम्हैवहवाल्मिलाऊं ॥ ४ ॥ बेलिरीबेलि
 लगीअबहींजक पौरिहूंलैंउठिजाननादीङ्गे ॥ मेरेहिजानभ
 ईउलटीवस हैतुमहींकहिबेकळकीङ्गे ॥ जेपैइतादुखपावती
 हौ तलफैंदगभीनमनोजलभीने ॥ तौकतछाड़तिहौछिनएक
 रहैंकिनचित्रज्योंहायहीलीङ्गे ॥ ५ ॥

अथ दरजिनदूती यथा ॥

आपुदई तनीटांकिबेकीं हरिभोरहीआयगएधैंकहाँते ॥
 कौनकीआंगीहैमोतेकही सुनिरावरेकीहठिलीङ्गीहहाते ॥
 गोकुलफूलिपसीजिउठे बड़ीवारलोंलायरहेहियराते ॥ भींजि
 गईहीसुखावतमोहि अवारभई ठकुराइनियाते ॥ १ ॥ आधि
 कसिइ करीहीकिएतेमै आयगएधैंकहाँतेकळाई ॥ कौनकी
 आंगीहैमोतेकही मैउळैसहजेहीतिहारीबताई ॥ छीनलई
 करतेरघुनाथ मैसोरकियोकितनीअनखाई ॥ छातीसोंलाघ
 वैलेगएवाहिन दैगएआजतौसीकैलैआई ॥ २ ॥ चातुरहै
 अतिआतुरहोऊन बातसघानकीजातकपौचूके ॥ ऐसेअठान
 नठानतहौ कतधीरधरौनपरौठिगढूके ॥ देखिजियोनकुवाध
 नआनद कींवरेअंगसुजानबधूके ॥ चोलीचुनावटिचिङ्गचुभैं च
 पिहातउजागरचिङ्गबुतूके ॥ ३ ॥

अथ मालिनदूती यथा ॥

फौलोसुगंधरहैचऊँवा अलिपुंजधिरीमनिमालजुहीसी ॥
 फूलभरीअंगपूरोपराग परैरसहूपकीचारुफुहीसी ॥ गोकुल

ऐसी करी है तयार मैं कै चतुरापन चावछु ही सी ॥ देखिये तो च
 लिवाग मैं लालन कै सी लसैव हसोन जु ही सी ॥ १ ॥ मेहँटी के
 मिसगँव के वाहर आलिन आपने वाग मेल्याई ॥ गोकुलनाथ
 जू आयगए चलि देख दुह्न सहा निधि पाई ॥ या विधिवे ललि उठी
 लखिये यह कै सी बनी है वनी फूलवाई ॥ लप्रावति हैं फल फूल
 तुम्है तव लीं करि लेऊ जूने हनि छाई ॥ २ ॥ पूजन जो हरि वास
 रचाहती वनी प्रवीन क्रिये रहौ आसा ॥ आई वतावन हों तुम्है
 राधिके लीजिये जानिन कीजिये सासा ॥ साँझ ही पाइ ही मेरी म
 टू मिलि है न ही जोर विके परगासा ॥ कालिंटी के तट जँचे करा
 ल करी लकदं वत हँ पिय वासा ॥ ३ ॥ हार सँवारि अनेक नफू
 लके आई लै मालिनि भीन भरे मै ॥ काँझकों खेत दियो उँहि
 काँझकों पीरो दियो रघु नाथ अरे मै ॥ नीरज नील की लै कर मैं
 कह प्रौराधे सों यों चतुराई धरे मै ॥ लीजिये हेत ति हारे मै ल्याई
 हँ धारंग को लगे धारो गरे मै ॥ ४ ॥ आई है साँझी कों तोरन
 फूल तुरावति ठाढ़ी सखी छविरासते ॥ वेगिउतै चलि देख्यो व
 लाय लयो हेरघु नाथ लन्यो मन जासते ॥ औरन की ल गिभीर र
 ही अरु भीर चकोरन की जिहिँ आसते ॥ और वाग के सो भित
 होति है मालती वासते धारी प्रकासते ॥ ५ ॥ मलिका वलि
 काह मजानै रचै कलिका फल फूल जु हाँवती है ॥ नखते सिख
 लौ उनके गुन की गुनि वैस की वात वतावती है ॥ जेहिँ री भूमै से
 वकराधे इहाँ मनि माल की मीजनि पावती है ॥ गहने तुम्है मील
 सिरी के सुंधे हरि जी के गुंधे पहिरावती है ॥ ६ ॥ कवहँ सुचि
 दीपक ली सी लगे कथहूँ वरचंपकना लन दीनी ॥ और नमै सब

सौहृकरै पुनि नैननकंजनकीछबिछीनी ॥ ओठनिछावरिविदु
 महैजु चतुर्भुजयाउपमालखिलीनी ॥ केसरि तौरुचियांचनरं
 ग सिंगारकेरूपकीमंजरीकीनी ॥ ७ ॥ नंदकुमारगुलावकीफू
 लदियोमोहिणजूलग्योनिजवागे ॥ प्यारीकेरंगमित्तैअंगअंग
 मिलै नहिंप्रेमजूक्योंसमलागे ॥ योंतरुनाईकीआनिछईअरना
 ईअपूरबजोतिकेआगे ॥ तावरहीनहींनेकुदबीहै गुलावकीआ
 वगुराईकेआगे ॥ ८ ॥ चौसरचारुचमेलीकेफूलको मैबज्जभां
 तिसंबारिकेआनो ॥ सोपहिरप्रोगुनगौरिधुरंधर कंचनसेतन
 मैमनमानो ॥ छैगयोसोनजुहीकोसोहार सुअंगकेरंगसैभेद
 नाजानो ॥ दंतनकीदुतिकेपरतै वहफेरिचमेलियैकोठहरा
 नो ॥ ९ ॥ बेलिहरीभईफूलनिशों चुरैचारुचमेलिनकीछवि
 वारी ॥ बावरेखंजनकीरकपोत मधूरमलीनतेपंखपसारी ॥
 मालिनिकीथाबिनैगुनिकै लछिरामकरौकिनआनदभारी ॥
 सींचनवारेसुनोधनसप्राप्त सनेहमईसुरभातिहैवारी ॥ १० ॥
 इतफूलनकोबिनिबोठहराय लिवायलैदूतीमिलायदई ॥ नद
 लालनिहारिनिहालभए वरचंपकमालसीबालनई ॥ करतेछु
 टिभागीदुरीपगद्वै बलिपैनचलीकछुचातुरई ॥ हरिहेरेनपा
 वतिभावतीसंभु कुसुंभकेखेतहेरायगई ॥ ११ ॥

अथ नाइनदूतीयथा ॥

रोधिकाकेपरवालसेहाथन लालरहीधिरिलाललोनाई ॥
 देखतहीबनिआवतताहि कहाकरियेकविसंभुवड़ाई ॥ लाली
 लसैअंगुरीनकेबीच तहानखचंदनकीछबिछाई ॥ कोपनकीअ
 रुनाईसेआनि मिलीमनोबीचहिबीचजुझाई ॥ १ ॥ एडिनमी

डिपखारिटोऊपग जावकरंगरंगेसनमाने ॥ वेनीप्रवीनरचेसु
 चिकेस सुगंधकपोलनलौकरअने ॥ वावरीसीमईगीभिसखी
 लखिएसेकछूचतुरापनठाने ॥ मेरोईरूपधगौसनमेहन तेरी
 सोंराधिकेतूनहींजाने ॥ २ ॥ गैलवहैउनहींकीचली वड़ीवेर
 लौवातनहींविरसावत ॥ तूधनिहैधनियोंकहिके गहिकेकरमे
 रेहियेसैलगावत ॥ मेरियैकांगहीमोहिपैलै सिरमेरेहीकेति
 कौथौतवतावत ॥ आयेचहैंजवहीइतहै तववेनीवनावन
 मोहिसिखावत ॥ ३ ॥ केसरिसोंपहिलेउवटोअंग रंगलसगो
 जिमिचंपकलीहै ॥ फेरिगुलावकेगीरङ्गवाय पिङ्गाईजोसारी
 सुगंधरलीहै ॥ नाइनियाचतुराइनिसों रघुनाथकरीवसगोप
 ललीहै ॥ पारतपाटीकह्यौककियों वृजराजतेंआजमितौतौ
 भलीहै ॥ ४ ॥ मोहनकीछविचातुरीचोप सुनायकरीवसवेनी
 बनावति ॥ गोकुलनाथकेअंगकेरंगसों नीलनिचेलकछगोप
 हिरावति ॥ लालकामालभरैतौभली रंगऐसोकछूअंगुरीनपें
 छावति ॥ चोपचढीठकुराइनिसोंकही नाइनियाइनजावकला
 वति ॥ ५ ॥

अथ चुरिहेरिनदूती यथा ॥

वारहतेहैमिहींजसवन्त मिलावटहूपैपरैकविछूटी ॥ मो
 हिहैमोहनकोंकरमेपरि पूरनकेकरिहेरसलूटी ॥ ऐसिहीला
 गिहैनीकीवधू बलिजैहैंसवैप्रजकीयेवधूटी ॥ जैसीसुहावनला
 गतहेरि हरौचुरियानसैहेमकीवूटी ॥ १ ॥ तैसिहीलाईहरेरं
 गकी अंगकीदुतिपन्ननकीजुहँसैहै ॥ तैसिहीजदीउदैहैरही
 वंदवैगनीमैकहौकसैलसैहै ॥ वेनीप्रवीनजूतैसीसवै पहिराव

तमेकहिबैनरसैहै ॥ चुरीयेसग्रामसदाँपहिरो चुनिजानतहौ
 मनसग्रामवसैहै ॥ २ ॥ रीभिरहौगेललाकखिकै सिगरोतन
 सूकमतौलछमासे ॥ नाहींनहींनजकैससकै सुनचैकरदेहँध
 रेसुखमासे ॥ वेदगदीरबदोजमहा चतुराईनिकाईकीजारेज
 मासे ॥ जातकहेनकरैबहष्यारी चुरीपहिरावतजैसेतमासे ॥
 ३ ॥ जाकेभिलापकींसाचतहौ करिभोचतहौजुअनेकउपाव
 न ॥ ताहीकेधामसोंहेरघुनाथ हमैएकआईहैबामबुलावन ॥
 भेषधरौतियकोहियसाधजौ चाहतरूपलख्यौललचावन ॥ सा
 यचलौबहिवालकेलाहैं काहिलचलैगीचुरीपहिरावन ॥ ४ ॥
 वेअंगुरीकेछुएसिसकै करवारसीपातरीजौसैचहाऊँ ॥ दंतन
 दावतीजीभँउतै इतप्यारेकेनैनरुखाईवचाऊँ ॥ देवकीनंदनमो
 हिवहोदुख कौतुकहोबसोकाहिलखाऊँ ॥ छे।डिहैंगाँववा
 सोमै परचुरीनह्रांपहिरावनआऊँ ॥ ५ ॥

अथ गोदनहारीदूती यथा ॥

सैजवतेंगोदनागईगोदि अहोठकुगाइनिबाँहँमैतेरी ॥ ऐ
 सीदसातवतेंइहिँगाँवमै देननपाओँगलीनमैफेरी ॥ भेंटभई
 नितहीरघुनाथसों सोँहदेकैतितहीउनघेरी ॥ हाथसोंहाथ
 गहँपलद्वै रहँआखिसोंलायकैआंगुरीमेरी ॥ १ ॥ आवतिहैं
 मद्गाँवतेंभोरही सीधीचलीमैफिरीचहुँकोदना ॥ लीजैगो
 दायकपाकरिकै द्विजभात्रैसोटीजैजूखादविनोदना ॥ जानति
 हैंमैअनेकरंगके कोधनजाहिगोदायप्रमोदना ॥ पैशुजराव
 रीगोरीलसै सुभसुंदरसग्रामअपूरबगोदना ॥ २ ॥

अथ पटहेरिनदूती यथा ॥

पानिप्रमोतीसिलायगुही गनपाटपुहीसोजुहीअभिला

खी ॥ नीकेसुभायकरंगभरी हितजोतिजरीनपरै कछूभाखी ॥
 चाहलैवाँधीहैप्रीतिकीगाँठ सुहैघनघानदजीवनसाखी ॥
 नैननिपानिविराजतजानीजु रावरेरूपअनूपकीराखी ॥ १ ॥
 गारीबिलेतनसगामसोंती अतिखूबीवढै वरसैरसवूंदै ॥ कौन
 बखानसकैजसवन्त उठैअंगअनदकीअतिदूंदै ॥ साखीसवै
 टजकैयहिँराखीके मोहनकोचितचायसोंगूंदै ॥ पीरियैडोरि
 यैकैसीसुहातहै सगामलीसुंदरपाटकीफूंदै ॥ २ ॥ मैगथला
 यकरोरिनगाँठिकै कीज्जीवनायतयारपतीजै ॥ देखिकैरौभक्ति
 येजोरिभवारहौ हीजियेसाहेवदारिदछीजै ॥ हेरघुनायहैवा
 दोकछूनहिँ चित्तकीनेकुदुचिन्तनाकीजै ॥ चोहतजोईवनाव
 कीसोई धरीपलमैपङ्गचीअबलीजै ॥ ३ ॥ मैगथलायकरोरिन
 गाँठिकै कौनीतयारवनीसुचिसीहै ॥ रावरेरेसनकीजेहिँभा
 तिकी चाहततैसियैरंगरलीहै ॥ गोकुललागतहीकरमे ल
 खीरौभक्तिहौऐसीवनीछविकीहै ॥ लालकपाकरियेहकरे वह
 आयकैलेजअहोपङ्गचीहै ॥ ४ ॥ जैसहींपोयधरेठकुराइन
 मोतीकेयेगजराचटकीले ॥ तैसहींआयगएरघुनाय कह्योहँ
 सि कौनकेहैयेफवीले ॥ नावतिहारोदियोकहिँमै तौउठाय
 लियेसुखपायहूँटोले ॥ आँखिसोंलायरहेपलएक रहेपलछा
 तीसोंछायकवोले ॥ ५ ॥ जोकछुगाँठिसुरीकीपरी सुरंभाईम
 लेविधिचोँहरिहालहै ॥ काहवखानकरौअवरेसम हैदुतिसुंद
 ररंगविसालहै ॥ पुंजप्रभानखतेसिखलीं मनलायगुहैओहिँ
 वाररसालहै ॥ पायहौलालवहीपरवालकीं जोसनभावतिमं
 जुलमालहै ॥ ६ ॥ चुनिजोरिवटोरिधरेसिगरेभित्तगरेकिये

भेदवतावती हैं ॥ तृटितंतुएभूखनकेइनसों बल्लसेवकजीवजिया
वती हैं ॥ चिरुजीजियौराधेइतैउतबै पटहारीजहाँसखपाव
ती हैं ॥ तुवमैलकेभीजेसनेहसने हरिकोंद्वैधनेधनलावती हैं ॥
७॥ सखियाँलडवावरीरावरी हैं तिनकीमतिमैअतिदौरतीक्यों
छिनमेकहिबेनीप्रवीनमलीनके नाहकभौहसरोरतीक्यों ॥ ह
मजोरतीबीरमहूँकरिकै फिरिहारकहौभकभोरतीक्यों ॥
अतिकीमललालअमोलअनूप लरीतुमरेसमतोरतीक्यों ॥ ८ ॥

अथ रंगरेजिनदूती यथा ॥

पागहैआईअनेकइहा मनमैलोकरोकछुनाहमकाँधै ॥
साहजहैनहींबेनीप्रवीन ललायहरंगरसाइननाधै ॥ साँभस
मैवारहैरफभानुकी तासमयेकीसुखाइवोसाधै ॥ आतुरहजि
येनावलिजाँउँ तिहारेलियेहरिवाँधनूवाँधै ॥ १ ॥ जैसेकछू
उनकोहैसरूप सोतैसेकछूनवहीतूपतीजो ॥ सूनेकहतेबहा
तकहा तबहीकछुभावैतीरीभिकैदीजो ॥ आजहीमोहिमिले
रघुनाथ कह्योहैकिरंगतयारतूकीजो ॥ तातेरंगावनआवैगी
पाग तूझाँकिभरोखेउझैलखिलीजो ॥ २ ॥ देखेअदेखिनके
दिलकों तिलवेरविनाधरियारीकरैं ॥ सुखसेवकलालीवढैतु
मरेरु चवाइनिकेकरियारीकरैं ॥ कल्लंऔरकल्लंरंगऔरैक
रैइतनीबलकीबरियारीकरैं ॥ रुखरावरेकोलखिपाऊँकल्लं
चुनरीमैचुनीहरियारीकरैं ॥ ३ ॥ मोसोंकहीहीकृपाकरिकै
यहसूहीबनायकैल्याइयेप्यारी ॥ आइगएकितसोंकहिकीन
कीमैसहजेहींदईकहियारी ॥ गोकुलनाथनमानीकहीरंग
नीलसोंआपनेहाथसँवारी ॥ विज्जुसेआगपैरीभकरैगीअ
रीधनकीघटासीयहसारी ॥ ४ ॥

अथ सोनारिनदूती यथा ॥

कारीगरीसैकरीवज्जतै नजरीगईतौकछुवैनकलाई ॥ जा
नतहौतुसमोहगलाल सुनारिअनारिनिकप्रीं ठहराई ॥ रीक
कीवेनीप्रवीनभई बनखीककीवातगईनकलाई ॥ लाइयेहीरा
अमोलिकलाल अबैपज्जचीतुरतैवनिआई ॥ १ ॥ कंठलगौह
रिकेतुसधैंकहि मैजवकंठसिरीपहिराई ॥ देहकंपीसिगरीत
वही अरुहैजरदीसुखऊपरआई ॥ नीकेसेहू गयोआनिकहा
धैं यहैसवहीकैभईइचिताई ॥ नोकगडीकज्जसैहू यहैकहि प्या
रीतिहारीकीवातछिपाई ॥ २ ॥ जाइकहैनहमारीदसा कव
हंतोअरीकरिदैनभायो ॥ योंकहिप्यारेपठाईएतै अरुव्यौं
तकछुगहनेकोवतायो ॥ कानतरप्रीनालगीपहिरावन त्यौंदि
गजैवेकोअंसरुपायो ॥ हांसीकीवातकछूकहिनारि सुनारि
सनेसोपियाकोसुनायो ॥ ३ ॥

अथ सूपकारिनीदूती यथा ॥

दारिगलीहैभलीविधिसों बज्जचाउरहैगोसुगंधभरौज ॥
देखिवरावरीरीभिरहौगे सुपापरिपूरीकरीनडरौजू ॥ हैतरका
रौसवादभरी बनिगारससेवकभूखहरौजू ॥ सौधीसलोनीस
धासीरसीली सुकंतएकंतमैभोगकरौजू ॥ १ ॥ वेसनीरावरेसु
इसनेहकी पूरीपकायबनायलखाइहैं ॥ रीभरहौगिवरावरी
देखि कडीरसवारीतुलैपरसाइहैं ॥ धीरधरोनडतावलेहीउ
सुमेरहरीसैनहींकनखाइहैं ॥ चाहतजोईरसोईमैसोई र
सोइनमैरसरखिचखाइहैं ॥ २ ॥

अथ वारिनदूती यथा ॥

पातरीवातनहींदुनियांकी सनेहनिदीपदसासीजरावति ॥
खीलनहींसेचुभेउरबैन रंगीलनकीसुनतैवनिआवति ॥ सेवक
सगामसींराधिकेतूं सिक्कबौसुनिजतरकगौं नवतावति ॥ बावरे
बावरीमोहिक्कहैं कीमसालकींकाहेससालदिखावति ॥ १ ॥
जानतीहैंकीअवारभई तमपुंजकोकुंजमैफैलवोप्रभाज ॥ रा
वरेकारजहीमैरही हिजआइवनायकैजायअगाज ॥ भूप्रित
हैपटभांतिअनेक सनेहमई तमकोंदरसाज ॥ धीरजनेकगही
जोललातो अबैवहवालमसालमैलाज ॥ २ ॥

अथ वरदूती यथा ॥

देखियेसूधेचुनौतियमे सुभराख्योहैमैकोहिंभांतिसँवारे ॥
चारुसुगंधकीखानिकथा कहियेरघुनाथमहाशुनधारे ॥ चाह
तजैसियैतैसियैलाइहैं स्वच्छसुप्यारीजुहेततिहारे ॥ कीजि
यैलालकपाइतहीं नितलीजियैआयकैपानहमारे ॥ १ ॥ कौ
सीकहौमुखमैलगीमाधुरी एलालवंगसुवासवसीहै ॥ कौनेर
चीरचीबेनीप्रबीनयें मोहिबतावतहीतहँसीहै ॥ जानिनली
जैसुजानबड़ी गरेकैसीकुसुंभितपीकधँसीहै ॥ आजुकीबीरीब
लायतयीं बार लखीअधरानमैकैसीवसीहै ॥ २ ॥

अथ स्वयंदूती लक्षण ॥

दोहा ॥ करैआपुहीआपुनो दूतपनेकोकाल ॥

ताहिस्वयंदूतीकहैं सकलसुकविअधिराल ॥ १ ॥

स्वयंदूती यथा ॥

ऐसेवनेरघुनाथकहैहरि कामकलानिधिकोसदगारे ॥

भाँकिभरोखिसोंआवतदेखि खरीभई आइकैआपनेद्वारे ॥ री
 भिसरूपसोंभीजीसनेहसों बोलीहरंरसआखरभारे ॥ ठाढ़हो
 तोसोंकहैगीकछू अरेस्वात्तवड़ीवड़ीआग्निनवारे ॥ १ ॥ नैनवचा
 इचवाइनकेछन रैनमैकू निकसोयहटोली ॥ लौटिमिलैगेजवै
 घरके नहिँभूलिहैसेवकभाँवतीभोली ॥ देखितुम्हैछतियाफर
 की त्योंतनीतरकौदरकीकछुचोली ॥ आपनेपीकीमुहारिनि
 हारि विचारिकैतोसोंमरुं करिवे ली ॥ २ ॥ मायगईउपनंद
 केभौन नधावइहँसजनीअपनेघर ॥ लेसैकोदीपदिनेसनदूस
 रो स्नोनिहारिमहामनमैडर ॥ द्वारमैअंधपरप्रोदरवान सु
 नैनहींकानमरप्रोजबुभूपर ॥ आइइतौनपुकारियेकाङ्ग हैआम
 इहँकोजदेनकीजतर ॥ ३ ॥ हारहियेप्रफुलाकोलसै वनीविं
 दीदियेसनकीसुकुमारी ॥ पीनपयोधरपातरोलंक करैवड़ड़ी
 अँखियाँकजरारी ॥ गोकुलनाथविलोकिकह्यौ अजूरुखती
 हौकहाधानकीकप्रारी ॥ बालकहीसुसकायघनी वनकीघटासी
 यहज्वारिहमारी ॥ ४ ॥

दोहा ॥ ज्योंसंजोगसिँगारमै रितुउद्दीपनहोत ॥

त्योंवियोगमैविरहकी रितुलखिवदतउदोत ॥

अथ उद्दीपनविभावान्तरगत षट्तरितुवर्षन तहँ प्रथम
वसन्तवर्षन ॥

वायुवहारिवहाररहेछिति वीथीसुगंधनजातीसिँचाई ॥
 त्योंमधुसातेमलिंदसवै जयकेकरखानरहेकछुगाई ॥ मंगलपा
 ठपढ़ैद्विजदेव सबैविधिसोंसुखमाउपजाई ॥ साजिरहेसवसाज
 घने वनमैरितुराजकीजानिअवाई ॥ १ ॥ मिलिमाधवीआदिक

फूलकेबराज विनोदलधावरसायोकरै ॥ रचिनाचलतागनता
 निबितान सबैविधिचित्तचुरायोकरै ॥ द्विजदेवजूदेखिअनोखी
 प्रभा अलिचारनकीरतिगायोकरै ॥ चिरजीवोवसन्तसदाद्वि
 जदेव प्रसूननकीभरिलायोकरै ॥२॥ फूलैघनेघनेकुंजनमाहँ
 नएछुविपुंजकेबीजवएहैं ॥ त्योंतरुजूहनमैद्विजदेव प्रसूननएई
 नएउनएहैं ॥ साँचोकिधौसपनोकरतार विचारतहूनहींठी
 कठएहैं ॥ संगनएत्यों समाजनए सबसाजनएरितुराजनएहैं ॥
 ३ ॥ साँधेसमीरनकोसरदार मलिंदनकीमनसाफलदायक ॥
 किंसुकजालनकोकलपट्टम मानिनीबालनहूँ कोमनायक ॥
 कांतअनंतअनंतकलीनको दीननकेमनकोसुखदायक ॥ साँ
 चोमनोभवरजकोसाज सुआवतआजइतरितुनायक ॥ ४ ॥
 फूलिरहेबनबागसबै लखिफूलनिफूलिगयोमनमेरो ॥ फूलनि
 हीकोबिछावनोकै गहनोकियोफूलनिहीकोघनेरो ॥ लालप
 लासनएचहुँओरतें मैनप्रतापकियोघनघेरो ॥ राखियौफूलैफै
 लायफैलाय कियोरितुराजनेमानहुँडेरो ॥५॥ सुंदरसोहैसुगं
 धितअंग अभंगअनंगकलाललिताहै ॥ तैसीकिसोरसहात
 सुयोगिनि भोगिनिहूँकींमनोहरताहै ॥ संगअलीअवलीरवि
 राजत अंगरसीलीबसीकरताहै ॥ कोमलतायुतवीरवसन्तकी
 वैहरकीबनिताकीलताहै ॥६॥ सेवतीसोनजुहीथलपुंजपैं कुंज
 कलीअलिगुंजसीमाचै ॥ बैठीकहाभृकुटीनकोँअँठिकै सोरसु
 न्योरितुराजकोसाँचै ॥ फूलनफौजधमारधुकार हकारतको
 किलकीरकुलाचै ॥ बाचैनवीरमवासेकहूँ अबनाचेवनैगीवस
 न्तकीपाँचै ॥ ७ ॥ फूलेअनारनिपाँडरडारनि देखतदेवमहा

डरमाचै ॥ पाखुरीभौरनिआमकेवौरनि भोरनकेगनमंवसे
 वाचै ॥ लाचउठैविरहागिनिकी कचनारनवीचअचानकअं
 चै ॥ सांचेहकारपुकारिपिकीरुहैं नाचेवनैगीवसन्तकीपांचै ॥
 ८ ॥ फूलेरसालकीडारिनवैठि अलीकुलभूमिभुकैमेडरात
 हैं ॥ बेनीजूकोकिलकूकपोतन एउलहेलतिकानमैपातहैं ॥
 सीतलमंदसुगंधसमीरज पीसधुचंदअनंदवैगातहैं ॥ याम
 हिमन्तवसन्तकेएगुन मानकिलांलखतैछुटिजातहैं ॥ ९ ॥ दे
 खतहीवनफूलेपलास विलोकतहीकछुभौरकीभीरन ॥ वाव
 रीसीमतिमेरीभई लखिवावरीकंजखिलेघटेनीरन ॥ भाजिग
 योकरिग्यानहियेतें नजानिपरपोकवछोडिकैधीरन ॥ अंधन
 कौनकेलोचनहोंहैं परागसनेसरसातसमीरन ॥ १० ॥ अति
 लालगुलालदुकूलतेफूल अलीअलिकुन्तलराजतहै ॥ सुकता
 केकदंबसुअंबकेभौर सुनेसुरकोकिललाजतहै ॥ मखतूलसमा
 नकेगुंजकरानमै किंसुककीछविछाजतहै ॥ यहआवनप्यारी
 जुकीरसखान वसन्तसीआजविराजतहै ॥ ११ ॥ वारनभौरक
 सारभजै पुङ्गपावलीहासविलांसहिपूजत ॥ पांठकियोकरै
 आठहजाम सुवालनिसीखनकोकिलकूजत ॥ वैधनआनदजा
 नछए तकियैछविआनकरौं आंखिनछूजत ॥ एरीवसन्तनवां
 वतकंत सुजानिकैमानमईकतहजत ॥ १२ ॥ सेवतीगंधकके
 अलिगुंजत कुंजनमैरसपुंजभरैगो ॥ फूलिउठैजकनाहींपरै क
 लकोकिलकोगनकूककरैगो ॥ कोजनवीरसहैतनपीर मनोज
 केतीरसोंधीरधरैगो ॥ तोहिवसन्तहसन्तभटू उठिअंतहकंत
 विनानसरैगो ॥ १३ ॥ गूजैगेभौरपरागभरे परगूजैगीकोकि

लबेसुरगायकै ॥ फूलैंगेकेसूकुसुंभजहाँलगि दौरैगोकामकसा
 नचढायकै ॥ पौनबहैगीसुगंधसमारखु लागैभीहीमैसलाक
 सीआयकै ॥ मेरोमनायोनसानैगीभाँवती ऐहैबसन्तलैजैहैस
 नायकै ॥ १४ ॥ मदमातीरसालकीडारनपैचढी आनदसौथी
 विराजतीहैं ॥ कुलजानकीकानकरैनकछू मनहायपराएईपा
 रतीहैं ॥ कोऊकैसीकरैद्विजतूहींकहै नहिँनेकौटयाउरधार
 तीहैं ॥ अरीकैलियाकूकिकरेजनकी किरचैकिरचैकियेडा
 रतीहैं ॥ १५ ॥ आयोबसन्ततमालनतें नवपल्लवकीइमिजाति
 जगीहै ॥ फूलिपलासरहेजितहींतित पाटलरातेहिरंभरंगी
 है ॥ मौरिकैआँमनसारमई तिहिँऊपरकोकिलआनिखुगीहै ॥
 भागनभागवचोविरहीजन वागनबागनआगिलगीहै ॥ १६ ॥
 एवजचंदचलौकिनवाँवज लूकैवसन्तकीऊकनलागी ॥ त्योंप
 दमाकरपेखापलासनि पावकसीमनोफूलकनलागी ॥ वेवजवारी
 विचारीबधू बनबावरीलौहियेहकनलागी ॥ कारीकुरूपकसा
 इनैये सुकुरहकुरहकौ लियाकूकनलागी ॥ १७ ॥ आमकेमौरध
 रेतुररा रितुकिंसुककीअलफोनसुहायो ॥ धूसपरागनकीक
 फनी अलबेलिनसेलिनसौछबिछाँयो ॥ कंजसखाकरिकिल्लि
 लिये अरुकोकिल्लैकूकअवाजसुनायो ॥ प्रानकीभीखबियोगि
 निपै रितुराजफलीरहैभागनआयो ॥ १८ ॥ बैरीवसन्तके
 आवतही बनबोचदवागिनिसीपजरैगी ॥ जोगिनिसीबनिहैब
 नमाल वियोगिनिकैसेकैधीरधरैगी ॥ गुंजनबैअलिपुंजन
 कौ सुनिकुंजनकौ लियाकूककरैगी ॥ सूलसेफूलेपलासनकी
 डरियाँडरपावनीदीठिपरैगी ॥ १९ ॥ ज्योंत्योंरह्योअवलाँ

जियतू अद्य आयोवसन्तकछूनवसैहै ॥ संभुसुगंधितसीतलमं
 द् समीरनिपीरगंभीरउठैहै ॥ क्यों ठहरैगोकुरैगोकहा जब
 कोकिलाकूकिकैकूकसुनैहै ॥ औरनतेरोफवैगोकछू बलिसंग
 कुहकेतुहंकदिजैहै ॥ २० ॥ वीरेरसालनकीचढिडारन कू
 कतिकैलियामौनगहैना ॥ ठाकुरकुंजनपुंजनगुंजत भौरन
 कोचैचुपैवोचहैना ॥ सीतलमंदसुगंधितवीर समीरलगेतन
 धीररहैना ॥ व्याकुलकीहोवधन्तवनायकै जायकैकंतसोंको
 ऊकहैना ॥ २१ ॥ आलीसुनोवनमालीवियोग पलासकेपुंज
 नकोसुखभागो ॥ पातसुखायगिरेनहिआनि लतानमेस्याम
 ताकोरंगरागो ॥ धीरधरेठहरातनमाधव सैनकोजालिमजो
 रहैजागो ॥ भामिनीभौनसैभागिचली फिरिआगिउठैगोधुं
 वाउठैलागो ॥ २२ ॥ जवतेरितुराजसमाजरच्यो तवतेअवली
 अलिकोचहकी ॥ सरसायकैसोररसालकीडारिन कोकिल
 कूकैफिरैवहकी ॥ रसियावनफूलेपलासकरील गुलावकीवा
 समहानहकी ॥ विरहीजनकेदिलदागिवेकीं यहआगिदसों
 दिसितेंदहकी ॥ २३ ॥ संगसखीकेगईअलवेली महांसुखसों
 वनवागविहारन ॥ वाढेवियोगविलासगए सबदेखतहीवेपला
 सकीडारन ॥ जानिवसन्तऔकंतविदेस सखीलगीवावरीसी
 ह्वैप्रकारन ॥ चूचलिहैचुरियांचलिआउरी आंगुरियांजनि
 लाउअंगारन ॥ २४ ॥ भूरिसेकौनेलएवनवागए कौनेजआ
 मनकीहरिआई ॥ कोइलकाहिकराहतिहै वनकौनेचहूँदिसि
 धूरिउड़ाई ॥ कौसीनरेसवयारिवहै बहकौनधोंकौनसोंमाझर
 नाई ॥ हायनकोऊतलासकरै येपलासनकौनेदवारिलगाई

॥२५॥ आयोवसन्तदहन्तसखी वरआएननाहनपाएसँदेसे ॥
 कोकिलकूकिउठीचङ्ग ओरतें ह्किउठीहियलूकसोलेसे ॥ या
 हीतेंजीयडरैमधुसूदन जातिनहींवनवाहीअँदेसे ॥ फूलिप
 लासरहीजितहींतित लोहभरेनखनाहरकैसे ॥ २६ ॥ कछु
 औरउपावकरैजनिरी इतनेइखसोंसुखहैसरिवो ॥ फिरिअंत
 कसोबिनकंतबसंत सुआवतजीवतहीजरिवो ॥ वनबौरतबौ
 रीहोजाउंगीदेव सुनेधुनिकोशिलकीडरिवो ॥ जबडोलिहैं
 औरैअबौरभरी सुहहाकहिबोरकहाकरिवो ॥ २७ ॥ देक
 हिमीरसिकारनकीं इहैंवांगनकोकिलआवनपावै ॥ मूदिभा
 रोखनमंदिरके मलयानिलआयनछावनपावै ॥ आएबिना
 रघुनाथवसंतको ऐबोनकोऊसुनावनपावै ॥ प्यारीकोँचाहै
 जिआयोभमारतौ गाँवमैकोजनगावनपावै ॥ २८ ॥ धूंधुर
 सीवनधूमसीगाँवन गाँवमतानलगनरबौरी ॥ बौरीलताबनि
 ताभइँबौरी सुसौधिअध्यायरहीअवधारी ॥ वेनीवसंतकेआ
 वतहो बिनकंतअनंतसहैदुखकोरी ॥ ओरीघरेंहरिआएनजो
 पहिलेहैंजरौजरिहैफिरिहीरी ॥ २९ ॥

अथ वसन्तान्तर्गत हारी वर्णन ॥

फागरच्योनदमंदप्रबोन बजैवज्जबोनमृदंगरबावै ॥ खिल
 तीवेसुकुमारतिया जेनभूपनह्कीसकैसुहितवै ॥ सेतगुला
 लकीधूंधुरमै अलकैइमिबालनकेसुखआवै ॥ चाँदनीमैकबिसं
 भुमनो चङ्गओरबिराजिरहींमहतावै ॥ १ ॥ फागरचीवृषभा
 नकेभौन दैगारिनखारिचह्दिसिकूकै ॥ आचजुरीउपजाव
 तिजे मनमोहनकेमनमैनकीहूकै ॥ चाँतुरसंभुकहावतवेवृज

सुंदरीसोहिरहीज्यौंभभूकै ॥ जानीनजातिमसालश्रीवाल
 गोपालगुलालचलावतचकै ॥ २ ॥ खेलतिफागभरीअनुराग
 सुहागसनीसुखकीरमकै ॥ कांजसुखीकरकुंकुमजै पियकेसुख
 लीहूनकींभमकै ॥ भारीगुलालकीधंधुरसै वृजवालनकेसुखयौ
 दमकै ॥ सावनसांभलताईकेमांभ मनोचङ्गवांचपलाचमकै
 ॥ ३ ॥ दुहुंशोरसोंफागमहीउमडी जहाँश्रीचहीभीरतेभीरभि
 री ॥ धधकीदगुलालकीधंधुरसै धरीगोरीललासुखमीहिसि
 री ॥ कुचकांजुकीकोरछुवेंछरकै पजनेसफंदीफरकैज्यौंचि
 री ॥ करपैभपैकौंधेकहैतरिता तरपैसनोलालघटामैधिरि ॥
 ४ ॥ विधुकैसीकलावधूगैलनिमैगसी ठाढीगुपालजहाँजुरिगो ॥
 पजनेसप्रभाभरीभासिनघै घनेफागुकैलनिसोफुरिगो ॥ सुर
 कीरुकीवंकविलोकतलाल गुलालसैवेदासवैपुरिगो ॥ दिगसै
 दरसरोहैदिनेसमनो दिगदाहकीदीपतिमैदुरिगो ॥ ५ ॥ वा
 लभरोखाउघारिनिहारि गुलाललैलालनउपरडारै ॥ एकउ
 रोजलख्योउघरप्रो पियतामैदईपिचकारिकिधारै ॥ रीभयकी
 सबरीसजनी उपसाकविरासगुपालविचारै ॥ मानङ्गमैनउ
 छारदियो निबुवाधिरकैअनुरागफुहारै ॥ ६ ॥ केसरिकेपि
 चकापरिपूरन पूरकपूरगुलावकेदोना ॥ आईसवैललनाललि
 तादिक खेलनफागनिकुंजकेकोना ॥ केसरियापटमेदृगदावे
 गुलालकेवासनसप्राससलोना ॥ मनोकहं विकुरप्रोनिजसांयते
 सोनजुहीमैछिषोमृगछोना ॥ ७ ॥ बड़भागसुहागभरीपिय
 सों लहिफागुसैरागनछायोकरै ॥ कबिलालगुलालकीधंधुर
 सै चखचंभलचारुचलायोकरै ॥ उभकैभिक्षिकैभहरायभुके

सखिमंडलकोमनभायोकरै ॥ छतियांपररंगपरतेतिचार
 तिरंगतेरंगसवायोकरै ॥ ८ ॥ लैबलबीरअवीरकीमूठि दई
 अलबेलीललीट्टगदूपर ॥ त्यौबनमालीपैआलीचलावति ला
 लीगुलालकीछुरहीभूपर ॥ लैपिचकारीविहारीतहा अधि
 कारीकरीट्टजगोपवधूपर ॥ पीनपयोधरतेउचटीसु परीसबले
 सरकालकेऊपर ॥ ९ ॥ खिलिकैफागफिरीजवसों तवसोंदृग
 देखियेसैरसदोसो ॥ आवतहैसुखजोसोकहैं कछुखाहिनपी
 वहिभूतचदोसो ॥ ऐसीदसासबकीरघुनाथ रझोतपिअँ
 गआगिददोसो ॥ डारिगयोनदलालसखी ट्टजवालपैमानो
 गुलालपदोसो ॥ १० ॥ एनदगावतेआएइहा उतआईसुता
 वहकौनहं ग्वालकी ॥ त्यौपदमाकरहातजुराजरी दोउन
 फागरचीइहिंख्यालकी ॥ दीठिचलीउनकीइनपै इनकीउनपै
 चलीमूठिउतालकी ॥ दीठिसीदीठिलगीउनके इनकेलगीमू
 ठिसीमूठिगुलालकी ॥ ११ ॥ वैसनईअनुरागसईसु भईफिरै
 फागुनकीसतवारी ॥ कोंवरेपानिरचीमेहँदी उफनीकेबजाव
 हरैहियरारी ॥ सावरेभौरकेभायभरी घनआनदसोनलैदीस
 तन्यारी ॥ काङ्कबैपोषतप्रानपियै सुखअंजुजचू रकारंदसीगा
 री ॥ १२ ॥ खिलतफागगुलालभरे इतव्यालिउतैघनसरासउ
 मंगसों ॥ कंचनकीपिचकारिनधार खुलीअलकौनुकातावलिअं
 गसों ॥ भौजिकपोलनिगेलगिअंचल कंबुकीचारुउरोजउतं
 गसों ॥ केसरिरंगसोंअंगरंग्योकी रहोरंगिकेसरिअंगकेरंग
 सों ॥ १३ ॥ खिलतिफागसोहागभरी सुधरीसुरअंगनातेसुकु
 मारिहै ॥ जैयेचलेअठिलैयेउतै इतैकाङ्कखरीट्टषभानकुमारि

है ॥ संभुसमूहगुलावकेसौसन द्वारिकोकेसरिगारिविगारि
 है ॥ पांसरीपाँवडे होतजहाँ तहाँकोललाकामरीपैरंगडारि
 है ॥ १४ ॥ फागनकोदिनवावरेए इनसैनगुसाँइनतानिवहैहै ॥
 कामदुहार्हरहीफिरिकै अबकोऊनकाहकीकुकलहैहै ॥ जा
 यकरंगनसोभरिहै डरिहैनहींनागरसाँचीकहैहै ॥ चोरीन
 हींवरजोरीनहीं इहिंहीरोमैकौनधोंकोरीरहैहै ॥ १५ ॥ फा
 गुनमैएकप्रेमकोराजहै काहेवेकाजकरोहीचरावर ॥ रूपउ
 पासकयारेहिहैंहल कोऊकितेकोकरौनासरावर ॥ नागरने
 ककुवेतेंकहा जगिरकोकुटिकैछितिसाहिंछरावर ॥ क्रींसत
 रातिहोगोरीकिसोरोजु हीरोमैराजाऔरंकवरावर ॥ १६ ॥
 वेरेरहैंघरहँईधनी फिरवीतेनफागककुहजिजायगी ॥ लल
 गुलालकीधंधुरमै सुखचंदकीओतिकहलहजिजायगी ॥ प्रेमप
 गीवतियानतैरी छतियोनतैलाजसबैवहजिजायगी ॥ जोनमि
 लोअनसोहनैतौ अनकीअनहीअनसैरहजिजायगी ॥ १७ ॥ ठा
 ढीरहोअडगोनभगौ अबदेखोजेहैंककुखेलतिष्यालहि ॥
 गावनदैरीवजावनदै सजिआवनदैइतैनंदकेलालहि ॥ ठाकुर
 हौरंगिहौरंगसाँ अंगओडिहैंवीरअवीरगुलालहि ॥ धूंधुर
 मैधधकीमैधमारमै हींधंसिहोंघरिलेहोंगोपालहि ॥ १८ ॥
 घेरिलियेधनसप्राअचहंदिंसि दामिनिसीमिलिचेटककैगई ॥
 पीतपिछोरीरहीकरखैंचिकै वासरियाहंसिछीनिकैलैगई ॥
 प्रेमकेरंगनसोभरिकै अरुफागकेरंगनलोहनीवैगई ॥ केस
 रिसोँमुखनीडिगोपालको खंजनसेटगअंजनदैगई ॥ १९ ॥ को
 सीहैढीठिलखौवहगोपकी ओपभरीसिगरीटजवालसों ॥ का
 हकीकानिनामानतिहै हठठानतिहैघपलापनचालसों ॥ सा

रिगईतव की बटिकै रघुनाथधुमायकै फूलकी मालसों ॥ लालकी
 फोंटसों लैकै गुलाल लपेटिगईवहलालके गालसों ॥ २० ॥ खेल
 तफागलखरीपियथारीकों तासुखकी उपमाकोहिंदीजै ॥ देख
 तहीवनिआवैभले रसखानकहाहैजे। वारनेकीजै ॥ ज्यौं
 ज्यौं कबीलीकहै पिचकारीलै एकलईयहदूसरीलीजै ॥ त्यौं
 त्यौं कबीलोकै कबिकाकसों हेरैहंसै नटरै खरोभीजै ॥ २१ ॥
 खेलतिफांगसुहागभरी वृषभानललीभलीभांति उमंगसों ॥ घूं
 घुटओटकियेरघुनाथ गईहरिपै किकिछूटिकै संगसों ॥ चैं कि
 तिरीछीचितै सुसकाय फिरीपिचकारीलगायकै अंगसों ॥ री
 क्षिरहेवहभावचितै अरुभीजिरहेवारंगीलीकेरंगसों ॥ २२ ॥
 हीरोकोरूपलख्यो वृषपौरि किसोरीकोचित्तबिछोहनछीज्यो ।
 दौरीफिरैदुगि देखिवेकों नदुरैमजओजमनोजकोभीज्यो ॥ के
 सरियाचकचैंधतचीर त्यौंकेसरनौरसरौरप्रसीज्यो ॥ लाल
 केरंगमेभीजिरही सुगुलालकेरंगमैचाहतिभीज्यो ॥ २३ ॥ या
 अबुरागकीफागुलखा जहारागतीरागकिसोरकिसोरी ॥ त्यौं
 पदमाकरघालीधली फिरलालहीलालगुलालकीभीरी ॥ ये
 सीकीतैसीरहीपिचकी करकाऊनकेसररंगमैवारी ॥ गीरी
 केरंगमैभीजिगोसावरो सावरेकेरंगभीजिगीगारी ॥ २४ ॥
 खेलियैफागुनिसंकह्वै आजु सयंकमुखीकहैभागहमारो ॥ ले
 ऊगुलालदुहंकरमै पिचकारिनरंगहियेसहंसारो ॥ भावैत
 हैसोकरोमोहिलाल पैपावपरौजिनधुंधुटारौ ॥ वीरकीसों
 हमदेखिहैकैसे अवीरताआखैवचायकैडारो ॥ २५ ॥ लालगु
 लालबलाहकते वरसैंक्षरीभीकनकेसरिरंगकी ॥ त्यौं हीअन

तच्छटाक्षविकी चमकैचपलात्थौ मनोहरअंगकी ॥ दैगलबाँ
 होअनंदकियो वरनोकादसावहमैनउलंगकी ॥ भूलैनहींहम
 कोंसजनी वहफागकीखिलनिस्त्रावरसंगकी ॥ २६ ॥ खिलतही
 रोकिसोरीसवै पकरोरीधरोरीहैसोरमचायो ॥ मारपरैपि
 चकारिनकी जहाँलालगुलालसोंअंवरछायो ॥ केसरकेवट
 कोंकरलै गिरिधारनकेललितानहवायो ॥ मानोसहामनि
 मर्कतकों पुखराजकेसंपुटवीचकपायो ॥ २७ ॥ सखिहारीके
 ख्यालमैगोरीकिसोरीकि आजअमूपमरीतिलही ॥ पहिलेपि
 यक्षोंरंगबोरप्रोतवै छविस्त्रावरीस्वरतिअौरैगही ॥ पुनिअंगगु
 लालसोंछायगुपालकों प्यारीजवैहंसिवातेकही ॥ पहिलेदुम
 लालजतेकहिबेके पैलाजभएअबहींहौसही ॥ २८ ॥ फागुमै
 फेरहफैलेफिरोही कछूजियजानतलाजकोआइवो ॥ हाहा
 खवायनआयकेछाहेहे धन्यतिहारीयेवातेवनाइवो ॥ गोवतगा
 रौठठोलीमिलावत नागरक्योंजुवतीनदयाइवो ॥ रावरेखेल
 कीजानीकलासव एतीललानहिंजीभचलाइवो ॥ २९ ॥ आवतहै
 नदगावतेगावते संगसखाडफलीङ्गेनवीने ॥ रंगनसोंभरिहारे
 सवै हंमहायमरोरिकैचंगहीछीने ॥ आपडकेकरवाँधिकैहा
 रसों प्यारीकेपायनपारैअधीने ॥ कालिहकीबातनभूलिकैना
 गर आजह्वेइंभलेढंगलीङ्गे ॥ ३० ॥ वातेलगायसखानतेआ
 रोके आजगह्योवृषभानकिसोरी ॥ केसरिसोंतनमंजनकै दि
 योअंजनआखिनमैवरजोरी ॥ हेरधुनायकहाकहैंकोतुक प्या
 रेगीपालैवनायकैगोरी ॥ छोड़िदियोइतनोकहिकै वजरोइत
 आइयोखिलनहारी ॥ ३१ ॥ फागुकेभीरअभीरनतेगहि गोवि

दलैगईभीतरगौरी ॥ भाई करीमनकीपदमाकर ऊपरनायगु
लालकीभोरी ॥ छीनपितंबरकंबरतेसु विदादईमीडिकपोल
नरोरी ॥ नैननचायकह्योसुसकाय ललाफिरआइयोखिलन
हारी ॥ ३२ ॥ धूमधमारिमचीवृजमे मिलाफेकतरंगउडावत
रोरी ॥ आनिधरोबलवीरगुपालहि भामिनिभेषरच्योवरजो
री ॥ मोबिनतीविधिपूरीकरो सुतवारीकरीजसुदाजुकीछोरी
छोडिदियोछितिपालललाजुगों मोरहीआइयोखिलनहारी ३३

अथ ग्रीष्मवर्णन ॥

ग्रीष्मसैतपैभीष्मभान गर्इबनकुंजसखीनकीभूलसों ॥ घा
सतेकामलतासुरभानी वधारिकरैधनसगामदकूलसों ॥ कांपि
तयौ प्रगटेपरसेद उरोजनिदत्तजूठाहीकेमूलसों ॥ हैअरविंद
कलीनपैमानो भरैसकरंदगुलावकेफूलसों ॥ १ ॥ हैजलजंघकै
मोहनीमंच बसीकरसौकरसौअवलीसों ॥ कैसधिकेहितमोद
भरो कलजातअकासहैभूमिथलीसों ॥ कैसुकताफलकोबिर
वा बिरचोयहफूलजलेसरलीसों ॥ कांजसनालतेकैमकरंद
चल्योतररायकैभातिभलीसों ॥ २ ॥ चंदनकेचहलामैपरी
परीपंकजकीपँखुतीनरमीमै ॥ धायधसीखसखाननहाय निकुं
जनपुंजफिरौभरमीमै ॥ त्यों कविदत्तउपायअनेक कियोसिग
रीसहिवेसरमीमै ॥ सीतलकौनकरैछतियाँ विनपीतमग्रीष्म
कीगरमीमै ॥ ३ ॥

अथ पावसवर्णन ॥

सुनिकैधनिचातिकमोरनकी चहुँओरनकोकिलाभूकानि
सों ॥ अदुरागभरेहरिबागनमै सखिरागतरागअचूकनसों ॥

कविदेवप्रतापनईजुनई वनभूमिभईदलदूकनसों ॥ रंगरातीह
 रीहहरातीलता भुक्तिजातीसमीरकेभूकनसों ॥ १ ॥ बहरा
 तघमंडकेकीबलके लहरातसुहातवनेवनए ॥ उलहेमहिअंकु
 रमंजुहरे वगरेतहाइन्द्रवधूगनए ॥ असजानिकिसोरसमैरस
 मै कसहीहिंनमैनसईमनए ॥ चितचैनचएनभआनिकुए अब
 देखुनएउनएघनए ॥ २ ॥ चङ्गओरनजोतिजगावैकिसोर जगी
 प्रभाजेवनजूटीपरै ॥ तेहिंतेभरिमानोअंगारअनी अवनीघनी
 इन्द्रवधूटीपरै ॥ चङ्गनाचैनटीसीजरावजटीसी प्रभासोंपटीसी
 नखूटीपरै ॥ अरीएरीहटापटीविज्जुछटाछटी छटीघटानतेटू
 टीपरै ॥ ३ ॥ देखितमासोटिसाविदिसा विरहीउरअंतरका
 पतिसीहै ॥ केकीपपीहनकीवरवानि किलीभनकारकोभाप
 तिसीहै ॥ ठाकुरठाढीमनोहरपास कहैवरवालनिसापतिसी
 है ॥ कामछसानु कीडोरीचली चपलाफिरैमेघनमापतिसीहै ॥
 ४ ॥ छिनहींछिनदौरैदुरैदरसै छविपुञ्जकिसोरजमासेकरै ॥
 अतिदीनविनापियजानिजिए विरहीनहिएवरमासेकरै ॥ अ
 रदेखीभईकवह्मधिरहै घनकोंहरिकीउपमासेकरै ॥ चङ्गवा
 तेमहातरपैविजुरी तमतोममेआजुतमासेकरै ॥ ५ ॥ दुखदूर
 भयोअरीश्रीषमको करिवेपिकचातिकगानलगी ॥ चपलाचम
 कैलगीचारोंदिसा निसमैजुगनूदरसानलगी ॥ गिरिधारनपा
 वसआवतही वक्रवन्दअकासउडानलगी ॥ धुरवासवओरदेखा
 नलगी मोरवानकेसोरसुनानलगी ॥ ६ ॥ चमकैचपलाभमकै
 जूगनूरवभेकिनकोभयछावतहै ॥ पिकभिल्लिनकोगनमोरन
 सों मिलिकैअतिसोरसुनावतहै ॥ कविगोकुलप्यारीविनागि

रिधारी कही अब कौन बचावत है ॥ इहिँ ओर लखौ छिति छोर
 हितें वन जोरत सो सखो घावत है ॥ ७ ॥ दिन रैनिकी संधिन
 बूझिबेकी मतिको कत भी चुरवान लगी ॥ नदियानदलौ लस
 डोलतिका तरु तै से न पै गरवान लगी ॥ कज्ज सेष कए से से से जि
 ये जेहिँ कामतिया लुरवान लगी ॥ मति मोरिनीकी सुरवान ल
 गी गति बीजुगीकी धरवान लगी ॥ ८ ॥ कैसी मनोहर मंजुसबी
 रन जानिये बैरव है धौ कहांते ॥ जैसी कियो सोरलता लचै तैसी न
 चै मोरवानकी जोति जमाते ॥ लूटती कैसे न ऐ से समै सुख छूटती
 बिज्जु छटा चङ्ग धाते ॥ आज अरीज मुनाते लगी न भलौ लखु स्या
 मघटानकी पाते ॥ ९ ॥ धूमि घटा घनकी गरजै चमकै चपला छि
 ति छू फिरे फोरी ॥ सोरकरै चङ्ग ओरते मोर जुरीकरै कालि
 या कू कवनेरी ॥ गोकुल सीरो समीर लगे केहिँ भाँति सोधीर
 है गधरेरी ॥ मोहि बिनायह सावनकी निमि भावनकै सेविता
 यहै एरी ॥ १० ॥ सावनकी रितु आई सखी पतियान लिखी अज
 झं मन भावन ॥ भावन राग मलारमै भूपति रंग लसंग सो लागे है
 गावन ॥ गावनमै हरखै सबही वरखै वरबुंद घटानकी आवन ॥
 आवन आज भयो नही पीवको जीवकी सैन लग्यो तर सावन ॥ ११ ॥
 उठि देखरी वीर अटान अटा चढ़ि बिज्जु छटा छहरान लगी ॥ अ
 निसीरी वयार सुगन्ध सनी द्रु मखेलिन पै फहरान लगी ॥ सखि
 औधिकी आस धरी यैरही लिखकै छतियाँ यहरान लगी ॥ यह
 कैसी अचानक आनिबनीरी घटा घनकी घहरान लगी ॥ १२ ॥ भू
 मिहरी भई गेलै गई मिटि नीर प्रवाह बहानि बहा है ॥ कारी घ
 टानि अघेरो कियो निमि द्यौ समै भेद कछून रहा है ॥ ठोकर भौ

नतेदूसरेभौनलौ जातवनैनविचारमहाहै ॥ कैसेकैआवैकहा
 करैवीर बटोहीविचारनदोसकहाहै ॥ १३ ॥ भाहोंकीभारी
 अँधारीनिसा झुकिवाटरलंदफुहीवरसावै ॥ लाड़िलीआपनी
 जँचीअटापै चदीरसमत्तमत्तारहिँगावै ॥ तासुदमोहनकेदृग
 दूरितै आतुररूपकीभीखयोपावै ॥ पौनमयाकरिधूँघुटारै द
 याकरिदादिनीदीपदिखावै ॥ १४ ॥ भारलाग्योभारीउधरैनघ
 री नदियाँउमभीजलधारनसों ॥ यहभूमिहरीमनखेतहरी
 धुरवाधुकिजातबयारनसों ॥ लखिषाटरदादुरसोरकरै मिलि
 कूकतसोरमत्तारनसों ॥ हँसिदे।जमिलेगरवाँहगरें झुकिभू
 सैकदंबकीडारनसों ॥ १५ ॥ जँचीअटापैलखैवटादोज दुह
 नकीहैरहीरूपकलासी ॥ वेनीवड़ेवड़ेवूंदनतें एकवारहीवा
 रिधिकीहहलासी ॥ चैकिचलीविचलीगचपै लचकीकरिहँ
 कुचभारछलासी ॥ त्योंवनसगामगहीअवला फिरिकैगरेला
 गिगईचपलासी ॥ १६ ॥ सटाँचातिकचायसोंवोल्योकरौ सुर
 वानकोसोरलुहावनहै ॥ चमकैचपलाचहुँचावचढी घनघोरघ
 टाँवरसावनहै ॥ पलकौपपिहानरहौचुपह्वै अरुपौनचहँदि
 सिआवनहै ॥ मिलियारीपियालपटेछतियाँ सुखकोसरसाव
 नसावनहै ॥ १७ ॥ चाँपिचढेघनव्योमसढे वरसैसरसैकरिकै
 प्रनगाढे ॥ ऐसेसमैरघुनाथकियो घरतेंपगवाहिरजातनका
 ढे ॥ श्रीष्टप्रभानकुमारिसुरारि सखीतेहिँऔसरप्रेमकेवाँढे ॥
 पातनकेछतनासिरदै दोजवातनकेरसभींजतठाढे ॥ १८ ॥
 खरिकासैखरेवरखारितुसै उनएघनजोअतिसंकटके ॥ भजि
 औरमत्तारखदीरिदुरे अरीराधेगुपालरहैहटके ॥ तरजाकि

तरौवनजोरिकैगौवन घेरिवछौवनतेठठके ॥ परमेहमैभीजै
 सनेहभरे दोऊपाँमरीकामरीमैसठके ॥ १९ ॥ राधाऔसा
 धोखरेदोऊभीजत वाकारिमैभूपकैवनमाहीं ॥ बेनीगएजुरि
 बातनिमै सिरपातनिकेछतनागलवाहीं ॥ पामरीघारीउठा
 वतिप्यारे कीं प्यारोपितंबरकीकरैछाहीं ॥ आपुसमैलहाछेह
 मैछोहमै काहू कींभीजिवेकीसुधिनाहीं ॥ २० ॥ आजगईऊ
 तीकंजनलों वरखैअतिबूंदघनेघनघोरत ॥ देवकहू हरिभीज
 तदेखि आचनकआघगएचितचोरत ॥ प्रीतबधूतओटकुटीके
 पटीसोंलपेटिकटीपटछोरत ॥ चौगुनोरंगचढ़ैचितमै चुनरी
 केचुचातललाकेनिचोरत ॥ २१ ॥ घनघोरघटाउमड़ीचऊँओ
 रसों मेहकहैनरहैबरसों ॥ हरिराधिकादौरिदुरेदोऊकंजमै
 लागिरहेतेहिंठावरसों ॥ अतिसीरीवयारिवहैसजनी सुसुका
 यतियाजुकहैबरसों ॥ अजूआजकोढीसनभूलिवेको यहयाद्
 रहैबरसोंबरसों ॥ २२ ॥ धुरवानकीधावनिमानोअनंगकी तुं
 गधजाफहरानलगी ॥ नभमंडलतेछितिसंडलकुं छनजोति
 छटाछहरानलगी ॥ मतिरामसमीरलगेलतिका बिरहीबनि
 ताथहरानलगी ॥ परदेसमैपीवनपायोसंदेस पयोदवटाघह
 रानलगी ॥ २३ ॥ कूकिहैकेकीगिरीनकेऊपर भूपरकामुकमा
 नलैभूकिहै ॥ भूकिहैचंद्रवधूनकेबुंदन फूँकिहैसंदसमीरनचू
 किहै ॥ चूकिहैपानविनाघनसप्रांसके श्यामघटातनदेखतह
 किहै ॥ हूकिहैदैकैहियोकरिटका अंध्यारीनिसामेपियावाहि
 कूकिहै ॥ २४ ॥ पावसमेपरदेसपिया सुखहीबनितानिसोंपे
 मपगे ॥ घनधूमिरहेछविसोंछितिपै सरजादसनोरथजातथगे

अतिमारतमारसुवाननसों पुनिनैनसनोसवजामजगे ॥ कोहि
 भातिपतिव्रतपालजरी मोरवागिरिपैकहरानलगे ॥ २५ ॥
 नीरभलानकोपोखतपीरन बीरनवुंदविसारेहैवानये ॥ धूम
 वियोगिनिकेघटकी घुटिभूमिपैभूमिरहेधुरवानये ॥ जीभरतै
 नरहैगेतानैन नदीनदसिंधुभरैगेनिदानये ॥ पीकहिपीकहि
 पापीपपीहरा पीगयेजानिकैपीगयेप्रानये ॥ २६ ॥ आयोअ
 साढहहाअबहीतें चढीचपलाअतिचांपिकतूदें ॥ कृहेकहा
 खजनीरजनी दिनपापीकलापीमचायहैदूदें ॥ स्यामविनाक
 लनाहींपरै असुवानरहैभरिआखिनमदें ॥ ग्रीषमभानसीसी
 हतसानसी लागतीवानसीवारिकीबूदें ॥ २७ ॥ अंगनअंगन
 लाहिअनंगकेतुंगतरंगउमाहतआवै ॥ तौपदसाकरआरुह
 दास जवासनकेवनदाहतआवै ॥ मानवतीनकेप्राननमै जुगु
 मानकेगुंमजडाहतआवै ॥ वानसीवुंदनकेचदरा बदराविरही
 नपैवाहतआवै ॥ २८ ॥ आयोअसाढभईअतिगाढ गईसवरै
 नपहारीसिठादें ॥ कौनसुनैअरुकासीकहौ चहुँओरतेंदामि
 नीनाखतिबादें ॥ भोरहीतेंकरैकोकिलकूक सिरोमनिलेतक
 रेकोईकादें ॥ कामिनीकेहनिवेकींसनो चमकीभामकीजमकी
 जमदादें ॥ २९ ॥ निसिनीलनएउनएधनदेखि फटीछतियां
 हजवालनकी ॥ कविगंगजूबेछबिछीनभई सुथरीदुतिदेखितमा
 लनकी ॥ दसहृदिसिजेतिजगामगीहाति अनूपमजींगनजा
 लनकी ॥ मनोकामचमकीचढीकिरचै उचटैकलधैतकेनाल
 नकी ॥ ३० ॥ भजिवेगिचलौमथुराकींभट बचिहैनकोऊकरि
 जेरनरी ॥ धरिकारीडरारीघटानभतें लटकीधुरवानकीडो

रनरी ॥ अतिचावचढीलहकैचपला वहकैबरहीनकेसोरन
 री ॥ वहपाछिलोवैरसंभारिपुरन्दर चाहैअवैवृजबोरनरी ॥ ३१ ॥
 कूकैकलापीनचूकैकहूँ भुकिभूकैसमीरकीआनभकोरत ॥
 लींपपिहापपिहागपिहाभयो पीवकोनावलैहीयहिलोरत ॥
 पावसपीरअधीरनघग्रावस घूटघटाघटधौघनघोरत ॥ बूदैवदा
 बदीवारिधलौ बढिबैरिनिआजबियोगिनिबोरत ॥ ३२ ॥ उ
 मडेनभमंडलमंडितमेघ अखंडितधारनसौमचिहैं ॥ चमकै
 गीचहूँ दिसितेचपला अबलाकरिकौनकलाबचिहैं ॥ अकृला
 यमरैगीबलायममारख आजुउपाययहैरचिहैं ॥ पहिलेअंच
 वैगीहलाहललै फिरिकेकीकोलाहलकैनचिहैं ॥ ३३ ॥ गर
 जीघनघोरघटाचहुँओर भयोविरहातवहींसरजी ॥ सरजीज
 भएपिकदादुरमोर लियेरतिनायककीमरजी ॥ मरजीजुउठी
 पियकीसुधिलै चपलाचमकैनरहैबरजी ॥ बरजीअबकौनरहै
 सजनी भयोपावसमोजियकोगरजी ॥ ३४ ॥ ऋतुपावससग्राम
 घटाउनई लखिकैसनधीरधिरातेनहीं ॥ धुनिदादुरमोरप
 पीहनकी सुनिकैछनचित्तिथिरातेनहीं ॥ जबतेविकुरेकबिबो
 धाहितू तबतेउरदाहबुझातेनहीं ॥ हमकौनतेपीरकहैंजिय
 की दिलदारतौकोऊदिखातेनहीं ॥ ३५ ॥ कबिबेनीनईउन
 ईहैघटा सरवावनबोलतकूकनरी ॥ छहरैविजुरीछितिमंडल
 कू लहरैसनमैनभभूकनरी ॥ पहिरोचुनरीचुनिकैडुलही सं
 गलालकेभूलियेभूकनरी ॥ रितुपावसयोहींवितावतीहौ म
 रिहौफिरवावरीहूकनरी ॥ ३६ ॥

अथ हिंडोरावर्णन ॥

सावनीतीजसुहावनीकीसजि सूहेदुकूलसवैसुखसाधा ॥
 त्योंपदमाकरदेखिवनै नवनैकहतेअनुरागअवाधा ॥ प्रेमकेहे
 सहिंडोरनमै सगसैवरसैरसरंगअगाधा ॥ राधिकाकेहिबभू
 लतसावरो सावरेकेहियभूलतिराधा ॥ १ ॥ घेरिघटानतेंआ
 योउनै धुरवानकीडोरनलागीकगारन ॥ मोरनकेगनसोरक
 रें चहुँओरतेंचातिकलागीचिकारन ॥ ऐसीसमैछविदेखिवेकीं
 द्विजतुहँचलैकिनदौरिअगारन ॥ भूलतहेसहिंडोरनसैदो
 क कालिंदीकूलकदंबकीडारन ॥ २ ॥ सुचिसावनीतीजसुहा
 वनीविज्ज घनेघनहूँघहरानलगे ॥ वनकेवनगोविंदचातिक
 मोर मत्तारनकेसोरवानलगे ॥ दुवोभूलैभुकोभूमकोरसकै हि
 यराअतिसैउमगानलगे ॥ पटप्रेमपगेफहरानलगे नयकेसुक
 तायहरानलगे ॥ ३ ॥ भूलतदंपतिनेहरंगे रसपुंजनिकुंजनि
 होंबलिहारी ॥ रंगभरेपियदीनीसखी कलभूलभकोरकरंच
 कभारी ॥ ढीलीभईमोतियानकीडोर सुकोरहैहेरपोललातन
 प्यारी ॥ आलीरीलाजभरीविचघूँघुट कौसीलसीअंखियाँअनि
 यारी ॥ ४ ॥ चितचायसोंचासहिंडोरेचढी सुखसावनगाव
 नकोसचरा ॥ भूभकीज्जकिहूँकनलेतपरे कचऊपरव्यालिन
 केवचरा ॥ ललकैलखिवेनीप्रवीनकहै मनुमैनमहीपतिकोक
 चरा ॥ कुचकंचुकीसंदिरसाहँमहेस ध्वजाफहरातमनोअच
 रा ॥ ५ ॥ भूलतिप्रेमसोंहेमकीडोर सिवारसीपातरीहैकटि
 खीनी ॥ दैमचकीलचकावतिअंगनि रंगसचावतिनारिनवी
 नी ॥ पीयभूलायगयोहैअचानक प्यारीमहाछत्रिसोंभयभी

नी ॥ लालहिँडोरनगोदभरी तिसमेदभरीअखियांभरिली
नी ॥ ६ ॥ भूलतपाटकीडोरीगहें पटुलीपरवैठनित्यो'डकु
की ॥ पाँयनेदुसुचीनचकै लचकै कटिकंपनगालडरुकी ॥
सीखिवे कींविपरीतिसनो रितुपावसमैचटसारसुखकी ॥ खा
टीपरैउचटैसिरचेटी चमोटीलगैसनोकामगुखकी ॥ ७ ॥ भू
खनहारीअनोखीनई उनईरहतीइतहीरंगराती ॥ मेहकैला
वैसुतैसियैसंगकी रंगभरीचुनरीनचुचाती ॥ भूलोचलोहरि
साथहहाकरि देवभूलोवतहीतेडैराती ॥ भोरहिँडोरेकि
डोरिनछोडिकै देखेजलालगरेलपटाती ॥ ८ ॥ भूलतिनाव
हभूलनिवालकी फूलनिभालकीलालपटीकी ॥ देवकहैलचकै
कटिचंचल चोरीटगंचलचालनटीकी ॥ अंचलकीफहरानिहि
ये रहिजानिपयोधरपीनतटीकी ॥ किंकिनीकीभननानिभू
लावनिभूकनिसींभुकिजानिकटीकी ॥ ९ ॥ कंचनखंभकदंव
तरें करिकोऊगईतियतीजतयारी ॥ हेंगईपदमाकरत्यों
चलि आनकाआइगोकुंजविहारी ॥ हेरिहिँडोरेचढायलियो
कियोकौतुकसोनकह्योपरैभारी ॥ फूलनवारीपियारीनिकुंज
की भूलनहैनवाभूलनवारी ॥ १० ॥

अथ शरदवर्णन ॥

पियदेखतमानोरदाउभकी सुखकुंकुमरंजितभाजतहै ॥
रजनीउरकोअनुरागयहै किधौसूरतिवंतविराजतहै ॥ किधौ
पूरनचंदसुखंदउदेत सुकुंदसवैसुखसाजतहै ॥ किधौप्राची
दिसानवबालकेभाल गुलालकेबिंदुविराजतहै ॥ १ ॥ सिगरेदि
नवारिपहारसमेत तचीअतिदुसहपूषनसीं ॥ भईमैलीमहा

रघुनाथकहे बह्मकारिवयारिकेदखनसों ॥ पलडीठिलगाइन
 जाइलखी इमिभूरिरहीभरिदूषनसों ॥ सोईलीपतसोससि
 आवतुहै दिसिभीजेपियूषमयूषनसों ॥ २ ॥ छार्इछपादिन
 ज्योंदरसी मिलिकैचकवानवियोगविसारगो ॥ सौगुनोवाढगो
 प्रकासदिसानमै चौगुनोचावनजातउचारगो ॥ कैसीखिलीहै
 अलीकिकचंदनी नागरताकोविचारविचारगो ॥ राधेजुऊँ
 चेटाचढिकैकहँ आजनिलावएषूँघुटारगो ॥ ३ ॥ फ़ैलिर
 हीधरअंवरपूर मरौचिनवीचनसंगहिलोरत ॥ भौरभरीउफ़
 नातखरीसु उपायकीनावतरेरनतोरत ॥ क्यौँवचियेभजिह
 घनआनद वैठिरहेंघरपैठिठिँढोरत ॥ जोङ्गप्रलैकेपयोनिधि
 लौं वढिवैरिनिआजवियोगिनिवोरत ॥ ४ ॥ सेतपहारअगार
 भए अवनोजनुपारदमाहिँपखारी ॥ हातहीइंदुउदोतलसै
 चङ्गओरतेँसोरचकोरकोभारी ॥ फ़ूलीकुमेदकलीनिकली
 अवलीअलिकीवलिमैनिरधारी ॥ कोपिकैचंदतियानकेमान
 पै मानोमियानतेँतेगनिकारी ॥ ५ ॥ चारनिहारतरैयनकी
 दति लायोसहाविरहातनतावन ॥ हेससिनाथकहाकहिये
 जिनसौलगिनैनहींकंजसेपावन ॥ वीचदुकूलकेफ़ूलनलै अलव
 लीकेप्रेमकोसिंधुवढावन ॥ काङ्गदिवारीकिरैनिचलगो वरसा
 नेमनोजकोमंचजगावन ॥ ६ ॥

अथ हेमंतवर्णन ॥

वैरीवधारलगैवरछीसी अंगारलगैहिममैनमसूसमै ॥
 पानसुगन्धसनेहसुरंग सुमेरहरीसजीसेजअदूसमै ॥ जाइन
 हींरविहंकेतपे विनकंतहिमंतकेजेरजलूसमै ॥ कीरतिला

डिली प्रेमकी माडिली बावलीरुसत है कोऊ पूसमै ॥१॥ पूसनि
 सामै सुवारनीलै वनिवैठे दुहं के दुहं मतवाले ॥ त्यों पदमाकर
 भूमै भुक्ते घनधूमिर चैर सरंगरसाले ॥ सीतकी जीत अभीत भ
 एसु गनेन सखी कछु साल दुसाले ॥ छाकछकाछु विहीकी प्रिये म
 दनैन नके किये प्रेमके प्याले ॥१॥ मेरे मिलाये मिले दिनद्वै क दुरे
 दुरे आनद ओध अघाती ॥ त्यों चसको चितयो चित चाहिये सो
 चसको चनसों लजजाती ॥ देवकहाँते वनै विधि दें ऊ इतै मुखदे
 खललाको लजाती ॥ हैं उन सीतमै संगलहे उत सोइबेको अति
 शैललचाती ॥ २ ॥

अथ सिसिरवर्णन ॥

रैनमै प्रीतिकी रीतिनके रत ह्वै कैनि चीत भपेयहकोये ॥ नै
 नसे नैनमिल्लायलिये सुखसों मुखछायमहारसछोये ॥ मेलि
 हियासों हियाभुजवाङ्ग दुहं कटिमेपगमेपगपोये ॥ सीतकीभी
 तते दोऊदयानिधि खायमनोजविथानकोंसेये ॥१॥ नीलनि
 कुंजबनोरसपुंज चहूँ दिसिहेमवितानहैतानो ॥ आछेपरपर
 दामखतूलके तूलके वासबिछाये बिछानो ॥ केलिकरै गिरि
 धारनजू संगलै तियकी मधआतसखानो ॥ पावकहीकी सिखा
 नकेसंग अनंगही पावकपूजतमानो ॥ २ ॥

अथ अनुभावलक्षण ॥

दोहा ॥ जिनतें चितरतिभावको अनुभवप्रगटै आष ॥

ते अनुभावहि जानिहै जेरसज्जकविराय ॥ १ ॥ यथा
 गहिहाथसों हाथसहेलीके साथमे आवतही प्रथमानलली ॥
 सतिरामसुवासते आवतनीरे निवारतभौरनकी अवली ॥

लखिकैमनमोहनकींसकुची करीचाहतआपनीओटअली ॥
 चितचेरिलियोचखजोरितिया सुखमोरिदछूसुसकप्रायचली ॥
 १ ॥ खलतफागुसखीनकेसंगसों एकवढीफगुवासुखपागी ॥
 मूठीगुलाललियेरघुनाथ गर्दहरिपैहियमैअनुरागी ॥ प्यारेके
 हायनसोंकुटिकै पिचकारीकीधारत्यों छातीसोंलागी ॥ नैन
 नचायचितैतिरछें सुसकप्रायपिछैं। डीह्वै पीछेकींभागी ॥ २ ॥
 ठाढीअलीनसैलीनभट्टू रतिरंगप्रवीनअनंदमई ॥ कविदेनीजु
 औचकआयगए हरिओभिलकौसुखसारीलई ॥ सजनीनिकी
 आडमैअंठिभुजा लखेंमोहनकेसुखमोरिनई ॥ सुसकोहेंकैलो
 चनसोंललचेहें ललाललचैहेंकैबैठगई ॥ ३ ॥ संदहीसंद
 अनंदितसुंदरी जातिहूतीअपनेकहुंनते ॥ आगेसवैगरुना
 रिहूतीं हरयेहरिवातकहीइकधंते ॥ हायउठायछुईछतिया
 भसकायकैजोभगहीदुहंदाते ॥ वैननहींकह्योहेजगदीस सु
 भौहनहींकह्योजाउइहाते ॥ ४ ॥ बलिगेहमेवैठोसनेहसनी
 सजनीगनमैछबिछायरही ॥ चढिवेनीअटाकरिसैनयके भिटि
 दैनकेवाननिकायरही ॥ करीकां करीचौटह्वै ओटलला लखि
 भाभीवडीमुसुकायरही ॥ सतरायतियाछतियाकरदै चखफे
 रिचितैसिरनायरही ॥ ५ ॥ सेवकभूपनसाजेअपार लसैह
 धियारमहारुचिवाढी ॥ सोभासनाहपैअंचलमानो खरीभि
 लमावलिकीकुकिकाढी ॥ सैनखिलारसिखावनहार सनेहकी
 धारधीअतिगाढी ॥ फेरिकटाच्छपटापटेवाज अटापरबाल
 कटाकरैठाढी ॥ ६ ॥

अथ सात्विकभावलक्षण ॥

दोहा ॥ अनुभावहिसेजानिये आठोंसात्विकभाव ॥

हैं ग्रंथनिमतदेखिके बरनतहैं।कविराव ॥ १ ॥

प्रगटावतहैंजेरसै तेहैंसबअनुभाव ॥

याहीतेसात्विकनकीं कहिद्विजुअनुभाव ॥ २ ॥

अथ सात्विकनाम ॥

स्तंभ खेद रोमान्चकहि औरकंप स्वरभंग ॥

बज्जुरिअश्रु वैवर्ण्य है प्रलय आठवोंअंग ॥ ३ ॥

अथ स्तंभलक्षण ॥

लज्जाहरखादि कनते अंगअडोलहू जाय ॥

स्तंभकहततासोंसबै जेरसज्जकविराव ॥ ४ ॥

स्तंभ यथा ॥

देखतहीमतिरामरसाल गहीमतिप्यारीकिप्रैसनिगादी ॥
चाहिवेक्रीचितचाहभई पैगईहियतेकुलकानिनकादी ॥ संग
सखीनकींमानिदुरावति आननआनदकीरुचिवादी ॥ पाइप
रैमगमैनमरुके भईमिसिलाजनकेफिरिठादी ॥ १ ॥ आव
तहीजसुनातेअज्ञाय धिरीजुवतीनिकीभीरमैगादी ॥ छैलछ
बीलोकहंरघुनाथ लगगोटगसोंलिखिचित्रसीकादी ॥ भूलिग
योधरछूटिगयोडर लाजतजीभरलालचवादी ॥ ऊतरफेरैनट
रैसखी हरिकोमुखहेरैहेरानीसीठादी ॥ २ ॥ आवतहीजसु
नातटते लखिघाटकीवाटमेनंदकुमारै ॥ हूँ गईचित्रलिखीसी
चरित्र चितैनसुनैकोजकेतोपुकारै ॥ गोकुलनाथकहाकहि
ये इहिभांतिहहानकोजहियहारै ॥ बालकदैनअडोलभई

अवकोधरकेमगकींपगडारै ॥ ३ ॥ आवतवालअलीनकेसंग
 मिलेनदलालभएमसुकौहै ॥ वेनीचितैमुसुकौहैभई सगुलैल
 लनाअतिहीसकुचौहै ॥ पाँयसोंपाँयकोनेवरटारि विचारिर
 चीलखिवेकीयौगाहै ॥ हेरनकोमिसिहेरिलियोहरि पाँयप
 रैनउपाँयनसौहै ॥ ४ ॥ वरजोरीतियाइहिंगोरीसवै गहि
 लाईगीबिंदहिदोचनसों ॥ वहखिलनफागचलीहँसिकै सुख
 सोंनवलादुखमोचनसों ॥ भरिअंजनआंगुवीनीप्रवीन किये
 समलोचनलोचनसों ॥ जकिसीरहीसोतकिसोचनसों करऊँ
 चोचनहोतसकोचनसों ॥ ५ ॥ याअनुरागकीफागुलखी जहँ
 रांगतीरांगकिसोरकिसोरी ॥ त्योंपदमाकरघालिधली फिरि
 लालहीलालगुलालकीभोरी ॥ जैसीकितैसीरहीपिचकीकर
 काहनकेसरिरंगमैवोरी ॥ गोरिनकरँगभींजिगोसाँवरो साँव
 रेकरँगभींजिगीगोरी ॥ ६ ॥

अथ खेदलक्षण ॥

दोहा ॥ हरप्रलाजभयतेजुअंग अंबुजवैप्रगटाय ॥

खेदकहततासोंसवै रसग्रंथनिमतपाय ॥ १ ॥

अथ खेदयथा ॥

किंकिनीनेवरकीभनकारनि चारुपसारिमहारसजालहि ॥
 कामकलोलनिमैमतिराम कलानिनिहालकियोनदलालहि ॥
 खेदकेविंदुलसैतनमै रतिअंतरहीभरिअंकगुपालहि ॥ फूली
 मनोसुकताफलपुंजनि हेमलतालपटानीतमालहि ॥ १ ॥ ठा
 ढीऊतीतियआंगनमाहिँ अनंगअनंगनाकेसमजोहै ॥ आइग
 एहरिवेनीप्रवीन अनूपमरूपमनोजमनोहै ॥ देखतहीरहीसी
 सनवाय प्रसेदकनासनसेतनमोहै ॥ चंपलताफलफूलसमेत

प्रभातसमैमनोसीकरसोहै ॥ २ ॥ कलकंजनत्यों पगजपरनूपु
 र हंसनकीधुनिहूंदनकी ॥ रंगदत्तअबीरकीभीरसची सुभ
 ईछविथोंसुखमूदनकी ॥ छकिहोरीकेखिलनखिलिथकी भलकै
 उपमाअमबुंदनकी ॥ बिलसैमनोरूपसंगारभरी सुकतानफ
 रीछरीकंदनकी ॥ ३ ॥ फागुमचीवरसानकेबागमै पूररह्यौ
 थलतानतरंगसों ॥ गीपबधूइतठाढीगीपाल उतरघुनाथवढे
 सबसंगसों ॥ धूधटारिसखीनकीओटह्वै प्यारीचलाईजोप्रे
 मउमंगसों ॥ लागीतोमठअबीरकीआयपै प्यारोअह्लायग
 योवहिरंगसों ॥ ४ ॥ ह्यौअभिलाषभरोअतिहीनित चाहैस
 नाथभयोतनकोछ्वै ॥ आनिमित्योबहुभागनिसों रघुनाथसमै
 सोईआनदकोचै ॥ हीरतहीहरिकेउमग्यो गतिपारदकीमग
 रोमनिकेभू ॥ नेहभटूतियकेमनको भलक्यौहिचपैजलकेकि
 नकाह्वै ॥ ५ ॥ मोरकिरीटकसेकटिकाछनी बांसुरीमंदबजा
 षतटाढी ॥ आवतहीजमुनातटते दृषभानललीगहेंगौरबगा
 ढी ॥ गोकुलहेरिथकीथहराय गयोमनबूडिकटै सोनकाढी ॥
 खेदसनेहइतोसरस्यो मनोप्रेसपयोनिधिआवतवाढी ॥ ६ ॥
 कुंदनबेलीसिबालनबेली सहैलिनिसैसिलिखिलनआई ॥ बेनी
 जुआंचकआयगएहरि नूतनखिलकीवातसुनाई ॥ कुंजतेजोप
 हिलेफललावै सोसाहसुनेतियत्यों उठिधाई ॥ लाईललालै
 एकंतहिये नखतेसिखप्यारीप्रसेदमैछाई ॥ ७ ॥ ह्यैधुरवासुर
 षानकह्लं पुरवानकह्लंवरबीजनलागी ॥ छत्रलगाएसह्लंसंगमे
 यहिँकौतुकमेसतिकीजनलागी ॥ रीबलिजातिनजातिकही
 सुनिसेवकह्लनपतीजनलागी ॥ येधनसग्रामअनोखिनए दृषभा
 सुतालखिभीजनलागी ॥ ८ ॥

अथ रोमाञ्च लक्षण ॥

दोहा ॥ उठतरोमविनसीतजहँ रसवसभएसरीर ॥

सोसात्विकरोमाञ्चकहि वरनतसवमतिधीर ॥ १ ॥

रोमाञ्च यथा ॥

मैतुमसोंकहेराखतीहैं यहमानकियेकछूहैनलाहे ॥
अंगरहेउनसोंविकिकै रघुनाथलखौहितकेअवगाहे ॥ देखत
हीउठिठाढेभए बलिओसोंदुरावतिहौअवकाहे ॥ लागनकों
पियकेहियसों पहिलेतनतेइनरोमनचाहे ॥ १ ॥ सोसोंदुराव
कहाइतनो बलिजानतीहैंतुमहीनछलीसो ॥ साँचीकहौकि
नकप्रोंसकुचौ जियमानोहितकहैवातभलीसो ॥ देहिँतुमैपन
हँहितको रघुनाथलख्यौभएभेटगलीसो ॥ धायलगेहरिनै
नअलीसो भयोतनतेरोकदंवकलीसो ॥ २ ॥ गोकुलआयग
योवनओरतें नंदकिसोरअचानकचीझो ॥ चाहिरहीनखते
सिखलौं ठकुराइनिठाढीमनोठगिलीझो ॥ हारिगयोछविसों
दविकै फिरजीतवेकेपनसैसनदीझो ॥ रोमउठेनएमैनसनो
तियकेधरकोंसरकोधरकीझो ॥ ३ ॥ कैधोंडरीतूंखरीजलजं
तुतें कैअंगभारसिधारभयोहै ॥ कैनखतेंसिखलौंपटमाकर
जाहिरैभारसिंगारभयोहै ॥ नीठिनिसानोसुनैननिकोकह
कैअवनंदकुमारभयोहै ॥ कैधोंसुवारविहारहीमै तनतेरोक
दंवकोहारभयोहै ॥ ४ ॥ जातिचलीजलकेलिकोंकामिनि भौ
वतेकेसंगभौतिभलीसो ॥ भीजेदूकूलमैदेहँलसै कविदेवसुचं
पकचारदलीसो ॥ वारिकेबुंदचुवैचिलकें अलकेंछविकीछल
कौउछलीसो ॥ अंवलकीनेभकैकालकें पुलकौंकुचकंदुकदंवक

लीसी ॥५॥ केसरिसों उवटौ अङ्गवाय चुनीचुनरीचुटकीनसोंकों
 छी ॥ बेनीज्जागभरेसुकता बड़ीबेनीसुगं वफुलेलतिलोंछी ॥
 औचकआएवेरोमलठे लखिमूरतिनंदललाकीकरींछी ॥ औ
 भिलह्वै कह्यौआलीरीतै हहादेहँगुलावकीपोतीसोंपोंछी ॥६॥

अथ कंपलक्षण ॥

देहा ॥ कामकेपहरषादिते थरथरातजवदेह ॥

ताहिकंपसब कहतहैं जेवरबुधिकगेह ॥ १ ॥

अथ कंपयथा ॥

पहिलेदधिलेगईगोकुलमै चखचारुभएनटनागरपै ॥ र
 सखानकरीउनचातुरता कहैदानदैदानखरेअरपै ॥ नखते
 सिखलींपटनीललपेटें ललीसवभातिरूपैडरपै ॥ मनुदामिनी
 सावनकेधनमै निरुसैनहींभीतरहीतरपै ॥ १ ॥ कौनघोंका
 रोकहावतहै यहँदेखतहीतनकांपनलाग्यो ॥ हाइडसैतौक
 हाघोंकरै बिखरेसहीआइअमापनलाग्यो ॥ कैसीकरौअवसे
 बकराम अंधेरोचहँदिसिभांपनलाग्यो ॥ आवनलागीअरी
 लहरें कहैतनप्रानसमापनलाग्यो ॥ २ ॥ साजिसिंगारनिसे
 जपैपारि भईमिसहीमिसओटजेठानी ॥ त्योंपदमाकरआइ
 गोकंत एकंतजवैनिजतंतमैजानी ॥ घोलखिसंद्रिसुंदरसेज
 तें योंसरकीथिरकीधहरानी ॥ बातकेलागेनहींठहरातहै ज्यों
 जलजातकेप्रातपैपानी ॥ ३ ॥ इंदुसुखीअरविंदकीसालनि गूं
 दतरूपअनूपवगारगो ॥ कांभसरूपतहींभतिराम अनन्दसोंन
 न्दकुमारसिधारगो ॥ देखतकंपछुटोतियकेतन योंचतुराईको
 बोलउचारगो ॥ सीरेसरोजलगेंसजनी करकांपतजातनहार
 संवारगो ॥ ४ ॥

अथ स्वरभंगलक्षण ॥

दोहा ॥ हरषसोककामादिते कहै औरविधिवात ॥

ताहिकहतस्वरभंगहै जेकविवरविख्यात ॥ १ ॥

अथ स्वरभंगयथा ॥

जातकहतेकहकोचलो सुरटीपनलागतितानधरेकी ॥
आखरसोसमुझेनपरै मिलिग्रामरहेजतिजीलपरेकी ॥ जागी
हौकैरसपागीहौमादक हरिकहौरघुनाथहरेकी ॥ गाइनआ
वतवृभक्तिहैयह आजुभईगतिकैसीगरेकी ॥ १ ॥ कौनसोमं
चपढेहौहहा वहवालतीहालअचानकचाही ॥ ताछिनतेका
कुऐसीदसाभई गोकुलनाथनजातिसराही ॥ आएकहाकरि
सोकहिये षटीएकलौतीतुम्हदेखिकराही ॥ बोलकढैनगरो
गहिगो कहौरावरीदीठिमैमूठकहाही ॥ २ ॥ ताहिलेआई
अलीरतिसंदिर जाकीलगैरतिहपरछाहीं ॥ आइगयोमति
रामतहीं जेहिकोटिककामकलाअवगाही ॥ देखतहींसगरी
डगती पकरीहंसिकैतियकीपिथबाहीं ॥ लाजनईसुरभंगभई
सु कढीमुखमंदमरुंकरिनाहीं ॥ ३ ॥ जातिहुतीनिजगोकुल
कों हरिआवैतहालखिकैमगसूना ॥ तासोकहैपदमाकरथीं
अरेसावरेवावरेतैहमैकूना ॥ आजधोकैसीभईसजनी उतवा
विधिवोजकढीईकहना ॥ आनिलगायोहियेसोहियो भरि
आयोगरोकहिआयोककूना ॥ ४ ॥

अथ अश्रुलक्षण ॥

दोहा ॥ हरषरोषसोकादिते आखसजलजवहाय ॥

अश्रुकहतताकोंसवै रसग्रंथनिमतजोय ॥ १ ॥

॥ अथ यथा ॥

जानतहीनवसंतकोआगम वैठीहिध्यानधरेनिजपीको ॥
 एतेमैकाननओरसोंआयके काननमैपरप्रोबोत्पिकीको ॥ हेर
 घुनाथकहाकहियै कहिआयोहाआयोगरोभरितीको ॥ लो
 चनवारिजसोंअसुवाको अथाहबह्यौपरवाहनदीको ॥ १ ॥ सु
 खपीपीपरीधरकीकृतियाँ मनतेकदिव्यौतगएकलके ॥ तलबे
 लीबढीतनतापनते बढिस्वासनकेउमडेहलके ॥ कविगीकुल
 ऐसीइतेसैभई यहजीवैगिक्योंबिछुरेपलके ॥ सुखपीतमकेच
 लिवेकेचितै तियकेचखरीभखसेभलके ॥ २ ॥ गैलमैदोजग
 एमिलिअँचक पीछलेसौरिसनेहरसोंहें ॥ लालहँसेवसिअँ
 गनवालके गैलकपोलगएहूँहँसोंहें ॥ दोऊमडेवतराईके
 कों कविबेनीनलाजतेहूँसकेसोंहें ॥ हूँउहकीहँललाडगरे
 ललनाडगरीदृगकैडबरोहें ॥ ३ ॥

॥ अथ वैवर्ण्य लक्षण ॥

देहा ॥ सोचकोपभयलाजअरु सीतधामतेहाय ॥

सुखकीछविऔरैलखें विवरनकहियेसोय ॥ १ ॥

॥ अथ विवरन यथा ॥

साँभसमैखरिकामैखरेहरि एकतुहीनसवैसिलिहेरो ॥
 जैसोहातेसोरह्यौसवकोरंग नेकुघटगोनबढ़प्रोत्खिमेरो ॥ जै
 सीउदैकेसुधानिधिकीछवि तैसनिसोंरघुनाथहीषेरो ॥ सोत
 जिसीरोहूँसाँचीकही बलिकाहेतेपीरोभयोमुखतेरो ॥ १ ॥
 गोकुलगँबकोग्वालगँवार विलोकिकहाभ्रभछायगईहौ ॥ रा
 धेजुयादकरौवहिद्यौसकी बातनकोंबोभुलायगईहौ ॥ धीरघ

रौनभरौटगवारिसों तापचढीकहातायगईहौ ॥ डोलतिबो
 लतिहौनकळ अजूकैसीभईपियरायगईहौ ॥ २ ॥ कालिहीदे
 खिगईहौभट्ट रहीकंचनकेरंगकीअरुनाई ॥ गोकुलनाथकहाँ
 तेंवसी बहअंगअनूपमआनिगुराई ॥ पासखरीपरिहासकरै
 लखिकैनवसंगसकीपियराई ॥ एरीसुनोनिस्मैइनके सिगरे
 तनमैकिनकेसरलाई ॥ ३ ॥ कैसेहैंकुंजकेसुंदरफूल विराजत
 पातजरवजरगोसो ॥ यामेतौआवतपावतहौ पतिकीरतिके
 किकोरंगधरगोसो ॥ आयोवसंतवधारिवहै अयतोबहदेखिधे
 गोउभरगोसो ॥ सोचतहोपुनिपातगिरगो मुखहैगयोप्यारी
 कोपातकरगोसो ॥ ४ ॥ सिलिसारदौरैनमैखेकैसवै जहँछा
 योसलाउजरौतिनको ॥ तहँआइगोसेबकसग्रामअचानक भू
 ल्यौहुवाद्दसपौतिनको ॥ भुक्लिहाडिलीपैनियरान्योजवै पिय
 रान्योतबैरंगतौतिनको ॥ हरियान्योसहासुखमेरोतहँ क
 रियान्योसहासुखसौतिनको ॥ ५ ॥

॥ अथ प्रलयलक्षण ॥

देहा ॥ हरषसोकभयआदितें ईहातनकीजाध ॥

तासोंशात्विकआठवों प्रलयकहैंकविराय ॥ १ ॥

॥ प्रलय यथा ॥

जाछनतेछविसोंमुसुकात कळं निरखिनदलालबिलासी ॥
 ताछनतेअनहींमजमै मतिरासपियैमुसुक्यान सुधासी ॥ नेक
 निमेषनलागतनैन चकोचितवैतियदेवतियासी ॥ चंद्रमुखीन
 चलैनहलै निरवातनिवासमैदोपसिखाधी ॥ १ ॥ गोरीगुमा
 नभरीगजगामिनी कालिधौकोवहकामिनितेरै ॥ आईजती

सुचितैमुसुकायकै मोहिलई मनमोहनमेरै ॥ हाधनपाँयह
लैनचलै अँगुरीरजनै नफिरै नहिँफेरै ॥ देवसुबोरहींठाढीचि
तीति लिखीमनौचिचिचिचिचितेरै ॥ २ ॥ कौसीमई हैदसा
इनकी तुमहँतौलखीसबमेमहतीहौ ॥ मोहनतौअपुराकी
गए भटुकौनउपायकरैगहतीहौ ॥ गोकुलध्यानधुनीसैधसौ
अवताहिकहौकिनकरी लहतीहौ ॥ राधेकहैककुजतरुदेतिक
काङ्ककहैकहैकाकहतीहौ ॥ ३ ॥

॥ अथ जृंभालक्षण ॥

दोहा ॥ आलसआदिकतैसुजा करिविकासमुखदेत ॥

ताकीजृंभाकहतहैं जेबरबुद्धिनिक्षेत ॥ १ ॥

॥ जृंभा यथा ॥

छूटिरहैमुखपैरुचसेचक राजमनोचलचंदहीरोकै ॥ नै
ननितेइमिनीरबहै अरविंदमनोमकरंदहीसोकै ॥ वारहीवा
रजंभातहैदार सँभारसकैनवियोगकेसोकै ॥ आवनकैसम
भावनको वहठाढीअटापरपंथविलोकै ॥ १ ॥ आरससोरस
सोपदमाकर चैकिपरैखचुंवनकेकिये ॥ पीकभरीपलकैभ
लकै अलकैअलकैछूटिछूटाँलिये ॥ सोसुखभाषिसकैअव
को रिसकैकसकैससकैछूतिचाँछिये ॥ रातिकीजागीप्रभात
उठी अँगरातिजंभातिलजातिलगीहिये ॥ २ ॥ छूटिगयोअ
गरागसघैरँग रातप्रभातदसायहवालकी ॥ नैनलिकाजरको
रखिसी वधीकोइनसुंदरमूरतलालकी ॥ केलिकेमंदिरकेदर
पैखड़ी देखीनवीनयोसोभारसालकी ॥ दोजसुजानउचायेजं
भात सुचंदचदरोमनोकंजकीनालकी ॥ ३ ॥

॥ अथ सृङ्गार वर्णन ॥

दोहा ॥ जाकोथाई भावरति सोरसहोतसिंगार ॥

मिल्लिविभावअनुभावपुनि संचारीनिरधार ॥ १ ॥

द्वै विधिकहृतसिंगारसो ग्रंथनिकोमतदेखि ॥

एकसंजोगसुदूसरो हैवियोगअवरेखि ॥ २ ॥

॥ संयोगसृङ्गार को लक्षण ॥

दोहा ॥ मिलिदंपतिवज्रभातिकी क्रीड़ाकरतअछेह ॥

ताहिसंजोगसिंगारबुध वरनतसहितसनेह ॥

॥ अथ संजोगसृङ्गार यथा ॥

हसैघरविंदसेआननत्थी घिरिआवेंचह्रंवांमलिंदकेवन्द ॥

गोविंदबिनोदकीवातेंकरै सुनिकैसुखप्यारीकेहोतअमन्द ॥

बड़ेदृगदेखिविफातसेजात चितौतरहैंपरेप्रेमकेफन्द ॥ सिं

घासनएकैलसैविलसैंदोज राधिकारानीऔऔष्टजचन्द ॥ १ ॥

दुरैदृगदेखिमलिंदकेवन्द फानिन्दफांसैकचमेचकफांद ॥ गव

न्दनतेंगतिमन्दनवीन अमंदलसैछविआनदकन्द ॥ करौंकर

जोरिकैवन्दनहीं दृषभानकीनन्दिनीनन्दकेनन्द ॥ लसैमधिण

कसिंघासनमैमिलि राधिकारानीऔऔष्टजचन्द ॥ २ ॥ चन्द

छटाछिटकीछितिपैवर मीठीसुधासीसुनीपिक्रवानी ॥ सीरेस

मीरहरेहरेआय कहतेसुबासकीपांतिवितानी ॥ चांदनीके

करिवैठेविछावने राजिवनैनऔराधिकारानी ॥ देखदुहके

हियेदृहिसैसर कामकलाअतिहीसरदानी ॥ ३ ॥ मानपि

यापियआनदसों विपरीतरघीरतिरंगरह्योवू ॥ कामकलोल

निमैमतिराम रहीधुनित्यौकलकिंकिनीकीहू ॥ आननकी

उँजियारीपरौ अमविंदुसमेतउरोजलसेद्वै ॥ चंदकीचाँदनी
केपरसे मनोचंदपधानपहारचलेचै ॥ ४ ॥ गुंजरहेबहुपुंजम
धुमत कोकिलकूकतीतानतनीमे ॥ धूंधुरिछायरहीहैपरागकी
भैहरिमंदसुगंधसनीमे ॥ गोकुलनाथपरैसकरंदकेबुंदनकीभ
रिसीधरनीमे ॥ दैगलबाँहखरेहरिराधेसुबौरीअरीवारसा
लबनीमे ॥ ५ ॥

॥ अथ हावलक्षण ॥

दोहा ॥ प्रगटतियजोप्रकृतिहैं निजसिंगारकेहेत ॥
सोसंजोगसिंगारमै हावसवैकहिदेत ॥ १ ॥
लीलाऔरबिलासपुनि विच्छितबिभ्रमहोय ॥
किलकिंचितपुनिललितहू मोटाइतजिबजोय ॥ २ ॥
बहुरिकुट्टमितजानिये अरुविव्वोकुडमान ॥
विहितसहितदसहावये सबकबिकियेबखान ॥ ३ ॥

॥ तत्र लीलाहावलक्षण ॥

तियपियकैपियतीयके भूषनबसनबनाव ॥
ताहीविधिबोलैहंसै सोहैलीलाहाव ॥ १ ॥

॥ लीलाहाव यथा ॥

येइतधूंघुटघालिचलै उतबाजतबांसुरीकीधुनिखालै ॥ त्यों
पदमाकरयेइतैगोरस लैनिकसैवाचुकावतिमोलै ॥ प्रेमकेपंध
सुप्रीतकीपैठमै पैठतहीहैदसायहजोलै ॥ राधामईभईसग्राम
कीमूरति सग्राममईभईराधिकांडोलै ॥ १ ॥ बाहिरजैवेकोरो
कभयोसखी जादिनसोंवहकीरतिकोपी ॥ तादिनतेँवृषभान
लली घरहीमहँरासक्रियासबओपी ॥ कुंजरचेकदलीखँभकेर

घुनाथलतामनिमालक्रीरोपी ॥ प्रीतिक्रीरीतिनजातगनी घ
 नीआपुगुपालसखीसवगीपी ॥ २ ॥ दोऊदुहं पहिरावतचून
 री दोऊदुहं सिरवाँधतपागै ॥ दोऊदुहं कोसँगारतअंग गरे
 लगिदोऊदुहं अनुरागै ॥ संभुसनेहसमोअर हे रसख्यालनमै
 सिगरीनिसिजागै ॥ दोऊदुहनसोंमानकरै पुनिदोऊदुहन
 मनाधनकागै ॥ ३ ॥ ठानिमतीरसरूपइतोपै पतानसखीनस
 खासोंतनोकरै ॥ आपनेऔरनकोधरसै भरमैनकोऊअसिओ
 पसनीकरै ॥ दूतीअजानहुँकेवसमै विपरीतिहं रीतिहुँकोरम
 नोकरै ॥ साँवरेह्वै करिराधिकासेनित राधिकासेवकसगामव
 नोकरै ॥ ४ ॥ घैउनकेउनकेवैसजेपट भूषनसोंरँगदूनगएह्वै ॥
 नैननवैननकेसरसोंमन सेवकमैनकोतूनगएह्वै ॥ मानकरैसन
 मानकरै अनुमानमैकोऊकछूनगएह्वै ॥ आपकोदेखिदोऊ
 मेदोऊ दिलदूनेदुहंकेदुहंनगयेह्वै ॥ ५ ॥ जोपटपीतकि
 रीटधरप्रोतो सुहारलुरैकृतियाँछविपैहै ॥ स्वाँगललाकोतोकी
 फ़ोसही अजपूसवभाँतिनिवाह्योनजैहै ॥ नूपुरमौनगहेरहि
 है अवतोरसनाधुनिघोरमचैहै ॥ जोतुमराधेजुकाङ्गभईहो
 तो काङ्गहाराधाकियेवनिऐहै ॥ ६ ॥ घ्यारपगीपगरीपियकी
 वसिभीतरआपनेसीसँवारी ॥ एतेसैआगनतेँउठिकैतहँ आ
 यगयोसतिरामविहारी ॥ देखिउतारनलागीप्रिया प्रियसाँह
 निसोंवह्जरौनउतारी ॥ नैननवायलजायरही सुसुकायललाउ
 रलाईपियारी ॥ ७ ॥

॥ अथ विलासहाव लक्षण ॥

दोहा ॥ वीकनिचलनिचितौनिमै हीतजहाँसंकेत ॥

ताकीकहतविलासहै जेवरवुद्धिनिकेत ॥ १ ॥

॥ विलासहाव चया ॥

ऊंचेडरोजलचीसीपरैकटि मत्तगयंदनकीगतिडोलनि ॥
 रूपअनूपमआनटसी अलिपीतममोललियेबिभुमोलनि ॥ को
 वरनैकबिबेनीप्रवीन रहीकबिबेनी फ़विगोलकपोलनि ॥ पैनी
 चितौभिरसीलेविलोचनि मंदहंसीमृदुमाधुरीबोलनि ॥ १ ॥
 आजअटाचढिआईघटानमैं विज्जु कुटासोबधूबनिकोज ॥ देव
 तियाकविदेवनकेतीपें एतेविलासज्जलासनओज ॥ पूरबपूरन
 पुन्यनते बडभागविरंचिरच्योजबसोज ॥ जाहिलखेलज्जअंज
 नदे दूखभंजनएदगखंजनदोज ॥ २ ॥ आईहीखेलनफ़ागयहं
 दृषभानपुरातेंसखीसंगलीने ॥ त्यौपदमाकहगावतीगीत रि
 भावतीभाववतायनवीने ॥ कंचनकीपिचकीकरमैलिये केसरि
 कैरंगसोंअंगभीने ॥ छोटीसिछातीकुटीअलकें अतिबैसकीछो
 टीबहीपरवीने ॥ ३ ॥ अलिधूधुटमैडटिनैनधुमाय भुमायभुजा
 अठिलायचलै ॥ कबिबेनीसखीसोंहरंबतराति दुरेअंगराति
 मैलंकुहलै ॥ कुलसोअचराउचकायलखाय ॥ तियाकृतिया
 कलिलेतललै ॥ क्योछोहरीकुलकप्रौकबिछोहन क्वावति
 छाहनदेतिकलै ॥ ४ ॥ पौरिपैवालविलोकिवसैकित बूझप्रौब
 टोहीलैलालविहारी ॥ सांभभईपथसाभनदी चज्जंओरचढी
 हेकदम्बिनीकारी ॥ गोकुलजायबसौअवही खिरकीसोंमिली
 लगीद्वारकिंवारी ॥ चाहिकहीसुसुकायसुनो यहवाखरीसूनी
 सदाकीहमारी ॥ ५ ॥

॥ अथ विच्छितहावलक्षण ॥

दोहा ॥ घोरिहीसिंगारमहं सोभाअधिकलखाय ॥

ताकीविच्छितहावकहि वरनतकविसमुदाय ॥ १ ॥

॥ विच्छिन्नहाव यथा ॥

मानोमयङ्गहीकेपरजं क निसंकलसैसुतबंकमहीको ॥ त्यों
पदमांकरजागिरह्यो जनुभागिहिये अनुरागजुपीको ॥ भूपन
भारिसिंगारनसों सजीसौतिनकोजुकरैसुखफीको ॥ जोतिको
जालविशालमहा तियभालपैलालगुलालकोटीको ॥ १ ॥ आ
जुगईंसिगरौमुदिवे जुरहीगुं दिमोतिनजोतिनजालसै ॥ कंक
नकिंकिनीछापछरा हराहेमहमेलपरीयहिंचालसै ॥ टोनेपढी
ककुवेनीप्रवीन सलोनेसरूपकितीलखिवालसै ॥ इन्दुजित्यो
अरविन्दुजित्यो तैंगोविन्दुजित्योएकविन्दुदैभालसै ॥ २ ॥ देह
कीदीपतिकुन्दनकैसी हराहियसैअतिखागतनीका ॥ सारीस
पेटखुलीएकऐसी जोचाहतचित्तहरैसवहीका ॥ औरैचटीक
कुअननओप लखेंसिटजातगुमानससीका ॥ सौतिनकागह
नानिदरै यङ्गरीकेभालसैरारीकांटीका ॥ ३ ॥ तूतौंसंगार
करैकरिप्यार विचारतिबोतनजातिलरीसी ॥ गोकुलसैननि
सङ्गचखौं कवहं यङ्गमेरीहैलङ्गवरीसी ॥ देखतिहौकुचकेकच
केभर सोंठरिजातिहैटूटिपरीसी ॥ हारइतावडोमातिनका न
सँभारिहैजायगीबूडिषरीसी ॥ ४ ॥ एतोहैठाकुरडारतहैंकहि
प्यारसोंकैरघुनाथनिहीरो ॥ हीरनिकाअरुपन्ननिका मिलिकै
फविहैतुवगातहैगोरो ॥ देखतिहैतूदसाकटकी सहजैलचके
किमिसानिहैतारो ॥ तातेंसँवारिभटूपहिरौगीसै हारचमेली
काभारहैथीरो ॥ ५ ॥

॥ अथ विभ्रमहावलक्षण ॥

दोहा ॥ भूपनऔरैअंगके सजिऔरैअंगलेत ॥

ताकोंकविकोविदकहैं विभ्रमहावसहेत ॥ १ ॥

॥ विभ्रमहाव यथा ॥

बकरैखरीप्यावैगजतिहिकों पदमाकरकोमनक्ष्रावतहै ॥
 तियजानिगरैयांगहीवनमाल सुअँचेललाइँ च्योआवतहै ॥ उ
 लटीकरिदोहनीमोहनीकी अँगुरीधनजानिकेदावतहै ॥ दु
 हिवोऔदहाइवोदे।उनको सखिदेखतहीवनिआवतहै ॥ १ ॥
 कृकिमोहिगईमनमोहनसों मिलिमोहिनीमारकेसैरभरी ॥
 कविवेनीकृकैविहँसैसतराय कसैगरेषूषुखुँदखरी ॥ तमकै
 उलटेदैतरगोननकान टिकैनतियैयहवानपरी ॥ वरपीठितेटा
 रधरीउरपै सुधरीवडीसोंधेभरीकवरी ॥ २ ॥ साँकसमैचलि
 आवतजात जहाँतहाँलोगनहँनडरौगी ॥ प्रीतससौरतही
 यहरूप धाँह्वैहैकहाजवअंकभरौगी ॥ जानतिहै।सतिरामत
 ऊ चतुराईकीवातनहीवधरौगी ॥ किंकिनीको।उरहारकिये
 कहौकौनपैजायविहारकरौगी ॥ ३ ॥ नाइनकेकरतेठकुराइ
 न हीसनिजावकआपहीलीना ॥ ताहीसमैमनमोहनसूरति
 नंदललाउतआवनकीनी ॥ देखतरूपकीरासधुरंधर जद्यपि
 आटदियेपटकीनी ॥ पायनकीसुधिभूलिगई अकुलायनहाउ
 रआखिनदीनी ॥ ४ ॥ रैनजगीपियप्रेमपगी उठिसोरहींसे
 जतेभैं।नसिधारी ॥ पैङ्गिलईकरमै।उरमाल सुलालकीमोलन
 बालविचारी ॥ आरसीकीकिगुनीकृबिछाजत ऐसीनआरसी
 औरनिहारी ॥ संगसखीसुसकरानलगी लखिआढे।पतंबर
 आवतप्यारी ॥ ५ ॥

॥ अथ किलकिंचितहाव लक्षण ॥

दोहा ॥ हरषहासअभिलाषसुखम भीतिएकहीवार ॥

हातजहाँतासीकहैं किलकिंचितनिरधार ॥ १ ॥

॥ किलकिंचित यथा ॥

बेनी सँवारतबेनीजुप्यारीकि सेलिफुलेलगुंदीवर फूलनि ॥
 पोछिपितंभरसोंपटियारचि चारुकसीनखलैमखतूलनि ॥ गी
 रोकिपीठमैदौठिगडी चलिहायपरगोतियकेभुजमूलनि ॥ चौ
 कीचकीविहँसीसतराय समाधरहीपियकेहियभूलनि ॥ १ ॥
 लागतहींपियकेहियसोंहिय मोहिरहीतियकामकलानिमै ॥
 देवसँखेगुजगेउमगेउर एकहीवारुरुवैसुखदानिमै ॥ हीमैऊ
 लासगरेसिसकी अधरानिहँसीअँसुवाअखियानिमै ॥ स्वास
 मैवासविलासमैरोसु सुभै।हनिमैअरुभैकुलकानिमै ॥ २ ॥
 लालनवालकेइहीदीनातें परीमनआयसनेहकीफाँसी ॥ का
 मकलोलनिमैमतिराम लगे।ने।वाँ।टनमोदकीरासी ॥ पीत
 मकेउरबीचभए दुलहीकोविलासमनेजकीगाँसी ॥ खेटवहो
 तनकंपउरोजन आँखिनअँसू नपोलनिहँसी ॥ ३ ॥ वैठीऊ
 तीरतिमंदिरमै गएपायदवेपियपायपिछे।हीं ॥ लीनीसुजा
 भरिकैहियलाय डेरायकेकाँपिपरीसतरे।हीं ॥ गोकुलछूटि
 वेकीवलके चहीचंचलह्वै कहीवातरिसोंही ॥ फेरिकैनारिचि
 तैपहिचानि भईसुखदानिसुजानलजोंहीं ॥ ४ ॥ मूठिगुलाल
 भरेचलीलालके सारिवेकींसुखपैसुखकोंचहि ॥ गोकुलनाथ
 खिलारलईनव लोइनहं भरिकेसरिसोंलहि ॥ जायदईपहि
 लेकुचयै पिचकारीकिधारनिहारिकेहीकहि ॥ आँचरओडि
 चितैसतराय लजायसखीनकीओटलईगहि ॥ ५ ॥ वहलँक
 रोकुंजकीखारिअचानक राधिकामाधवभेटभई ॥ सुसकानि
 भतोअँचएकीअली त्रिलीकीवलीपरदौठिदई ॥ कहराय

भुकायरिसायमसारख बाँसुरियाहँसिछीनिलई ॥ भृकुटीम
 टकायगोपालकेगात्मै आंगुरीखारिगडायगई ॥ ६ ॥ घूम
 तीहँभुकिभूमतीहँ सुखचूमतीहँधिरह्वै नथकीए ॥ चौकिपरै
 चितवैबिफरै सफरैजलहीनज्यौ प्रेमपकीए ॥ रोभतीहँखु
 लिखीभतीहँ अँसुवानसोंभीजतीसोभतकीए ॥ ताछिनतेंउ
 छकीनकहँ सजनीअँखियाँहरिरूपककीए ॥ ७ ॥ खैलतही
 सजनीनमैचौपर चंद्रमुखीरजनीभइतैसी ॥ आइगएकबिराम
 सुरारि लगेमिलिखेलनचोपसोंऐसी ॥ दावकेजातगह्योपिय
 हाय पियाकोंकछुकहिवातअनैसी ॥ चौकिखिभीयहरानीहँ
 सी हरषीअँसुवाभरिमानकैबैसी ॥ ८ ॥

॥ अथ ललितहाव लक्षण ॥

दोहा ॥ मनप्रसन्नप्रियवसकरन चितचौगुनासुचाव ॥

प्रतिअंगनरचनाललित वरनतललितसुहाव ॥ १ ॥

॥ ललितहाव यथा ॥

चंद्रसोआननचाँदनीसोपट तारेसीमोतीकीमालविभा
 तिसी ॥ आँखेंकुमोदिनीसीजलसी मनिदीपनिदीपकदानके
 जातिसी ॥ हेरघुनायकहाकहिये पियकीतियपूरनपुन्यविभा
 तिसी ॥ आईजोझाड़केदेखिबेकों बनिपून्यकीरातमैपून्यकी
 रातिसी ॥ १ ॥ देखिबेकोंदुतिपून्यकेचंद्रकी हेरघुनायअँरा
 धिकारानी ॥ आईबिलौरिकेचौतराजपर ठाढीभईसखसौर
 भसानी ॥ ऐसीगईमिलिजेझकीजोतिमै रूपकीरासिनजाति
 बखानी ॥ वारनतैंकछुभौहनतैं कछूनैनकीछबितेंपहिचानी
 ॥ २ ॥ मंदगयंदकीचालचलै कलकिंकिनीनेवरकीधुनिबाजै ॥

मोतिनहारनसींहियरो हियरो हरिवेकेहुलासनिसाजै ॥ सा
 रीसुहीमतिरामसासै सुखसंगकिनारीकेयैछविछाजै ॥ पूरन
 विवपियूपमयूष मनीपरिवेषकीरे खविराजै ॥ ३ ॥ देहकीदी
 पतिकुंदनकैसी लगेरतिमंदिरकेसुवठौरै ॥ वैरहैंचांदनीसीस
 खखालें सुवासतेंभीरकरेरहैंभौरै ॥ सेतविछीननमैहूंकहूँ छि
 नएकलौछायरहैछविअौरै ॥ प्यारीधरैपगएकतहा पगद्वैक
 लौईंगुरसोरंगदौरै ॥ ४ ॥ सोभासनेसवअंगनिभूषन न्याउ
 हीकाङ्कलखेअबुरागे ॥ नैनवडेविहसोहेंसने सुखवैनसुमानो
 सुधारसप्रागे ॥ कंचनयेलिसीदेखियेदेह दोऊकुषकौतुक
 लागतआगे ॥ हातिहैवेलिषदांगिरिमे यहवीरकहागिरिबै
 लिमैलागे ॥ ५ ॥

॥ अथ मोहाइतहाव लक्षण ॥

दोहा ॥ वातनकींसुनिमित्तनकी चाहहैतमनमाहिं ॥

मोहाइततासींकहैं रसग्रंथनिअवगाहि ॥ १ ॥

॥ मोहाइतहाव यथा ॥

रूपदुहकोदुहनसुन्यो सुरहैतवतेंमनीसंगसटाही ॥ मो
 हिरहेकवकेयैदुह पदमाकरअौरकछूसुधिनाही ॥ ध्यानमै
 दोऊदुहनलखें हरषैअंगअंगअनंगउछाही ॥ मोहनकोमन
 मोहिनीसैवसप्री मोहिनीकोमनमोहनमाही ॥ १ ॥ पियप्रा
 तक्रिवाकरैआंगनमै तियवैठीसुजेठिनकेयलमै ॥ सुखकीसु
 धितेंउमहैअसुवा बहरावैजभाँइनकेछलमै ॥ नअषानीजऊसि
 गरीनिशिदासज कासकलानिकियोकलमै ॥ अखियाँभखियाँ
 ललकौफरिवडूवे कोहरिकीछविकेजलमै ॥ २ ॥ बूझतिहैज

कबाँधेखरो सुधौको हैं कहाँको हैं कुंजबिहारी ॥ बाहीघरीतें उ
 सासबढी ओकदे अँसुवा अँखिया नितें भारी ॥ आन्दोहै बोलि
 कहाँतें धामै ठकुराइनके टिगही यगंवारी ॥ काँटो निका रिवेए
 ककहूँ वहितौ सबदेह कटीलीकै डारी ॥ ३ ॥ फूलि रहै डूँ सबे
 लिनसों मिलि प्रुरि रही अँधियारी निहारी ॥ मोहि बिलोकि
 अँधेरीइहाँ कछु औरईसी भईदीठि तिहारी ॥ जैसी जूतीहम
 तेतुमतेँ अबहोयगीवैसियै प्रीति तिहारी ॥ चाहतजौचितमै
 हिततौ जनिबोलिये कुंजनकुंजबिहारी ॥ ४ ॥ मोहिनदेखाअ
 केलिये दासजूषाटज्जवाटज्जलोगभरेसो ॥ बोलिउठौंगीवरैतें
 लैनावती जागिहै आपनीदाँउअनसो ॥ काङ्कवानिसँभारेर
 हौ निजवैसीनहै तुमचाहतजैसो ॥ आवोइतै करौलेनटही
 को चलैवोकहींकोकहीं करकैसो ॥ ५ ॥ बाँधेनमैबछगलैगरै
 यन क्खीरभरप्रोकछरासिरफ़टिहै ॥ बेनीअधेरलगैइतकै घरबै
 रिननंदकोजानैकाऊटिहै ॥ प्रेमअहोनिबहोअबलौ नकहौ
 करियेइनबातजटिहै ॥ मोहिगहौनहहातुमैआनि कहातुम्ह
 काङ्कभईटजलूटिहै ॥ ६ ॥

॥ अथ कुट्टमितहाव लक्षण ॥

दोहा ॥ समयमहासुखकोजहाँ दुखदरसावैवाल ॥

हावकुट्टमितकहतहैं ताकोसुमतिरसाल ॥ १ ॥

॥ कुट्टमित यथा ॥

बलिदेखिरहेहेदुरेदुरेदोऊ गएमिलिगैलचलैछलना ॥
 छतियाँमेतियापियलायलई रतिकीबतियाँपैपरीसलना ॥ क
 बिबेनीललारसलूटिकरी कोऊआयपरीतौ परीपलना ॥ छ

तियाँ करकै चखफेगिचितै रदअंगुरीटाविरहीलकना ॥ १ ॥
 गोकुलनायकेसंगरमै कसिजंवनिकोरतिकीगतिबारै ॥ का
 मकलापरवीनतऊ नवसंगमकेभरिभावविहारै ॥ गाढेगहेकु
 चकेउचकै ससकैसिसकीनको।सोरपसारै ॥ नाकसिके।रिह
 हाकरिकै सतरायचितैकरसोंकरटारै ॥ २ ॥ नाहसोंनाहीं
 करैसुखसों सुखसोंरतिकेलिकरैरतियामै ॥ लागिनखच्छत
 सीसीकरै करुनायकरैपैवकैवतियामै ॥ देवकितैरतिकूलत
 कै तनकंपसजैनभजैवतियामै ॥ जानुसुजानहूँकोमहरावति
 आवतिछैललगीछतियामै ॥ ३ ॥ जनिघेरोगोपालहीटेरोह
 मै तुमजानतलोगलोगाइनको ॥ यहगोकुलगौवकीगैलगहौ
 गनिछैलगहौचतराइनको ॥ यहसूनीनिकुंजनबेनीप्रवीन अ
 धीनभईगहैं।पाइनको ॥ हमसोंतुमसोंइत आवनजानकै चौगु
 नीचोपचवाइनको ॥ ४ ॥ हाथहियेनलगाओलला हरिजूह
 ठिकैअंगियानउतारो ॥ ताकतहौफुफुटीकीफुंटी तनताक
 तबासकुवासनेवारौ ॥ अंकभरेअधरारसकेलिये क्यौं गनिहै
 कविराजविचारौ ॥ सासुलखेंकरिहैबिनुप्रान हहातुमकाह
 इहाँतेसिधारो ॥ ५ ॥ मानवेहमलुहारिकरै सतरायभुकेअ
 गियानउतारै ॥ मंडनडोरीकेछोरतही रसकेमिसकैअंगुरी
 गहिमारै ॥ लालकरैअपनोमनभायो चुरीभनकैजवहायनभा
 रै ॥ कोइलसीकुज्जकैवहकै ससकैसतरायभुकेभक्तकारै ॥ ६ ॥
 करसोंकरखेंचतहीसतराय रुखोंहेसिवातेकहैनिदरै ॥ पर
 जंकचढ़ावतभै।हैंचढ़ाय अनेकसतापसमूहहरै ॥ पुनिबेनीग
 हेंसुहसोंसुहछ्वाय ज्यौं ज्यौं मनभावनअंकभरै ॥ तियत्यौं त्यौं

हिये सुख पावै पै भूठे ई रोय रिसायत सासे करै ॥ ७ ॥

॥ अथ विव्कोकहाय ललला ॥

दोहा ॥ कपट अनादर करत जहँ निपटने हते बाल ॥

ताहि कहत विव्कोकहैं पांडितगुनीर साल ॥ १ ॥

॥ विव्कोक यथा ॥

नंदके धामते सुंदर सग्राम सिधार प्रोजहं नृगलोचनी जागी ॥
जो बनजोर जलूसकी जीनति जाहिर जाके हिये अनुरागी ॥ जो
रदुहं करभारे से भाय निहोरत प्यारो पिया बड़ भागी ॥ चोरि
कैठी ठिमरोरि कै भौं ह सखी सुख और निहारन लागी ॥ १ ॥ मा
नकै बैठी सखीनके संमत बूभिवेकीं प्रिय प्रेम प्रभाइन ॥ दासद
सासुनिहारते प्रीतम आतुर आयो भरो दुचिताइन ॥ बूभरह्यो
पैनहेत लह्यो कहं अंतहहाकौ गह्यो तिय पाइन ॥ आली लखै वि
नकौड़ीको कौठुक ठोढी गहें विहँ सैठ कुराइन ॥ २ ॥ एकतौ आ
एबुला एबिना हरिजातगने सब ऊपर लेखे ॥ तापर जायकै सो
हैं भटू सिरनाथ प्रनाम किये ते हैं प्रेखे ॥ जोरि कैहाय खरे भएदू
रही पैरघुनाथ महाहित भेखे ॥ और कहासनमानकहैं गु
नगौरि गुनाते सुधेन देखे ॥ ३ ॥ नीकोन है कछु देखत हूँ विधि
ने कुपै नैन बड़े करि डारे ॥ ताहीते ऐं ठि अकासनिहारत कूरकु
रूपडे राबनकारे ॥ ठीठोदैदै दिगवै ठत आन महादुखदान दर्ईके
संधारे ॥ आपनी सीकत खै चहमारीतू पामरी ओढ़त कामरी
वारे ॥ ४ ॥ दानी भएन एमागत दानही जानि है कंसतो वांधन
जैही ॥ दूटे कुराब कुरादिकगी धन जो धन है सो सबै धनदैही ॥
रोंकतही बनमै रसखान चलावत हाय धनो दुखपैही ॥ जैही जो

भूषणकाहृतियाके। तोमोलकराकेललानविकैहौ ॥ ५ ॥ मो
 रकौप्राखैकिरीटवन्यो ककुत्ताखैलगाईननंदधनेरे ॥ गोविंदए
 तोगहरकरो गुनकौनसेवेनीप्रवीनअनेरे ॥ पीतपिक्कौरीकभे
 कटिमै षटिजानतऔरनआपुननेरे ॥ चाकरचरेपरेचरवाह
 है ऐसेहमारेववाकेधनेरे ॥ ६ ॥ मानहुँआयोहैराजककु चदि
 बैठतऐसेपलासकेखोढे ॥ गंजगरेसिरसोरप्रखा मतिराम
 हीधेनुचढावतचोढे ॥ मोतिनकेसेरोतोत्रोहगा गहिहाय
 नसौरहीचूंदगीपोढे ॥ ऐसेहीडोलतकैलभए तुम्हैलाजनआं
 वतकासरीओढे ॥ ७ ॥ केसररंगमहासरसै सरसैरसरंगअ
 नंगचसूके ॥ धूसधमारनकीपट्टमाकर छायेअकासअवीरकेसू
 के ॥ फागयाल'दिलीकीतिहिँमै तुम्हैलाजनलागतगोपकहूँ
 के ॥ कैलभएइतियाँहिरको फिरोकासरीओढेगुलालकां
 ठूँके ॥ ८ ॥

॥ अथ विहितहाव लज्जा ॥

दोहा ॥ प्रियमिलबेहूपैपिया लाजनविवचनकहैन ॥

विहितहावतासोकहैं जेकविकविताएन ॥ १ ॥

॥ विहित यथा ॥

हैजलसीकुलसीवलिये तुलसीवनआईवनायदुकूलनि ॥
 देवउतैवृजभूषकुमार अनूपसरूपलखेअनुकूलनि ॥ भूठेहींह
 ठिसहेलीपठाइके वैठीहैकुँ'हछिपोतरुकूलनि ॥ केलिकेकुंजअ
 केलियैआपु चुनैचुपचापुचमेलीकेफूलनि ॥ १ ॥ वृषभानकी
 जाईकझाईकेकौतुक आईसिंगारसवैसजिकै ॥ रसहासविला
 सजलासनिसी कविदेवजूदोजरहेरजिकै ॥ हरिजुहँसिरंगमै

अंगकुयो तियसंगसखीनहं कोंतजिकै ॥ धाईभटूभयकेमि
 सभावती भीतरभौनगईभजिकै ॥ २ ॥ सुंदरिकोंमनिमंदिर
 मैलखि आएगीनिंदवनेबडभागै ॥ आननओपसुधाकरसी प
 दमाकरजावनजातिकेजागै ॥ अचकए चतअंचलके पुलकी
 अंगअंगहियोअनुरागै ॥ मैनकेराजमैबोलिसकीन भटूबुजरा
 जसोंलाजकेआगै ॥ ३ ॥ जातिचलीवृषभानलली हरिआयग
 एट्टपटीमैछपायकै ॥ दैकुचपैपिचकारीकराकदै होंकहिजात
 रहैहियलायकै ॥ गोकुलखीभिकैरीभिरही कछुचाह्योकह्यो
 सुहतेसतरायकै ॥ बोलकढीनगरोगरुओकरि हारिसीहेरी
 नफेरिलजायकै ॥ ४ ॥ होरीकेअंसरहेरिलला हरएंठिग
 आयगलीमैलईगहि ॥ हीकरकायलछूटिगई रघुनाथकवीले
 नफेरिसकेलहि ॥ गीभ्रऔखीभदोउप्रगटी वृषभानललीइ
 मिदूरिखरीरहि ॥ नैननचाएकछूकहिबेकों पैचाह्योकह्योन
 हिंआयोकछूकहि ॥ ५ ॥ सूनेओराहनेजेरिहजारन दीवे
 कोंहायसखीकेबोलायो ॥ ज्यौं ज्यौं बिलंबलगीरघुनाथ घरी
 सनत्यों त्यों महाअकुलायो ॥ प्रेभकेनेमकोन्यारोलख्योगुन
 रीभिरहीकछुजातनगायो ॥ बागेवनाथज्यौं आगेभटू हंसिभा
 वतोआयोतोबोलिनाआयो ॥ ६ ॥ आहटपाइहटींसजनी चित
 चातुरीदोउनकीनतकीमै ॥ आइकैसेवकसग्रामगही सुरहीठ
 गिठौरहीछाकछकीमै ॥ चाहीकरीकिसकीरिसकी सिसकीन
 केसोरमचाइथकीमै ॥ सांकरेफंटनखालिसकी सुनडोलिसकी
 औनबोलिसकीमै ॥ ७ ॥ दीजियेसीखकहातुमतौ अठिलाहट
 सोंमगदैडगडोलति ॥ मोटिंगपैहियखालिकैखयालके खासे

खजानेकहाँतेधाँखालति ॥ हँगाअवकौनसुनैहमधोंतुमजैसी
 कछुवतियाँगढछोलति ॥ बोलिवोभावैतिहारोजिहूँतिनके
 ढिँगपैकवहूँनहिँबोलति ॥ ८ ॥ कुंजतेकुंजरलीरसपुंजमैगुंजति
 होलतिभैारीभईहै ॥ एकौधरीधरमैठहरातिनऐसीकछूइनटे
 वलईहै ॥ एहोकहाकहियेकविसुंदरजैसीचलीयहरीतिनईहै ॥
 कालकीवालहसारेईदेखतआजुहीहूँगईकाङ्गमईहै ॥ ९ ॥
 बैठेहैफूलकीसेजमजेजमैमेहसोनेहनयोउनयोरी ॥ चोपच
 ढयोचितचाहवढयोवदिसात्विकअंगनअंगभयोरी ॥ चूमनचा
 हयोकपोलनकाङ्गहिणअभिलाषतहाँउदयोरी ॥ सीलसँको
 चसोंतौलगिसुंदरीमंदिरदीपवढायदयोरी ॥ १० ॥

॥ अथ वियोगशृङ्गार लक्षण ॥

दोहा ॥ विछुरतदोउनकेजहाँहीतपरसपरखिद ॥

सोसिंगारवियोगहैजानिलेऊसबभेद ॥ १ ॥

सोहैतीनप्रकारकोइकपूरवानुराग ॥

दूजोमानप्रवासयेतीनोभेदअदाग ॥ २ ॥

॥ वियोगशृङ्गार यथा ॥

ऐसीनदेखीसुनीसजनीधनीवाढतजातिवियोगकीवाधा ॥
 ल्यौंपदमाकरमोहनकोंतवतेकलहैनकहूँपलआधा ॥ लाल
 गुलालघलाघलमैटगठोकरदैगईरूपअगाधा ॥ कैगईकैगईचे
 टकसोमनलैगईलैगईलैगईराधा ॥ १ ॥ सुभसीतलमंदसु
 गंधसमीरकछूकूलछंदसोंछूँगएहै ॥ पदमाकरचंदहूँचाँद
 नीयेकछूँऔरहीडौरनवैगएहै ॥ मनमोहनसोंविछुरेइतहीं
 बनिकैनअवैदिनहूँगएहै ॥ सखियेहमवेतुमबईवनेपैकछूँके

कछूमनहूँ गएहैं ॥ २ ॥ धीरसमीरसुतोरतेंतीछन ईछनकै
 सहं नासहतीमै ॥ त्यों पदमाकरचांदनीचंद्र चितैचङ्गओर
 नचौकतीजीमै ॥ छायाविछायपुरैनिकेपातन लेटतीचंद्रनकी
 चमचीमै ॥ नीचक्रहाविरहाकरतो सखीहांतीकहूंजुपैभीच
 सुठीमै ॥ ३ ॥ बनसैचटकीलीछवीलीलता लखिचांदनीलाग
 तज्वालमई ॥ तपसगानलरंगतरंगनकी दुतिनैनननीरतरंग
 छई ॥ हियनाहींफटैनकटैदुखरी प्रियरेपटवारेसुधीनलई ॥
 ब्रजबासीबिनाब्रजनेहिमकों बिसवासिनिबैरिनिरैनभई ॥ ४ ॥
 ॥ अथ पूर्वानुराग लक्षण ॥

दोहा ॥ देखतसुनतदुहूनके उपजतहियअनुराग ॥

पुनिधिनदेखिसोचई सोइपूरबअनुराग ॥ १ ॥

॥ पूर्वानुराग यथा ॥

न्यौतेगएकहूँनेहबदयो सतिरामदुहूँकेलगेदृगगाढे ॥
 लालचलेसुनिकैधरकों तियअंगअनंगकीआगिसोंडाढे ॥ ऊं
 चेअटापरकांधेसहेलीके ठोढीदियेचितवैदुखवाढे ॥ मोहन
 जूमनगाढोकिये पगद्वैकचलैफिरिहीतहैंठाढे ॥ १ ॥ गुंजह
 रारिषिनाथगरें कढिकुंजनतेंछविपुंजनछायगौ ॥ मंदहूसी
 हैबसीकरसी सरसीरुहलोचनलोलनचायगौ ॥ सूहीसजी
 सिरपैपगरी लियेफूलछरीइतअंचकआयगौ ॥ हूँनियरेसि
 यरेदृगको प्रियरेपटकोहियरेमेसमायगौ ॥ २ ॥ मोरपखा
 सतिरामकिरीट मनोहरसूरतिसोंमनलैगौ ॥ कुण्डलडोल
 निगोलफपोलनि बोलनिनेहकेबीजनिवैगौ ॥ लोलविलोचन
 कौलनिसों सुसकायइतैअरुभायचितैगौ ॥ एकधरीधनसेतन

सों अखियाँ नषनोषनसारसो दैगो ॥ ३ ॥ गुरुले गनकी लगी
 चासधनी संगहीमेचवाइनकोगनहै ॥ इतमैनसोंचैनमित्तैनष
 री बलिसैनकेप्रानगहेतनहै ॥ कक्रुसेवककासोंकहाकहिहये क
 हाकीजियेभोजुगजगौंछनहै ॥ मित्तिवेकीनहींवनिआवतराम
 भयोचहैवावरोसोमनहै ॥ ४ ॥ चंदनखीरलिलाटविराजत
 मोरपखासिरजपरसोहै ॥ कुण्डललोलकपोललसैं सुरली
 कीवजावनिमैमनसोहै ॥ मोहिविलोकिविलोकिहंसै चितचो
 रवड़ेवड़ेनैनजोहै ॥ पूछतिगोपवधूमगवंत यासाँवरोसोम
 मुनातटकोहै ॥ ५ ॥ कोहैअरीवहगैलचलो गयो वेनुवजावत
 साँवरोसोहै ॥ सोहैसटाँअंगअंगविभूषन धीरसुधासवकोम
 नसोहै ॥ मोहिवतावसखीहितकै चलिगाँवऔँठाँवजहाँअव
 जोहै ॥ जोहैसोहैसुनुभारीभट्ट जनिभाँकिभरोखिको जानिये
 कोहै ॥ ६ ॥ धेखिकढीझतीपौरिलौंराधिका नंदकिसोरतहाँ
 दरसाने ॥ बेगीप्रवीनदिखादिखीहीमे सनेहसमूहटोऊसर
 साने ॥ भाँकिभरोखिसकै नसकोचन लोचननीरहियेडरसा
 ने ॥ तेरीनमेरीसुनैसमुझैनवै फेरीसीदेतफिरैवरसाने ॥ ७ ॥
 अंबरपीतकसेकटिसुन्दर मैनहँजाहिविलोविलोहै ॥ साँव
 रीसौरहीसोहनीसूरति हेरतकोजुवतीनहींसोहै ॥ मोसों
 वतावसखीहितकै अरीतूहनुमानजोराखतिछोहै ॥ नेकुचितै
 दुचितैकरिमोहि गयोरीइतैसोको जानियेकोहै ॥ ८ ॥ साँ
 वरोरंगअनंगसोअंगहै गायनकेसंगजातउवानै ॥ यैगुनदेवजू
 हेरप्रोअचानक कोवकहैंसुखदैगयोप्रानै ॥ जगोनसुहातकछू
 विनदेखेरि कासोंकहैंकोउजीकीनजानै ॥ आसगौकाहसमा

यगोनैननि नायगौचेटकगायगीतानै ॥ ९ ॥ गैलमैकैलकढै
 जितहीं तहींबंसीबजावतहीयहटेकहै ॥ गेहसोंनेहभरीकढै
 कामिनी दामिनीसीछुटिजातबिबेकहै ॥ देखतीबेषनिकेखन
 लावती लेखतीयाजगठाकुरएकहै ॥ हातिनिहालमहासोव
 डी अखियानसोंजाहिनिहारतनेकहै ॥ १० ॥ ठांठीकहादुचि
 तीसुचिती चलुदेखुरीकौनसीगोहनगो ॥ वहबेनुवजायरिभा
 यहमैरी सुधेतुकहूँ बनदोहनगो ॥ कविठाकुरऐसिहीजानिप
 री अरीगुंजकेहारनपोहनगो ॥ कोऊदौरियोटेरियोफेरियो
 री वाअहीरकोमोहनमोहनगो ॥ ११ ॥ बेषभयेविषभावनभू
 षन भोजनकोंकछुहनहींईछी ॥ सोचकेसाधनसोंधेसुधादधि
 दूधअमीसाखनआदिङ्खीछी ॥ चंदनलोंचितयोनहींजात चु
 भीचितचारुचितौनितिरीछी ॥ फूलज्योंसूलसिलासमसेज
 बिछोननिबीचबिछीजतुबीछी ॥ १२ ॥ ग्वारिगईएकह्याँकीउ
 ह्याँ मगरोकीसुतौमिसुकैदधिदानको ॥ वासैंभटूभरिभेंटीभु
 जा पुनिनातोनिकारगोकछूपहिचानको ॥ आईनिछावरिकै
 मनमानिक गोरसदरसलैअधरानको ॥ वाहीदिनातेंहियेमे
 गड़यो वहठीठबड़ोबड़रीअखियानको ॥ १३ ॥ सासुकह्यौद
 धिबेचनकों सुदईदुखहार्ईकह्याँतेधौह्याँकरी ॥ मोहिमिलेनृप
 संभुगोपाल तमालतरवहगैलजोसाँकरी ॥ मोतनताकिबड़ी
 अखियानतें काँकरीलैफिरिमोतनधाँकरी ॥ काँकरीओड़िल
 ईकरतें पैकरेजेकह्याँधौगईगड़िकाँकरी ॥ १४ ॥ आइगयेबनि
 बानिकसोंहरि लाजतिनूकसीतोरिनाडारी ॥ बेनीप्रबीजक
 हैमनकी सखिसाधसोमैसवपूरिनाडारी ॥ काकरतीकुलकीक

लही कुलकानिकलंकिनीदूरिनाडारी ॥ चौचंदहाइनकेचित
 चावमे हायचहं द्विसिघूरिनाडारी ॥ १५ ॥ गायकैतानवजा
 चकैवांसुरी मोहिकैमोहिनीमोसिरदोह्री ॥ ऐंठिकैपागउमे
 ठिकैपेचनि टेहीसीचालचलैरसभीनी ॥ रीभिरिभायकैजांत
 भए सकरंदकहोसुकहांगतिक्लीङ्गी ॥ जावरीकापरनावरीबूभ
 न सावरीसूरतिवावगीक्लीङ्गी ॥ १६ ॥ वैरवढेतेवढेअतिहीं
 अबकोकहिकैकहिकौनसौंजुभै ॥ जैसीभईहरिहरतही सुतो
 कोहियकौजियकीगतिबूभै ॥ बाहिरहंघरहमैसखी अंखिया
 निवहैछविअनिअरूभै ॥ सावरोरंगरह्यौउरमै सिगरोजग
 सावरोसावरोसूभै ॥ १७ ॥

॥ अथ मानलक्षण ॥

दोहा ॥ सूचकपियअपराधको चेष्टाकहियतमान ॥

सोहैतीनप्रकारको लघुमध्यमगुरुजान ॥ १ ॥

॥ लघुमान लक्षण ॥

दोहा ॥ देखतपियपरतीयकों करैतियाजवरोस ॥

ताहिकहतलघुमानहैं सुकविसदानिरदोस ॥ २ ॥

॥ लघुमान यथा ॥

देखतऔरतिचाहीछवीलेकों मानछवीलीकेनैननिछायो ॥

प्रीतमयौचतुराईकरी सतिरामकछूपरिहासबढायो ॥ राति

रचीविपरीतिजोप्रीतिसौं ताकोकबित्तवनाइसुनायो ॥ भूलि

गईरिसत्ताजनितें सुसकाइतिआसुखनीचेकोनायो ॥ १ ॥

लाललख्योतियऔरकीऔर गयाचढित्योरलखेंदुलहीको ॥

वेनीमनायवेकोंमनमोहन व्यौंतरिभायवेकोरष्योतीको ॥

प्यारीकीसूरतिप्यारेउरे हिकै चिचकोचूमिलियोसुहनीको ॥
 फेरिरहीसुखनैतरेरि दयोहंसिहेरिहरेसुखपीको ॥ २ ॥
 बैठेहुतेरंगरावटीमे जिनकेअनुरागरंगीब्रजभूम्यो ॥ किंकिनी
 काह्लकह्लभानकाई सुदेखनलालफरोखाह्वैभूम्यो ॥ देवपर
 चियदेखतदेखिकै राधिकाकोमनमानमैधूम्यो ॥ बातैबनायम
 नायकैलालहसायहरेसुखबालकोचूम्यो ॥ ३ ॥ बोलैहंसैवि
 हंसैनबिलोकैतूंमौनभईयहकोनसयानहै ॥ चूकपरीसोवता
 यनादीजिये दीजियेआपुनकोहमआनहै ॥ प्रानप्रियाबिनका
 रनहीं यहहूसिवावेनौप्रवीनअयानहै ॥ द्वैनिरमूलबिलोकिये
 राधिकेअंबरवेलिऔरावरोमानहै ॥ ४ ॥ हरिकोकह्लंहरिऔ
 रतियातन प्यारीकेकोपभयोमनमाहीं ॥ जानिगएमनमोहन
 पीतमआएमनावनकोलूनवांही ॥ भूँठेकहरोपरदेसकोला
 लचलेहमबालतहाफिरिचाही ॥ मानतज्योउठिकैकविरा
 जगहरोपटुकाकहरोनाहींजुनाहीं ॥ ५ ॥ पियदेखतदेख्यौजु
 औरतियातन त्यौरतियाकेतहीवदले ॥ हरिजानीकिमानव
 तीहैभईएहिंभांतिमनावनकोविमले ॥ कहिसुंदरचातुरीसों
 कियोगानसुजानकैतानमैचूकचले ॥ नरहरीगयोबोलिउठी
 तजिमानकहीहरिसीखेभलेजुभले ॥ ६ ॥

॥ अथ मध्यममान लक्षण ॥

दोहा ॥ जबपियकेसुखतेकहै औरतियोकोनाम ॥

वढैसुमध्यममानयौ हायसुनेतनछाम ॥ १ ॥

॥ मध्यममान यथा ॥

दोऊअनंदसोंआगनमाभ विराजेअसाठकीसांभसुहाई ॥

प्यारीकेबूक्तऔरतियःको अचानकनामलयोरसिकाई ॥
 आयोउनेसुहमेहसांकोहनि त्योंसुरचांपसीभौहैंचढाई ॥ आँ
 खिनतेंगिरेआँसूकेबुंद सोहँसगयोउडिहंसकीनाई ॥ १ ॥
 नामकढगोपियकेसुखतें तियऔरकेसोसुनिकैउरअँठी ॥ दे
 वजूसोहैंकैसेहैंकरी रिसकीसिसकीभरिभौहअमेठी ॥ नीठ
 हडीठिसोंडीठनाजोरति ईठसोंछुठिकेपीठदैबैठी ॥ लीजिये
 बोलिहियेपटलातिकै सुंदरिमानकेमंदिरपैठी ॥ २ ॥ नामप
 रोसिनकेनभ्रमैसु छवीलीमेताहिकह्यौसुखसारसी ॥ यौव
 किवेनीकुएहरद्वै हरिमंदिरकोंकरकीकरीआरसी ॥ नैनन
 कीकुटिलालीगई सुसकानीलजानीसुमारकीमारसी ॥ खेट
 केभारसकंपकेप्यार प्रियाभईसेवककेउरहारसी ॥ ३ ॥ आँगी
 तिहारीलखीललिता सुनतैभ्रमसोंरिसराधिकैजागी ॥ लागी
 मनावनमान्योनहीं तबजान्योदुखागिकोआगिसोभागी ॥ पी
 ठिदैपौढतसेवकसग्रामके लाडिलीकीमतिपीरनिपागी ॥ वा
 रिविरीमनुहारिकोंले मनहारिकैहारिमनावनलागी ॥ ४ ॥
 बैठीनिकुंजघनेसुखपुंज सनेरसराधिकाऔदधिदानी ॥ हीन
 लगीचरचाकेचले सखिमानकीप्रीतिप्रतीतिकहानी ॥ बेनीप्र
 वीनसुसौलतावानि कछुललिताकीविसेषवखानी ॥ वानसेवै
 नलगेपियकेकहे त्योंतियभौहकमानसीतानी ॥ ५ ॥ बालकेसं
 गगेःपालकहूँ निसिसोवततीयकोनामउठेपटि । सोसुनिकै
 पटतानिपरीतिय देवकहैमनमानगयोबढि ॥ जागिपरेहरि
 जानीरिसानी सोसोहँप्रतीतकरीचितमैचढि ॥ आँसुनसोंतन
 तापबुक्तो अरुस्वासनसोंसवरोसगयोकढि ॥ ६ ॥ मिलिखे

लतिसग्रामसौधामसकाम सजीसुखसंचसिंगारकरै ॥ हियफू
लमैनामलियोपियभूलमै आनतियाकोअजानहरै ॥ सुरवैठी
तिहींछिनछोसभरी पलतैजलधारसुठारठरै ॥ वरजोरिनि
हारिकैकोरिकला करजोरिकिसोरलगाइगरै ॥ ७ ॥

॥ अथ गुरुमान लक्षण ॥

दोहा ॥ करैजुककूपरिहासपिय औरतियाकेसंग ॥

तासोंउपगतरोसतिय सोगुरुमानउतंग ॥

॥ गुरुमान यथा ॥

आयेकहंरतिमानिकैमोहन मानकैवैठीतियातकिसाई ॥
लागेसनावनकेहंनमानति केतोक्रियोकविराजकझाई ॥ मेलि
गरेपटुकाप्रियपीतम हाथक्रियोकछुपायकेघाई ॥ ह्वैगईसीधी
कैमानसीभौह सुमानगयोछुटिवानकीनाई ॥ १ ॥ सीतिकीसा
लगुपालगरेलखि बालक्रियोमुखरोषउंजारो ॥ भौहैममीफ्र
रकेअधरासु करोरिगुनोभगनैननिन्दारो ॥ यीकविदेवनिहा
रिनिहारि दुहंकरजोरिपरपगप्यारो ॥ पीकोउठायकह्यौ
हियलायकै हैकपटीनकोकौनपत्यारो ॥ २ ॥

॥ अथ प्रवास लक्षण ॥

दोहा ॥ पियकोवसवविदेसमै कहियतताहिप्रवास ॥

जातेहीतबधूनके तनमैविरहनिवास ॥

॥ प्रवास यथा ॥

नूतनसानदिसानसनो खरसानकुसुंभधरेसरपैना ॥ बार
नबाजिवनेअलिगुंजत कुंजसमीरलगेरघगैना ॥ बेनीप्रवीन
कुलाहलकै कलकोकिलकूकदिखावतनैना ॥ आयोनगेहविदे

सतेकंत मनोजवसंतवनावतसैना ॥ १ ॥ काङ्कपगेकुबिजाकेक
 लोलनि बोलनिछोड़िदईहरभाती ॥ माधुरीमूरतिदेखिबिना
 पदमाकरलागैनभूमिसुहाती ॥ काकहियेउनसोंसजनौ यह
 बातहैआपनेभागसमाती ॥ दोसवसंतकोदीजेकहाउलहैन
 करीलकीडारनपाती ॥ २ ॥ नीरउसौरकेसीरीभई कहिता
 हिमिलायहैकोवकहाँते ॥ आँचगुलावकीह्वैहैकहापजरपोत
 नचंदनकीचरचाते ॥ चीरेउपायनसोंनकछूभवोमैसखिसीख
 दईअवताते ॥ मोहिघरीकलौज्यायोचहैतौ कहैकिनवाहीवि
 सासीकीषाते ॥ ३ ॥ मोहिविनागपलौकललेतेहे सोमनकोंके
 हिंभातिकसेहै ॥ गोकुलनाथविदेसगए हितकीमितिकीधि
 तिहकोहँसेहै ॥ औधिकीऔधिनजानिपरै चलिसैधमेका
 हकेजाइफँसेहै ॥ मैनकेचैनकीआसकरें अवधौपियकौनकेष्य
 सबसेहै ॥ ४ ॥

॥ अथ दसौ कथयते ॥

दोहा ॥ प्रथमकहतअभिलाषपुनि चिन्तादूजीजानि ॥

रुमिरनअरुउहेगपुनि कहतप्रलापवखानि ॥ १ ॥

गुनवरननउनमादहै औरव्याधिउरआनि ॥

जड़तानवईबिरहमै लेऊदसापछिचानि ॥ २ ॥

दसमदसाशृङ्गारमै हैंानकहौमनलाय ॥

सरनअवस्थाकेकहें रसाभासह्वैजाय ॥ ३ ॥

॥ अथ अभिलाष लक्षण ॥

दोहा ॥ जहाँपरसपरदुऊनकी मितनचाहअभिलाख ॥

छकिमनमथकेमोदमै करतमनीरघलाख ॥

॥ अभिलाष यथा ॥

सारी सुरंग रंगै अपनी बलितै सियै प्यारे जु पागबनैये ॥ चो
 वासों कंचु की बोरिये आपनी तैसी भगा कीया चो लीरचैये ॥ बे
 नीच वाइन मै बसिकै नए जो करि व्यैत सखी कजुँ पैये ॥ भोजत
 कळतातर मै गलवाँ ही दे दो जमलार नगैये ॥ १ ॥ गी कुलके कु
 लकोत जिधौ भजिकै वनबीधिनमे बहिनैये ॥ त्यौ षट्माकर कुं
 जकछार बिहार पहार नमे चहिनैये ॥ है नदनंदगी बिंदजहाँ
 तहाँ नंदके मंदिरमे बहिनैये ॥ यौचित चाहत एरी भटू मनमो
 हनै लैके कळकहिनैये ॥ २ ॥ वैहर बीरवरी सी वसंतकी बार
 ति है यह कौन बराय है ॥ कृष्णतिष्ठा लिया ह्यति सी इहिको सु
 ख मूढिको दूरि दुराय है ॥ गोकुलनाथ सो मेरी व्यथा कहिकै क
 वतूं अखियाँ डबराय है ॥ बीति है जो पिय संग अरी सजनौरजनी
 बड्डरो कव आय है ॥ ३ ॥ लावनचंदन ऐ है तिया कुलके जे पिया
 करि है घर आवन ॥ आवन ह्वै है सुहावन लोग कहै गेममार ख
 आ एरि भावत ॥ भावन भौन लगे गे तबै वृजनाथ फिरै गे जो आप
 ने पावन ॥ पावन ह्वै होत वै सजनी रजनी भरि कंठ जो पाइ हो लाव
 न ॥ ४ ॥ मन पारद कूपलै रूपच है उम है सुर है नही जेतो गहैं ॥
 गुनगाड़न जाय परै अकुलाय मनोजके अंगनसूलसहैं ॥ धन
 आनदचेट अधूममै प्राण छुटै न छुटै गतिकासों कहैं ॥ उर आवत
 यौ छबि कंठ नौ हो वृजछै लकी गैल सदा हीरहैं ॥ ५ ॥ कौनको
 लालसलानो सखी वहजाकी बड़ी अखियारतनारी ॥ हेरनिबंक
 विसालके बानन बेधत है ब्रटती खनभारी ॥ यौरसखानसंभारी
 परै नही चोटसुकोटिकरौ सुखकारी ॥ भाललिखो विधिहेत

को बंधन खालिसकै असकोहितकारी ॥ ६ ॥ जसुनातटवीर
 गईजवते तबतेजगकेमनमोभनहै ॥ वृजमोहनगोहनलागि
 भटूहैं लटूभई लूटिसीलाखलहैं ॥ रसखानललालकाय
 है गतिआपनीहों कहिकासोंकहैं ॥ जियआवतयें आवतोसब
 भांति निसंकहैं अंकलगाएरहैं ॥ ७ ॥ जीवतएकहीआसलि
 येहै निरासभणपलकनकीजिहै ॥ सोभकहं वंसुरीवटमै वंसु
 रीधरकीरसतानसुनीजिहै ॥ एअंखियां दुखियांकबलारी च
 कोरीभई विरहानलसीजिहै ॥ कादिनवाव्रजचंद्रचकोर चि
 तैसुखचंद्रसुधारसभीजिहै ॥ ८ ॥ कौनधोंसीखीरहीभईहै इ
 ननैनअनोखियैनेहकीनाधनि ॥ प्यारेसोंपुन्यनिभेंटभई यहको
 ककीलाजवडीअपराधनि ॥ ओटकियेरहतेनवनै कहतेनवनै
 विरहानलदाधनि ॥ संग्रामसुधानिधिअननके मरियेसखिसू
 धीधितैवेकिसाधनि ॥ ९ ॥ पहिलेसतराइरिसाइसखी वृजरा
 इयैपादुगहाइयैतौ ॥ भरिभेंटभटूभरिअंकनिसंक वड़ेखनलों
 उरलाइयैतौ ॥ अपनादुखऔरनिकोउपहास सबैकविदेवव
 ताइयैतौ ॥ धनसंग्रामहिनेकहएकवरीकों इहांलगिजाकरि
 पाइयैतौ ॥ १० ॥

॥ अथ चिन्ता लक्षण ॥

दोहा ॥ कवमिलिहैमनभावतो येंमनकरैविचार ॥

चिन्तातासोंकहतहै जेकविवद्विअंगार ॥

॥ चिन्ता यथा ॥

काकहियेकोउपीरकनाहिने तातेंहियेकीजतैयतनाहीं ॥

भागनिभेटकोहायकहंतौ वरीकविलोकेअधैयतनाहीं ॥ ठा

क्रूरवाघरचौचंदकेडर यातेंधरीधरीजैयतनाहीं ॥ भेंटनपैय
 तुकैसेजिह्वा तिह्वाँ आखिनदेखनपैयतुनाहीं ॥ १ ॥ गोरसलै
 तोजेठानीचलै धरसासुपरीरहैप्राननिपोखे ॥ जानहींजायज
 बालहैज्वालहै पौरिनपाँउसकौंधरिधोखे ॥ कयोहं परैकलए
 कधरीन परीफसिवेनीप्रवीनअनोखे ॥ देखिवेकोनदनंदनको
 लनदीनदगाँउचलोकोहिँओखे ॥ २ ॥ जैयेअकेलीमहावनबी
 च तहँामतिरामअकेलोइआवै ॥ आपनेअाननचंदकीचाँद
 नी सोपहिँजेतनतापबुभावे ॥ कूलकलिंदीकेकुंजनिमंजुल भी
 ठेअमोलसुवालसुनावै ॥ ज्यौँहँसिहिरिलियोहिँहराहरि ल्यौँ
 हँसिजोहिँहरेहरिलावै ॥ ३ ॥ एविधिऔबिरहांगिकेबानसो
 मारतहैतोयहैधरसागौ ॥ जोपसुहोँजंतऊमरिकैसेहँ पाँव
 रोह्वै प्रभुकेपगलागौ ॥ दासपखेरुनमैकरौमोरजु नंदकिसो
 रप्रभाअसुरागौ ॥ भूषनकीजियेतौवनमालहिँ जातेँगेपाल
 हिँकेहिँयलागौ ॥ ४ ॥

॥ सुमिरन लक्षण ॥

दोहा ॥ मनभावनकीवातकोँ बिकुरिकरैजवयाद ॥

ताकोँसुमिरनकहतहै रसग्रंथनिअविवाद ॥ १ ॥

॥ सुमिरन यथा ॥

वहवसरकेसुकताकीहलोर अजौहिँघभीतरिहालप्रोकरै ॥

वहदंतछटामुसकानिछवी नितचंचलासीचितचालप्रोकरै ॥

वहमाधुरीबोलनिकीअवली रसभीनीसदाँप्रनपालप्रोकरै ॥ व

हनैनकटाच्छकेबानकीनोक गहीनटसालसीसालप्रोकरै ॥ १ ॥

वहखंजनसेटगमंदहँसी मृदुवैनगुलावसेअाननकी ॥ वहवंद

नबिंदुविराजतभाज बहीवरुनीनबिताननकी ॥ बहछोटीसी
 छातीछकीछविसी बहीवेनीधिलोकनियाननकी ॥ बहअंखिन
 आगेतेंटारीटरैन भईप्रतिमूर्तिप्राननकी ॥ २ ॥ लखिभूजत
 नावहभांतिअजां करलागिगयोउरहारनकीं ॥ मकताफलट
 टिपरेधुवमै तियनैननयेजुनिहारनकीं ॥ करिकैबिनतीकटि
 सींनिहरी उपमाकविम्रध्विचारनकीं ॥ सुरपैजुसुमेरकेश
 ङ्गधरगो निहृगोससिलेतहैतारनकीं ॥ ३ ॥ अलिमोरपखा
 नकोसौरधरें पिबरीपगियारंगओरधरगो ॥ सिरगीरजरखब
 डीअंखिया परैगोलकपोलनरूपहरगो ॥ लकुटीअभिरगोखरि
 कामैखरगो लखिवेनीहमैगलियानिअरगो ॥ हंसिकैफिरि
 कैवसिकैहियतें निकरगोनवहैधंसिकैनिकरगो ॥ ४ ॥ लेतिउ
 सासैकपैपुलकै नवतावतिध्यावतिचित्तकहूंदै ॥ प्यासमरगो
 गुनपालेपरगो पियैपालगोसुवाअंसुवानकीबूंदै ॥ बिद्रुमसेअ
 धरानिधरे सुखदाडिमबीजसेदंतनिखूंदै ॥ देवचितैचितधि
 त्तवही उमहोअंखियानिबडीवडीबूंदै ॥ ५ ॥ अंगहुलैनउतंगक
 रेउर ध्यानधरेंविरहज्जु रभाधति ॥ नासिकाछोरकीओरदि
 यें अधसुद्रितलोचनकोरसमाधति ॥ आसनवांधिउसासभरै
 अवराधिकादेशकहाअवराधति ॥ भूलिगोभोगकहैलखिलोग
 वियोगकिधायहजोगहीसाधति ॥ ६ ॥ कज्जुचैतकीचांदनीमैस
 तभामाके स्यामसिधारेनिहारनमै ॥ गर्दूआधिकजामिनीवीत
 तऊ तईमानीनमानमरोरनमै ॥ कविसोभजूनैनननीरवहै क
 हैवैनमनोरसचोरनमै ॥ कवधैवनघोरिहैएसुरली वरसानकी
 सांकरीखारनमै ॥ ७ ॥

॥ अथ उद्देग लक्षण ॥

दोहा ॥ बिनमिलापपियकेजहाँ मनधिरतानलहाइ ॥

सुखदबस्तुलागेदुखद सोउदवेगकहाइ ॥ १ ॥

॥ उद्देग यथा ॥

चाहितुमैसतिरामरसाल परीतियकेतनमैपियराई ॥
कामकेतीछनतीरनकी भरिभीरतुनीरभयोहियराई ॥ तेरेवि
लोकनकोउतकांठित कंठलौआखिरहप्रोजियराई ॥ नेकपरैन
मनोजकेओजनि सेजसरोजनमैसियराई ॥ १ ॥ जायकेषिच
केभोगमैसिषको घिनलिखैविरहानलछाढी ॥ फेरिअवायक
हैसजनकीनको पायकैलेयउसासनगाढी ॥ गोकुलफेरिपरैप
लिका हियरेहिलकीनकीहलसीबाढी ॥ नैनभरेउठिआयइ
नामकीं हेरतिहैगधमैरथठाढी ॥ २ ॥

॥ अथ प्रलाप लक्षण ॥

दोहा ॥ बिरताहीयनचित्तमै बिरहविभाअकुलाय ॥

जाचाहैसोइवकिउठै वहैप्रलापकहाय ॥ १ ॥

॥ प्रलाप यथा ॥

नायहनंदकोमंदिरहै वृषभानकोभौनजहाँजकतीहौ ॥
हैंहीइहँतुमहींकविदेवजू कौनकोघंघुटकैतकतीहौ ॥ भेंटत
सोहिभटकिहिँकारन कौनकीधौंछबिसोंछकतीहौ ॥ ऐसीभ
ईहौकहौकिहिँकारन काङ्ककहँहैकहावकतीहौ ॥ १ ॥ का
ङ्कमईवृषभानसुताभई प्रीतिनईनइयेजियजैसी ॥ जानैकोदेव
विकानीसीडोलै लगेगुरुलोगनिदेखिअनैसी ॥ जगौंजगौंसखी
बहरीवतिबातनि त्योंत्योंबकैवहवावरीऐसी ॥ राधिकाप्यारी

हमारीसोंतूकहि कालिकीबेबुधजार्इमैकैसी ॥ २ ॥ आपनीओ
 रकीचाहैलिख्यो लिखिजातकथाउतमोहनओरकी ॥ प्यारी
 दयाकरिवेगिमिलो सहिजातिव्यथानहिंमैनमरोरकी ॥ आ
 पुहीबाँचिलगावतिअंग अहोकिनअनीचिठीचितचोरकी ॥
 राधिकेराधेरहीजकिभोरलौं ह्वैगईमूरतिनंदकिसोरकी ॥ ३ ॥
 कप्रोंकलकंठजित्योइहिंकीं जिहिंतेअतिहीयहरोसभरीहै ॥
 प्रानपियारेतिहारीप्रिया हमैजानिकैवेनीप्रवीनअरीहै ॥ एती
 कहैकिनजायकोऊ अवमोसोंकळूकनचूकपरीहै ॥ वैरतिहारे
 हमारेहिये इहिंकोकिलकुककैहककरीहै ॥ ४ ॥ बोलनबालै
 हँसाएहँसैनहिं रुसिरहौतीनफेरिमनावै ॥ कुंजकुटीवनबाग
 तडागन ठाढोठगोसोकहैनकहोवै ॥ तासोंकहैंहितमानिभट्ट
 इतप्रेमकेफंदनकोसुरभावै ॥ मोहनसंगरहैनिसबासर हाथ
 पसारेताहाथनआवै ॥ ५ ॥ आधेबिलोकिविलोयनकोयन
 फेरलकीकपकीकहिदीवो ॥ आधेचलाइवोचंचलसोमन फे
 रतहँकोतहँनहिंदीवो ॥ आधिकसोरपरैनिजपानिसों पोन
 जहँकोतहँरहिदीवो ॥ ऐसीदसाविरहीजियदेखि भलीम
 नभाँवतेंसोंकहिदीवो ॥ ६ ॥

॥ अथ गुनवरनन लक्षण ॥

दोहा ॥ मनभावनकोरूपगुन वरनैतियकरिप्रीति ॥

गुनवरननतासोंकहैं लैसुकविनकीरीति ॥ १ ॥

॥ गुनवरनन यथा ॥

लटकीपगियालपटीजलफैं सिंगोरजरखसँवारिदई ॥

मकराकृतकुण्डलगोलकपोल हियेलटकीवनमालनई ॥ गहि

डारकटं वक्रौ भूमत हे इ न भंयन बेनी ज्ञ हीं चित ई ॥ सुविसारे तें
 कप्रौ विसरै नि सरै जियते व ह मूरति मैन रुई ॥ १ ॥ देवमै सी स
 वसायो सने हकै भालमृगं मद विंदु कै भाख्यो ॥ कंचुकी सों चुप
 रप्रो करि चोवा ल गाय ल यो उर सों अभिलाष्यो ॥ कै मखत ल गु
 हे गहने रस मूरति वंत सिंगार कै चाख्यो ॥ सां वरे लाल को सा
 वरो रूपमै नैननिको कजरा करिराख्यो ॥ २ ॥ कै सहं को ऊ
 करे उपहास हीं नी के हीं नाचति नेहनट हीं ॥ ऐगुन ही उकि धीं
 गुन देव करी गुन जाल लपेटि लटू हीं ॥ चात क लो धन स्याम को ह
 प अघाति न हीं दिन राति रटू हीं ॥ दूसरो का जन लोक की लाज
 भई बजराज की भाट भटू हीं ॥ ३ ॥ मोर पखा मति राम किरीट मै
 कशठ वनी वन माल सुहाई ॥ मोहन की सु सु कानि मनोहर कुंड
 ल डोलनि मै छ बिछाई ॥ लोचन लोल बिलास विलोकनि को न
 बिलोकि भयो बस आई ॥ वासुख की मधुराई कडा कहीं मीठी ल
 गै अखि यानि लुनाई ॥ ४ ॥ मैन जसाल सी चंपक माल सी बाल
 रसाल दिवाल दु री सी ॥ ठाढ़ी भई छिन ए क गवा छन छायर ही छ
 विपुंज पुरी सी ॥ देखै अचानक वान क ह्वै गई दी ठि क छूषन सार
 घुरी सी ॥ यहो अटाम हिं या खिर की म हिं बार क कौ ध गई वि
 जुरी सी ॥ ५ ॥ बार ल गै न ल गै उर मै चलि पै गति मंद म हा ग ज मो
 है ॥ सीत ल ही त ल देत किये पै ल गै द ह पाव क सी ल प को है ॥ सी
 धी सदां ह मै बे नौ प्रवी न पै टे ही चितौ नि किये क है सो है ॥ मानु कै
 कै क बहं नत नी पै ससान है वा की कमान की भौ है ॥ ६ ॥ चोरिन
 गोरिन मै मिलि कै इत आई हि हा ल गुवा लि क हा की ॥ धाकी न
 को अवलो किर ह्यो पट मा कर वा अवलो क नि वां की ॥ धीर अ

वीरकीधूम्रसै कछुफेरसोकैसुखफेरकैभाँकी ॥ कैगईकाटिक
रेखनके कतरेकतरेपतरेकरिहँकी ॥ ७ ॥

॥ अथ उल्लाद लक्षण ॥

दोहा ॥ तरकिउठैगावहँसै पुनिरोवैसुधिजाय ॥

भाजिचलैचितवतरहै सोलननाटकहाय ॥ १ ॥

मेरोसिंगारकरीसिगरी चहियेसुनिमैगाँहनोपहिरायो ॥
सोधेसुनोपियरोपटलप्राय जोहैउनकेसनसाहसुहायो ॥ गोकुल
नाथकीसूरतिध्यानसै देखिकहैविरह्याभ्रसछायो ॥ सेजसज
सजकीरतिभौनसै बैठीकहासनभावनआयो ॥ १ ॥ जाछिन
तंसतिरामकहै सुसकातकहँनिरख्योनदलातहि ॥ ताछिन
तेछिनहीछिनछीन व्यथावहवाढीवियोगकीवालाह ॥ प्रौछति
हैकरसोंकिखलैगहि वृक्षतिस्याससहप्रगुपालहि ॥ सोरीभई
हैसयंकसुखी धुजभेंटतिहैभरिअंकतमालहि ॥ २ ॥ आशुभ
लेगहिपायेगोपाल गुहोंगाँहलालतुहँगुनजालहि ॥ हीनन
देहँकहँफलचाल सुराखैहियेपैसिलायकैमालहि ॥ बोलत
काहेनबैनरसालहौ जानतभागभरेनिजभालहि ॥ सींचकैने
नविसालनकोजल वालसुभेंटतिवालतकालहि ॥ ३ ॥ काहूस
ईभईकौलसुखी जुकहीकुलटानिरहीकुलरीतिन ॥ देवसुदेह
सनेहसोंभीजि विदेहकीआँचनदेहकीरीतन ॥ हरेहरीजन
लंहरीकुंजसै औरकीहिरतिहिरहरीतिन ॥ अंचरहारनवारस
सेटति भेंटतिहैषावारकीभीतिन ॥ ४ ॥ मोहनलाललखिक
हँवाल वियोगकीज्वालनिशोंतनडाढ़ति ॥ लागिगईअखि
याँचितचोरनि भागिगईगुरुलोगकीगाढ़ति ॥ औरकीऔर

कहैसुनैदेव महादुचिताई सखीनकेवाढ़ति ॥ नावलियेसुख
 औरचितैरहै सोचिधरीकमैघुषुटकाढ़ति ॥ ५ ॥ आपुचलेज
 वसोंभयुरा तवसोंयहतौतनतापसोंछीजै ॥ आएछपाकारियो
 कुलनाथ लगेहियसोंअधरासधुपीजै ॥ ध्यानकीभूरतिजानप्र
 तच्छ कहैपुलकैभरिनैनपसीजै ॥ आजुवड़ेसुकतानकीमाख
 हभेषनस्रामइनामकैदीजै ॥ ६ ॥ आपुहीआपुपैहसिरहै कव
 हंपुनिआपुहीआपुमनावै ॥ लौपदनाकरताकितमाखनि
 भेंटिवेकोंकबहंउठिधावै ॥ जोहरिरावरोचिचलखैतौ कह
 कबहंहंसिहेरिबुलावै ॥ व्याकुलबालसुआलिनमै कछीआहै
 कछूतौकछूकहिआवै ॥ ७ ॥ जबतेनिरखिहरिकुंजनमै तवतेर
 सपुंजककीविहरै ॥ छिनगायउठैछिनधायउठै छिनगेठते
 गैयनलैडगरै ॥ कविवेनीधरैकविमोहनकी मनमोहनीमोहि
 वैव्यालकरै ॥ परैपायनमानिनीकैललिता लताकैबनिताहं
 सिअंशभरै ॥ ८ ॥ मोरकिरीटकुटीजुलफैं रुखचंदअसीसुख
 कानिमहाहै ॥ गुंजहरामखतूलकरा वनमालत्रिभंगह्वै अंगर
 हाहै ॥ गोकुलगोरजसांवरोरंग रहैपटपीतकीपूरिप्रभाहै ॥
 सोहीसोंराधाकहैसजनी नबिलोकतिमोहिभईतूकहाहै ॥ ९ ॥
 मोहिकहैसंगगोधनलै दृषभानपुराकोंचलीककतीहौ ॥ गुंज
 हरासुरलीपिधरोपट मोरकिरीटकहातकतीहौ ॥ गोकुल
 सांवरीह्वैगईहौ कहासांवरोजोअकहेकपतीहौ ॥ काहकहैं
 नंदगांवकहैं तुमकैसीभईहौकहाबकतीहौ ॥ १० ॥ केसवचै
 कतिसीचितवै कतियांधरकैतरकैतकिछाहीं ॥ बूकियैऔ
 रकहैकछुऔरही औरकीऔरभईपलमाहीं ॥ डीठिलगीकि

धौप्रेतलगरो मनभूलिपरकीकहरोकछुकाँहीं ॥ घूंघटकीघट
कीपटकी हरिआजकछसुधिराधिकैनाहीं ॥ ११ ॥

॥ अथ व्याधि लक्षण ॥

दोहा ॥ तचैतापवैवर्ण्यह्वै दीरघलेयउसासु ॥

भूखपाससुधिवुधिवटै व्याधिकहतहैंतासु ॥ १ ॥

॥ वप्राधि यथा ॥

तापचट्टीसीरहैतनमै सुखसोयवोभूलिगईदिनरातिहै ॥
सायसखीकेनिकंजनलौं चलिवप्राकुलह्वै दृगवारिसींझातिहै ॥
गोकुलभोजनकीकहैकौन सोपानीनपीवतिवीरीनखातिहै ॥
जादिनतेमथुराकींचलेहरि तादिनतेंपियरीपरीजातिहै ॥ १ ॥
रूपनिधानसुजानलखिविन आखिनदीठिहीपीठदईहै ॥ ऊ
खरज्यौं खरकैपुतरीनमै सूलकीमूलसलाकभईहै ॥ ठौरक
हंनलहैठहरानकी मूदमैहाअकुलानभईहै ॥ बूड़तज्यौं घन
आनदसोच दईविधिवप्राधिअसाधिनईहै ॥ २ ॥ देखुरीआ
जुयागोपवधूभईवावरीनेकुनदेहसंभारै ॥ मायअघायनदेवन
पूजति सासुसयानसवानपुकारै ॥ यौरसखानधिरप्रोसिगरो
वृज आनकेआनउपायविचारै ॥ कोजनसोहनकेकरतें यह
वैरिनवांसुरियागहिडारै ॥ ३ ॥

॥ अथ जड़ता लक्षण ॥

दोहा ॥ सुखदुखहोयसमानजहँ सुधिवुधिकोनहिँलेस ॥

तासोंजड़ताकहतहैं जेकविबुद्धिविसेस ॥ १ ॥

॥ जड़ता यथा ॥

कालिंदीकेतटकालिभटूकहं दौरतह्वै गईभेंटभलीसी ॥

ठौर हीठांड़ो चितौत इतौतन नेक रूप एक टकीट हलीसी ॥ देव
 को देखत देवतासी वृषभान ललीन हलीन चलीसी ॥ नंदके
 छोहराकी कविसें छिन एकर ही छकि छैल छलीसी ॥ १ ॥ दौ
 री फ़िरै उपचारकों एकै समीप सखीतें बिसूरति ठाढ़ी ॥ एक क
 है अहो जानीन जाति है कौन बगधातिय कोतन बाढ़ी ॥ बीरकहा
 करिये कहै एक गहै इक दँतनि आगुरी गाढ़ी ॥ डोलै नबोलै बि
 लोकिर ही कछुकांगदपै लिखि चित्रसी काढ़ी ॥ २ ॥ कौलसे
 पानिक पीलधरे दृगद्वार लौनीर भरै हिय हारै ॥ चित्रचरित्र
 मईसी भई गई लीन ह्वै दीन टरै नही टारै ॥ रावरीलागी भमार
 खदीठि नजात कही हमजात पुकारै ॥ जागि है जी है तो जी है सबै
 नतौ पी है हलाहल नंदके द्वारै ॥ ३ ॥ बंसीवजावत आनिक ल्यो
 सुगलीन मै छैल कछु जादू सो डारै ॥ नेकुचितै तिरछी करि भौह
 न चलयोगयो मोहन मूठि भीमारै ॥ ताही धरीकी धरी है सेजपर
 बोलत प्यारीन वां प्रानके वारै ॥ जागि है जी है तो जी है सबै नतसु
 पी है हलाहल नंदके द्वारै ॥ ४ ॥ नैनके बाननते नित मोहन मा
 रत हौ ब्रजवांमघनीनकों ॥ आज कलं कल ग्योतिहि कों द्विजनं
 दह को नदकी धरनीनकों ॥ चेतैन जो वृषभान सुता दुख ह्वै है ब
 डोइहिंकी सजनीनकों ॥ जायके खायपरेंगी सबै वाअहीरके द्वा
 रपै हीरकनीनकों ॥ ५ ॥

दोहा ॥ दसादसमनीरस अहै औसबसों विन प्रीति ॥
 रसमै बिरसनवरनिये यहै कविनकी रीति ॥ १ ॥
 यातेंबरनीनवदसा कविसै ली अनुसार ॥
 कविको विदलखिरी भिहै जेहै बुद्धि उदार ॥ २ ॥
 महाराज अवधेसकी प्रायकपा अतिपौन ॥

रसिकनकोसर्वस्वयह कीन्होयं यनवीन ॥ ३ ॥

जेरसज्ञकोविटअहैं भाविकय्यामास्याम ॥

तेतवीजकरिराखिहैं याकोआठौंजाम ॥ ४ ॥

शिष्यसुकविहनुमानको कमलापतिबुधिवान ॥

तिहिंभोकहँइहिंयमै दीन्हीमदतमहान ॥ ५ ॥

॥ इति श्री सुंदरीसर्वस्व समाप्तम् ॥



॥ अथ शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध
टटिहै	४	२२	टूटिहै
रुमावली	७	२०	रुमावली
अगभोहन	१६	२३	अगभोहन
मदनद्विति	२३	११	मदनद्विता
छोड़ोदिये	२८	७	ठोड़ीदिये
क्योंनरह	३०	२०	क्योंनरहै
सतरानीकछ	३३	१२	सतरानीकछू
क्योंसुसकै	३४	१०	योंसुसकै
धुरीकपूरसी	३७	६	धूरिकपूरसी
हिमंचल	४५	१४	हिमंचल
छूटिवेकीं	४५	२३	छूटिवेकीं
प्रौढ़को	६४	८	प्रौढ़ाको
इन्द्रबधूनको	६५	४	इन्द्रबधूनको
सबइत	८४	१७	सबइते
पैय	८५	८	पैया
योह	८५	२१	योहै
कांचकीबीच	८८	२०	कांचुकीबीचें
जौनकर	१०५	८	जौनकरे
पनियामे	११२	१४	पनियामै
हांसी	११४	२२	हांसी
नालिनि	११४	२३	नालिनि
जोचलिदूरितै	१२२	५	जोचलिदूरिते
ऐसोनदसरो	१२३	४	ऐसोनदूसरो
पनि	१२५	७	पुनि
जियऐसो	१२५	८	जियऐसो
करैकछ	१२५	१६	करैकछू
विछरे	१२६	२२	विछुरे
काहिंका	१२८	८	काहिको
लताद्रुम	१२८	८	लताद्रुम
जौनसेकुंजन	१२८	२०	जौनसेकुंजन
लाइकछ	१२८	२३	लाइकछू
सहाये	१३७	१७	सुहाये

अशुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध
छटनपाये	१३७	१७	छूटनपाये
ऐसीकछ	१३७	१८	ऐसीकछू
सनीघनआनद	१३७	२०	सुनीघनआनद
नहिंछटत	१३८	२१	नहिंछूटत
आंगुरीछोरते	१३८	४	आंगुरीछोरते
भवकैसे	१४१	६	भवकैसे
दाठलजोहैं	१४४	२२	दीठलजोहैं
देवकछ	१४५	५	देवकछू
कवह कछ	१४८	१८	कवह कछू
चौचिसी	१६१	१	चौधिसी
जीवह	१६७	२	जीकह
औरभट	१८८	१७	औरभटू
कछ	१८८	१७	कछू
आछउरोज	१८१	१७	आछउरोज
पगधरनि	१८१	१८	पगधरनि
भलेज	१८७	१७	भलेजु
देख्यातुमै	१८८	१८	देख्यातुमै
कछमजकूर	२०६	२२	कछूमजकूर
फलनसौं	२१७	१८	फूलनसौं
बवासोमै	२१५	१२	बवाकिसोमै
घघुट	२०८	७	घूघुट
चमकी	२३६	२१	चमूकी
भट	२३६	२२	भटू
हीनकछ	२५०	२	हीनकछू
कोजकछन	२५४	१२	कोजकछून
दासज	२६०	२२	दासजू
धेनुचढावत	२६४	७	धेनुचरावत
कछललिता	२७२	१८	कछूललिता
बलकेसंगगीपाल	२७२	१८	बालकेसंगगीपाल
कछतातरमै	२७५	३	एकछतातरमै
कवलारी	२७६	७	कवलारी
भट	२७८	१८	भटू

